9 अकाबिर उलमाए अहले सुन्नत की तहरिरात का मजमुआ

करबला का मुसाफ़िर

लेखक

खतीबे मशरिक़ हज़रत अल्लामा
मुशताक़ अहमद निज़ामी

तक़दीम

रईसुल क़लम हज़रत अल्लामा
अरशदुल क़ादरी

रज़वी किताब घर
425, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद दिल्ली-110006

مَکِّیٌّ	مکے والا	عَالِمٌ	علم والا	مُبِیْنٌ	ظاہر
مَدَنِیٌّ	مدینے والا	طَیِّبٌ	پاک	اَوَّلٌ	سب سے اوّل
عَرَبِیٌّ	عرب والا	طَاہِرٌ	طہارت والا	اٰخِرٌ	سب کا آخر
ہَاشِمِیٌّ	ہاشمی	مُطَہَّرٌ	پاکیزہ	ظَاہِرٌ	ظاہر
تِہَامِیٌّ	تہامی	خَطِیْبٌ	خطاب والا	بَاطِنٌ	پوشیدہ
حِجَازِیٌّ	حجاز والا	فَصِیْحٌ	فصیح	رَحْمَۃٌ	رحمت
تِرَازِیٌّ	تِرَازِیٌّ	سَیِّدٌ	سردار	مُحَلِّلٌ	حلال فرمانے والا
قُرَیْشِیٌّ	قریشی	مُنَقِّیٌّ	صحیح راستہ دکھانے والا	مُحَرِّمٌ	حرام بتانے والا
مُضَرِیٌّ	مضر والا			اٰمِرٌ	حکم دینے والا
اُمِّیٌّ	کسی سے نہ پڑھا ہوا			نَاہٍ	منع کرنے والا
عَزِیْزٌ	غالب	اِمَامٌ	امام	شَکُوْرٌ	شکر گزار
حَرِیْصٌ	ایمان لانے پر حرص کرنے والا	بَآرٌّ	نیک خو	قَرِیْبٌ	قریب
رَءُوْفٌ	نرم دل	شَافٍ	شفا دینے والا	مُنِیْبٌ	نیابت کرنے والا
رَحِیْمٌ	رحم والا	مُتَوَسِّطٌ	معتدل پیغام دینے والا	مُبَلِّغٌ	پیغام پہنچانے والا
یَتِیْمٌ	یتیم	سَابِقٌ	پہلے آنے والا	طٰسٓ	طٰسٓ
غَنِیٌّ	بے نیاز	مُقْتَصِدٌ	میانہ رو	حٰمٓ	حٰمٓ
جَوَّادٌ	سخی	مَہْدِیٌّ	ہدایت کرنے والا	حَسِیْبٌ	کافی
فَتَّاحٌ	حاکم	حَقٌّ	حق	اَوْلٰی	سب سے بہتر

یا رسول اللہ ﷺ

مُحَمَّدٌ	تعریف کیا ہوا	رَسُولٌ	پیغمبر	قَائِمٌ	نماز قائم رکھنے والا
اَحْمَدُ	سب سے زیادہ حمد کرنے والا	نَبِیٌّ	غیب جاننے والا	حَافِظٌ	یاد رکھنے والا
حَامِدٌ	سراہنے والا	طٰہٰ	طٰہٰ	شَہِیْدٌ	گواہ
مَحْمُوْدٌ	سراہا گیا	یٰسٓ	یٰسٓ	عَادِلٌ	عدل کرنے والا
قَاسِمٌ	بانٹنے والا	مُزَّمِّلٌ	کملی والا	حَکِیْمٌ	حکمت والا
عَاقِبٌ	پیچھے آنے والا	مُدَّثِّرٌ	چادر اوڑھنے والا	نُوْرٌ	نور
فَاتِحٌ	کھولنے والا	شَفِیْعٌ	سفارش کرنے والا	حُجَّۃٌ	دلیل
خَاتِمٌ	ختم کرنے والا	خَلِیْلٌ	مخلص دوست	بُرْہَانٌ	دلیل
حَاشِرٌ	گواہی دینے والا			اَبْطَحِیٌّ	ابطح والا
مَاحٍ	محو کرنے والا			مُؤْمِنٌ	مؤمن
دَاعٍ	بلانے والا	کَلِیْمٌ	اللہ سے کلام کرنے والا	مُطِیْعٌ	تابع دار
سِرَاجٌ	چمکتا چراغ	حَبِیْبٌ	اللہ کا دوست	مُذَکِّرٌ	نصیحت کرنے والا
رَشِیْدٌ	نیک	مُصْطَفٰی	چنا ہوا	وَاعِظٌ	اصلاح کرنے والا
مُنِیْرٌ	روشن	مُرْتَضٰی	رضامند	اَمِیْنٌ	امانت دار
بَشِیْرٌ	خوش خبری دینے والا	مُجْتَبٰی	برگزیدہ	صَادِقٌ	سچا
نَذِیْرٌ	ڈرانے والا	مُخْتَارٌ	اختیار دیا گیا	مُصَدِّقٌ	تصدیق کرنے والا
ہَادٍ	ہادی	نَاصِرٌ	مدد دینے والا	نَاطِقٌ	واضح زبان والا
مَہْدِیٌّ	ہدایت والا	مَنْصُوْرٌ	مدد دیا گیا	صَاحِبٌ	ساتھی

یَارَسُوْلَ اللّٰہ صلی اللہ علیہ وسلم



कूफ़ियों की नोके सिनान के बाद ख़ार्जियों के
दश्न-ए-क़लम पर एक तहक़ीक़ी व तज्ज़ियाती किताब

करबला का मुसाफ़िर

नौ अकाबिर उलमा-ए-अह्ले सुन्नत की तहरीरात का मजमूआ

लेखक (संकलक)
ख़तीबे मश्रिक़ हज़रत अ़ल्लामा
मुश्ताक़ अहमद निज़ामी अलैहिर्रहमा
मुक़द्दमा : रईसुल-क़लम हज़रत अल्लामा
अरशदुल-क़ादरी अलैहिर्रहमा

प्रकाशक

रज़वी किताब घर

425, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद,
दिल्ली-110006 Phone : 011 - 23264524

 ISBN 81-89201-23-1

नाम किताब	:	करबला का मुसाफ़िर
लेखक	:	अल्लामा मुश्ताक़ अहमद निज़ामी
बएहतेमाम	:	हाफ़िज़ मोहम्मद कमरुद्दीन रज़वी
कम्पोज़िंग	:	रज़वी कम्प्यूटर प्वाइंट, दिल्ली-6
हिन्दी अनुवादक	:	मंज़ूरुल हक़ जलाल निज़ामी
प्रूफ़-रीडिंग	:	अली अहमद
हिन्दी एडीशन	:	पहली बार 2010
प्रकाशक	:	रज़वी किताब घर, दिल्ली-6
सफ़हात	:	192
तादाद	:	1100
क़ीमत	:	

मिलने के पते

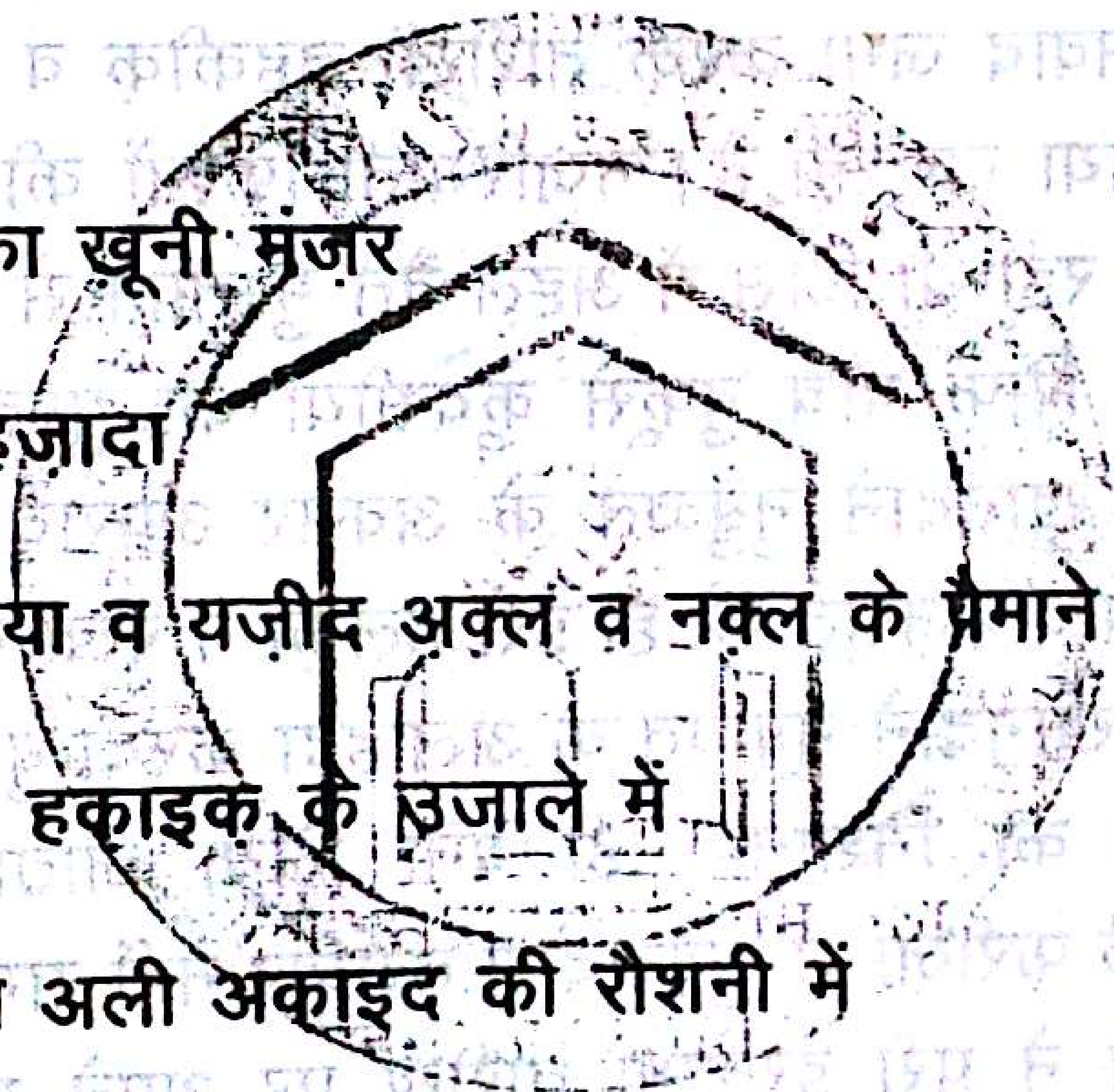
ख़त व किताबत का पता :

रज़वी किताब घर
425, उर्दू मार्किट,
मटिया महल,
जामा मस्जिद, दिल्ली-6
फ़ोनः नं० : 011-23264524

महाराष्ट्र में मिलने का पताः
रज़वी किताब घर
114, ग़ैबी नगर, भिवंडी,
ज़िला : थाणा (महाराष्ट्र)
फ़ोनः नं० 02522-220609

न्यू रज़वी किताब घर
वफ़ा कम्पलैक्स, ग़ैबी पीर रोड, भिवंडी
मोबाईल : 09823625741

फ़ेहरिस्त मज़ामीन



ताज़ीराते क़लम

हाशिया नशीनाने यज़ीद की नेक़ाब कुशाई

अल्लामा अरशदुल-क़ादरी
मुदीरे आला जामे नूर, जमशेदपुर

कुछ अरसा से पाक व हिन्द में ऐसी तहरीरें किताबी और रसाइल की शक्ल में फ़ैलाई जा रही हैं जिन में अह्ले बैत रिज़वानुल्लाहे तआला अलैहिम अज्मईन, खानदाने नुबुव्वत और मिदहत सरायाने अह्ले बैत के ख़िलाफ़ बे सरोपा मवाद जमा करके तारीख़ी तहक़ीक़ व तंक़ीद का मुँह चिड़ाने का काम लिया जा रहा है। नज़रियाती फ़ित्नों की एक शक्ल तो सदियों से काम कर रही थी जिस में अह्ले बैत मुस्तफ़ा से तमाम अफ़राद को अलाहदा करके सिर्फ़ पाँच नुफ़ूसे क़ुदसीया को मुस्तहिक़े अक़ीदत समझा जाने लगा। खानदाने नुबुव्वत के अक्सर अफ़्राद को मुस्तसना क़रार दे कर सिर्फ़ चन्द हज़रात को ही इस हलक़ा में रखा गया। फिर जब तक अह्ले बैत और खानदाने नुबुव्वत के अलाहदा करदा बुज़ुर्गाने मिल्लत को सब्ब व शितम का निशाना नहीं बना लिया जाता था, मिदहत सराई-ए-अह्ले बैत के फ़रीज़ा से सुबुकदोश तसव्वुर नहीं समझा जाता था।

इस दीनी फ़ित्ने ने पूरी इस्लामी तारीख़ पर अपने मन्हूस असरात मुरत्तब किए और सहाबा किराम, उम्महातुल-मुमिनीन और दीगर बुज़ुर्गाने दीन पर बेपनाह इल्ज़ामात गढ़े और हवस ख़ुब्से बातिनी की तस्कीन की गई। ऐसे लिटरेचर ने नेक लोगों पर ज़ुबानदराज़ी की रिवायत क़ाइम की और इस्लामी दुनिया में गुस्ताख़ाना अंदाज़े तहरीर के दरवाज़े खोल दिए। अब इस रुजहान को जब ख़ार्जी अनासिर ने अपनी क़लमों की नोक पर रखा तो वह नोके सिनान बन कर अह्ले ईमान के जज़्बात को मज्रूह करती गईं। ग़ाली शीओं ने अपनी जारेहाना तहरीरों से मिल्लत के इन नेक दिल क़ारेईन के जज़्बात को पामाल करने में कभी निदामत महसूस न की थी जिन्हें सहाबा रसूल से मुहब्बत व अक़ीदत थी। अब इनकी रुसवा-ए-आलम आदत को ख़ार्जी अह्ले क़लम ने अपना लिया है और वह पाक व हिन्द में

अह्ले बैत, सादाते किराम और ख़ुसूसियत से इमाम आ़ली मक़ाम हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु की ज़ात को निशाना-ए-सितम बना कर किताबें लिखते चले जा रहे हैं। वह अपने क़ारेईन में ग़लत तअस्सुर दे रहे हैं कि ख़ानदाने नुबुव्वत में से सैयद बनू हाशिम और इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अ़न्हु को इस्लामी तारीख़ में कोई मुम्ताज़ मक़ाम हासिल नहीं। उनके यहाँ इस्लाम की तारीख़ में फ़ातेहीन, शम्शीर ज़न और बादशाहों को तो एक दरजा हासिल है मगर जिस ने मैदाने करबला में हक़ व बातिल के मअ़रका को ज़िन्दा जावेद बना दिया था, जिसकी शम्शीर पर दुनिया के तेग़ ज़न फ़ख़ करते हैं और जिसने दुनिया भर के बादशाहों को हुक्मरानी सिखाए थे, को इतना भी हक़ नहीं दिया जा सकता कि उसके किरदार को एहतराम व अ़क़ीदत की निगाह से देखा जाए।

इस सिलसिला में महमूद अ़ब्बासी की रुसवाए आ़लम किताब ख़िलाफ़ते मुआ़विया व यज़ीद, तहक़ीक़ सैयद व सादात, तहक़ीक़ मज़ीद फिर मौलाना सुलेमान की सादात बनू उमैया और अबू यज़ीद, मुहम्मद दीन बट की रशीद इब्ने रशीद और इस जैसी छोटी मोटी किताबों ने इन पाकीज़ा हस्तियों के तक़द्दुस को सख़्त मज्रूह किया। उलमा-ए-अह्ले सुन्नत ने इन नापाक तहरीरों का बरवक़्त और सख़्त नोटिस लिया और इन क़लमकारों की नापाक कोशिशों की हमेशा मज़म्मत की। हिन्दुस्तान के उलमा-ए-अह्ले सुन्नत में से अ़ल्लामा मुश्ताक़ अहमद निज़ामी (मुसन्निफ़ ख़ून के आंसू) ने अपने माहनामा पासबान का 1960 ई० में ख़ुसूसी नम्बर तरतीब दिया (जिसे ज़ेरे नज़र किताब "करबला का मुसाफ़िर" की शक्ल में बादनी–ए–तरमीम पेश किया जा रहा है) और ख़ार्जियों के नापाक अज़ाइम को बे–नक़ाब करने की एक कामयाब कोशिश की। दिसम्बर 1968 ई० जामे नूर, जमशेदपुर बिहार ने इन नेक़ाब पोश मुअर्रेख़ीन को अपनी क़लम की अनी से बे-नेक़ाब कर दिया और फिर इस ज़ेहन के मुहरिकात और असबाब को सामने ला रखा है जो उनके पीछे काम कर रहा था। इन सारे ज़राए की निशान देही कर दी जो अपने नज़्रियात के सायों में ऐसी नापाक तहरीरों को नश्व व नुमा देते रहे थे।

दरअसल इस फ़िक्री रुजहान के पीछे अ़क़ीदा और नज़्रिया की पूरी कुव्वत कार फ़रमा है जिसके असबाब व अ़लल पर तफ़्सीली गुफ़्तगू की ज़रूरत है।

"ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" के मुतअल्लिक़ देवबन्द का जमाअती आर्गन रोज़नामा **"अल-जमीअत"** दिल्ली के एडीटर का शजरा ग़ालिबन आपकी नज़र से गुज़रा होगा, इसका इक़्तिबास मुलाहिज़ा फ़रमाइए :

"अभी हाल ही में पाकिस्तान से मआविया व यज़ीद पर एक किताब शाए की गई है जो हमारी नज़र से भी गुज़री है और जो अपने मौज़ूअ पर इस क़द्र मुहक़्क़ेक़ाना और मुअर्रेखाना है कि इस से बेहतर रिसर्च की कोई मिसाल पेश नहीं की जा सकती।" (12/अक्तूबर 1959 ई०)

ग़ौर फ़रमाइए क्या अब भी देवबन्दी जमाअत का मसलक व अक़ीदा मालूम करने के लिए मज़ीद किसी राय का इंतिज़ार बाक़ी है? और क्या इस खुशफ़हमी के लिए अब कोई गुंजाइश बाक़ी रह जाती है कि "ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" की ताईद व हिमायत में वह पेश–पेश नहीं हैं?

न थी दिल में तो क्यों आई ज़बाँ पर

सूबा बिहार में देवबन्दी जमाअत की अमारते शरीआ फुलवारी शरीफ़ का आर्गन पन्द्रह रोज़ा "नक़ीब" "ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" की ताईद करते हुए लिखता है :

"उलमा-ए-देवबन्द की बदौलत अहादीस की इशाअत ने भी हक़ीक़त पर से पर्दा उठाया। जनाब महमूद अब्बासी की यह किताब "ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" इसी अहक़ाक़े हक़ की आख़िरी कोशिश है।"
(9/अक्तूबर 1959 ई०)

शाबाश! जादू वह जो सर चढ़ कर बोले। आप ही कहिए अब इस में क्या शुबह रह जाता है कि इस तरह के अहक़ाक़ की आख़िरी कोशिश न सही अव्वलीन कोशिश तो उलमा-ए-देवबन्द की तरफ़ ज़रूर ही मन्सूब है। उन्होंने बुनियाद रखी, अब्बासी ने एवान खड़ा किया। अव्वल बा आख़िर निस्बते दारद। चन्द सतरों के बाद फिर "नक़ीब" लिखता है :

"बेशक हम इमाम हुसैन के क़ाइल हैं, इसलिए कि वह मुसलमान थे, ताबई थे और बाज़ दलाइल की बिना पर सहाबी थे और जिस बात को हक़ समझा गो उसमें इज्तिहाद की ग़लती हुई उस बात के लिए मरदाना वार जान दे दी।" (9/अक्तूबर 1959 ई०)

इस से बढ़ कर फ़ज़ीलत का ऐतराफ़ और क्या हो सकता है कि इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु मुसलमान थे। बाक़ी रहा उनका सहाबी होना तो यह मुत्तफ़ेक़ा तौर पर साबित नहीं है। वल्लाह! हद हो गई कोरचश्मी और इनाद की भी!

इमाम के मुतअल्लिक़ जिस तबक़ा के ख़्यालात इस क़द्र जारेहाना हैं क्या अब भी इनका मसलक व अक़ीदा मालूम करने के लिए मज़ीद किसी राय का इंतिज़ार बाक़ी है और क्या इस ख़ुशफ़हमी के लिए अब कोई गुंजाइश बाक़ी रह जाती है कि "ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" की ताईद में उनकी क़लम से इत्तिफ़ाक़न लग़्ज़िश हो गई।

न थी दिल में तो क्यों आई ज़ुबाँ पर

बहुत कम लोगों का ज़हन इस तरफ़ गया होगा "ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" जैसी दिल आज़ार किताब की तबाअ़त व इशाअ़त में दर परदा किन लोगों का हाथ है। हैरतज़दह हो कर सुनिए कि वह देवबन्दी जमाअ़त के एक मायानाज़ अह्ले क़लम और मोअ़तमद आ़लिम हैं। दूसरों की रिवायत नहीं ख़ुद अ़ब्बासी ने अपने दीबाचा में उन लोगों की नेक़ाब कुशाई की है। मुलाहिज़ा हो अ़ब्बासी लिखता है :

"मुहिब्बी व मोहतरमी जनाब मौलाना अ़ब्दुल-माजिद साहिब दरियाबादी मुदीर "सिदक़े जदीद" ने अपने मक्तूब मरकूमा 10 फ़रवरी 1958 ई० में मौसूमा मुदीर रिसाला "तज़्किरा" में फ़रमाया था कि आपके "अल-हुसैन" पर तबसेरा के उनवान से जो मुसलसल मक़ाला निकल रहा है वह बहुत ही जामेअ़, नाफ़ेअ़ और बसीरत अफ़रोज़ है इसे किताबी शक्ल में लाइए।"

(दीबाचा ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद स० 13)

"सिदक़े जदीद" के एडीटर अ़ब्दुल-माजिद दरियाबादी हमारे लिए कुछ अजनबी नहीं हैं, यह शैख़े देवबन्द मौलवी हुसैन अहमद के जाने पहचाने मुरीद और रईसुत्ताइफ़ा मौलवी अशरफ़ अ़ली थानवी के मजाज़ व मोतमद ख़लीफ़ा हैं। यही हज़रत हैं जिन्होंने थानवी साहब की मंक़बत में "हकीमुल-उम्मत" नाम की एक किताब तस्नीफ़ की है। थानवी साहब की तर्बियत व सोहबत में अपने मिज़ाज की तब्दीली का हाल एक जगह वह ख़ुद अपनी इसी किताब में लिखते हैं :

"एक ज़माना था कि बुज़ुर्गों के करामात और कमालात और उनके मनाक़िब के कलाम से बड़ी दिलचस्पी थी और तौहीदी मज़ामीन ख़ुश्क व बेमज़ा मालूम होते थे। एक अ़रसा से सूरते हाल बिल्कुल बरअ़क्स है, अब तौहीद के मज़ामीन सुनने और पढ़ने को दिल चाहता है और बड़े से बड़े बुज़ुर्ग के लिए उनकी बशरीयत का तसव्वुर इतना ग़ालिब आ जाता है कि उनके करामात व मनाक़िब में अब ज़्यादा जी नहीं लगता। हद यह है कि

नअ़्तिया कलाम में अब अगली सी दिलबस्तगी बाक़ी नहीं।"

(हकीमुल–उम्मत स० 583)

थानवी साहब की सोहबत में महबूबाने इलाही व मुक़र्रिबाने हक़ से तकल्लुफ़ी व बेगांगी का यह जज़्बा बेज़ारी व तंक़ीस की हद तक पहुँच गया है। चुनांचे इसी अ़ब्दुल-माजिद दरियाबादी का गुस्ताख़ क़लम एक जगह सहाबा किराम पर यूं तअ़्न करता है, पढ़िए और सीना पीटिए कि आपकी आबादी में कैसे कैसे जर्राह पैदा हो रहे हैं :

"जब हज़रात साहबा तक न अ़मली मअ़्सियतों से महफ़ूज़ रहे न इज्तिहादी लग़्ज़िशों से तो दूसरे हज़रात का मरतबा तो उन से फ़रोतर है।"

(हकीमुल–उम्मत स० 206)

सुन लिया आपने? यह हैं देवबन्दी तर्बियतगाह के सनद याफ़्ता आ़रिफ़! जिनकी निगाह में मआ़ज़ल्लाह सहाबा तक गुनगहार हैं, वह आज अगर इमाम हुसैन व अहले बैत रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम की मज़म्मत व तंक़ीस पर दुश्मन को ख़राजे तहसीन पेश कर रहे हैं तो इस में तअ़ज्जुब व शिक्वा ही क्या है जब कि सहाबा किराम की हुरमत ख़ुद उनके हाथ से घाइल है और यह सारा ज़हर तो उसी मैकदह का है जिसके कलीद बरदार जनाब थानवी साहब हैं। देवबन्दी तर्बियत गाहों में जब इस तरह का ज़हर कशीद किया जाता है तो आप ही ग़ौर फ़रमाइए कि इस जमाअ़त के मोअ़तमद अ़ब्दुल-माजिद दरियाबादी की तहरीक पर जो किताब तबअ़ हो कर शाए हुई, क्या अब भी इनका मसलक मालूम करने के लिए किसी राय का मज़ीद इंतिज़ार बाक़ी है? और क्या ख़ुशफ़हमी के लिए कोई गुंजाइश रह जाती है कि "ख़िलाफ़ते मुआ़विया व यज़ीद" की ताईद में उनकी क़लम से एक इत्तिफ़ाक़न लग़्ज़िश हो गई होगी?

न थी दिल में तो क्यों आई ज़ुबां पर

यह मालूम करके आप हैरत में डूब जाएंगे कि क़ातिले हुसैन यज़ीद की अ़ज़्मत व फ़ज़ीलत और सदाक़त व बेगुनाही साबित करने के लिए अ़ब्बासी ने अपनी किताब में हामियाने यज़ीद की जो शहादतें पेश की हैं उन में यूरोप के नाख़ुदा तरस मुल्हेदीन और इस्लाम दुश्मन मुअर्रेख़ीन के अलावा देवबन्दी जमाअ़त के शैख़ुल-मशाइख़ मौलवी हुसैन अहमद पर्दा नशीन का नाम नामी भी है गोया दुश्मन के हाथ में जो तल्वार चमक रही है वह आप ही की अ़ता करदा है।

क़ातिल अगर रक़ीब है तो तुम गवाह हो

अ़ब्बासी का पेश करदा हवाला मुलाहिज़ा फ़रमाइए :

"हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी अ़लैहिर्रहमा अपने मक्तूब में लिखते हैं : तारीख़ शाहिद है कि मआ़रिके अ़ज़ीमा में यज़ीद ने कारहा-ए-नुमायां अंजाम दिए थे। ख़ुद यज़ीद के मुतअ़ल्लिक़ भी तारीख़ी रिवायात मुबालेग़ा और आपस के तख़ालुफ़ से ख़ाली नहीं।"

(मक्तूबात जिल्द अव्वल 242 व 252, ख़िलाफ़ते मुआ़विया व यज़ीद सफ़ः 30)

मुलाहिज़ा फ़रमाइए यह हैं यज़ीद की तरफ़ से सफ़ाई के गवाह शैख़ देवबन्द! ज़रा जुमले फिर ग़ौर से पढ़िएगा :

"ख़ुद यज़ीद के मुतअ़ल्लिक़ भी तारीख़ी रिवायात मुबालेग़ा और आपस के तख़ालुफ़ से ख़ाली नहीं" यज़ीद के मुतअ़ल्लिक़ तो तारीख़ी रिवायात में शहादत इमाम हुसैन भी है और मारका करबला के दर्दनाक मज़ालिम भी! मुखद्दराते अह्ले बैत की असीरी व बेपर्दगी भी है और ख़ान-ए-काअ़बा की बेहुरमती व अह्ले मदीना का क़त्ले आ़म भी! क़िस्स-ए-मय नोशी व सुरूद व नग़मा, तर्के फ़राइज़ और इशाअ़ते मुंकिरात! सभी कुछ तारीख़ी रिवायात में हैं लेकिन मसलेहत बाला-ए-ताक़ रख कर अगर उसकी भी निशान देही की गई होती कि इन तारीख़ी रिवायात में मुबालेग़ा और तख़ालुफ़ कहाँ कहाँ है तो आज अ़ब्बासी तशरीह की ज़हमत से बच जाते। इस से ज़्यादा और इस कमबख़्त का क़ुसूर ही क्या है कि इसी इजमाल की तफ़्सील और इसी मतन की शरह का नाम "ख़िलाफ़ते मुआ़विया व यज़ीद" रख दिया।

हरम की ख़ाक पे लात व मनात क्या कम हैं
यह क्या ज़रूर किसी बरहमन की बात करें

यह कहना ग़लत न होगा कि इजमाल व तफ़्सील और मतन व शरह दोनों जगह क़लम के पीछे एक ही इरादा, एक ही मतमहे नज़र और एक ही मुहर्रिक कारफ़रमा है। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि अ़ब्बासी का क़लम अपनी ना आ़क़िबत अन्देश गुस्ताख़ी का शिकार हो कर बरहना हो गया है। और शैख़ देवबन्द अपनी मसलेहत अन्देश चालाकी से बेनेक़ाब नहीं हो सके। लेकिन –

नज़दीक हैं वह दिन कि पसे परदा जलवा
पाबन्दी-ए-आदाबे तमाशा न रहेगी

अब आप ही गौर फ़रमाइए। इतना सब कुछ हो जाने के बाद भी देवबन्दी जमाअत का मसलक व अक़ीदा मालूम करने के लिए अब मज़ीद किसी राय का इंतिज़ार बाक़ी है और क्या इस खुश फ़हमी के लिए कोई गुंजाइश रह गई है कि "खिलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" उनके जमाअती अक़ीदा की तरजुमान नहीं है।

न थी दिल में तो क्यों आई ज़ुबां पर

एक नया इंकिशाफ़ मुलाहिज़ा फ़रमाइए और ख़ुदा का शुक्र अदा कीजिए उसकी मख़्फ़ी तदबीर मुज्रेमीन के चेहरे से कितने हैरत अंगेज़ तरीक़ा पर नेक़ाब कुशाई फ़रमाती है। अ़ब्बासी ने अपनी किताब "ख़िलाफ़ते मुआ़विया व यज़ीद" में जिन ख़्यालात का इज़हार किया है और इमाम आ़ली मक़ाम रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तक़्सीर व ख़ता और यज़ीद की तहारत व बेगुनाही साबित करने के लिए जो निशान क़ायम किए हैं वह दौरे हाज़िर के मुल्हेदीन की ज़ुबान में उनके ज़ेहन व फ़िक्र की कोई नई तख़्लीक़ नहीं, आज से पाँच साल पहले उसकी बुनियाद देवबन्दी जमाअ़त के मशहूर मुनाज़िर और उनकी तबलीग़ी जमाअ़त के मौजूदा सरबराह मौलवी मंज़ूर नौमानी की इदारत में उनके माहनामा **"अल-फ़ुरक़ान"** लखनऊ के सफ़हात पर पड़ चुकी है। हवाला के लिए माहनामा **"अल-फ़ुरक़ान"** अगस्त 1954 ई० सफ़: 40 व 91 और **"अल-फ़ुरक़ान"** सितम्बर 54 ई० सफ़: 47 के मज़ामीन का ख़ुलासा ज़ैल में मुलाहज़ा फ़रमाइए।

अलिफ़ : अह्ले बैत के सिलसिला में मुसलमान इफ़रात व तफ़रीत में मुब्तला हो गए हैं और ऐतक़ाद व अ़मल में ग़ुलू से काम लेते हैं चुनांचे हज़ारों ने बेबुनियाद रिवायात अह्ले बैत और वाक़िया करबला को अहमीयत देने की ग़रज़ से गढ़ ली गई हैं।

ब : इमाम हुसैन महज़ अपनी ज़ाती इज़्ज़त के सवाल पर शहीद हुए।

ज : इमाम हुसैन का ख़्याल ग़लत और बातिल था।

द : यज़ीद के ख़िलाफ़ इमाम हुसैन का इक़्दाम बग़ावत व ख़ुरूज था।

ह : सहाबा किराम ने यज़ीद की बैअ़त से इंकार किया। यह उनका शख़्सी इज्तिहाद था। ठीक उसके एक साल बाद नवम्बर 1955 ई० में लखनऊ के मशहूर अदबी माहनामा "निगार" में **"अल-फ़ुरक़ान"** के मज़्कूरा बाला मज़्मून पर "वाक़ेया-ए-करबला" के उनवान से किसी सुन्नी अह्ले

कलम की एक तंकीद शाए हुई थी उसकी इब्तिदाई सतरें मुलाहज़ा फरमाइए और तअस्सुरात की यक्सानियत का तमाशा देखिए :

"मज़मून बाला को बिल-इस्तिआब पढ़ने के बाद और कई ज़ी इल्म दोस्त इस नतीजा पर पहुँचे कि मज़्मून निगार अव्वल से आख़िर तक हुकूमते बनी उमैया और खुसूसन यजीद की पोजीशन साफ़ करने और इमाम हमाम सैयदना हुसैन अलैहिस्सलाम की मज़्लूमाना हैसियत और ऊलुल-अज़्माना शहादत का मरतबा घटाने में साई रहे हैं इसलिए अगर उनके मज़मून को हिमायतें यजीद (**Apology for Yzid**) के नाम से मौसूम किया जाए तो बेजा नहीं। मज़्मून के पहले नम्बर को पढ़ कर बाज़ साहिबों ने उन पर ऐतराज़ात किए थे कि हज़रत इमाम हुसैन के इक़्दाम के लिए बग़ावत का लफ़्ज़ क्यों इस्तेमाल किया नीज़ हज़रत का बैअ़ते यज़ीद के लिए आमादा हो जाना, सहाबा का यज़ीद से बैअ़त कर लेना और यज़ीद का हादस-ए-करबला पर रंज करना किस बिना पर लिख दिया। इन ऐतराज़ात के जो जवाबात उन्होंने दिए हैं उन में हर शख़्स यह फ़ैसला करने पर मजबूर होगा कि वह उमवी सलतनत के तरफ़दारों में हैं।"

(माहनामा निगार सफ़: 9, नवम्बर 1955 ई०)

इसके बाद की एक इबारत और मुलाहज़ा फ़रमाइए तंक़ीद निगार लिखता है :

"उन्होंने अपने नज़्दीक इमाम पर बड़ा एहसान करते हुए आपकी शहादत को तस्लीम कर लिया है मगर इसको महज़ ज़ाती इज़्ज़त का सवाल क़रार दिया है हालांकि दूसरी जगह ख़ुद उनके ख़्याल को बातिल ठहराया है। अब कैसे किस को सही माना जाए।

(निगार स० 21 / माह सितम्बर 1955 ई०)

अख़ीर की एक इबारत मुलाहज़ा फ़रमा लीजिए :

"उन्होंने अपने मज़्मून में निहायत जसारत से हज़रत के इक़्दाम के मुतअ़ल्लिक़ "बग़ावत का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया है और जब किसी ने टोका तो साफ़-साफ़ इज़हारे निदामत के बजाए तावीले रकीक की आड़ ली है।"

(निगार स० 21 / माह सितम्बर 1955 ई०)

अब आप अपना हाफ़िज़ा ज़रा ताज़ा कर लीजिए और अ़ब्बासी की "ख़िलाफ़ते मुआ़विया व यज़ीद" और तबलीग़ी जमाअ़त के आर्गन **"अल-फ़ुरक़ान"** लखनऊ बाबत माहे अगस्त व सितम्बर 1955 ई० के

मज़ामीन व इक़्तिबासात पर एक मुंसिफ़ाना नज़र डाल कर फैसला कीजिए कि यज़ीद की तहारत व बेगुनाही और इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की तक़सीर व ख़ता साबित करने के लिए अब्बासी ने जिन ख़्यालात का इज़हार किया है क्या वही ख़्यालात नहीं हैं जिन्हें आज से पाँच साल पेश्तर देवबन्दी जमाअत के एक जिम्मेदार हलक़ा ने शाए किया था। यहाँ तक कि **"अल-फुरक़ान"** के यह मज़ामीन पढ़ने के बाद ठीक ग़म व ग़ुस्सा के यही तअस्सुरात उस वक़्त ज़ेहन में पैदा हुए थे जो आज "ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" के मुताला से आम अज़हान में पैदा हो रहे हैं।

तजरबात व तअस्सुरात की शहादत के बाद अब इस हक़ीक़त से इंकार मुम्किन नहीं है कि दोनों तहरीरों में एक ही तख़ैयुल, एक ही तर्ज़े इस्तेदलाल, एक ही अंदाज़े ब्यान, एक ही लब व लहजा इजमाल व तफ़्सील के साथ मुश्तरक है। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि **"अल-फुरक़ान"** की शक़ावत का एहसास उस वक़्त एक ख़ास हलक़ा में महदूद हो कर रह गया था और आज अब्बासी का फ़सान्-ए-बदबख़्ती नगर नगर में फैल गया है।

अब मैं पूछना चाहता हूँ कि यज़ीद की हिमायत में देवबन्दी जमाअत के तबलीग़ी आर्गन **"अल-फुरक़ान"** की गर्म जोश सबक़त और इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अनहु के ख़िलाफ़ जारेहाना शहादत के बाद भी क्या, इस बाब में देवबन्दी जमाअत का मसलक व अक़ीदा मालूम करने के लिए अब मज़ीद किसी राय का इंतेज़ार बाक़ी है? और फिर क्या इस ख़ुश फ़हमी के लिए अब कोई गुंजाइश रह गई है कि "ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" उनके जमाअती मसलक व ऐतक़ाद की तरजुमान नहीं है।

न थी दिल में तो क्यों आई जुबाँ पर

देवबन्दी जमाअत की तरफ़ से यज़ीद की हिमायत और इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के ख़िलाफ़ जारेहाना ख़्यालात का क़िस्सा इतने पर ख़त्म नहीं होता, बल्कि इस जज़्बा में वह इतना आगे बढ़ गए हैं कि उन्होंने इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के इक़्दाम से बेज़ारी व नाराज़ी का रिश्ता नबी मोहतरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जोड़ दिया है। अल-अमान वल-हफ़ीज़ !

मुलाहिज़ा फ़रमाइए अख़्बार "अन्नज्म" लखनऊ जिस के एडीटर देवबन्दी जमाअत के इमाम मौलवी अब्दुश्शकूर काकोरी हैं। 10 मुहर्रम 1356 हिज. को एक "करबला नम्बर" शाए हुआ था। इसमें मज़्मून निगार

बाग़ियाने ख़िलाफ़त के ख़िलाफ़ वईद अज़ाब और उक़ूबत व सज़ा वाली हदीसों को ब्यान करने के बाद लिखता है :

"बक़िया तमाम रिवायतों पर नज़र डालने से मालूम होता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी तरह यज़ीद की मुख़ालिफ़त पर रज़ामन्द न थे।" (अन्नज्म, लखनऊ स० 52)

मआज़ल्लाह! यज़ीद की हिमायत में ज़रा इस तहरीफ़ व इफ़्तरा परदाज़ी की नापाक जसारत मुलाहिज़ा फ़रमाइए। इस मुफ़्तरी व कज़्ज़ाब का मक़सद यह कि इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने यज़ीद की मुख़ालिफ़त करके अपने नाना जान सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नाराज़ कर दिया। ज़रा ग़ौर फ़रमाइए, इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के क़ल्बे नाज़ुक पर इस से भी ज़्यादा दर्दनाक अज़ीयत की कोई चोट लगाई जा सकती है? **नऊज़ुबिल्लाहे मिन शुरूरे अंफ़ुसेहिम।**

आगे चल कर मज़्मून निगार ने वह हदीसें नक़्ल की हैं जिनका मफ़ाद यह है कि जब बन्दों में अल्लाह की नाफ़रमानी बढ़ जाती है तो अल्लाह तआला बादशाहों के दिलों को क़हर व ग़ज़ब और सख़्त गीरी के साथ उनकी तरफ़ फेर देता है और वह उन्हें तरह तरह के अज़ाब में मुब्तला करता रहता है। इन हदीसों के ब्यान करने के बाद नतीजा के तौर पर अख़ीर में लिखता है :

"यज़ीद को जो उस वक़्त के मुसलमानों पर एक अज़ाबे इलाही का नमूना था, हरगिज़ हरगिज़ बुरा कहने की इजाज़त नहीं।"(अन्नज्म सफ़: 26)

इस इबारत से नामुराद की मुराद यह है कि मआज़ल्लाह उस वक़्त सहाबा किराम और अह्ले बैत में ख़ुदा की नाफ़रमानी इस क़द्र बढ़ गई थी कि ख़ुदा ने उनके ताज़ीर व ओक़ाब के लिए यज़ीद को उन पर मुसल्लत कर दिया था।

ईमान व अक़ीदत की स्प्रिट में ग़ौर फ़रमाइए! यह हैं देवबन्दी जमाअत के वह जारेहाना ख़्यालात जिनके आगे अब्बासी की शक़ावत भी हाथ बांधे खड़ी है और यह जुमला तो बार बार पढ़ने का है कि :

"यज़ीद को हरगिज़ हरगिज़ बुरा कहने की इजाज़त नहीं।"

बेलाग हो कर अब आप ही इंसाफ़ कीजिए कि इतना सब कुछ मंज़रे आम पर आ जाने के बाद भी क्या इस बाब में देवबन्दी जमाअ़त का मसलक व अक़ीदा मालूम करने के लिए अब भी कोई गुंजाइश रह गई है कि "ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" उनके जमाअ़ती मसलक व ऐतक़ाद की तरजुमान नहीं।

न थी दिल में तो क्यों आई ज़ुबाँ पर

शहीदे करबला शहज़ाद-ए-गुलगों क़ुबा सैयदना इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु के मुतअ़ल्लिक़ देवबन्दी जमाअ़त के जारेहाना ख़्यालात कुछ नए नहीं हैं, उनके मज़्हबी अकाबिर व असाग़िर ने अपनी तस्नीफ़ात में निहायत शद्द व मद्द के साथ अपने मुत्तबईन को इमाम आ़ली मक़ाम की बारगाहे अतहर में ख़राजे सवाब व नज़्रे अक़ीदत तक पेश करने से मना किया है।

जज़्ब-ए-शक़ावत की इंतिहा यह है कि यह लोग अ़शर-ए-मुहर्रम में इमाम आ़ली मक़ाम की सही सरगुज़श्ते तस्लीम व रज़ा और तज़्किर-ए-वाक़ेआ़ते करबला का ज़ुबान पर लाना भी गुनाह समझते हैं।

हवाला के लिए देखिए देवबन्दी जमाअ़त के इमाम आज़म मौलवी रशीद अहमद गंगोही की फ़तावा रशीदीया हिस्सा दोम सफ़: 153 व हिस्सा सोम सफ़: 11।

ख़ालीयुज़्ज़ेहन हो कर ग़ौर करने के बाद उसकी वजह यही समझ में आती है कि या तो यह लोग इमाम आ़ली मक़ाम रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु की अ़ज़ीमुल-मरतबत शहादत को शहादत ही नहीं समझते बल्कि ख़ुरूज व बग़ावत की शरई ताज़ीर गरदानते हैं या फिर यज़ीद के जज़्ब-ए-हिमायत में यह इतना भी बर्दाश्त नहीं कर सकते कि इमाम वाजिबुल-एहतेराम की दर्दनाक मज़्लूमी और रिक्क़त अंगेज़ वाक़ेया-ए-शहादत का इज़्हार करके यज़ीद की मज़ालिम व शक़ावत की दास्तान मंज़रे आ़म पर लाई जाए।

बहरहाल जो भी हो, इस से इंकार नहीं हो सकता कि उन लोगों ने अपने इस जज़्बे की शिद्दत में इतना ग़ुलू कर लिया है कि अब यह उनका मज़हबी अ़क़ीदा बन चुका है जिस पर यह मुसल्लह हो कर खाना जंगी तो कर सकते हैं लेकिन रुजूअ़ नहीं कर सकते।

गौर फ़रमाइए हज़रत इमाम हुसैन व अह्ले बैत रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम के मुतअल्लिक उनका यह जारेहाना अकीदा जिसे सलफ़ से लेकर ख़लफ़ तक सब ने अपना मज़्हबी शिआर बना लिया है वाज़ेह तौर पर मालूम हो जाने के बाद भी क्या इसमें उनका ऐतक़ादी मूकिफ़ मालूम करने के लिए अब मज़ीद किसी राय का इंतिज़ार बाक़ी है? और फिर क्या इस खुशफ़हमी के लिए अब भी कोई गुंजाइश रह गई है कि "ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" उनके जमाअती अक़ीदा की तरजुमान नहीं है?

इस हक़ीक़त से ग़ालिबन आप भी इख़्तिलाफ़ नहीं करेंगे कि हालात के दबाव से राय आम्मा की ताईद को मसलक व अक़ीदा नहीं कहा जा सकता। अल्बत्ता वक़्त के तक़ाज़ों के मुताबिक़ उसे आक़िबत अन्देश इक़्दाम कहना सूरते हाल की सही ताबीर हो सकती है।

मिसाल के तौर पर हुकूमते दिल्ली और रियासते बंगाल के जिन ग़ैर मुस्लिम सरबराहों ने किताब "ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" को ज़ब्त करके नफ़रत और मज़म्मत का इज़हार किया है उनके मुतअल्लिक़ यह कहना फ़ाश ग़लती है कि यही उनका अक़ीदा व मसलक भी है।

इस सिलसिला में ज़्यादा से ज़्यादा सही बात जो कही जा सकती है वह यह है कि उन्होंने किताब को ज़ब्त करके राय आम्मा के जज़्बात का एहतेराम किया है।

ठीक यही सूरते हाल क़ारी तैयब साहब मुहतमिम दारुल-उलूम देवबन्द की है, जब देवबन्द के किताब फ़रोशों ने जो अक़ीदतन भी देवबन्दी हैं किताब की इशाअत में हिस्सादार बन कर मार्किट तक उसे पहुँचाया तो उस वक़्त यह ख़ामोश थे, जब देवबन्द के माहनामों "तजल्ली" और "इस्लामी दुनिया" ने उसकी ताईद में ज़मीन व आसमान के कुलाबे मिलाए तो उस वक़्त भी यह ख़ामोश रहे। जब देवबन्दी जमाअत के आर्गन "अल-जमीअत" दिल्ली ने किताब की हिमायत में अपना गुमराहकुन तबसेरा शाए किया तो उस वक़्त भी ख़ामोश रहे।

ग़रज़ दारुल-उलूम देवबन्द के पास दीवार से लेकर लखनऊ तक शहीदे करबला के ख़िलाफ़ जारेहाना नारे बुलन्द होते रहे और उनके क़लम

को जुंबिश तक न हुई और न ही उनके अक़ीदे को ठेस लगी बल्कि पूरे सुकूने क़ल्ब के साथ यह आले रसूल की बेहुर्मती का तमाशा देखते रहे।

लेकिन किताब की इशाअ़त में देवबन्द के कुतुब फ़रोशों, देवबन्द के माहनामों, तबलीग़ी जमाअत के आर्गन **"अल-फ़ुरक़ान"** और रोज़नामा **"अल-जमीअ़त"** की सरगर्मियों के नतीजे में जब राय आ़म्मा देवबन्दी मक्तबा-ए-ख़्याल के हक़ में मुश्तइल होने लगी तो दारुल-उलूम देवबन्द के मुहतमिम साहब को अपने इदारे का मफ़ाद ख़तरे में नज़र आया और फ़ौरन उन्होंने अपने अ़क़ीदा व मसलक की सफ़ाई में एक क़रारदाद मंज़ूर करके मुल्क में शाए कर दिया। क़रारदाद की इबारत पढ़ने के बाद हर शख़्स यह फ़ैसला करने पर मज्बूर होगा कि उसके पस मंज़र में हिमायते हक़ के बजाए अपनी सफ़ाई का जज़्बा वाज़ेह तौर पर कार फ़रमा है। क़रारदाद का यह हिस्सा ग़ौर से पढ़िए जो 4/नवम्बर 59 ई० को दारुल-उलूम देवबन्द के एक जलसा में मंज़ूर की गई :

"दारुल-उलूम देवबन्द का यह शानदार इजलास जहाँ इस किताब से अपनी बेज़ारी का इज़्हार करता है वहीं वह उन मुफ़्तरियों के ख़िलाफ़ भी नफ़रत व बेज़ारी का ऐलान करता है जिन्होंने अपनी किज़्ब ब्यानी से इस किताब की तस्नीफ़ व इशाअ़त में उलमा-ए-देवबन्द का हाथ दिखला कर और उसे उलमा-ए-देवबन्द की तस्नीफ़ बावर कराने की सई करके इंतिहाई दीदा दिलेरी से "दरोग़ गोयम बर रूए तो" का सुबूत दिया है और इस हीला से उलमा-ए-देवबन्द की पोज़ीशन को मजरूह करने की नापाक सई की है।" (प्यामे मश्रिक़ 21 नवम्बर 59 ई० दिल्ली)

अगर वाक़ई किताब की तबाअ़त व इशाअ़त में उलमा-ए-देवबन्द का हाथ नहीं है और फ़िल-हक़ीक़त वह उसे अपने मसलक व अ़क़ीदा के ख़िलाफ़ समझते हैं तो हक़ की हमीयत के नाम पर क़ारी तैयब साहब मुहतमिम दारुल-उलूम देवबन्द से मुतालबा करते हैं कि वह "असबाबे जुर्म की फ़राहमी और उसकी ताईद भी जुर्म है।" के उसूल पर लगे हाथों थानवी साहब के ख़लीफ़ा मौलवी अब्दुल माजिद दरियाबादी "मक्तूबात" मौलवी हुसैन अहमद सदर देवबन्द "अन्नज्म" लखनऊ "नक़ीब" फुलवारी शरीफ़

पटना **"अल-फुरक़ान"** लखनऊ "अल-जमीअ़त" दिल्ली "फ़तावा रशीदीया" माहनामा "तजल्ली" और "इस्लामी दुनिया" देवबन्द के ख़िलाफ़ भी इसी तरह नफ़रत व बेज़ारी व ग़म व गुस्सा की एक क़रारदाद मंज़ूर करके मुल्क में शाए करा दें क्योंकि उन में से बाज़ ने किताब की तरतीब व तदवीन, मवाद की फ़राहमी, तबाअ़त, इशाअ़त, ताईद में बउनवान मुख़्तलिफ़ हिस्सा लिया है और बाज़ों ने इस तरह के जारेहाना ख़्यालात अपनी तहरीरों में पेश किए जैसा कि उनकी तफ़्सीलात गुज़श्ता औराक़ में सिपुर्दे क़लम कर चुका हूँ।

अगर मुहतमिम साहब ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हैं और हमें यक़ीन है कि वह ऐसा हरगिज़ न कर सकेंगे तो उन्हें याद रखना चाहिए कि ज़्यादा दिनों तक वह अ़वाम की आँखों में धूल नहीं झोंक सकते। किताब से बेज़ारी के नतीजा में यह लाज़मी मुतालबा पूरा न हुआ तो अ़वाम यह फ़ैसला करने में क़तअ़न हक़ बजानिब होंगे कि क़रारदाद का मक़सद हिमायते हक़ में नहीं है बल्कि महज़ दारुल-उलूम देवबन्द के माली मफ़ाद की ख़ातिर अ़वाम की तवज्जोहात को टूटने से बचाना है जैसा कि पड़ोस में रहने वाले एक वाक़िफ़कार देवबन्दी फ़ाज़िल ने ख़ुद उसकी शहादत दी है :

"ज़ाहिर है कि जिस इदारे का मदार ही क़ौम के चन्दे पर हो, उसे हिक्मत व मसलहत की नोक-पलक दुरुस्त रखनी ही चाहिए।"

(माहनामा तजल्ली देवबन्द, दिसम्बर, 1956 ई० सफ़: 9)

यही नहीं दारुल-उलूम देबवन्द के मिज़ाज शनास हल्क़ों का तो यहाँ तक कहना है कि आज राय आ़म्मा इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की हिमायत में है इसलिए मसलहत का तक़ाज़ा यह है कि यज़ीद के हामियों की मज़म्मत में क़रारदाद शाए की जाए। कल अगर ख़ुदा नख़्वास्ता राय आ़म्मा यज़ीद की हिमायत में पलट जाए तो दारुल-उलूम के अरबाबे हल व अक़्द के लिए क़तअन कोई अम्र माने न होगा कि वह इसी लब व लहजा के साथ हामियाने हुसैन की मज़म्मत में क़रारदाद मंज़ूर कर लें। हवाले के लिए ज़ेल का इक़्तिबास पढ़िए :

"वह मुहतमिम दारुल-उलूम देवबन्द निहायत ज़ाबित व मुतहम्मिल हैं" उन्हें जज़्बात पर हैरत अंगेज़ हद तक क़ाबू है। वह जब चाहें जिस मौज़ू

पर चाहें एक ही लब व लहजा में बात कर सकते हैं, यहाँ तक कि कल अगर मसालेह का तक़ाज़ा यह हो कि इस क़रारदाद के बिल्कुल बरअक्स तजवीज़ पास की जाए तो उनका क़ाबू याफ़्ता क़लम उसे भी निहायत इत्मीनान से इसी ख़ुशगवार लब व लहजा में सब्त क़िरतास कर देगा।"

(माहनामा तजल्ली, दिसम्बर 59 ई० देवबन्द)

शाबाश! इस्लाम में जिस ख़सलत को मुनाफ़ेक़त से ताबीर किया गया है उसे देवबन्दी फ़ाज़िल अपने मुहतमिम साहब के महासिन में शुमार कर रहे हैं।

वैसे भी इन हज़रात के यहाँ यह कोई नई बात नहीं है, दारुल-उलूम देवबन्द के मफ़ाद और जमाअ़त की मसलहत पर वह अपने मसलक व अक़ीदा का ख़ून करने के आदी हैं। हद यह है कि फ़रेबख़ूरदा अ़वाम के दिलों पर अपना क़ब्ज़ा बाक़ी रहने के लिए मुँह बोला शिर्क व बिदअ़त तक वह ख़न्दा पेशानी के साथ कुबूल कर लेते हैं।

वैसे आम हालात में तो वह मोमिनीन के आक़ा सैयदे काइनात सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के फ़ज़ाइल व कमालात के ऐतराफ़ में अपना दिल साफ़ नहीं रखते लेकिन जब कभी जमाअ़त की मसलहत दाई होती है तो उनकी तौसीफ़ व सना के लिए अपने दिल पर जब्र भी कर लेते हैं।

छोटों की नहीं उनके बड़ों की बातें कर रहा हूँ। अशरफ़ुस्सवानेह के मुअल्लिफ़ दारुल-उलूम देवबन्द के एक जलसा-ए-दस्तार बन्दी का ज़िक्र करते हुए अपने पीरे मुग़ाँ मौलवी अशरफ़ अ़ली थानवी के मुतअ़ल्लिक़ लिखते हैं :

"दारुल-उलूम देवबन्द के बड़े जलस-ए-दस्तार बन्दी में बाज़ हज़रात अकाबिर ने इरशाद फ़रमाया कि अपनी जमाअ़त के मसलहत के लिए हुज़ूर सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के फ़ज़ाइल ब्यान किए जाएं ताकि अपने मज्मा पर जो वहाबियत का शुबह है वह दूर हो, यह मौक़ा भी अच्छा है क्योंकि इस वक़्त मुख़्तलिफ़ तबक़ात के लोग मौजूद हैं। हज़रत वाला (थानवी साहब) से बा-अदब अ़र्ज़ किया कि उसके लिए रिवायात की ज़रूरत है और वह रिवायत मुझको मुस्तहज़र नहीं।"

(अशरफ़ुस्सवानेह जिल्द 1, स० 76)

"ज़रा अपनी जमाअत की मसलहत के लिए "का फ़िक्रह ज़हन पर ज़ोर दे कर पढ़िए और सोचिए कि यह अपने आपको मुसलमान ज़ाहिर करके हमारे साथ कितना संगीन मजाक़ कर रहे हैं। बेचारा अब्बासी तो बेनक़ाब हो कर मंज़रे आम पर आया और पिट गया। हिन्दो पाक की कई करोड़ मुस्लिम आबादी उसके मुँह पर थूक चुकी है और आप भी "करबला का मुसाफ़िर" के ज़रिया उसकी घायल पुश्त पर ताज़ियाने रसीद कर रहे हैं लेकिन देवबन्द के यह बाज़ीगर जो अपने चेहरों पर ख़ूबसूरत नेक़ाब डाले मुस्लिम आबादियों में फिर रहे हैं, कोई उन्हें क्यों नहीं चौराहे पर खड़ा कर देता।

रसूल और आले रसूल की हुरमत पर मर मिटने वाले अगर शख़्सीयत से मरऊब नहीं हैं तो उनका गरीबान क्यों नहीं थामते। एक तरफ़ यज़ीद के हामियों से उनके साज़ बाज़ हैं तो दूसरी तरफ़ इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु के नियाज़मन्दों में बैठ कर यह आँसू बहाते हैं। एक तरफ़ यह सहाबा व अह्ले बैत के मज़ारात मिस्मार कर देने पर सहराए नज्द के दरिन्दों को मुबारकबाद पेश करते हैं और दूसरी तरफ़ दरगाहों की मुजावरी के लिए हर जगह साज़िशों का जाल बिछाते फिरते हैं। आख़िर मक्र व फ़रेब की यह तिजारत कब तक नफ़ाबख़्श रहेगी और पसे परदा मुनाफ़िक़त का यह खेल कब तक खेला जाता रहेगा।

बर्रे सग़ीर हिन्द की साढ़े सत्तरह करोड़ मुस्लिम आबादी में है कोई बेलाग साहिबे नज़र जो उनके निफ़ाक़ का दामन चाक करके उन्हें बेपरदा कर दे?

शिद्दते ग़म से छलक आए हैं आँसू वरना
मुद्दआ मेरा नहीं आप से शिक्वा करना

ग़लत फ़हमियों का इज़ाला

मंज़ूर है गुज़ारिशे अहवाल वाक़ई
अपना ब्यान हुस्ने तबीअ़त नहीं मुझे

महमूद अ़ब्बासी की रुसवाए ज़माना किताब "ख़िलाफ़ते मुआ़विया व यज़ीद" नज़्रियाती दुनिया में मौज़ूए बहस बन चुकी है। दर्सगाह, ख़ानक़ाह, कॉलेज और युनिवर्सिटी से लेकर क़हवा ख़ाना, होटल और बाज़ार के चौराहे तक उसका तज़्किरा है। हद तो यह है कि चंडू खाना के अफ़ीमी और फक्कड़ बाज़ भी उसी को तख़्त-ए-मश्क़ बनाते हैं जिसको देख कर आम ज़हनों पर यह दबाव पड़ रहा है कि हो न हो कोई बहुत ही मअ्रकतुल-आरा तस्नीफ़ है। बाज़ सतह बीं हज़रात तो यहाँ तक कह गुज़रते हैं कि आज तक ऐसी मुदल्लल व मुहक्क़क़? किताब लिखी ही नहीं गई, मुसन्निफ़ ने बड़ी दीदह रेज़ी और काविश नज़री का मुज़ाहिरा किया है, हर चन्द सतर बाद तारीख़ व अहादीस की शहादत मौजूद है वग़ैरह वग़ैरह। गोया यह है इस किताब के बारे में एक राय आ़म्मा।

(1) दोस्तो! यह सरासर धोखा है। आपकी मिसाल तो ऐसी ही है जिसने दूर से साहिल की रेत को बहता हुआ पानी और दहकते हुए अंगारे को शादाब फूल समझ रखा हो लेकिन हक़ीक़त उस वक़्त बेनक़ाब होती है जब अंगारे को हथेली पर रखा जाए और रेत को गले से नीचे उतारने की कोशिश की जाए। बिल्कुल यही हाल इस रुसवाए आलम किताब का है! फ़ार्सी अ़रबी से ना आशना या सतही नज़र से मुंताला करने वाला हवाला जात की कसरत व बहुतात देख कर मरऊब हो जाता है। यह तो आपका रोज़ मर्रा है कि धात के सुनहरे टुकड़े पर अक़्वाम ही की नहीं बल्कि ख़्वास की नज़रें भी धोखा खा जाती हैं। यह परखना आसान नहीं होता कि यह टुकड़ा पीतल का है या सोना, ता वक़्त कि कसौटी पर उसको परख न लिया जाए। ऐसे ही हर वह किताब जिसमें आयाते क़ुरआनी, अहादीसे नबवी, तारीख़ी रिवायात और अक़्वाले अइम्मा की शहादतों का एक सैले रवां हो, महज़ इतनी सी बात इस किताब की हक़्क़ानियत व सदाक़त की ज़मानत नहीं ता वक़्त कि इसको अ़क़्ल के तराज़ू पर तौल न लिया जाए और नक़्ल की कसौटी पर परख न लिया जाए।

क्या एक वाइज़ का यह पन्द व मौइज़त आपके ईमान को मुत्मइन कर सकेगा कि तुम लोग नमाज़ मत पढ़ो क्योंकि कुरआन मजीद का इरशाद है: **ला तक़्रबुस्सलात** ऐ लोगो! नमाज़ के क़रीब मत जाओ। यह सुन कर आपका ईमान सहम जाएगा और मसाजिद को आप मुक़फ़्फ़ल कर देंगे या आपके जोशे इस्लाम को ग़ैरत आएगी और आगे बढ़ कर वाइज़ का गरीबान थाम कर यह फ़रमाएंगे कि ऐ नासेह मोहतरम! हमें कुरआन की अ़ज़्मत व हुरमत का ऐतराफ़ मगर लिल्लाह कुरआन व नमाज़ का मज़ाक़ न उड़ाइए! अगर आपको नमाज़ नहीं पढ़नी है तो खुले बन्दों और अ़लल-ऐलान अपने बेनमाज़ी होने का ढिंढ़ोरा पीटिए लेकिन कुरआने हकीम की आयाते करीमा को तोड़ मरोड़ कर या उसमें कतर बुयूनत करके अपनी बेअ़मली की दलील न बनाइए।

अब इसके बाद आप कुरआन मजीद की पूरी आयत पढ़ कर इसलाह फ़रमाएंगे कि **ला तक़्रबुस्सलाते व अंतुम सुकारा।** यानी तुम लोग नशा की हालत में नमाज़ के क़रीब मत जाना। अब मैं आपका इंसाफ़ चाहता हूँ कि वाइज़ ने अपने दावा की दलील में कुरआन ही का एक टुकड़ा पेश किया था मगर आप कुरआन का नाम सुन कर मरऊब न हुए। आख़िर आज आपकी ग़ैरते ईमानी कहाँ सो गई है कि इल्म व अदब की भरपूर महफ़िल में हदीस व तारीख़ का सहारा लेकर कट हुज्जती और बेहयाई का नंगा नाच हो रहा है और आपकी अ़क़्ल मह्वे तमाशा है!

यज़ीद को मुत्तक़ी व परहेज़गार और सरकार इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु को बाग़ी साबित करने के लिए तारीख़ी रिवायात का अंबार इकट्ठा करके आपकी आंखों में धूल झोंकी जा रही है और आप हैं कि इसको तहक़ीक़ व रिसर्च का मरतबा दे रहे हैं, आप क्यों नहीं कह देते कि अगर तुम यज़ीद ही के साथ अपना हश्र चाहते हो तो डंके की चोट पर कहो मगर अपने झूठे और बेबुनियाद दावे की दलील में तारीख़ व सुन्नत को न पेश करो, चन्द सफ़हात पर फैली हुई किताब की सड़ी गली रिवायतों को देख कर आपका ज़हन बोझल हो गया और न जाने कितने के दिमाग़ की चूल खिसक गई और वह यह समझ बैठे कि अ़ब्बासी ने तहक़ीक़ व रिसर्च का हक़ अदा कर दिया है। तहक़ीक़ व तदक़ीक़ का हक़ तो न अदा हुआ,

अल्बत्ता दरोग़ ब्यानी, इफ़्तरा परदाज़ी, बुहतान तराशी और जअ़ल साज़ी में मुअल्लिफ़ ने अपनी मिसाल क़ायम कर दी। अब आगे आ़मिर यज़ीदी जैसे न जाने कितने इस तरज़े तहरीर और उसलूबे ब्यान को अपनाने की कोशिश करेंगे।

मुसन्निफ़ से एक भूल हुई अगर वह किताब के सरे वरक़ पर लिख देता कि उसमें जितने भी नाम और जिस क़द्र हवालाजात हैं वह सब फ़र्ज़ी और इख़्तिराई हैं तो आज उसकी किताब तीरे मलामत का निशाना न बनती बल्कि, अल्फ़ लैला, कलीला दिमना और तिलस्मे होशरुबा जैसी किताबों की सफ़ में रखी जाती और आज कलकत्ता और मुम्बई की इस्तेलाह में ऐसे मुसन्निफ़ को "बंडलबाज़" कहने के बजाए अफ़्साना नवेस और नाविल निगार कहा जाता है।

पहली ग़लती तो इस किताब के बारे में यह है कि हवाला जात की कसरत से ज़ेहन मरऊब हुआ है और दूसरी ग़लती यह है कि किताब की शोहरत से बाज़ लोगों का ज़ेहन व फ़िक्र मुतअस्सिर है। ऐसे सादा लौह हज़रात से बस इतनी सी बात अ़र्ज़ करनी है कि अगर किसी किताब की शोहरत उसके हक़ बजानिब और उम्दा तहक़ीक़ होने की ज़मानत है तो अब से तक़रीबन निस्फ़ सदी पेश्तर "रंगीला रसूल" जैसी रुसवाए आलम किताब लिखी गई थी जिसकी इशाअत पर हिन्दुस्तान का ग़ैरतमन्द मुसलमान हथेली पर सर लिए कफन बरदोश मैदान में उतर आया था और मुल्क के तूल व अर्ज़ में इस किताब ने तहलका मचा दिया था, आ़ख़िरश इस किताब के बारे में आपका क्या ख़्याल है? दूर न जाइए अभी चन्द बरस की बात है "रिलीजीयस लीडर्स" नामी रुसवाए आ़लम किताब की इशाअ़त पर मुल्क के गोशे गोशे में एहतिजाजी जलसे हुए। ऐजीटेशन किया गया और हुकूमत से उसकी ज़ब्ती का मुतालबा किया गया जिसकी पादाश में जनाब के एम मुंशी को उत्तर प्रदेश की गवर्नरी से हाथ धोना पड़ा और भारत की सेकुलर हुकूमत ने उस किताब को ग़ैर आईनी क़रार देकर अपनी इंसाफ पसन्दी और जम्हूरियत नवाज़ी का सुबूत दिया।

अब आप फ़रमाएं "रिलीजीयस लीडर्स" नामी किताब के बारे में आपकी क्या राय है? क्या वह भी रिसर्च और तहक़ीक़े जदीद का आला नमूना थी?

अगर जवाब नफ़ी में है और यक़ीनन है तो कलेजा पर हाथ रख कर फ़रमाइए कि "ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" जैसी फूहड़ और गन्दी किताब के बारे में आपकी सर्द मुहरी के क्या मानी हैं? क्या कोई मुसलमान अह्ले बैत के बारे में ऐसी नारवा जसारत बर्दाश्त कर सकता है जिसको अ़ब्बासी की आवारह क़लम ने तहरीर करके तहक़ीक़ के नाम से पेश किया है? अगर इसके बावजूद कोई इस किताब को शाहकारे क़लम समझे तो इसके सिवा और क्या कहा जाए।

ख़िरद का नाम जुनूं पड़ गया जुनूं का का ख़िरद
जो चाहे आपका हुस्ने करिश्मा साज़ करे

अब एक ढकी छुपी हक़ीक़त की तरफ़ आपको तवज्जोह दिलाई जाती है जिस पर वक़्त की हमाहमी और शोरिश पसन्दों के शोर व ग़ोग़ा ने एक दबीज़ पर्दा डाल रखा है। ऐ काश इस मलऊन किताब पर नार-ए-तहसीन व मरहबा बुलन्द करने वाले कभी अपनी हक़ पसन्द निगाहों से वाक़ेआत व हालात का सही जाइज़ा लेते और यह सोचते कि इस किताब की इशाअ़त पर जिस क़द्र एहतिजाजी कार्रवाई हो रही है वह किस बात की ज़मानत है?

क्या इस बात की कि इसका मुसन्निफ़ कोई मुहक़्क़िक़ या मुअर्रिख़ है?

नहीं और हरगिज़ नहीं। अल्बत्ता इस किताब की इशाअ़त पर मुल्क के आह व फ़ुग़ां ने यह साबित कर दिखाया कि पूरी काइनात इमाम हुसैन के ग़म में मुब्तला है। इमाम हुसैन की शख़्सियते उज़्मा हर मर्दे मुस्लिम के दिल में अपना घर बना चुकी है।

हम हुए तुम हुए कि मीर हुए
सभी इस ज़ुल्फ़ के असीर हुए

अ़ब्बासी कोई नई कौड़ी नहीं लाए, अपने ही बुज़ुर्गों की शतरंजी चाल को अपनाया है। मौलवी अ़ब्दुश्शकूर लखनवी ने जो आग लगाई थी उसकी दबी हुई चिंगारियों को अ़ब्बासी ने हवा दी है। यह तो उनके असलाफ़ का दस्तूर रहा है कि अगर नाम पैदा करना है तो किसी बड़ी शख़्सियत से टकराव। दामने तारीख़ पर इसकी एक दो नहीं सदहा मिसालें मौजूद हैं।

अबू लूलू, ख़ोली और इब्ने मुल्जिम वगैरह का नाम इसलिए नहीं लिया जाता कि इन में कोई अपने वक़्त का मुफ़स्सिर, मुहद्दिस और मुअर्रिख़ या फ़क़ीहे आज़म था बल्कि यह सब के सब उन क़ाइदीने इस्लाम के क़ातिल हैं जिनकी अज़्मत व बुजुर्गी का परचम आज भी क़स्रे तारीख़ पर लहरा रहा है। क्या हिन्दो पाक की तारीख़ आप भूल गए? आख़िरश दोनों मम्लकत में गोड्से और अक्बर का नाम क्यों लिया जाता है? क्या यह दोनों हिन्द व पाक के मुम्ताज़ लीडर गुज़रे हैं? जवाब यक़ीनन नफ़ी में होगा। अब तो आप ने अंदाज़ा कर लिया है कि नाम पैदा करने का यह किस क़द्र आसान तरीक़ा है। वक़्त का मुअर्रिख़ जब कभी भी गाँधी जी और नवाबज़ादा लियाक़त अ़ली खाँ की तारीख़ मुरत्तब करेगा तो यह सवानेह मुकम्मल न हो सकेगी तावक़्त कि दोनों लीडरों के क़ातिल गोड्से और अक्बर कां तज़्किरा न किया जाए।

ऐसे ही यज़ीद की शोहरत का बाइस उस की अमारते सालेहा या उसकी मअ़दिलत गुस्तरी और इंसाफ परवरी नहीं है बल्कि उसके दामन पर आक़ा-ए-दोजहाँ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चहेते और लाडले नवासे सरकार हुसैन के ख़ून की छींटें हैं और आज भी काइनात की निगाहे बसीरत बनू उमैया की तल्वार से इमाम हुसैन का टपकता हुआ लहू देख रही है। सदियाँ गुज़र गईं मगर यज़ीदी फ़ौज के हाथ से ख़ून की वह लाली न गई जिस से कभी वहशियों ने मैदाने करबला को लाला गूं बना दिया था।

अब अ़ब्बासी का क़लम अपने चहेते यज़ीद की सफ़ाई में बहका बहका फिर रहा है। कुरआन व हदीस ने तो उसको अपने दामन में पनाह दी अल्बत्ता किज़्ब व इफ़्तरा ने उसके नोके क़लम को चूमा और मक्र व फ़रेब की हर रिवायत को कुरआन व सुन्नत की तरफ़ मंसूब कर दिया या कुरआन व सुन्नत की हर रिवायत को अपनी मन घड़त तहक़ीक़ से दाग़दार कर दिया।" यह है इस किताब का पस मंज़र" अभी नहीं यह फ़ैसला तो क़यामत के हाथ है जब हुसैनी क़ाफ़िले के सामने यज़ीदी लश्कर मुज्रेमाना खड़े हो कर यह कहता होगा।

दामन को लिए हाथ में कहता है यह क़ातिल
कब तक इसे धोया करूं लाली नहीं जाती

मुझे अफ़सोस है कि यह बात बहुत फैल गई है, ख़ुलास-ए-गुफ़्तगू यह है कि "ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" वक़्त की इंतिहाई मुस्लिम आज़ार, दिल ख़राश, ग़ैर मुस्तनद, साक़ितुल-ऐतबार और किज़्ब व इफ़्तरा से भरपूर किताब है। महज़ सस्ती शोहरत कमाने की ख़ातिर या चाँदी के चन्द सिक्कों की हिर्स व तमअ में यह ड्रामा खेला गया है।

अब जिनको यज़ीदी फ़ेहरिस्त में अपना नाम दर्ज कराना हो वह इस किताब की हाँ में हाँ मिलाएं और जिन्हें कल क़यामत की हौलनाकियों में आले पैग़म्बर के दामन में पनाह लेनी हो, वह इस किताब पर नफ़्रें व मलामत करें, मुझे तो एक आशिक़े रसूल हज़रत नियाज़ बरैलवी कुद्देस सिर्रुहू की यह अदा बहुत ही पसन्द आई। किसी ने हज़रत मौसूफ़ से अर्ज़ की कि यज़ीद के बारे में हज़रत की क्या राय है? तो जवाबन आपने फ़रमाया "जितनी देर यज़ीद के बारे में ख़्याल किया जाए उस से कहीं ज़्यादा बेहतर यह है कि इतनी देर तक हुसैन हुसैन कहा जाए जो बाइसे शहादत और मूजिबे नजात है।"

इसके बावजूद अगर आज ख़ार्जी तबक़ा आप से उलझता है तो यह कह कर आप उन से अलग हो जाइए कि –

अक़ाइद में किसी के दख़ल देने की ज़रूरत क्या
क़यामत पर भी रहने दोगे कोई फ़ैसला बाक़ी

तुम अपनी राह चलो मुझे अपनी राह जाने दो।

सबू अपना अपना है जाम अपना अपना
किए जाओ मयख़्वारो काम अपना अपना

अगर यज़ीदियत तुम्हारे ग़ुरूर की शान है तो हुसैनियत हमारे आबरू की आन।

फ़ुरात की लहरों पर दो यतीमों का मदफ़न

आज ख़ानवाद-ए-नुबुव्वत के चश्म व चराग़ हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के मुक़द्दस ख़ून से कूफ़े की सरज़मीन सुर्ख़ हो गई थी। नबीज़ादे के ख़ैर मक़्दम के लिए आंखों का फ़र्श बिछाने वाली आबादी अब उसकी तड़पती हुई लाश के सामने मुस्कुरा रही थी।

तलवारों की धार, बर्छियों की अनी और तीरों की नोक पर अब भी ख़ून के निशानात मौजूद थे। इब्ने ज़्याद के हुक्म से हज़रत इमाम की मुक़द्दस नअ़श शाहराहे आ़म पर लटका दी गई थी, कई दिन तक लटकती रही, नबी का कलिमा पढ़ने वाले खुली आंखों से यह हौलनाक मंज़र देखते रहे। आले रसूल की जान लेकर भी शक़ावतों की प्यास नहीं बुझ सकी। हाए रे नैरंगी-ए-आलम! ज़मीन व आसमान की उस्अ़ते काइनात जिसके घर की मिल्कीयत थी आज उसकी तुर्बत के लिए कूफ़े में गज़ भर ज़मीन नहीं मिल रही थी।

जिसकी रहमतों के फ़ैज़ान ने अह्ले ईमान की जानों का नर्ख़ ऊंचा कर दिया था आज उसी के नूरे नज़र का ख़ून अरज़ां हो गया था। शर्म से सूरज ने मुँह छुपा लिया। फ़ज़ाओं ने सोग की चादर ओढ़ ली और जब शाम आई तो कूफ़ा एक भयानक तारीकी में डूब गया था। मेहमान के साथ कूफ़े वालों की वफ़ा क़्यामत तक के लिए ज़र्बुल-मसल बन गई।

शक़ावतों की इंतिहा अभी नहीं हुई थी। जोर व सितम की वादी में बदबख़्तों का घिनावना अंधेरा और बढ़ता जा रहा था।

अचानक रात के सन्नाटे में इब्ने ज़्याद की हुकूमत के एक मुनादी ने ऐलान किया "मुस्लिम के दोनों बच्चे जो हमराह आए थे कहीं रूपोश हो गए हैं। हुकूमत की तरफ़ से हर ख़ास व आ़म को मुतनब्बह भी किया जाता है कि जो भी उन्हें अपने घर में पनाह देगा, उसे इबरतनाक सज़ा दी जाएगी और जो उन्हें गिरफ़्तार करके लाएगा उसे इंआ़म व इकराम से माला माल कर दिया जाएगा।"

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु के दोनों यतीम बच्चे

जिन में से एक का नाम मुहम्मद था और उनकी उम्र आठ साल की थी और दूसरे का नाम इब्राहीम था और उनकी उम्र छः साल की थी, कूफ़े के मशहूर आशिक़े रसूल क़ाज़ी शरीह के घर में पनाहगुज़ीं थे। यह ऐलान सुन कर क़ाज़ी शरीह का कलेजा हिल गया। हज़रत मुस्लिम के जिगर गोशों का दर्दनाक अंजाम निगाहों के सामने नाचने लगा। देर तक इसी फ़िक्र में ग़ल्तां रहे कि किस तरह उन्हें ज़ालिमों के चुंगुल से बचाया जाए।

काफ़ी ग़ौर व ख़ौज़ के बाद यह सूरत समझ में आई कि रातों रात बच्चों को कूफ़े से बाहर मुंतक़िल कर दिया जाए। इज़्तिराब की हालत में अपने बेटे को आवाज़ दी :

"निहायत एहतियात के साथ किसी महफ़ूज़ रास्ते से बच्चों को शहर पनाह के बाहर पहुँचा दो। रात को मदीने की तरफ़ जाने वाला एक क़ाफ़िला आबादी के क़रीब से गुज़र रहा है इन्हें किसी तरह उनके साथ लगा दो।"

ज़ादेराह मुकम्मल हो जाने के बाद रुख़्सत करने के लिए दोनों बच्चों को सामने बुलाया जूं ही उन पर नज़र पड़ी क़र्ते ग़म से आंखें भीग गईं। ज़ब्त का पैमाना छलक उठा। मुँह से एक चीख़ निकली और बेताब हो कर दोनों बच्चों को सीने से लगाया। पेशानी चूमी, सर पर हाथ रखा, सकते की हालत में देर तक दम बख़ुद रहे।

बाप की शहादत के वाक़िया से बच्चे अब तक बेख़बर रखे गए थे। न उन्हें यही बताया गया था कि अब ख़ुद उनकी नन्हीं गर्दनें भी ख़ून आशाम तल्वारों की ज़द पे हैं।

क़ाज़ी शरीह की इस कैफ़ियत पर बच्चे हैरत से एक दूसरे का मुँह तकने लगे। बड़े भाई ने हैरानी के आलम में दरयाफ़्त किया :

"हमें देख कर गिरिया बेइख़्तियार की वजह समझ में नहीं आ रही है। अचानक इतनी रात को पास बुला कर हमारे सरों पर शफ़्क़त का हाथ रखना बेसबब नहीं है। इस तरह की फूट पड़ने वाली हमदर्दी तो हमारे ख़ानदान में यतीमों के साथ की जाती है।"

तेज़ नश्तर की तरह दिल में आर पार होने वाला यह जुमला अभी ख़त्म नहीं होने पाया था कि फिर फज़ा में एक चीख़ बुलन्द हुई और क़ाज़ी शुरैह ने बरस्ती हुई आंखों के साथ गुलूगीर आवाज़ में बच्चों को जवाब दिया :

"गुलशने रसूल के महकते गुंचो! कलेजा मुँह को आ रहा है, ज़ुबान में

गोयाई नहीं है किस तरह ख़बर दूँ कि तुम्हारे नाज़ का चमन उजड़ गया और तुम्हारी उम्मीदों का आशियाना दिन दहाड़े ज़ालिमों ने लूट लिया।"

हाए! प्रदेस में तुम यतीम हो गए। तुम्हारे बाप को कूफ़ियों ने शहीद कर डाला और अब तुम्हारी नन्हीं जान भी ख़तरे में है। आज शाम ही से ख़ून के प्यासे तुम्हारी तलाश में हैं "नंगी तल्वार लिए हुए हुकूमत के जासूस तुम्हारे पीछे लग गए हैं।"

यह ख़बर सुन कर दोनों बच्चे हैबत व ख़ौफ से काँपने लगे। नन्हा सा कलेजा सहम गया, फूलों की शादाब पंखड़ी मुरझा गई। मुँह से एक चीख़ निकली और ग़श खा कर ज़मीन पर गिर पड़े। हाए रे तक़्दीर का तमाशा! अभी चन्द ही दिन हुए कि माँ की मामता ने प्यार की ठंडी छाओं में मदीने से रुख़्सत किया था। नाज़ उठाने के लिए बाप की शफ़्क़तों का क़ाफ़िला साथ चल रहा था। अब न बाप का दामन है कि पकड़ कर मचल जाएं न मां का आंचल है कि सहम जाएं तो मुँह छुपा लें। कच्ची नींद सो कर उठने वाले अब किसे आवाज़ दें। कौन उनकी पल्कों का आंसू अपनी आस्तीन में जज़्ब करे।

आह! ग़ुंचों की वह नाज़ुक पंखड़ी जो शबनम का बार भी नहीं उठा सकती आज उस पर ग़म का पहाड़ टूट पड़ा है।

प्रदेस में नन्हीं जानों के लिए बाप की शहादत ही की ख़बर क्या कम क़्यामत थी कि अब ख़ुद अपनी जान के लाले पड़ गए थे। क़ज़ा, तेत बरहना लिए सर पर खड़ी थी, आँखों के सामने उम्मीदों का चराग़ गुल हो रहा था। क़ाज़ी शुरैह से बच्चों का बिलक बिलक कर रोना और पिछाड़े खा खा कर तड़पना देखा नहीं जा रहा था, बड़ी मुश्किल से उन्होंने तसल्ली देते हुए कहा :

"बनू हाशिम के नौनिहालो! इस तरह फूट-फूट कर मत रोओ। दुश्मन दीवार से कान लगाए खड़े हैं, तुम अपने बाप की एक मज़्लूम यादगार हो। ताजदारे अरब की एक मुक़द्दस अमानत हो। नाज़ुक आबगीनों को कहीं ठेस लग गई तो मैं अ़रस-ए-महशर में मुँह दिखाने के लाइक़ नहीं रहूँगा। इसलिए मेरी ख़्वाहिश यह है कि किसी तरह तुम्हें मदीने के दारुल-अमान तक पहुँचा दिया जाए।"

"इसी वक़्त तुम दोनों रात के सन्नाटे में हमारे बेटे के हमराह कूफ़े से बाहर निकल जाओ और जो क़ाफ़िला मदीने की तरफ़ जा रहा है उसमें

शामिल हो जाओ। अपने नाना जान के जवारे रहमत में पहुँच कर हमारी तरफ़ से दरूद व सलाम की नज़्र पेश कर देना। अच्छा जाओ! खुदा तुम्हें अपने हिफ़्ज़ व अमान में रखे।"

भीगी पल्कों के साए में क़ाज़ी शुरैह ने बच्चों को रुख़्सत किया। पासबानों और जासूसों की निगाहों से छुप छुपा कर क़ाज़ी शुरैह के बेटे ने बहिफ़ाज़त तमाम उन्हें कूफ़ा की शहर पनाह से बाहर पहुँचा दिया। सामने कुछ ही फ़ासिले पर एक गुज़रते हुए क़ाफ़िले की गर्द (धूल) नज़र आई। उंगली के इशारों से बच्चों को दिखलाया, इशारा पाते ही तेज़ी से बच्चे क़ाफ़िले की तरफ़ दौड़े और निगाहों से ओझल हो गए।

रात का वक़्त, दहशतखे़ज़ सन्नाटा, भयानक अंधेरा, ख़ौफ़ व हैबत में डूबा हुआ माहौल और आग़ोशे मादर की ताज़ा बिछड़ी हुई दो जानें, न हाथ में अक़्ल व शुऊर का चराग़ न साथ में कोई रफ़ीक़ व रहबर थोड़ी दूर चल कर रास्ता भूल गए।

हाए रे गर्दिशे अय्याम! कल तक जिन लाडलों का क़दम फूलों की सेज पर था आज इन्हीं राह में कांटों की बरछियाँ खड़ी थीं। जो अपने नाना जान के मज़ार तक भी बाप की उंगलियों का सहारा लिए बग़ैर नहीं जा सकते थे आज वह एका व तन्हा दश्ते गुरबत में भटकते फिर रहे थे। कभी चलने की आ़दत नहीं थी चलते चलते गिर पड़ते। क़दम-क़दम पर ठोकर लगती, तलुवों में कांटे चुभते तो उफ़ कर के बैठ जाते। हवा संसनाती तो दहशत से कांपने लगते। पत्ते खड़कते तो नन्हा सा कलेजा सहम जाता। दरिन्दों की आवाज़ आती तो चौंक कर एक दूसरे से लिपट जाते। डर लगता तो ठिठक जाते फिर चलने लगते, कभी बिलक बिलक कर मां को याद करते। कभी मचल मचल कर बाप को आवाज़ देते। कभी हैरानी के आ़लम में एक दूसरे का मुँह तकते और कभी डबडबाई आँखों से आसमान की तरफ़ देखते।

जब तक पाँव में सकत रही इसी कैफ़ियत के साथ चलते रहे, जब मायूस हो गए तो एक जगह थक कर बैठ गए।

ज़रा तक़्दीर का तमाशा देखिए कि रात का पिछला पहर था। ढलती हुई चाँदनी हर तरफ़ बिखर गई थी। इब्ने ज़्याद की पुलिस का एक दस्ता जो उनकी तलाश में निकला था, गश्त करता हुआ ठीक वहीं आ कर रुका। ज्यों ही बच्चों पर नज़र पड़ी क़रीब आया और दरयाफ़्त किया :

तुम कौन हो?

बच्चों ने यह समझ कर कि यतीमों के साथ हर शख़्स को हमदर्दी होती है अपना सारा हाल साफ़-साफ़ ब्यान कर दिया।

हाए रे बचपन की मासूमी! उन भोले भाले नौनिहालों को क्या ख़बर थी कि वह ख़ून के प्यासों को अपना पता बता रहे हैं।

यह मालूम होने के बाद कि यही हज़रत मुस्लिम के दोनों बच्चे हैं। जल्लादों ने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया। मशकें कसीं और घसीटते हुए हमराह ले चले।

यह दर्दनाक मंज़र देख कर डूबते हुए तारों की आंखें झपक गईं। चाँद का चेहरा फ़क़ हो गया। शिद्दते करब से इब्ने अक़ील के यतीम बिलबिला उठे, दिल हिला देने वाली एक फ़रियाद सहरा में गूंजी।

"हम बिन बाप के बच्चे हैं, हमारी यतीमी पर रहम करो, रात रात भर चलते चलते पाँव में छाले पड़ गए, हमारी मशकें खोल दो, अब अज़ीयत बर्दाश्त करने की सकत बाक़ी नहीं है, नाना जान का वास्ता! हमारे घायल जिस्म पर तरस खाओ, सुंसान जंगल में यतीमों की फ़रियाद सुन लो।"

उस नाल-ए-दर्द से धर्ती का कलेजा हिल गया, लेकिन संग दिल अश्क़िया ज़रा भी मुतअस्सिर नहीं हुए, तरस खाने के बजाए ज़ालिमों ने फ़र्ते ग़ज़ब में फूल जैसे रुख़्सारों पर तमांचे मारते हुए जवाब दिया।

"तुम्हारी तलाश में क़ई दिन से आंखों की नींद उड़ गई है, खाना पीना हराम हो गया और तुम राहे फ़रार इख़्तियार करने के लिए जंगल जंगल छुपते फिर रहे हो, जब तक तुम कैफ़रे किरदार तक नहीं पहुँच जाते तुम पर रहम नहीं किया जाएगा।"

तमांचों की ज़र्ब से नूर के सांचे में ढली हुई सूरतें मांद पड़ गईं और चेहरे पर उंगलियों के निशानात उभर आए।

रोने की भी इजाज़त नहीं थी कि दिल क़ा बोझ हल्का होता। एक गिरफ़्तार पंछी की तरह सिसकते, लरज़ते, कांपते, सर झुकाए शिकंजे में कसे, क़दम क़दम पर जफ़ाकारों के ज़ुल्म व सितम की चोट खाते रहे।

अब उम्मीद का चराग़ गुल हो चुका था, दिल की आस टूट चुकी थी, सब को आवाज़ दे कर थक चुके थे कहीं से कोई चारागर न आया। बिल-आख़िर नन्हा सा दिल मायूसियों के साथ-साथ सागर में डूब गया।

अब मौत का भयानक साया दिन के उजाले में नज़र आ रहा था। इसी

आम यास में वह कुशां कुशां कूफ़ा की तरफ बढ़ रहे थे। अपने मुस्तक़र पर सिपाहियों ने इब्ने ज़्याद को ख़बर दी।

हुक्म हो तो बच्चों को कैदखाने में डाल दिया जाए और जब तक दमिश्क़ से कोई इत्तिलाअ़ नहीं आ जाती कड़ी निगरानी रखी जाए।

हुकूमत के सिपाही इब्ने ज़्याद की हिदायत पर दोनों बच्चों को दारोग़ा-ए-जेल के हवाले करके चले गये। दारोग़ा निहायत शरीफुन्नफ़्स और दिल से जाँनिसारे अह्ले बैत था, उसने निहायत अक़ीदत व मुहब्बत के साथ हाशमी शहज़ादों की राहत व आसाइश का इंतिज़ाम किया।

दोपहर रात गुज़र जाने के बाद अपनी जान पर खेल कर उसने दोनों शहज़ादों को जेल से बाहर निकाला और अपनी हिफ़ाज़त में क़ादसीया जाने वाली सड़क पर उन्हें पहुँचा कर एक अंगूठी दी और अपने भाई का पता बताते हुए कहा कि क़ादसीया पहुँच कर उस से मुलाक़ात करना और बतौर निशानी यह अंगूठी दिखाना, वह बहिफ़ाज़त तमाम मदीना पहुँचा देगा। यह कह कर उसने डबडबाई हुई आँखों से बच्चों को रुख़्सत किया।

क़ादसीया की तरफ़ जाने वाला कारवां कुछ ही दूर पर तैयार खड़ा था। बच्चे बेतहाशा उसकी तरफ दौड़े, लेकिन नविश्त-ए-तक़्दीर ने फिर यहाँ अपना करिशमा दिखाया, फिर घटा की ओट से निकला हुआ सूरज गहना गया, फिर मदीने के इन नन्हें से मुसाफिरों को दश्ते गुर्बत की बलाओं ने आ के घेर लिया।

फिर कुछ दूर चल कर रास्ता भटक गए, क़ाफिला नज़र से ओझल हो गया।

फिर रात का वही सन्नाटा, वही ख़ौफ़नाक तारीकी, वही सुंसान जंगल, वही शामे ग़ुर्बत का डरावना ख़्वाब, हर तरफ़ ख़ूँ आशाम तल्वारों का पहरा, क़दम क़दम पर दहशतों का साया।

चलते चलते पाँव शल हो गए, तलवों के आबले फूट फूट कर बहने लगे, रोते रोते आंखों का चश्मा सूख गया।

सुबह हुई तो देखा कि जहाँ को रात से चले थे घूम फिर कर वहीं मौजूद हैं।

हाए रे तक़्दीर का चक्कर! इस दुनिया में कीड़े मकोड़े और चरिन्द परिन्द तक का अपना रैन बसेरा है लेकिन खानदाने नुबुव्वत के दो नन्हें यतीमों के लिए कहीं पनाह की जगह नहीं है। सवेरा हो गया और हर तरफ़

लोगों की आमद व रफ़्त शुरू हो गई तो कल की गिरफ़्तारी का वाक़या याद करके बच्चे बे-क़रार हो गए, दुश्मन की नज़र से छुपने के लिए हर तरफ़ नज़र दौड़ाई लेकिन चटयल मैदान में कोई महफ़ूज़ जगह नहीं मिल सकी।

हैरानी, बेचार्गी, मायूसी और ख़ौफ़ व हेरास के आलम में दोनों भाई हसरत से एक दूसरे का मुँह तकने लगे।

नन्हा सा दिल कमसिनी की अक़्ल कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि कहाँ जाएं? अंजाम सोच कर आँखें डबडबा आईं।

थोड़ी सी दूर पर एक चश्मा बह रहा था, बड़े भाई ने छोटे से कहा :

"चलो वहाँ हाथ मुँह धो लें, नमाज़े फ़ज्र का वक़्त भी हो गया है, ख़ुदा की तरफ़ से अगर हमारा आख़िरी वक़्त आ ही गया है तो अब उसे कोई नहीं टाल सकता।"

चश्मे के क़रीब पहुँच कर उन्हें एक बहुत पुराना दरख़्त नज़र आया, उसका तना अन्दर से खोखला था, पनाह की जगह समझ कर दोनों भाई उसी में छुप के बैठ रहे।

ज़रा सी आहट होती तो दिल धड़कने लगता, कोई राहगीर गुज़रता तो दुश्मन समझ कर सहम जाते।

एक पहर दिन चढ़ने के बाद कूफ़ा की तरफ़ से एक लौंडी पानी भरने की ग़रज़ से चश्मे के किनारे आई, पानी में बर्तन डुबोना ही चाहती थी कि उसे सतहे आब पर आदमी का अक्स नज़र आया, पलट कर देखा तो वह नन्हें बच्चे दरख़्त की खोह में सहमे हुए बैठे थे।

सफ़ेद पेशानी से नूर की किरन फूट रही थी, लाला की तरह दहकते आ़रिज़ पर मौसमे ख़िज़ां की उदासी छा गई थी।

लौंडी ने हैरानी के आ़लम में दरयाफ़्त किया, ऐ गुलशने दिल रुबाई के नौ शगुफ़्ता फूलो!

तुम कौन हो कहाँ से आए हो?

एक बार के डरे हुए थे, कुछ जवाब देने के बजाए ख़ौफ़ व दहशत से लरज़ने लगे, फूट फूट कर बहने वाले आंसुओं से चेहरा शराबोर हो गया।

लौंडी ने तसल्ली आमेज़ लहजे में कहा, नाज़ के पले हुए लाडलो! किसी तरह का अन्देशा न करो, दिल से दहशत निकाल दो! यक़ीन करो मैं तुम्हारे घर की भिखारन हूँ, दुश्मन नहीं हूँ।

तुम न भी अपना पता ठिकाना बताओ जब भी तुम्हारा यह नूरानी चेहरा

समझने के लिए काफी है कि तुम बीबी फ़ातिमा की जन्नत के फूल हो।

सच बताओ! क्या तुम ही दोनों इमाम मुस्लिम के नौनिहाल हो? लौंडी ने चेहरे की बलाएं लेते हुए कहा। फ़लक नशीन शहज़ादो! कीड़े मकोड़ों के भट से बाहर निकलो आओ! मेरे दिल में बैठो, आँखों में समा जाओ।

लौंडी के इसरार पर बच्चे दरख़्त की खोह से बाहर निकले और हमदर्द व ग़मगुसार समझ कर उस से अपना सारा हाल ब्यान कर दिया।

उनकी दर्दनाक सरगुज़श्त सुन कर लौंडी का दिल दहल गया, आंखें सावन भादों की तरह बरसने लगीं। दिल की बेक़रार कैफ़ियत पर क़ाबू पाने के बाद बच्चों को चश्मे के किनारे ले गई। आंसू पोंछे, मुँह धुलाया, बालों का ग़ुबार साफ़ किया और उन्हें दिलासा देते हुए महफ़ूज़ रास्ते से अपने घर लाई, उसकी मालिका भी खानदाने अह्ले बैत से वालेहाना अक़ीदत रखती थी।

अपनी मालिका के सामने दोनों बच्चों को पेश करते हुए कहा :

ख़ुशनसीब बीबी! चमनिस्ताने फ़ातमी के दो फ़ूल ले कर आई हूँ, यह दोनों इमाम मुस्लिम के लाडले हैं, बिन बाप के यतीम बच्चे हैं, प्रदेस में इनका कोई नहीं है, इनकी बेकसी और यतीमी पर तरस खाने के बजाए ज़ालिम अब इन बेगुनाहों के ख़ून के दरपे हैं, ख़ौफ़ व दहशत से नन्हा सा कलेजा सूख गया है, हाशमी घराने के यह दोनों लाल डर के मारे दरख़्त की एक खोह में छुपे हुए थे।

बीबी! सूरज सवा नेज़े पे आ गया लेकिन गहवार-ए-मादर से निकले हुए इन शीर ख़्वार बच्चों के मुँह में एक खील (दाना) भी अभी तक नहीं पड़ी है।

मालिका यह सारा माजरा सुन कर तड़प गई, गिरिया बेइख़्तियार से उसके आंचल का दामन भीग गया, वारफ़्तगी-ए-शौक़ में बच्चों को गोद में बैठा लिया, चेहरे की बलाएं लीं, सर पे हाथ फेरा और नहला धुला कर कपड़े बदलवाए, आंखों में सुरमा लगाया, ज़ुलफ़ें संवारीं और खिला पिला कर एक महफ़ूज़ कोठरी में आराम करने के लिए बिस्तर लगाया।

क़दम क़दम पर शफ़्क़त व प्यार का फूटता हुआ सैलाब देख कर ग़रीबुल-वतन बच्चों को मां याद आ गई, यकायक मम्ता की गोद का पला हुआ अरमान मचल उठा, बेताब हो कर रोने लगे।

फूल जैसे रुख़्सारों पर ढलकते हुए आंसू देख कर मालिका बेचैन हो गई, दौड़ कर सीने से लिपटा लिया, अपने आंचल के पल्लू से आंसू पोंछते

और तसल्ली देते हुए कहा :

आंख के तारो! इस घर को अपना ही घर समझो! तुम्हारे कदमों पर मेरी जान निसार! मेरी रूह सदके, मैं जब तक जिन्दा रहूँगी तुम्हारा हर नाज़ उठाऊंगी, तुम्हारे दम कदम से मेरे अरमानों का चमन खिल गया है, मेरे आंगन में छमाछम नूर की बारिश हो रही है।

रात की भयानक सियाही हर तरफ फैल गई थी, इमाम मुस्लिम के यतीम बच्चों की तलाश में हुकूमत के जासूस और दुनिया के लालची कुत्ते गली गली फिर रहे थे, काफी देर तक घर की मालिका अपने शौहर "हारिस" के इंतिज़ार में जागती रही, एक पहर रात ढल जाने के बाद वह हांपता कांपता थका मांदा घर वापस आया।

बीवी ने हाल देख कर अचंभे से पूछा "आज इतने परिशान व बेहाल क्यों नज़र आते हैं आप?

कुछ दम लेने के बाद जवाब दिया :

तुम्हें शायद ख़बर नहीं है कि बाग़ी मुस्लिम के हमराह उसके दो बच्चे भी आए थे, कई दिन तक वह कूफ़ा में रूपोश रहे, परसों सुबह को मदीने की तरफ जाने वाले रास्ते के क़रीब उन्हें गिरफ़्तार करके जेल में डाल दिया गया। कल रात के किसी हिस्से में दारोग़ा-ए-जेल की साज़िश से वह फ़रार हो गए।

इब्ने ज़्याद की तरफ़ से आ़म मुनादी कर दी गई है जो उन्हें पकड़ कर लाए उसे मुँह मांगा इंआ़म दिया जाएगा।

वक़्त का सब से बड़ा ऐजाज़ हासिल करने के लिए इस से ज़्यादा अच्छा मौक़ा अब हाथ नहीं आएगा बेगम!

सुबह से उन्हीं बच्चों की तलाश में सरगरदां हूँ, दौड़ते दौड़ते बुरा हाल है, अभी तक कोई सुराग़ नहीं लग सका।

हारिस की बात सुन कर बीबी का कलेजा धक से हो गया, दिल ही दिल में पेच व ताब खाने लगी, मसहूर कर देने वाली एक अदाए दिलबराना के साथ उस ने अपने शौहर को समझाना शुरू किया।

"इब्ने ज़्यादा आले रसूल का ख़ूने नाहक़ बहा कर अपनी आ़क़िबत बरबाद कर रहा है, दुनिया की आसाइश चन्द रोज़ा है, इंआ़म की लालच में जहन्नम का हौलनाक अ़ज़ाब मत खरीदीए।

ज़रा अपने दिल पर हाथ रख कर सोचिए! कल मैदाने महशर में रसूले

ख़ुदा को हम क्या मुँह दिखाएंगे।

हारिस का दिल पूरी तरह सियाह हो चुका था, बीवी की बातों का कोई असर उसके दिल पर नहीं था, झुंझलाते हुए जवाब दिया :

"नसीहत करने की कोई ज़रूरत नहीं है, आक़िबत का नफ़ा नुक़्सान मैं समझता हूँ, मेरा इरादा अटल है, अपनी जगह से कोई भी मुझे नहीं हटा सकता।"

संग दिल शौहर की नीयते बद मालूम होने के बाद मिनट मिनट पर दिल धड़क रहा था कि मबादा ज़ालिम को कहीं बच्चों की भनक न लग जाए, इसलिए जल्द ही उसे खिला पिला कर सुला दिया और जब तक नींद नहीं आ गई, बालें पर बैठी उसे बातों में बहलाती रही, जब वह सो गया तो दबे पाँव उठी और बच्चों की कोठरी में ताला डाल दिया।

फ़िक्र से आंखों की नींद उड़ गई थी, रह रह कर दिल में हूक उठती थी।

"हाए अल्लाह! हरमे नुबुव्वत के उन राज दुलारों को कुछ हो गया तो हश्र के दिन सैयदा को क्या मुंह दिखाऊंगी?

दुनिया क़्यामत तक मेरे मुँह पर थूकेगी कि मैंने नबीज़ादों के साथ दग़ा की, उन्हें झूठा दिलासा दे कर मक़्तल की रहगुज़र तक ले आई, आह! मेरे इश्क़े पारसा का सारा भ्रम लुट गया, मेरे हसीन ख़्वाबों का तार तार बिखर गया।

हाए! अफ़सोस! इस घर को मासूम बच्चे अपना ही घर समझ रहे होंगे, कहीं यह राज़ फ़ाश हो गया तो उनके नन्हें दिल पर क्या गुज़रेगी, वह मुझे अपने तईं क्या समझेंगे? लेकिन मेरे दिल का हाल ख़ुदा और उसके रसूल से छुपा हुआ नहीं है। कुछ भी हो जीते जी लाडलों की जान पर कोई आफ़त नहीं आने दूँगी।

"या अल्लाह! मुझे अपने महबूबों के इश्क़ में साबित क़दम रख, उनके आंसू का गौहर टपकने से पहले मेरे जिगर का ख़ून अरज़ां कर दे।"

रात का पिछला पहर था, कूफ़े की बदनसीब आबादी पर हर तरफ नींद की ख़मोशी छाई हुई थी, हारिस भी अपने घर में बेख़बर सो रहा था।

दोनों बच्चे बन्द कोठरी में मह्वे ख़्वाबे नाज़ थे कि इसी दरम्यान उन्होंने एक निहायत दर्दनाक और हैजान अंगेज़ ख़्वाब देखा :

चश्म-ए-कौसर की सफ़ेद मौजों से नूर की किरन फूट रही है, बागे फ़िरदौस की शाहराहों पर चाँदनी का ग़िलाफ़ बिछा दिया गया है। क़रीब

ही कुछ फ़ासिले पर शहनशाहे कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, मौलाए काइनात हज़रत हैदर, बिन्ते रसूल फातिमा ज़हरा और शहीदे मज़्लूम हज़रत इमाम मुस्लिम रिज़वानुल्लाह अलैहिम जलवा फरमा हैं।

दोनों बच्चों पर नज़र पड़ते ही सरकार ने इमाम मुस्लिम से मुख़ातिब हो कर फ़रमाया :

मुस्लिम! तुम खुद तो आ गए और जौरो सितम का निशाना बनने के लिए हमारे जिगरपारों को अश्किया के हाथों में छोड़ आए?

हज़रत मुस्लिम ने नीची निगाह किए जवाब दिया, वह भी पीछे पीछे आ रहे हैं हुज़ूर! बहुत क़रीब आ चुके हैं, बस दो चार क़दम का फ़ासिला रह गया था। खुदा ने चाहा तो कल का सूरज तुलूअ़ होते ही वह दामने रहमत की ठंडी छांव में मचल रहे होंगे।

यह ख़्वाब देख कर दोनों भाई चौंक पड़े, बड़े ने छोटे को झिंझोड़ते हुए कहा, अब सोने का वक़्त नहीं, हमारी शबे ज़िन्दगी की सहर हो गई।

भैया! उठो! बाबा जान ने खबर दी है कि अब हम चन्द घन्टे के मेहमान हैं, हौज़े कौसर पर नाना हुज़ूर हमारे इंतिज़ार में खड़े हैं, दादी अम्मां निहायत बेताबी के साथ हमारी राह देख रही हैं।

भैया! सब्र कर लो! अब दुश्मन की ख़ून आशाम तल्वारों की ज़द से बच निकलना बहुत मुश्किल है अब मदीने लौट कर जाना नसीब नहीं होगा, हाए! अम्मी जान, अब आख़िरी वक़्त में भी मुलाक़ात नहीं हो सकेगी।

छोटे भाई ने डबडबाती आवाज़ में जवाब दिया :

भाई जान! मैंने भी इसी तरह का ख़्वाब देखा है, क्या सच मुच हम लोग कल सुबह को क़त्ल कर दिए जाएंगे?

हाए! एक दूसरे को ज़ब्ह होते हम कैसे देख सकेंगे भैया?

यह कह कर दोनों भाई एक दूसरे के गले में बाहें डाल कर लिपट गए और फूट फूट कर रोने लगे।

क़ज़ा भी ताक ही में थी, नाल-ए-बेइख़्तियार की आवाज़ से जल्लाद हारिस की आंख खुल गई। आह सोती हुई क़्यामत उठी।

ज़ालिम ने बीवी को जगा कर पूछा :

यह बच्चों के रोने की आवाज़ कहां से आ रही है?

सूरते हाल की नज़ाकत से बीवी का कलेजा सूख गया।

उसने टालते हुए जवाब दिया :

सो जाइए! कहीं पड़ोस के बच्चे रो रहे होंगे।

संग दिल ने तेवर बदल कर कहा :

पड़ोस नहीं, हमारे घर से यह आवाज़ आ रही है, हो न हो यह वही मुस्लिम के बच्चे हैं जिन की तलाश में कई दिन से मैं सरगरदां हूँ, यह कहते हुए उठा और उस कोठरी के पास जा कर खड़ा हो गया, ताला तोड़ कर दरवाज़ा खोला, अन्दर जा कर देखा तो दोनों बच्चे रोते रोते बेहाल हो गए थे।

करख़्त लहजे में दरयाफ़्त किया, तुम कौन हो? अचानक उस अजनबी आवाज़ से सहम गए लेकिन चूंकि उस घर को अपना दारुल-अमान समझे हुए थे, यह कहते हुए ज़रा भी तअम्मुल न हुआ कि हम इमाम मुस्लिम के बच्चे हैं।

यह सुन कर ज़ालिम गुस्सा से दीवाना हो गया, मैं तो चारों तरफ़ ढूँढ ढूँढ कर हल्कान हो रहा हूँ और आप लोगों ने हमारे ही घर में ऐश का बिस्तर लगाया है।

यह कहते हुए आगे बढ़ा और निहायत ही बेरहमी से उन नन्हें यतीमों के रुख़्सारों पर तमांचे बरसाना शुरू किए, शिद्दते करब से दोनों भाई बिलबिला उठे, बेतहाशा बीवी दौड़ी और यह कहते हुए दरम्यान में हायल हो गई :

अरे ज़ालिम! यह क्या कर रहा है? अरे यह फ़ातिमा के राज दुलारे हैं, इनकी चाँद जैसी सूरतों पर तरस खा!

हाथ रोक ले सितमगर! जन्नत के फूलों का सुहाग मत लूट! चमनिस्ताने क़ुदस की नाज़ुक कलियों को घायल मत कर!

बिन बाप के दुखियारों का कुछ तो ख़्याल कर ज़ालिम! फिर मम्ता की झोंक में उठी और उसके क़दमों पर अपना सर पटकने लगी, ले! मेरा सर कुचल कर अपनी हवस की आग बुझा ले लेकिन फ़ातिमा के जिगर पारों को बख़्श दे।

गुस्से में चूर संग दिल शौहर ने उसे इतने ज़ोर से ठोकर मारी कि वह पत्थर के एक सुतून से टकरा कर लहू लुहान हो गई।

तमांचा मारते मारते जब थक गया तो शक़ी अज़ली ने दोनों भाईयों की मशकें कसीं और ग़िलाफ़े काबा की सी लटकी हुई ज़ुल्फ़ों को ज़ोर से खींचा और आपस में एक दूसरे से बांध दिया।

मारे दहशत से बच्चों का ख़ून सूख गया, हलक़ की आवाज़ फंस गई, आंखों के आंसू जल गए।

उसके बाद सियह बख़्त यह कहता हुआ कोठरी के बाहर निकल आया, जिस क़द्र तड़पना है सुबह तक तड़प लो, दिन निकलते ही मेरी चमकती हुई तल्वार तुम्हें हमेशा के लिए चैन की नींद सुला देगी।

दरवाज़ा मुक़फ़्फ़ल था, अन्दर का हाल ख़ुदा जाने, वैसे नन्हीं जानों में अब ताब ही कहाँ थी कि नालों का शोर बुलन्द होता, अल्बत्ता ज़िन्दां की कोठरी से थोड़े-थोड़े से वक़्फ़े पर आहिस्ता-आहिस्ता कराहने की आवाज़ सुनाई पड़ती थी।

बुला लाओ क़्यामत को! बड़ा नाज़ है उसे मनाज़िर की हौलनाकी पर, सवा नेज़े वाले आफ़ताब की रौशनी में और वह भी सैयदा के शीर ख़्वार बच्चों की असीरी का तमाशा देख ले!

और ज़रा महशरियों को बढ़ कर आवाज़ दो! वह भी गवाह हो जाएं कि जिस मुहम्मदे अरबी के इशार-ए-अबरू पर कल उनकी बेड़ियाँ टूट के गिरने वाली हैं, आज इन्हीं की गोद के लाडले ज़ंजीरों में सिसक रहे हैं।

हाए रे मक़ामे बुलन्द की क़्यामत आराइयाँ! बड़े बड़े लाला रुख़ों, मह जबीनों और गुल रवियों का निगार ख़ान-ए-जमाल तूने दिन दहाड़े लूट लिया है और तेरे ख़िलाफ़ कहीं दाद व फ़रियाद भी नहीं हो सकी है।

अरमानों के ख़ून की सुर्ख़ियाँ लिए हुए लरज़ती कांपती सहर तुलूअ हुई, घने बादलों की ओट में मुँह छुपाए सूरज निकला, ज्यों ही दुश्मने ईमान ने अपनी ख़ून आशाम तल्वार उठाई, ज़हर में बुझा हुआ खंजर संभाला और ख़ूंख़्वार दरिन्दे की तरह कोठरी की तरफ़ लपका, नेक बख़्त बीवी ने दौड़ कर पीछे से उसकी कमर थाम ली, जफ़ाकार ने इतने ज़ोर से उसे झटका दिया कि सर एक दीवार से टकरा गया और वह आह करके ज़मीन पर गिर पड़ी।

बीवी को घायल करने के बाद जोशे ग़ज़ब में दरवाज़ा खोल कर अन्दर दाख़िल हुआ, हाथ में नंगी तल्वार, और चमकता हुआ खंजर देख कर दोनों भाई लरज़ गए, ख़ौफ़ से नरगिसी आंखें बन्द हो गई, अभी वह इस हौलनाक दहशत से कांप ही रहे थे के सियह बख़्त ने आगे बढ़ कर दोनों भाई की ज़ुल्फ़ें पकड़ीं और निहायत बेदर्दी के साथ उन्हें घसीटता हुआ बाहर लाया, तक्लीफ़ की शिद्दत से मासूम बच्चे तिलमिला उठे, पछाड़ें खा खा कर

उसके क़दमों पर सर पटकने लगे, टूट टूट कर आह फ़रियाद करने लगे लेकिन ज़ालिम को न तरस आना था न आया।

लहू में शराबोर पाक तीनत बीवी फिर उठी और बिफरी हुई शेरनी की तरह गरजते हुए कहा, आख़िर घसीट कर कहाँ ले जा रहा है इन बेगुनाह मुसाफ़िरों को? दुश्मनी थी तो उनके बाप से थी, चार दिन के मासूम बच्चों से क्या दुश्मनी है जो तू उनका ख़ून बहाने पर तुला हुआ है?

सारी दुनिया यतीम बच्चों पर तरस खाती है और तू रात से उन्हें शिकंजे में कसे हुए है, पत्थरों से मार मार उनका फूल सा चेहरा लहू लुहान कर दिया है, रहमतों की घटा की तरह लटकती हुई जुलफ़ों को तू इतनी बेदर्दी के साथ घसीट रहा है कि बालों की जड़ों से ख़ून बहने लगा।

रात से अब तक मदीने के यह नाज़नीन बे आब व दाना लगातार तेरे ज़ुल्म व सितम की चोट खा रहे हैं और तुझे उनकी कम सिनी पर भी तरस नहीं आता? प्रदेस में इनका हामी व मददगार नहीं है इसलिए बेसहारा समझ कर तू इन्हें तड़पा तड़पा कर मार रहा है, जिस नबी का कलिमा पढ़ता है वह अगर अपनी तुर्बत से निकल आएं तो क्या उनके रू-ब-रू भी उनके नाज़नीन शहज़ादों के साथ तू ऐसा सुलूक कर सकेगा?

तेरे बाज़ू में बड़ा कस बल है तो किसी कड़ियल जवान से पंजा लड़ा, दूध पीते बच्चों पे क्या अपनी शहज़ोरी दिखलाता है!

उसके सीने में ग़ैरते ईमानी का जोश उबल पड़ा था, अपनी जान पर खेल कर अब वह रिफ़ाक़ते हक़ का आख़िरी फ़ैसला कर देना चाहती थी।

जज़्बात में बेक़ाबू हो कर उसने जैसे ही बच्चों को उसके हाथ से छुड़ाने की कोशिश की, उस बदबख़्त ने एक भरपूर हाथ का घूंसा उसके सीने पे मारा, और वह ग़श खा कर ज़मीन पर गिर पड़ी। लौंडी सामने आई तो वह भी उसके तेग़े सितम से घायल हुई।

उसके बाद शिकंजे में कसे हुए दोनों भाईयों को घसीट कर वह बाहर लाया और सामान की तरह एक खच्चर पर लाद कर दरिया-ए-फ़ुरात की तरफ़ चल पड़ा।

रस्सियों में जकड़े हुए मुस्लिम यतीम ज़िन्दानी अब मक़्तल की तरफ आहिस्ता आहिस्ता बढ़ रहे थे, मायूस चेहरे पे बेबसी की हसरत बरस रही थी, दम दम दिल की धड़कन तेज़ होती जाती थी।

रह रह कर बिछड़ी हुई माँ की आग़ोश, शफ़क़त व प्यार का गहवारा

मदीने का दारुल-अमान और हुजर-ए-आइशा में गीती की आख़िरी पनाहगाह याद आ रही थी।

कुचले हुए अरमानों के हुजूम में छोटे भाई की आंखें डबडबा आईं, तवील ख़ामोशी के बाद अब आंसुओं का थमा हुआ तूफ़ान उबल पड़ा, बड़े भाई ने आस्तीन से आंसू पोंछते हुए कहा :

जाने अ़ज़ीज़! सब्र करो, हिम्मत से काम लो! अब ज़िन्दगी की चन्द सांसें बाक़ी रह गई हैं उन्हें बेताबियों के हैजान से रायगां मत करो।

वह देखो! दरियाए फ़ुरात की सतह पर चश्म-ए-कौसर की सफ़ेद मौजें हमें सर उठाए देख रही हैं, अब इस जहाने बेवफ़ा से अपना लंगर उठा लो, चन्द क़दम के बाद आ़लमे जावेद की सरहद शुरू हो रही है, बस दो घड़ी में इस जफ़ा पेशा दुनिया की दस्तरस से बाहर निकल जाएंगे।

थोड़ी दूर चलने के बाद दरियाए फ़ुरात नज़र आने लगा, जल्लाद ने अपनी तल्वार चमकाते हुए कहा :

सांप के बच्चो! देख लो अपना मक़्तल! यहीं तुम्हारे सर क़लम करके सारे जहान के लिए एक इबरतनाक तमाशा छोड़ जाऊंगा।

यह सुन कर बच्चों का ख़ून सूख गया, किनारे पहुँच कर शक़ी-ए-अज़ली ने उन्हें खच्चर से उतारा, मश्कें खोलीं और सामने खड़ा किया।

अब दोनों खुली आंखों से सर पे मंडलाती हुई क़ज़ा देख रहे थे, बेबसी के आ़लम में डबडबाई हुई आंखों से आसमान की तरफ़ तकने लगे।

ज्यों ही भवें ताने, तेवर चढ़ाए क़त्ल के इरादे से उसने अपनी तल्वार बेनयाम की, मज़्लूम बच्चों ने अपने नन्हें नन्हें हाथ उठा कर रहम की दरख़्वास्त की।

इतने में हांपती कांपती, गिरती पड़ती पैकरे वफ़ा बीबी भी आ पहुँची, आते ही उसने पीछे से अपने शौहर का हाथ पकड़ लिया और एक आ़जिज़े दरमांदा की तरह ख़ुशामद करते हुए कहा :

ख़ुदा के लिए अब भी मान जाओ, आले रसूल के ख़ून से अपना हाथ रंगीन मत करो, रहम व ग़मगुसारी के जज़्बे में ज़रा एक बार आंख उठा कर देखो! बच्चों की नन्हीं जान सूखी जा रही है तल्वार सामने से हटा लो!

नफ़्स का शैतान पूरी तरह मुसल्लत हो चुका था, सारी मिन्नत व समाजत बेकार चली गई, ग़ुस्से में भरपूर तल्वार का एक वार बीवी पर चलाया, वह पैकरे ईमान घायल हो कर तड़पने लगी।

बच्चे यह दर्दनाक मंज़र देख कर सहम गए, अब सियहबख़्त जल्लाद अपनी ख़ून आलूद तल्वार लेकर बच्चों की तरफ़ बढ़ा, छोटे भाई पर वार करना ही चाहता था कि बड़ा भाई चीख़ उठा :

"ख़ुदारा पहले मुझे जबह करो, जान से ज़्यादा भाई की तड़प्ती हुई लाश मैं नहीं देख सकूँगा।"

छोटे भाई ने सर झुकाए हुए ख़ुशामद की, बड़े भाई का क़त्ल मुझ से हरगिज़ नहीं देखा जाएगा, ख़ुदा के लिए पहले मेरा सर क़लम करो।

इस लरज़ाख़ेज़ मंज़र पर आलमे कुदस में एक हंगामा बरपा था, शहनशाहे कौनैन कलेजा थामे हुए मशीयत की अदा पर साबिर व शाकिर थे, सैयदा की रूह मचल मचल कर अर्शे इलाही की तरफ़ बढ़ रही थी कि आलमे गीती को तहो बाला कर दे लेकिन क़दम क़दम पर सरकार की पुरनम आँखों का इशारा उन्हें रोक रहा था।

हैदरे ख़ैबर जफ़ा शिकन अपनी तेग़ ज़ुल-फ़िक़ार लिए हुए सरकार की जुंबिशे लब के मुंतज़िर थे कि आन वाहिद ज़फ़ा से शिआरों को कैफ़रे किरदार तक पहुँचा दें, रूहुल-अमीन बाल व पर गिराए दमबख़ुद थे, रिज़वाने कौसर व तस्नीम का साग़र लिए इंतिज़ार में खड़ा था, आलमे बरज़ख़ में हलचल मची हुई थी, मलकूते आला पर सक्ता तारी था कि एक मरतबा बिजली चमकी, सितारा टूटा और फ़ज़ा में दो नन्हीं चीखें बुलन्द हुईं।

मरकज़े आलम हिल गया, चश्मे फ़लक झपक गई, हवाएं रुक गईं, धार थम गए और धर्ती का कलेजा शक़ हो गया, हैरत का तिलिस्म टूटा तो इमाम मुस्लिम के यतीम बच्चों के कटे हुए सर ख़ून में तड़प रहे थे और लाशें दरिया-ए-फ़ुरात की लहरों की गोद में डूबती जा रही थीं।

सलाम हो तुम पर ऐ मुहम्मद व इब्राहीम! ऐ इमाम मुस्लिम के राज दुलारो! तुम्हारे मुक़द्दस ख़ून की सुर्ख़ी से आज तक गुलशने इस्लाम की बहारों का सुहाग क़ाइम है।

ख़ुदाए ग़ाफ़िर व क़दीर तुम्हारी नन्हीं तुरबतों पर शाम व सहर रहमत व नूर की बारिश बरसाए।

परवाने का हाल इस महफ़िल में है क़ाबिले रश्क ऐ अह्ले नज़र
इक शब ही में यह पैदा भी हुआ इश्क़ भी हुआ और मर भी गया

नोट : इस मज़्मून में "मासूम" का लफ़्ज़ उन मानों में मुस्तअमल नहीं है जिन मानों में शीआ हज़रात के यहाँ राइज है। (अल्लामा अरशदुल-क़ादरी)

ताराज कारवाने सादात मैदाने करबला से गुंबदे ख़ज़रा तक

करबला की दोपहर के बाद की रिक़्क़त अंगेज़ दास्तान सुनने से पहले एक लरज़ाखेज़ और दर्दनाक मंज़र निगाहों के सामने लाइए।

सुबह दोपहर तक खानदाने नुबुव्वत के नाम चश्मे चिरागां जुमला आवान व अंसार एक एक करके शहीद हो गए, सब ने दमे रुख़सत दिल की ज़ख़्मी सतह पर एक नए दाग़ का इज़ाफ़ा किया, हर तड़पती हुई लाश की आख़िरी हिचकियों पर इमाम आ़ली मक़ाम मैदान में पहुँचे, गोद में उठाया, ख़ेमे तक लाए, ज़ानों पर सर रखा और जांनिसार ने दम तोड़ दिया।

नज़र के सामने जिन लाशों का अंबार है उनमें जिगर के टुकड़े भी हैं और आंख के तारे भी, भाई और बहन के लाडले भी और बाप की निशानियां भी। इन बेगौर व कफ़न जनाज़ों पर कौन मातम करे, कौन आंसू बहाए और कौन जलती हुई आंखों पर तस्कीन का मरहम रखे।

तन्हा एक "हुसैन" और दोनों जहान की उम्मीदों का हुजूम, एक अजीब दर्दअंगेज़ बेबसी का आ़लम है, क़दम क़दम पर नई क़्यामत खड़ी होती है, नफ़्स नफ़्स में अलमे अंदोह के नए नए पहाड़ टूटते हैं।

दूसरी तरफ़ हरमे नुबुव्वत की ख़्वातीन हैं, रसूलुल्लाह की बेटियां हैं, सोगवार माएं और आशुफ़्ता हाल बहनें हैं, उन में वह भी हैं जिनकी गोदें खाली हो चुकी हैं, जिनके सीने से औलाद की जुदाई का ज़ख़्म रिस रहा है, जिनकी गोद से शीरे ख़्वार बच्चा भी छीन लिया गया है और जिनके भाईयों भतीजों और भांजों के बेगौर व कफ़न लाशे सामने पड़े हुए हैं।

रोते रोते आंख का चश्मा सूख गया है, तने नीम जां में अब तड़पने की सकत बाक़ी नहीं रह गई हैं औरत ज़ात के दिल का आबगीना यूंही नाज़ुक होता है ज़रा सी ठेस जो बर्दाश्त नहीं कर सकता आह! उस पर आज पहाड़ टूट पड़े हैं।

सबके सब जामे शहादत नोश कर चुके, अब तन्हा एक इब्ने हैदर की ज़ात बाक़ी रह गई है जो लुटे हुए क़ाफ़िले की आख़िरी उम्मीदगाह हैं, आह! वह भी रुख़्सते सफ़र बांध रहे हैं, ख़ेमे में एक कोहराम बपा है, कभी बहन

को तस्कीन देते हैं कभी शहर बानो को तल्क़ीन फ़रमा रहे हैं, कभी लख़्ते जिगर आबिद बीमार को गले से लगाते हैं और कभी कमसिन बहनों और लाडली शहज़ादियों को यास भरी निगाहों से देख रहे हैं, उम्मीद व बीम की कमश्मकश है, फ़र्ज़ का तसादुम है, ख़ून का रिश्ता दामन खींचता है, ईमान का इश्तियाक़ मक़्तल की तरफ़ ले जाना चाहता है।

कभी यह ख़्याल आता है कि हमारे बाद अह्ले ख़ेमा का क्या हाल होगा, प्रदेस में हरम के यतीमों और बेवाओं के साथ दुश्मन क्या सुलूक करेंगे।

बिल-आख़िर अह्ले बैत के नाख़ुदा, काबा के पासबान, नाना जान की शरीअ़त के मुहाफ़िज़ हज़रत इमाम भी अब सर से कफ़न बांध कर रन में जाने के लिए तैयार हो गए।

अह्ले हरम को तड़पता बिलकता और सिसकता छोड़ कर हज़रत इमाम ख़ेमा से बाहर निकले और लशकरे आदा के सामने खड़े हो गए।

अब ज़रा सा ठहर जाइए और आँखें बन्द करके मंज़र का जाइज़ा लीजिए, सारी दास्तान में यही वह मक़ाम है जहाँ इंसान का कलेजा शक़ हो जाता है बल्कि पत्थरों का जिगर पानी हो कर बहने लगता है, तीन दिन तक एक भूखा प्यासा सा मुसाफ़िर तने तन्हा बाईस हज़ार तल्वारों के नरग़े में है, दुश्मनों की यल्ग़ार चारों तरफ़ से बढ़ती चली आ रही है, दरवाज़े पर अह्ले बैत की मस्तूरात अश्कबार आंखों से यह मंज़र देख रही हैं, मिनट मिनट पर दर्द व ग़म के अथाह सागर में दिल डूबा जा रहा है। कभी मुँह से चीख़ निकलती है कभी आंखें झपक जाती हैं।

हाए रे! तस्लीम व रज़ा की वादी-ए-बेअमान! फूलों की पंखड़ी पे क़दम रखने वाली शहज़ादियां आज अंगारों पे लोट रही हैं, जिनके इशार-ए-अबरू से डूबा हुआ सूरज पलट आता है आज उन्हीं के अरमानों का सफ़ीना नज़र के सामने डूब रहा है और ज़ुबान नहीं खुलती।

देखने वाली आंखें अपने अमीर किशवर को, अपने मरकज़े उम्मीद को, अपने प्यारे हुसैन को हसरत भरी निगाहों से देख रही थीं कि एक निशाने पर हज़ारों तीर चले, तल्वारें बेनियाम हुईं, फ़ज़ा में नेज़ों की अनी चमकी और देखते देखते फ़ातिमा का चाँद गहन में आ गया। ज़ख़्मों से चूर, ख़ून में शराबोर, सैयदा का राज दुलारा जैसे ही फ़र्शे ज़मीन पर गिरा काइनात का सीना दहल गया, काबे की दीवारें हिल गईं, चश्मे फ़लक ने ख़ून

बरसाया खुर्शीद ने शर्म से मुँह ढाँप लिया और गीती की सारी फ़ज़ा मातम व अंदोह से भर गई।

उधर अरवाहे तैयबात और मलाइका-ए-रहमत के जलवा में जब शहीदे आज़म की मुक़द्दस रूह आलमे बाला में पहुँची और हर तरफ इब्ने हैदर की इमामत व यक्ताई का ग़लग़ला बुलन्द हो रहा था।

उधर खेमे में हर तरफ़ आग लगी हुई थी, सब्र व शकीब का ख़िरमन जल रहा था, यतीमों बेवाओं और सोगवारों की आह व फ़ुगां से धर्ती का कलेजा फट गया, उम्मीदों की दुनिया लुट गई। आह! बीच मंझधार में कश्ती का नाखुदा भी चल बसा।

अब बनू हाशिम के यतीम कहाँ जाएं? किस का मुँह तकें? काशान-ए-नुबुव्वत की वह शहज़ादियाँ जिनकी इफ़्फ़त सरा में रूहुल-अमीन भी बग़ैर इजाज़त के दाख़िल न हों, नसीमे सबा भी जिनके आंचलों के क़रीब पहुँच कर अदब के सांचे में ढल जाए! आज करबला के मैदान में कौन उनका महरम है जिससे अपने दुख दर्द की बात कहें।

ज़रा अपने दिल पर हाथ रख कर सोचिए कि हमारे यहाँ एक मैयत हो जाती है तो घर वालों का क्या हाल होता है? ग़म गुसारों की भीड़ और चारा गरों की तल्क़ीने सब्र के बावजूद आंसू नहीं थमते, इज़्तिराब की आग नहीं बुझती और नाला व फ़रियाद का शोर नहीं कम होता, फिर करबला के मैदान में हरम की उन सोगवार औरतों पर क्या गुज़री होगी जिनके सामने बेटों शौहरों और अज़ीज़ों की लाशों का अंबार लगा हुआ था जो ग़म गुसारों और शरीके हाल हमदर्दों के झुरमुट में नहीं ख़ूंख़्वार दुश्मनों और सफ़्फ़ाक दरिन्दों के नरग़े में थीं।

इमाम आ़ली मक़ाम का सर क़लम करने के बाद कूफ़ियों ने बदन के पैराहन उतार लिए, जिस्मे अतहर पर नेज़े के 32 ज़ख़्म और तल्वार के ३४ घाव थे। इब्ने सअ़द के हुक्म पर यज़ीदी फ़ौज के दस नाबकारों ने सैयदा के लख़्ते जिगर की नअ़श को घोड़ों की टापों से रौंद डाला।

हज़रत ज़ैनब और शहर बानो ख़ेमे से यह लरज़ा ख़ेज़ मंज़र देख कर बिलबिला उठीं और चीख़ मार कर ज़मीन पर गिर पड़ीं, उसके बाद शिम्र और इब्ने सअ़द दनदनाते हुए खेमे की तरफ़ बढ़े, बदबख़्त शिम्र ने अन्दर घुस कर पर्द ग्याने हरम की चादरें छीन लीं, सामान लूट लिया, हज़रत ज़ैनब बिन्ते अ़ली ने ग़ैरत व इज़्तिराब की आग में सुलगते हुए कहा :

"शिम्र! तेरी आंखें फूट जाएं! तू रसूलुल्लाह की बेटियों को बेपरदा करना चाहता है, हमारे चेहरों के मुहाफ़िज़ शहीद हो गए, अब दुनिया में हमारा कोई नहीं। यह माना कि हमारी बेबसी ने तुझे दिलेर बना दिया है लेकिन क्या कलिमा पढ़ाने का एहसान भी तू भूल गया?

संग दिल ज़ालिम! नामूसे मुहम्मद की बेहुरमती करके क़हरे खुदावन्दी को हरकत में न ला, तुझे इतना भी लिहाज़ नहीं है कि हम उसी रसूल की नवासियां हैं जिसने हातिम ताई की क़ैदी लड़की को अपनी चादर उढ़ाई थी।"

हज़रत ज़ैनब की गरजती हुई आवाज़ सुन कर आ़बिद बीमार लड़खड़ाते हुए अपने बिस्तर से उठे और शिम्र पर तल्वार उठाना चाहते थे कि ज़ुअ़फ़ व नक़ाहत से ज़मीन पर गिर पड़े।

शिम्र ने यह मालूम करने के बाद कि यह इमाम हुसैन की आख़िरी निशानी है अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि इसे भी क़त्ल कर डालो ताकि हुसैन का नाम व निशान दुनिया से मिट जाए लेकिन इब्ने सअ़द ने इस राय से इत्तिफ़ाक़ न किया और यह मुआ़मला यज़ीद के हुक्म पर मुंहसिर रखा।

शाम हो चुकी थी, यज़ीदी फ़ौज के सरदार जश्ने फ़तह में मशग़ूल हो गए, एक रात पहर गए तक सुरूर व नशात की मज्लिस सर गरम रही।

उधर ख़ेमे वालों की यह शामे ग़रीबां क़यामत से कम नहीं थी। हरम के पासबानों के घर में चिराग़ भी नहीं जल सका था। सारी फ़ज़ा सोग में डूब गई थी। मक़्तल में इमाम का कुचला हुआ लाशा बेग़ौर व कफ़न पड़ा था, ख़ेमे के क़रीब गुलशने ज़हरा के पामाल फूलों पर दर्दनाक हसरत बरस रही थी, रात की भयानक और वहशतख़ेज़ तारीकी में अह्ले ख़ेमा चौंक पड़ते थे, ज़िन्दगी की पहली सोगवार और उदास रात हज़रत ज़ैनब और हज़रत शहर बानो से काटे नहीं कट रही थी, रात भर ख़ेमों से सिस्कियों की आवाज़ आती रही, आहों का धुवां उठता रहा और रूहों के क़ाफ़िले उतरते रहे। आज पहली रात थी कि ख़ुदा का घर बसाने के लिए अह्ले हरम ने अपना सब कुछ लुटा दिया था।

प्रदेस, चटयल मैदान, मक़्तल की ज़मीन, ख़ाक व ख़ून में लिपटे हुए चेहरे, मैयत का घर, बालें के क़रीब ही बीमार के कराहने की आवाज़, भूख और प्यास की नातवानी, ख़ूंख़्वार दरिन्दों का नरग़ा, मुस्तक़्बिल का अन्देशा,

हिज्र व फ़िराक़ की आग! कलेजा शक़ कर देने वाले सारे असबाब मक़्तल की पहली रात में जमा हो गए थे।

बड़ी मुश्किल से सुबह हुई, उजाला फैला और दिन चढ़ने पर इब्ने सअद अपने चन्द सिपाहियों के साथ ऊँटनी लेकर आया उसकी नंगी पीठ पर हज़रते ज़ैनब, हज़रत शहर बानो और हज़रत ज़ैनुल-आबेदीन सवार कर दिए गए। फूल की तरह नर्म नाज़ुक हाथों को रस्सियों से जकड़ दिया गया। आबिद बीमार अपनी वालिदा और फूफी के साथ इस तरह बांध दिए गए कि ज़रा सा जुंबिश भी नहीं कर सकते थे।

दूसरे ऊँटों पर बाक़ी ख़्वातीन और बच्चियां इसी तरह रस्सियों में बंधी हुई सवार कराई गईं। अह्ले बैत का यह लुटा पिटा क़ाफ़िला जिस वक़्त करबला के मैदान से रुख़्सत हुआ उस वक़्त का क़यामत खेज़ मंज़र ज़ब्ते तहरीर से बाहर है।

वाक़िया-ए-करबला के एक ऐनी शाहिद का ब्यान है कि ख़ोली कि जिगर गोश-ए-बतूल का सरे मुबारक नेज़े पर लटकाए हुए असीराने हरम के ऊँट के आगे आगे था, पीछे 72 शुहदा के कटे हुए सर दूसरे अश्क़िया (बे-रहम) लिए हुए थे।

ख़ानदाने रिसालत का यह ताराज क़ाफ़िला जब मक़्तल के क़रीब से गुज़रने लगा तो हज़रत इमाम की बेग़ौर व कफ़न नअ़श और दीगर शुहदाए हरम के जनाज़ों पर नज़र पड़ते ही ख़्वातीन अह्ले बैत बेताब हो गईं। दिल की चोट ज़ब्त न हो सकी। आह! फ़रियाद की सदा से करबला की ज़मीन हिल गई। आ़बिद बीमार शिद्दते इज़्तिराब से ग़श पे ग़श खा रहे थे और हज़रत शहर बानो उन्हें किसी तरह संभाला दे रही थीं। क़्यामत का यह दिल गुदाज़ मंज़र देख कर पत्थरों की आँखें भी डबडबा आईं।

हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा की लाडली बेटी हज़रत ज़ैनब का हाल सब से ज़्यादा रिक़्क़त अंगेज़ था, सदमा-ए-जानकाह (तबाह करने वाली) की बेखुदी (बेचैनी) में उन्होंने मदीने की तरफ़ रुख़ कर लिया और दिल हिला देने वाली आवाज़ में अपने नाना जान को मुख़ातब किया :

या मुहम्मदाह ! आप पर आसमान के फ़रिश्तों का सलाम हो। यह देखिए आपका लाडला हुसैन रेगिस्तान में पड़ा है। खाक व ख़ून में आलूदा, तमाम बदन टुक्ड़े टुक्ड़े है। नअ़श को गौर व कफ़न भी मयस्सर नहीं है, नाना जान! आपकी तमाम औलाद क़त्ल कर दी गई। हवा उन पर ख़ाक

उड़ा रही है, आपकी बेटियाँ क़ैद हैं, हाथ बंधे हुए हैं, मशकें कसी हुई हैं, प्रदेस में कोई उनका या रोशनास नहीं। नाना जान! अपने यतीमों की फरियाद को पहुँचिये!

इब्ने जरीर का ब्यान है कि दोस्त दुश्मन कोई ऐसा न था जो हज़रत जैनब के उस ब्यान पर आबदीदा न हो गया हो।

असीराने हरम का क़ाफ़िला अश्कबार आँखों और जिगर गुदाज़ सिस्कियों के साथ करबला से रुख़्सत हो कर कूफ़े की तरफ़ रवाना हो गया। शाम हो चुकी थी, एक पहाड़ के दामन में यज़ीदी फ़ौज के सरदारों ने पड़ाव डाला, असीराने अह्ले बैत अपनी अपनी सवारियों से उतार लिए गए।

चाँदनी रात थी, रस्सियों में जकड़े हुए हरम के यह क़ैदी रात भर सिसकते रहे। पेशानी में मचलते हुए सज्दों के लिए भी ज़ालिमों ने रस्सियों की बंधन ढीली न की, पिछले प्हर हज़रत जैनब मुनाजात में मश्गूल थीं कि इब्ने सअ़द क़रीब आया और तंज़ करते हुए दरयाफ़्त किया, क़ैदियों का क्या हाल है? कई बार पूछने के बाद हज़रत ज़ैनब ने मुँह ढाँप कर जवाब दिया ख़ुदा का शुक्र है! नबी का चमन ताराज हो गया, उनकी औलाद क़ैद कर ली गई, रस्सियों से तमाम जिस्म नीले पड़ गए हैं, एक बीमार जो नीम जाँ हो चुका है उस पर तुझ को तरस नहीं आता और हमारी बेकसी का तमाशा दिखाने अब तू हमें इब्ने ज्याद़ा और यज़ीद की कुरबानगाह में ले जा रहा है।

इतना कहते-कहते वह फूट-फूट कर रोने लगीं, हज़रत ज़ैनुल-आ़बेदीन ने फूफी को तसल्ली दी और कहा, ख़ून के क़ातिलों से जौरो सितम का शिक्वह ही क्या है फूफी जान! बस एक आरज़ू है कि बाबा जान का सर मेरी गोद में कोई ला कर डाल दे और मैं उसे अपने सीने से लगा लूँ।

इब्ने सअ़द ने कहा, गोद में नहीं तेरे क़दमों की ठोकर पे डाल सकता हूँ तू अगर राज़ी हो तो इक़रार कर ले!

ज़ालिमों ने फिर ज़ख़्मों पर नमक छिड़का। फिर हरम के क़ैदी तिलमिला उठे, इज़्तिराब में बुझी हुई एक आवाज़ कान में आई :

बदबख़्त! नौजवानाने जन्नत के सरदार से गुस्ताख़ी करता है, क्या तुझे ख़बर नहीं है कि यह कटा हुआ सर अब भी दोजहाँ का मालिक है, ज़रा ग़ौर से देख! बोसा गाहे रसूल पर अनवार व तजल्लियात की कैसी बारिश हो रही है! सिर्फ़ जिस्म से राबता टूट गया है, अ़र्श का राबता अब भी क़ायम है।

इस आवाज़ पर हर तरफ़ सन्नाटा छा गया, इसी आलमे अन्दोह में असीराने अह्ले बैत का यह ताराज काफ़िला कूफ़ा पहुँचा, मारे शर्म व हैबत के इब्ने सअद ने शहर के बाहर जंगल में क़याम किया।

रात के सन्नाटे में हज़रत ज़ैनब मुनाजात व दुआ में मशग़ूल थीं, एक हल्की आवाज़ कान में आई :

"बीबी! मैं हाज़िर हो सकती हूँ?"

निगाह उठा कर देखा तो एक बुढ़िया सर पर चादर डाले मुँह छुपाए सामने खड़ी है इजाज़त मिलते ही क़दमों पर गिर पड़ी और दस्त बस्ता अर्ज़ की :

मैं एक ग़रीब मुहताज औरत हूँ, भूखे प्यासे आले रसूल के लिए थोड़ा सा खाना पानी लेकर हाज़िर हुई हूँ, बीबी ग़ैर नहीं हूँ एक मुद्दत तक शहज़ादी-ए-रसूल हज़रत सैयदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा की कनीज़ी का शर्फ़ हासिल रहा है, यह उस ज़माने की बात है जब कि सैयदा की गोद में एक नन्ही मुन्हीं बच्ची थी जिसका नाम ज़ैनब था।

हज़रत ज़ैनब ने उबलते हए जज़्बात पर क़ाबू पा कर जवाब दिया, तूने इस जंगल और प्रदेस में हम मज़्लूमों की मेहमान नवाज़ी की, हमारी दुआएं तेरे साथ हैं खुदा तुझे दारैन में खुशी अता फ़रमाए !

बुढ़िया को जब मालूम हुआ कि यही हज़रत ज़ैनब हैं तो चीख़ मार कर गले से लिपट गई और अपनी जान बिन्ते रसूल के क़दमों पर निसार कर दी।

इश्क़ व इख़्लास की तारीख़ में एक नए शहीद का इज़ाफ़ा हुआ।

दूसरे दिन ज़ुहर के वक़्त अह्ले बैत का लुटा हुआ कारवां कूफ़े की आबादी में दाख़िल हुआ। बाज़ार में दोनों तरफ संग दिल तमाशाइयों के ढट लगे हुए थे, खानदाने नुबुव्वत की बीबियाँ शर्म ग़ैरत से गड़ी जा रही थीं। सज्दे में सर झुका लिया था कि मासूम चेहरों पर ग़ैर महरिम की नज़र न पड़ सके। वफ़ूरे ग़म से आँखें अश्कबार थीं, दिल रो रहे थे। इस एहसास से ज़ख़्मों की टेस बढ़ गई थी कि करबला के मैदान में जो क़यामत टूटना थी टूट गई, अब मुहम्मदे अ़रबी के नामूस को गली गली फिराया जा रहा है।

कलिमा पढ़ने वाली उम्मत की ग़ैरत दफ़न हो गई थी, ख़ुशी के जशन में सारा कूफ़ा नंगा नाच रहा था। इब्ने ज़्याद के बेग़ैरत सिपाही फ़तह का नारा बुलन्द करते हुए आगे आगे चल रहे थे। जब अह्ले बैत की सवारी क़िला के क़रीब पहुँची तो इब्ने ज़्याद की बेटी फ़ातिमा अपने मुँह पर नक़ाब

डाले हुए बाहर निकली और ख़ामोश दूर खड़ी हसरत की नज़र से यह मंज़र देखती रही।

इब्ने ज़्याद और शिम्र के हुक्म से सैयदानियाँ उतारी गईं। आबिद बीमार अपनी वालिदा और फूफी के साथ बंधे हुए थे, उधर बुख़ार की शिद्दत से ज़ुअफ़ व नातवानी इंतिहा को पहुँच गई थी, ऊँट से उतरते वक़्त ग़श आ गया और बेहाल हो कर ज़मीं पर गिर पड़े, सर ज़ख्मी हो गया ख़ून का फ़व्वारा छूटने लगा। यह देख कर हज़रत ज़ैनब बेताब हो गईं, दिल भर आया, डबडबाती हुई आँखों के साथ कहने लगीं :

"आले फ़ातिमा में एक आबिद बीमार ही का ख़ून महफ़ूज़ रह गया था चलो अच्छा हुआ कि कूफ़े की ज़मीन पर यह क़र्ज़ भी अदा हो गया।"

इब्ने ज़्याद का दरबार निहायत तुज़्क व एहतशाम से आरास्ता किया गया था। फ़तह के नशे में सरशार तख़्त पर बैठा हुआ इब्ने ज़्याद अपनी फ़ौज के सरदारों से करबला के वाक़ेआत सुन रहा था।

सामने एक तश्त में इमाम आली मक़ाम का सर मुबारक रखा हुआ था, इब्ने ज़्याद के हाथ में एक छड़ी थी वह बार बार हज़रत इमाम के लबहाए मुबारक के साथ गुस्ताख़ी करता था और कहता जाता था कि इसी मुँह से ख़िलाफ़त का दावेदार था, देख लिया क़ुदरत का फ़ैसला! हक़ का सर बुलन्द हुआ, बातिल को ज़िल्लत नसीब हुई।

सहाबी-ए-रसूल हज़रत ज़ैद इब्ने अरक़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु उस वक़्त दरबार में मौजूद थे उन से यह गुस्ताख़ी देखी न गई, जोशे अक़ीदत में चीख़ पड़े :

"ज़ालिम! यह क्या करता है? छड़ी हटा ले! निसबते रसूल का एहतेराम कर! मैंने बार बार सरकार को इस चेहरे का बोसा लेते हुए देखा है।"

इब्ने ज़्याद ने ग़ुस्सा से पेच व ताब खाते हुए कहा, तू अगर सहाबी-ए-रसूल न होता तो मैं तेरा सर क़लम करा देता।

हज़रत इब्ने अरक़म ने ग़ैज़ में जवाब दिया, इतना ही तुझे रसूलुल्लाह की निसबत का लिहाज़ होता तो उनके जिगर गोशों को तू कभी क़त्ल न कराता, तुझे ज़रा भी ग़ैरत न आई! जिस रसूल का तू कलिमा पढ़ता है उन्हीं की औलाद को तहे तेग़ कराया है और अब उनकी इफ़्फ़त मआब बेटियों को क़ैदी बना कर गली गली फिरा रहा है।

इब्ने ज़्याद यह ज़लज़ला खेज़ जवाब सुन कर तिलमिला गया, लेकिन

मसलेहतन ख़ून का घूँट पी कर रह गया, असीराने हरम के साथ एक चादर में लिपटी हुई हज़रत ज़ैनब एक गोशे में बैठी हुई थीं, उनकी कनीज़ों ने उन्हें अपने झुरमुट में ले लिया था, इब्ने ज़्याद की नज़र पड़ी तो दरयाफ़्त किया यह औरत कौन है? कई बार पूछने के बाद एक कनीज़ ने जवाब दिया हज़रत ज़ैनब बिन्ते हज़रत अ़ली।

इब्ने ज़्याद ने हज़रत ज़ैनब को मुख़ातब करते हुए कहा, ख़ुदा ने तेरे सरकश सरदार और तेरे अह्ले बैत के नाफ़रमान बाग़ियों की तरफ़ से मेरा दिल ठंडा कर दिया है।

इस अज़ीयतनाक जुमले पर हज़रत ज़ैनब अपने तईं संभाल न सकीं, बे-इख़्तियार रो पड़ीं वल्लाह! तूने मेरे सरदार को क़त्ल कर डाला, मेरे खानदान का निशान मिटाया, मेरी शाख़ें काट दीं, मेरी जड़ उखाड़ दी, अगर इस से तेरा दिल ठंडा हो सकता है तो हो जाए।

उसके बाद इब्ने ज़्याद की नज़र आ़बिद बीमार पर पड़ी वह उन्हें भी क़त्ल करना ही चाहता था कि हज़रत ज़ैनब बेक़रार हो कर चीख़ उठीं, मैं तुझे ख़ुदा का वास्ता देती हूँ, अगर तू इस बच्चे को क़त्ल करना ही चाहता है तो मुझे भी इसके साथ क़त्ल कर डाल।

इब्ने ज़्याद पर देर तक सकते का आ़लम त़ारी रहा, उसने लोगों से मुख़ातिब हो कर कहा, ख़ून का रिश्ता भी कैसी अ़जीब चीज़ है वल्लाह! मुझे यक़ीन है कि यह बच्चे के साथ सच्चे दिल से क़त्ल होना चाहती है, अच्छा इसे छोड़ दो, यह भी अपने खानदान की औरतों के साथ जाए।

(इब्ने जरीर व कामिल)

इस वाक़िया के बाद इब्ने ज़्याद ने जामा मस्जिद में शहर वालों को जमा किया और ख़ुत़बा देते हुए कहा :

उस ख़ुदा की हम्द व सताइश जिसने अमीरुल-मुमिनीन यज़ीद बिन मुआ़विया को ग़ालिब किया और कज़्ज़ाब इब्ने कज़्ज़ाब हुसैन बिन अ़ली को हलाक कर डाला।

इस इज्तिमा में मशहूर मुहिब्बे अह्ले बैत हज़रत इब्ने अ़फ़ीफ़ भी मौजूद थे उन से ख़ुतबे के यह अल्फ़ाज़ सुन कर रहा न गया, फर्ते ग़ज़ब में काँपते हुए खड़े हो गए और इब्ने ज़्याद को लल्कारते हुए कहा :

ख़ुदा की क़सम! तू ही कज़्ज़ाब इब्ने कज़्ज़ाब है, हुसैन सच्चा, उसका बाप सच्चा और उसके नाना सच्चे। इब्ने ज़्याद इस जवाब से तिलमिला

उठा और जल्लाद को हुक्म दिया कि शाहराहे आम पे ले जा कर के इस बूढ़े का सर क़लम कर दो।

इब्ने अफ़ीफ़ शौके शहादत में मचलते हुए उठे और मक़्तल में पहुँच कर चमकती हुई तल्वार का मुस्कुराते हुए ख़ैर मक़्दम किया। ख़ून बहा, लाश तड़पी और ठंडी हो गई। कौसर के साहिल पर जाँ निसारों की तादाद में एक अ़दद का और इज़ाफ़ा हुआ।

दूसरे दिन इब्ने ज़्याद ने अह्ले बैत का ताराज क़ाफ़िला इब्ने सअ़द की सरकरदगी में दमिश्क़ की तरफ़ रवाना कर दिया। हज़रत इमाम का सरे मुबारक नेज़े पर आगे आगे चल रहा था पीछे अह्ले बैत के ऊँट थे ऐसा महसूस होता था कि इमाम आली मक़ाम अब भी अपने हरम के क़ाफ़िले की निगरानी फ़रमा रहे हैं।

असनाए सफ़र सरे मुबारक से अ़जीब अ़जीब ख़वारिक़ व करामात का ज़ुहूर हुआ। रात के सन्नाटे में आह व फ़ुग़ां की रिक़्क़त अंगेज़ सदाएं फ़ज़ा में गूंजती थीं। कभी कभी सरे मुबारक के इर्द गिर्द नूर की किरन फूटती हुई महसूस होती।

जिस आबादी से यह क़ाफ़िला गुज़रता था एक कोहराम बपा हो जाता था, दमिश्क़ का शहर नज़र आते ही यज़ीदी फ़ौज के सरदार ख़ुशी से नाचने लगे, फ़तह की ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए हर क़ातिल अपनी जगह बेक़रार था।

सब से पहले ज़हर बिन क़ैस ने यज़ीद को फ़तह की ख़बर सुनाई :

"हुसैन इब्ने अ़ली अपने अट्ठारह अह्ले बैत और साठ आवान व अंसार के साथ हम तक पहुँचे, हमने चन्द घन्टों में उनका क़लअ़ क़ुमा कर दिया, इस वक़्त करबला के रेगिस्तान में उनके लाशे बरहना पड़े हुए हैं, उनके कपड़े ख़ून में तर बितर हैं, उनके रुख़्सार गर्द व ग़ुबार से मैले हो रहे हैं, उनके जिस्म धूप की तमाज़त और हवा की शिद्दत से ख़ुश्क हो गए हैं"।

पहले तो फ़तह की ख़ुशख़बरी सुन कर यज़ीद झूम उठा लेकिन इस ज़लज़ला ख़ेज़ और हलाकत आफ़रीं इक़्दाम का हौलनाक अंजाम जब नज़र के सामने आया तो काँप गया, बार बार छाती पीटता था कि हाए इस वाक़िया ने हमेशा के लिए नंगे इस्लाम बना दिया, मुसलमानों के दिलों में मेरे लिए नफ़रत और दुश्मनी की आग सुलगती रहेगी।

क़ातिल की पशेमानी मक़्तूल की अहमियत तो बढ़ा सकती है मगर

क़त्ल का इल्ज़ाम नहीं उठा सकती, इस मक़ाम पर बहुत से लोगों ने धोखा खाया है, उन्हें नफ़्सियाती तौर पर सूरते हाल का मुतालआ करना चाहिए।

इसके बाद सरदारों को अपनी मज्लिस में बुलाया, अह्ले बैत को भी जमा किया और इमाम ज़ैनुल-आबेदीन से ख़िताब करते हुए कहा :

ऐ अ़ली! तुम्हारे ही बाप ने मेरा रिश्ता काटा, मेरी हुकूमत छीनना चाही। उस पर ख़ुदा ने जो कुछ किया वह तुम देख रहे हो, उसके जवाब में इमाम ज़ैनुल-आबेदीन ने क़ुरआन की एक आयत पढ़ी जिसका मफ़्हूम यह है कि तुम्हारी कोई मुसीबत ऐसी नहीं है जो पहले न लिखी हो।

देर तक ख़ामोशी रही फिर यज़ीद ने शामी सरदारों की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर कहा, अह्ले बैत के इन असीरों के बारे में तुम्हारा क्या मशवरा है?

बाज़ों ने निहायत सख़्त कलामी के साथ बदसुलूकी का मशवरा दिया मगर नौमान इब्ने बशीर ने कहा कि इनके साथ वही सुलूक करना चाहिए जो रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलेही व सल्लम इन्हें इस हाल में देख कर करते।

यज़ीद ने हुक्म दिया कि असीरों की रस्सियाँ खोल दी जाएं और सैयदानियों को शाही महल में पहुँचाया जाए।

यह सुन कर हज़रत ज़ैनब रो पड़ीं और गुलूगीर आवाज़ में कहा, तू अपनी हुकूमत में रसूल ज़ादियों को गली गली फिरा चुका, अब हमारी बेबसी का तमाशा अपनी औरतों को न देखा, हम ख़ाक नशीनों को कोई टूटी फूटी जगह दे दे जहाँ सर छुपा लें।

बिल आख़िर यज़ीद ने उनके क़्याम के लिए अलाहदा मकान का इंतिज़ाम किया।

इमाम का सरे मुबारक यज़ीद के सामने रखा हुआ था और वह बदबख़्त अपने हाथ की छड़ी से पेशानी के साथ गुस्ताख़ी कर रहा था, सहाबी-ए-रसूल हज़रत असलमी ने डाँटते हुए कहा :

ज़ालिम! यह बोसागाहे रसूल है इसका एहतेराम कर!

यज़ीद सुन कर तिलमिला गया, सहाबी-ए-रसूल के ख़िलाफ़ कुछ करने की हिम्मत न हो सकी।

हज़रत ज़ैनब की ख़्वाहिश पर सरे मुबारक उनके हवाले कर दिया

गया। वह सामने रख कर रोती थीं कभी हज़रत शहर बानो और उम्मे रुबाब सीने से लगाए बीते हुए दिनों की याद में खो जातीं। एक रात का ज़िक्र है निस्फ़ शब गुज़र चुकी थी, सारे दमिश्क़ पर नींद का सन्नाटा छाया हुआ था, अह्ले बैत के मसाइब पर सितारों की आँखें भी भर आई थीं, अचानक सादात की क़्यामगाह से किसी औरत का नाला बुलन्द हुआ, महल की दीवार हिल गई, दिल की आग से फ़ज़ा में चिंगारियाँ उड़ने लगीं, यज़ीद दहशत से काँपने लगा, जा कर देखा तो हज़रत ज़ैनब भाई का सर गोद में लिए हुए बिलबिला रही थीं, दर्द व कर्ब की एक क़्यामत जाग उठी है, इस दर्द अंगेज़ नाले से उसके दिल में जो दहशत समाई तो उम्र की आख़िरी सांस तक नहीं निकली।

उसे अन्देशा हो गया कि कलेजा तोड़ देने वाली यह फ़रियाद अगर दमिश्क़ के दरो दीवार से टकरा गई तो शाही महल की ईंट से ईंट बज जाएगी क्योंकि दमिश्क़ की ज़ामे मस्जिद में हज़रत इमाम ज़ैनुल-आ़बेदीन ने अह्ले बैत के फ़ज़ाइल व मनाक़िब और यज़ीद के मज़ालिम पर मुश्तमिल जो तारीख़ी ख़ुतबा दिया था उसने लोगों के दिल हिला दिए थे और माहौल में उसकी असर अंगेज़ी अब तक बाक़ी थी।

अगर तक़रीर का सिलसिला कुछ देर और जारी रहता और यज़ीद ने घबरा कर अज़ान न दिलवा दी होती तो उसी दिन यज़ीद के शाही इक़्तिदार की ईंट से ईंट बज जाती और उसके ख़िलाफ़ आ़म बग़ावत फैल जाती।

इसलिए दूसरे ही दिन नौमान इब्ने बशीर की सरकरदगी में मआ़ तीस सवारों के अह्ले बैत का ताराज कारवाँ मदीने की तरफ़ रवाना कर दिया गया।

हज़ार कोशिश की कि करबला की दहकती हुई चिंगारी किसी तरह ठंडी हो जाए लेकिन जो आग बह्र व बर में लग चुकी थी उसका सर्द होना मुम्किन नहीं था, सुबह की नमाज़ के बाद अह्ले बैत का दिल गुदाज़ क़ाफ़िला मदीने के लिए रवाना हो गया।

हज़रत नौमान इब्ने बशीर बहुत रक़ीक़ुल-क़ल्ब, पाकबाज़ और मुहिब्बे अह्ले बैत थे। दमिश्क़ की आबादी से जूंही क़ाफ़िला बाहर निकला हज़रत नौमान इमाम ज़ैनुल-आ़बेदीन की ख़िदमत में हाज़िर हुए और दस्ता बस्त अ़र्ज़ किया कि यह नियाज़मन्द हुक्म का ग़ुलाम है जहाँ जी चाहे तशरीफ़

ले जाइए, मेरी तक्लीफ़ का ख़्याल न कीजिए। जहाँ हुक्म दीजिएगा पड़ाव करूँगा, जब फ़रमाइएगा कूच कर दूँगा।

कुछ लोगों का कहना है कि इमाम ज़ैनुल-आबेदीन वहीं से करबला वापस हुए और शुहदा-ए-अह्ले बैत को दफ़न किया और कुछ लोग कहते हैं कि आस पास की आबादियों को जब ख़बर हुई तो वह आए और शहीदों की तज्हीज़ व तक्फ़ीन का फ़र्ज़ अंजाम दिया, आख़िरुज़्ज़िक्र रिवायत ज़्यादा क़ाबिले ऐतमाद है।

हज़रत इमाम अर्शे मक़ाम का सरे मुबारक अब नेज़े पर नहीं था हज़रत ज़ैनब, हज़रत शहर बानो और आ़बिद बीमार की गोद में था, पहाड़ों, सहराओं और रेगिस्तानों को उबूर करता हुआ क़ाफ़िला मदीने की तरफ़ बढ़ता रहा, मंज़िलें बढ़ती रहीं और सीने के जज़्बात मचलते रहे, यहाँ तक कि कई दिनों के बाद अब हिजाज़ की सरहद शुरू हो गई, अचानक सोया हुआ दर्द जाग उठा, रहमत व नूर की शहज़ादियाँ अपने चमन का मौसमे बहार याद करके मचल गईं, करबला जाते हुए इन्हीं राहों से कभी गुज़रे थे, किशवरे इमामत की यह रानियाँ उस वक़्त अपने ताजदारों और नाज़ बरदारों के ज़िल्ले आ़तिफ़त में थीं, ज़िन्दगी शाम व सहर की मुस्कुराहटों से मामूर थी, कलियों से लेकर गुंचों तक सारा चमन हरा भरा था, ज़रा चेहरा उदास हुआ चारागरों का हुजूम लग गया, पल्कों पे नन्हा सा क़तरा चमका और प्यार के सागर में तूफ़ान उमंडने लगा, सोते में ज़रा सा चौंक गए तो आँखों की नींद उड़ गई, अब इसी राह से लौट रहे हैं तो क़दमों के नीचे काँटों की बरछियाँ खड़ी हैं, तड़प तड़प कर क़्यामत भी सर पे उठा ली तो कोई तस्कीन देने वाला नहीं, ख़ेमा उजड़ा पड़ा है, क़ाफ़िला वीरान हो चुका है, शहज़ादों और रानियों की जगह अब आशुफ़्ता हाल यतीमों और बेवाओं की एक जमाअ़त है जिसके सर पे अब सिर्फ़ आसमान का साया रह गया है। लबों की जुंबिश और अबरू के इशारों से असीरों की ज़ंजीर तोड़ने वाले आज ख़ुद असीरे करब व बला हैं।

मदीने की मसाफ़त घटते घटते अब चन्द मंज़िल रह गई है, अभी से पहाड़ों का जिगर काँप रहा है, ज़मीन की छाती दहल रही है, क़्यामत को पसीना आ रहा है कि करबला के फ़रियादी मालिके कौनैन के पास जा रहे

हैं। क़ाफ़िले में हुसैन नहीं है उसका कटा हुआ सर चल रहा है, इस्तिग़ासे के सुबूत के लिए कहीं से गवाह लाना नहीं है, बग़ैर धड़ का हुसैन जब अपने नाना जान की तुर्बत पर हाज़िर होने जाएगा तो ख़ाक दाने गीती का अंजाम देखने के लिए किस के होश सलामत रह जाएंगे।

प्रदेस में करबला के मुसाफ़िरों की आज आख़िरी रात थी निहायत बेक़रारी में कटी, अंगारों पर करवट बदलते रहे, सुबह तड़के ही कूच के लिए तैयार हो गए।

नौमान बिन बशीर आगे आगे चल रहे थे उनके पीछे अह्ले बैत की सवारियाँ थीं। सब से आख़िर में तीस मुहाफ़िज़ सिपाहियों का मुसल्लह दस्ता था।

दोपहर के बाद मदीने की सरहद शुरू हो गई, अब फ़रियादों का हाल बदलने लगा, सीने की आग तेज़ होने लगी। जैसे जैसे मदीना क़रीब आता जा रहा था जज़्बात के समुन्द्र में तूफ़ान का तलातुम बढ़ता जाता था, कुछ देर चलने के बाद अब पहाड़ियाँ नज़र आने लगीं, खुजूरों की क़तार और सब्ज़ाज़ारों का सिलसिला शुरू हो गया।

जूंही मदीने की आबादी चमकी सब्र व शक़ीब का पैमाना छलक उठा, कलेजा तोड़ कर आहों का धुवाँ निकला और सारी फज़ा पर छा गया, अरमानों का गहवारा देख कर दिल की चोट उभर आई, हज़रत ज़ैनब, हज़रत शहर बानो और हज़रत आबिद बीमार उबलते हुए जज़्बात की ताब न ला सकें, अह्ले हरम के दर्दनाक नालों से ज़मीन काँपने लगी, पत्थरों का कलेजा फट गया।

एक सांडनी सवार ने बिजली की तरह सारे मदीने में ख़बर दी कि करबला से नबीज़ादों का लुटा हुआ क़ाफ़िला आ रहा है, शहज़ाद-ए-रसूल का कटा हुआ सर भी उनके साथ है। यह ख़बर सुनते ही हर तरफ़ कोहराम मच गया, क़्यामत से पहले क़्यामत आ गई। वफ़ूरे ग़म और जज़्ब-ए-बेख़ुदी में अह्ले मदीना आबादी से बाहर निकल आए, जैसे ही आमना सामना हुआ और निगाहें चार हुईं दोनों तरफ़ शोरिशे ग़म की क़्यामत टूट पड़ी, आह व फ़ुग़ाँ के शोर से मदीने का आसमान दहल गया। हज़रत इमाम का कटा हुआ सर देख कर लोग बेक़ाबू हो गए, दहाड़ें मार

मार कर रोने लगे, हर घर में सफ़े मातम बिछ गई। हज़रत जैनब फ़रियाद करती हुई मदीना में दाख़िल हुईं। नाना जान! उठिए! अब कोई क़्यामत का दिन नहीं आएगा आपका सारा कुंबा लुट गया, आपके लाडले शहीद हो गए, आपके बाद आपकी उम्मत ने हमारा सुहाग छीन लिया।

बे आब व दाना आपके बच्चों को तड़पा तड़पा के मारा, आपका लाडला हुसैन आपके नाम की दुहाई देता हुआ चल बसा, करबला के मैदान में हमारे जिगर के टुकड़े हमारी निगाहों के सामने ज़बह किए गए, आपके प्यार का सींचा हुआ चमन ताराज हो गया नाना जान!

नाना जान! यह हुसैन का कटा हुआ सर लीजिए आपके इंतिज़ार में इसकी आँखें खुली हुई हैं, ज़रा मरक़द से निकल कर अपनी आशुफ़्ता नसीब बेटियों का दर्दनाक हाल देखिए!

हज़रत ज़ैनब की इस फरियाद से सुनने वालों के कलेजे फट गए, उम्मुल-मुमिनीन हज़रत उम्मे सलमा, हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास, हज़रत इब्ने उमर, हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने जाफ़र तैयार और हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर की रिक़्क़त अंगेज़ कैफ़ियत ताबे ज़ब्त से बाहर थी।

हज़रत अ़क़ील के घर से बच्चे यह मरसिया पढ़ रहे थे :

क़्यामत के दिन वह उम्मत क्या जवाब देगी जब उसका रसूल पूछेगा कि तुमने हमारे बाद हमारी औलाद के साथ यही सुलूक किया कि उन में से बाज़ ख़ाक व ख़ून में लिपटे हुए हैं, तल्वारों, तीरों और नेज़ों से उनके जिस्म घायल, उनकी लाशें बे आब व गयाह वादी में पड़ी हुई हैं और उन में से बाज़ क़ैदी हैं, रस्सियों के बंधन से हाथ नीले पड़ गए हैं।

हज़रत सुग़रा पछाड़ें खा खा कर गिर रही थीं, बार बार अपनी वालिदा और फूफी से लिपट लिपट कर पूछती थीं, हमारे बाबा जान कहाँ हैं, हमारे नन्हें अ़ली असग़र को कहाँ छोड़ आए। बाबा जान वादा कर गए थे कि जल्द ही वापस आएंगे, जिस तरह हो उन्हें मना कर लाइए।

अपने इमाम का कटा हुआ सर लिए अह्ले बैत का यह ताराज कारवाँ जिस दम रौज़-ए-रसूल पर हाज़िर हुआ, हवाएं रुक गईं, गर्दिशे वक़्त ठहर गई, बहते हुए धारे थम गए, आसमानों में हलचल मच गई, पूरी काइनात दमबख़ुद थी कि कहीं आज ही क़्यामत न आ जाए।

उस वक़्त का दिल गुदाज़ और रूह फ़रसा मंज़र ज़ब्ते तहरीर से बाहर है, क़लम को यार नहीं कि दर्द व अलम की वह तस्वीर खींच सके जिसकी याद अह्ले मदीना को सदियों तड़पाती रही। अह्ले हरम के सिवा किसी को नहीं मालूम कि हुजर-ए-आइशा में क्या हुआ, करबला के मुसाफ़िर अपने नाना जान की तुर्बत से किस तरह वापस लौटे। परवरद-ए-नाज़ का सर मरक़दे अनवर के बाहर था, रहमत की जलवागाह ख़ालिस में जब जन्नत के फूल ही ठहरे तो नर्गिस की चश्मे मुहरम से अह्ले चमन का क्या पर्दा है। बरज़ख़ की दीवार तो ग़ैरों पे हाइल होती है अपनी ही गोद के परवरदों से क्या हिजाब! हज़रत ज़ैनब, हज़रत शहर बानो, हज़रत उम्मे रबाब, आबिद बीमार और उम्मे कुलसूम व सकीना, यह सब के सब महरमे असरार ही थे, अन्दरूने ख़ाना क्या वाक़िया पेश आया कौन जाने! अश्कबार आँखों पे रहमत की आस्तीन किस तरह रखी गई, करबला के पस मंज़र में मशीयते इलाही का सर बस्ता राज़ किन लफ़्ज़ों में समझाया गया? पसे दीवार खड़े रहने वालों को आलमे ग़ैब की इन सरगुज़श्तों का हाल क्या मालूम! मरक़दे रसूल से सैयदा की ख़्वाबगाह भी दो ही क़दम के फ़ासिले पर थी, कौन जानता है लाडले को सीने से लगाने और अपने यतीमों का आँसू आँचल में जज़्ब करने के लिए मामता के इज़्तिराब में वह भी किसी मख़्फ़ी गुज़रगाह से अपने बाबा जान की हरीमे पाक तक आ गई हों।

तारीख़ सिर्फ़ इतना बताती है कि हज़रत ज़ैनब ने बिलक बिलक कर करबला की ज़लज़ला खेज़ दास्तान सुनाई, शहर बानो ने कहा, ख़ानदाने रिसालत की बेवह अपना सुहाग लुटा कर दरे दौलत पे हाज़िर है। आबिद बीमार ने अर्ज़ किया :

यतीमी का दाग़ लिए, हुसैन की आख़िरी निशानी, एक बीमार नीम जान शफ़्क़त व करम और सब्र व ज़ब्त की भीख माँगता है।

आह व फ़ुग़ाँ का उबलता हुआ सागर थम जाने के बाद शहज़ाद-ए-कौनैन हज़रत इमाम आली मक़ाम का सरे मुबारक मादर मुश्फ़ेक़ा हज़रत सैयदा के पहलू में सिपुर्दे ख़ाक कर दिया गया।

नूर के दो टुकड़े

अफ़सुरदा चेहरे, बिखरे हुए बाल और बोसीदा, पैराहन में नूर की "दो नूरतें" एक मुसलमान रईस के दरवाज़े पर खड़ी थीं।

गर्दिशे अय्याम के हाथों सताए हुए यह दो कम्सिन बच्चे थे, ग़ैरते हया से आँखें झुकी हुई थीं, इज़हारे मुद्दआ के लिए ज़ुबान नहीं खुल रही थी।

बड़ी मुश्किल से बड़े भाई ने यह अल्फ़ाज़ अदा किए :

"करबला के मक़्तल से ख़ानदाने रिसालत का जो लुटा हुआ क़ाफ़िला मदीने को वापस हुआ था हम दोनों भाई उस क़ाफ़िला की नस्ल से हैं, वक़्त की बात है बचपन ही में हम दोनों यतीम हो गए, क़िस्मत ने दर दर की ठोकरें खिलाईं, कई दिन हुए कि एक क़ाफ़िला के साथ भटक कर हम इस शहर में आ गए। न कहीं सर छुपाने की जगह न कहीं रात बसर करने का ठिकाना, तीन दिन के फ़ाक़ों ने जिगर का ख़ून तक जला डाला है, ख़ानदानी ग़ैरत किसी के आगे ज़ुबान नहीं खोलने देती, अब तक्लीफ़ ज़ब्त से बाहर हो गई है। जिस हाशमी रसूल का ख़ून हमारी रगों में मोजज़न है उनके तअ़ल्लुक़ से हमारे हाले ज़ार पर तुम्हें रहम आ जाए तो हमें कुछ सहारा दे दो।

आज तुम्हारे लिए सिवाए पुर ख़ुलूस दुआओं के हमारे पास कुछ नहीं है लेकिन क़्यामत के दिन हम नाना जान से तुम्हारी ग़म्गुसार हमदर्दियों का पूरा-पूरा सिला दिलवाएंगे।"

रईस ने दरम्यान में मुदाख़लत करते हुए कहा बस तुम्हारा मुद्दआ मैंने समझ लिया लेकिन इसका क्या सबूत है कि तुम सैयदज़ादे हो? लाओ पेश करो! आले रसूल का लबादा ओढ़ कर भीख मांगने का यह ढोंग बहुत फ़रसूदा हो चुका है!

तुम कोई दूसरा घर देखो! यहाँ तुम्हें कोई सहारा नहीं मिल सकता।

रईस के जवाब से यतीमों का चेहरा उतर गया, आँखें पुरनम हो गईं, यूंही ग़रीबुल-वतनी, यतीमी, बेकसी और कई दिन की फ़ाक़ाकशी ने उन्हें निढाल कर दिया था, अब लफ़्ज़ों की चोट से दिल का नर्म व नाज़ुक आबगीना भी टूट गया।

प्यास के आ़लम में दोनों एक दूसरे का मुँह तकने लगे, बड़े भाई ने छोटे

भाई की आँख का आँसू अपनी आस्तीन से जज़्ब करते हुए कहा :

"प्यारे मत रोओ! घायल हो कर मुस्कुराना और फ़ाक़ा करके शुक्र अदा करना हमारे घर की पुरानी रीत है।"

धूप का मौसम था क़यामत की गर्मी पड़ रही थी, आदमी से लेकर चरिन्द व परिन्द तक सभी अपनी अपनी पनाहगाहों में जा छुपे थे लेकिन चमनिस्ताने फ़ातिमी के यह दो कुम्लाए हुए फूल खुले आसमान के नीचे बेयार व मददगार खड़े थे। उनके लिए कहीं कोई आसाइश की जगह नहीं थी, धूप की शिद्दत से जब बेताब हो गए तो सामने एक दीवार के साए में बैठ गए।

यह एक मजूसी का घर था, इमारत के रुख़ से शाने रियासत टपक रही थी, थोड़ी देर दम लेने के बाद छोटे भाई ने बड़े भाई से कहा :

"भाई जान! जिस दीवार के साए में हम लोग बैठे हैं मालूम नहीं यह किस का घर है, उसने भी कहीं आ कर उठा दिया तो अब पाँव में चलने की सकत बाक़ी नहीं है, ज़मीन की तपिश से तलुओं में आबुले पड़ गए हैं, खड़ा होना मुश्किल है, आँखों तले अंधेरा छा जाता है, यहाँ से कैसे उठेंगे?"

बड़े भाई ने जवाब दिया, हम उसकी दीवार का क्या नुक़्सान कर रहे हैं! सिर्फ़ साए में बैठे हैं, वैसे हर शख़्स का दिल पत्थर नहीं होता प्यारे! हो सकता है उसे हमारी हालते ज़ार पर तरस आ जाए और वह हमें अपने साए से न उठाए और अगर उठा भी दिया तो दिलों की आबादी तंग नहीं है, अंगारों पर चलने वाले तपती हुई ज़मीन से नहीं डरते। फ़िक्र मत करो! मैं तुम्हें अपनी पीठ पर लाद लूँगा।

थोड़ी देर ख़ामोश रहने के बाद छोटे भाई ने एक निहायत मासूमाना सवाल पूछा भाई जान! आपको याद होगा उस दिन जब हम जंगल में रास्ता भूल गए थे, हर तरफ़ आंधियों का तूफ़ान उठा हुआ था और आसमान से मूसलाधार बारिश हो रही थी। हम लोगों ने पहाड़ की एक खोह में पनाह ली थी। शाम तक तूफ़ान नहीं थमा था, रात हो गई और हम लोगों को उसी खोह में सारी रात बसर करना पड़ी। आधी रात को जब एक शेर चिंघाड़ता हुआ हमारी तरफ़ आ रहा था घोड़े पर सवार जो एक नेक़ाब पोश बुज़ुर्ग बिजली की तरह नमूदार हुए और चन्द लम्हों के बाद ग़ायब हो गए, वह कौन थे? आज तक यह राज़ आपने नहीं बताया।

बड़े भाई ने सवालिया लहजे में कहा, शेर की ख़ौफ़नाक आवाज़ सुन कर तुम्हारे मुँह से चीख़ निकली थी और तुमने दहशतज़दह हो कर किसी को पुकारा था? याद करो बस वह वही थे। हमारे दिल की ६ ड़कनों से बहुत क़रीब रहते हैं वह! हमारी ज़रा सी तक्लीफ़ देखी नहीं जाती। उन्हीं का ख़ून हमारी रगों में बहता है।

अब्बा जान कहा करते थे कि पहली बार जब वह पैकरे ख़ाकी में यहाँ आए थे, तो उनके चेहरे से नूर की इतनी तेज़ किरन फूटती थी कि निगाह उठाना मुश्किल था। अब तो ख़ाकी पैराहन भी नहीं है! हिजाब के ओट से कोई उन्हें देख ले इसलिए अब चेहरे पर खुद ही नेक़ाब डाल कर आते हैं ताकि काइनाते हस्ती का निज़ामे ज़िन्दगी दरहम बरहम न हो जाए। अब्बा जान यह भी कहा करते थे कि देखने वालों ने हमेशा उन्हें नेक़ाब ही में देखा है, बशरीयत की यह सारी बहसें नेक़ाब ही से मुतअ़ल्लिक़ हैं, हक़ीक़त का चेहरा अल्फ़ाज़ व ब्यान की दस्तरस से हमेशा बाहर रहा है।

चश्म-ए-कौसर की मासूम लहरों की तरह सिलसिला जारी था और घर का भेदी घर का राज़ वाश्गाफ़ कर रहा था, इतने में पसे दीवार आवाज़ सुन कर मजूसी घर से बाहर निकला। उसकी नींद में ख़लल पड़ गया था। वह गुस्से में शराबोर था लेकिन ज्यूंही गुलशने नूर के इन हसीन फूलों पर नज़र पड़ी उसका सारा गुस्सा काफ़ूर हो गया।

तुम लोग कौन हो? कहाँ से आए हो? बेऐनेही यही सवाल उस रईस ने किया था और जवाब सुनने के बाद अपने दरवाज़े से उठा दिया था।

सवाल का अंजाम सोच कर छोटे भाई की आँखों से आँसू आ गए।

बड़े भाई ने एक मायूस ग़म्ज़दा की तरह जवाब दिया :

"हम लोग आले रसूल हैं यतीम भी हैं और ग़रीबुल-वतन भी हैं। दिन के फ़ाक़े से नीम जान हैं, तक्लीफ़ की शिद्दत बर्दाश्त न हो सकी तो आज जिगर की आग बुझाने निकले हैं, वह सामने वाले रईस के घर गए थे उसने हमें अपने दरवाज़े से उठा दिया। धूप बहुत तेज़ है, ज़मीन तप गई है, नंगे पाँव चलते चलते पाँव में आबुले पड़ गए हैं, थोड़ी देर के लिए तुम्हारी दीवार के सामने बैठ गए हैं। शाम होते ही यहाँ से उठ जाएंगे।

मजूसी ने कहा सामने वाला रईस तो उसी नबी का कलिमा पढ़ता है जिसकी तुम औलाद हो। उसने उस रिश्ते का ख़्याल भी नहीं किया?

बड़े भाई ने जवाब दिया, वह यह कहता है कि तुम आले रसूल हो?

इसका सुबूत पेश करो! हमने हज़ार उस से कहा कि ग़रीबुल-वतनी में हम क्या सुबूत पेश कर सकते हैं। तुम इसका सुबूत क़्यामत के दिन पे उठा रखो जब कि नाना जान भी वहाँ मौजूद होंगे।

क़्यामत का तज़्किरा सुन कर मजूसी की आँखें चमक उठीं, उसने हैरत आमेज़ लहजे में कहा, तुम्हारी पेशानियों में आलमे कुदुस का जो नूर झलक रहा है उस से बढ़ कर और क्या सुबूत चाहिए था उसे?

और यह भी किसी कोर चश्म को नज़र न आए तो क़दमों के नीचे बिछ जाने के लिए अपने रसूल का नाम ही क्या कम है। आख़िरत की सरफ़राज़ी का दारोमदार तो निस्बत की तौक़ीर पर है! निस्बत न भी वाक़िया के मुताबिक़ हो, जब भी जज़ा का इस्तेहक़ाक़ कहीं नहीं जाता। दिल की निसबत बख़ैर है तो उस राह की ठोकर भी लाइक़े तहसीन है।

बहरहाल मैं तुम्हारे नाना जान का कलिमा गो नहीं हूँ लेकिन उनकी पाकीज़ा और बाअज़्मत ज़िन्दगी से दिल हमेशा मुतअस्सिर रहा है, उनकी निस्बत से तुम नौ निहालों के लिए अपने अन्दर एक अजीब कशिश महसूस कर रहा हूँ।

वैसे एक बाअज़्मत रसूल के साथ न भी तुम्हारा निस्बती तअल्लुक़ होता जब भी तुम्हारी यतीमी, ग़रीबुल-वतनी और उसके साथ तुम्हारा यह मासूम चेहरा दिलों को पिघला देने के लिए काफ़ी है।

अब तुम एक मुअज़्ज़ज़ मेहमान की तरह मेरे घर को अपने क़दमों का ऐज़ाज़ मरहमत करो और जब तक इत्मीनान बख़्श सूरत न पैदा हो जाए इस घर से कहीं जाने का क़सद न करो।

उसके बाद वह मजूसी रईस दोनों बच्चों को अपने हमराह घर के अन्दर ले गया और बीवी से कहा :

देखो! यह नाज़ों के पले हुए मुहम्मद अ़रबी के शहज़ादे हैं। इनके घर की चौखट का इक़्बाल तुम्हें मालूम भी है। चारह गरी और फ़ैज़ बख़्शी में इनका आस्ताना हमेशा से दर्द मन्दों की काइनात का मरकज़ रहा है। वह वाक़िया ग़ालिबन तुम्हें याद होगा जब कि तुम्हारी गोद ख़ाली थी घर अन्धेरा था। एक चिराग़े आरज़ू की तमन्ना में कितनी बार तुम्हारी पल्कें बोझल हो चुकी थीं, बिल-आख़िर इज़्तिराबे शौक़ में एक दिन हम दोनों घर से निकल पड़े और कई हफ़्ते की राह तय करके एक गाँव में पहुँचे थे।

लेकिन यह भी वक़्त का मातम है बेगम! कि लाला का जिगर जिन के कफ़े पा की ठंडक से शादाब रहा है, आज वह काँटों की नोक से घायल हैं और जिनकी पल्कों के साए में यह जहाने ख़ाकी चैन की नींद सोता है, आज वह ख़ुद दीवारों का साया तलाश कर रहे हैं।

बेगम! उनके बुज़ुर्गों का एहसान तुम्हें याद न हो जब भी कम अज़ कम इतना ज़रूर याद रखना कि यतीमों की नाज़ बरदारी और बेसहारा बच्चों की दिलजोई इंसानी अख़्लाक़ का बहुत ही दिलकश नमूना है।

मजूसी की बीवी एक रक़ीक़ुल-क़ल्ब (नर्म दिल) औरत थी। ज़रा सी देर में उसकी माम्ता जाग उठी। जज़्ब-ए-अख़्तियार में दोनों भाईयों को अपने क़रीब बिठा लिया। सर पर हाथ फेरा, नहलाया, कपड़े बदलवाए, बालों पे तेल रखा, आँखों में सुरमा लगाया और बना संवार कर शौहर के सामने लाई।

फ़ातमी शहज़ादों की बलाएं लेते हुए उसके यह रिक़्क़त अंगेज़ अल्फ़ाज़ हमेशा के लिए गीती के सीने में जज़्ब हो गए :

ज़रा देखिए ! यह काली घटाओं की तरह का कुल, यह चाँद की तरह दरख़्शाँ पेशानी, यह नूर की मौजों में निखरा हुआ चेहरा, यह पिरोए हुए मोतियों की तरह दाँतों के क़तार, यह फूलों की पंखुड़ी की तरह पतले पतले होंठ, यह गुलरेज़ तबस्सुम, यह गोहर बार तकल्लुम, यह रहमतों का सवेरा, यह सुरमगीं आँखें, यह मासूम अदाओं का चश्म-ए- सैयाल! सच बताइए, क्या यतीमों की यही सज धज होती है? ख़बरदार आज से मेरे इन जिगरपारों को जो यतीम कहेगा मैं उसका मुँह नोच लूँगी।

इनके घर का बख़्शा हुआ एक चिराग़ पहले ही घर में था दो चिराग़ और आ गए।

जिस घर में तीन चिराग़ों का नूर बरस्ता हो वह खाकियों का घर नहीं है, वह सितारों की अंजुमन है।

प्यार की ठंडी छाँव में पहुँच कर कुमलाए हुए फूल फिर से ताज़ा हो गए। दोनों भाई सारा ग़म भूल गए। अब जिस्म का बाल बाल और ख़ून का क़तरा क़तरा उन ग़म्गुसार शफ़क़तों के लिए दुआ की ज़ुबान बन चुका था।

आज मुसलमान रईस की क़िस्मत का आफ़ताब गहन में आ गया था। वह भी जल्द सो गया थोड़ी ही देर के बाद घबरा के उठ बैठा और सर

पीटने लगा। घर में एक कोहराम मच गया, सब लोग इर्द गिर्द जमा हो गए। रईस की बीवी उसकी हालत देख कर बदहवास हो गई, घबराहट में पूछा :

क्या कहीं तक्लीफ़ है? मुआलिज को बुलाएं, जल्द बताइए?

कुछ जवाब देने के बजाए वह पागलों की तरह चीखने लगा :

अरे! मैं लुट गया, तबाह हो गया, मेरी मिट्टी बरबाद हो गई। कलेजा शक़ हुआ जा रहा है। क़्यामत की घड़ी आ गई, हर तरफ़ अंधेरा है। हाए मैं लुट गया, हाए मैं लुट गया।

यह कहते कहते उस पर ग़शी तारी हो गई। थोड़ी देर के बाद जब उसे होश आया तो बीवी ने रोते हुए कहा, जल्द बताइए क्या क़िस्सा है? मेरा दिल डूबा जा रहा है!

रईस ने बड़ी मुश्किल से रुकते रुकते जवाब दिया!

हाए मैं लुट गया, अपनी तबाही का क़िस्सा क्या बताऊँ तुम से?

आज का क़िस्सा तुम्हें मालूम ही है। कितनी बेदर्दी के साथ मैंने उन मासूम सैयदज़ादों को अपने दरवाज़े से उठाया। हाए अफ़सोस! उस वक़्त मेरी अक़्ल को क्या हो गया था।

अभी आँख लगते ही उस वाक़िया के मुतअल्लिक़ मैंने एक निहायत भयानक और हौलनाक ख़्वाब देखा है कि मैं एक निहायत हसीन और शादाब चमन में चहल-क़दमी कर रहा हूँ। इतने में एक हुजूम दौड़ता हुआ मेरे क़रीब से गुज़रा। मैंने लपक कर दरयाफ़्त किया, आप लोग इतनी तेज़ी के साथ कहाँ जा रहे हैं?

उन में से एक शख़्स ने बताया कि बाग़े फ़िरदौस का दरवाज़ा खोल दिया गया और एक ऐलान के ज़रिया उम्मते मुहम्मदी को दाख़िले की आम इजाज़त दे दी गई है।

यह सुन कर मैं ख़ुशी से नाचने लगा और हुजूम के साथ शामिल हो गया। बाग़े फिरदौस का दरवाज़ा खुला हुआ था, एक एक करके लोग दाख़िल हो रहे थे।

मैं भी आगे बढ़ा और जूंही दरवाज़े के क़रीब पहुँचा, जन्नत के पासबान ने मुझे रोक दिया। मैंने कहा कि मुझे क्यों रोका जा रहा है, आख़िर मैं भी तो सरकार का उम्मती हूँ?

उसने हिक़ारत आमेज़ लहजे में जवाब दिया, तुम उम्मती हो तो अपने उम्मती होने का सुबूत दो! सनद पेश करो, उसके बाद ही तुम्हें जन्नत में दाख़िले की इजाज़त मिल सकेगी। बग़ैर सुबूत लिए अगर नबी ज़ादों को तुम अपने घर में पनाह नहीं दे सकते तो तुम्हें बग़ैर सुबूत के जन्नत में दाख़िले की इजाज़त क्योंकर मिल सकती है?

अब तुम से बात रहम व करम की नहीं होगी, ज़ाबते की होगी, अंजाम से मत घबराओ, इस सिलसिले का आग़ाज़ तुम्हीं ने किया है।

जाओ महशर की तपती हुई ज़मीन पर चहल क़दमी करो, यहाँ तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं है।

जब से यह हौलनाक ख़्वाब देखा है अंगारों पर लेट रहा हूँ, मेरे तईं यह ख़्वाब नहीं है, वाक़िया है, मुझे यक़ीन है कि फ़रदा-ए-महशर में यह वाक़या मेरे साथ पेश आकर रहेगा।

हाय! मैं हमेशा के लिए सरमदी नेअ़मतों से महरूम हो गया, क़हरे इलाही की ज़द से जो मुझे बचा सकता था उसी को मैंने आजुरदा कर दिया है। अब कौन मेरी चारह साज़ी करेगा, बीवी ने दरम्यान में मुदाख़लत करते हुए कहा :

आप अपनी जान हल्कान मत कीजिए, ख़ुदा तआ़ला बड़ा ग़फ़ूरुर्रहीम है, उसके दरबार में रोइए, तड़पिए, फ़रियाद कीजिए, तौबा का दरवाज़ा अभी भी खुला हुआ है वह आपकी ख़ातिर ज़रूर मआ़फ़ कर देगा, आपको मायूस नहीं होना चाहिए, ख़ुदा की रहमतों से नाउम्मीद होना मुसलमानों का नहीं काफ़िरों का शेवा है।

रईस ने कराहते हुए जवाब दिया, तुम्हारी अ़क़्ल कहाँ मर गई है? होश की बात करो! ख़ुदा का हबीब जब तक आजुरदा है हम लाख फ़रियाद करें, रहमत व करम का कोई दरवाज़ा हम पर नहीं खुल सकता।

ख़ुदा की रहमत हमेशा अपने महबूब का तेवर देखती है, महबूब की नज़र से गिरने वाला कभी नहीं उठ सका है। सद हैफ़! जो टूटे हुए दिलों को जोड़ सकता है आज उसी के घर का आबगीना मैंने तोड़ दिया, वह न भी अपनी ज़ुबान से कुछ कहे जब भी मशीयते इलाही बहरहाल उसकी तरफ़दार है, वह मुझे हरगिज़ मआ़फ़ नहीं करेगी।

बीवी की आवाज़ मद्धिम पड़ गई और उस ने दबे दबे लहजे में कहा, तो पहले ख़ुदा के हबीब ही को राज़ी कर लिया जाए, अभी शहज़ादे शहर से बाहर नहीं गए होंगे, सुबह तड़के उन्हें तलाश करें और जिस तरह भी हो मिन्नत व समाजत से मना कर उन्हें घर लाएं, वह अगर राज़ी हो गए और उन्होंने आपको मआफ़ कर दिया तो ख़ुदा का हबीब भी राज़ी हो जाएगा, उसके बाद रहमते यज़्दानी की तवज्जोह हासिल की जा सकेगी।

यह बात बीवी की सुन कर रईस का चेहरा खिल गया जैसे निगाहों के सामने उम्मीद की कोई शमअ् जल गई हो, इतनी देर के बाद अब उसे अपनी नजात का एक मौहूम सहारा नज़र आया था।

आज सुबह ही से मजूसी के घर पर मर्दों, औरतों और बच्चों की भीड़ लगी हुई थी, जज़्ब-ए-शौक़ के आलम में वह बेतहाशा घर की दौलत लुटा रहा था।

सारे शहर में यह ख़बर बिजली की तरह फैल गई थी कि खानदाने रिसालत के दो शहज़ादे इस घर के मेहमान हैं।

मुसलमान रईस अपनी बीवी के हमराह उनकी तलाश में जूंही घर से बाहर निकला, मजूसी के दरवाज़े पर लोगों की भीड़ देख कर हैरान रह गया।

दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि खानदाने रिसालत के दो नौनिहाल कल से उसके यहाँ मुक़ीम हैं, परवानों का यह हुजूम उन्हीं के ऐज़ाज़ में इकट्ठा हुआ है।

यह ख़बर सुनते ही रईस की बाँछें खिल गईं उसने दिल ही दिल में तय कर लिया कि मजूसी को बच्चों के मुआवज़े में चाहे ज़िन्दगी भर की कमाई देनी पड़े क़दम पीछे नहीं हटाऊँगा, बिगड़ी हुई तक़्दीर संवर गई तो दौलत कमाने के लिए सारी उम्र पड़ी है।

निहायत तेज़ी के साथ क़दम बढ़ाते हुए रईस और उसकी बीवी दोनों मजूसी के घर पहुँचे। देखा तो दोनों शहज़ादे दूल्हे की तरह बन संवर कर बैठे हैं और मजूसी उनके सरों पर से अशर्फ़ियाँ उतार कर मज्माअ् को लुटा रहा है।

रईस ने आगे बढ़ कर मजूसी से कहा :

मुझे आप से एक निहायत ज़रूरी काम है एक लम्हे के लिए तवज्जोह फ़रमाएं, मजूसी रईस की तरफ़ मुतवज्जेह हो गया, फ़रमाइए मेरे लाइक़ क्या ख़िदमत है?

रईस ने अपनी निगाहें नीची करते हुए कहा :

यह दस हज़ार की अशर्फ़ियों का तोड़ा है, इसे क़ुबूल फ़रमाइए और यह दोनों शहज़ादे मेरे हवाले कर दीजिए। मुझे हक़ भी पहुँचता है कि सब से पहले यह मेरे ही ग़रीबखाने पर तशरीफ़ लाए थे।

मजूसी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया :

फ़िरदौस की आलीशान इमारत रात में आपने देखी है जिसमें आपको दाख़िल होने से रोक दिया गया, आप चाहते हैं कि दस हज़ार अशर्फ़ियों से उसे फ़रोख़्त कर दूँ और ज़िन्दगी में पहली बार रहमते यज़्दानी का जो अब दरवाज़ा खुला है उसे अपने ऊपर मुक़फ़्फ़ल कर लूँ?

शायद आपको मालूम नहीं है कि जिस ख़्वाजा कौनेन को आज़ुरदा करके आपने अपने ऊपर जन्नत हराम कर ली है, रात उनके जलवा बार तबस्सुम से हमारे दिलों की काइनात रौशन हो चुकी है।

ऐ खुश नसीब! कि अब हमारे घर में कुफ़्र की दैजूर नहीं है, ईमान व इस्लाम का सवेरा हो चुका है।

ख़्वाब की वह बात जब आप जन्नत के पासबान से कह रहे थे कि "आख़िर मैं भी तो सरकार का उम्मती हूँ मुझे क्यों रोका जा रहा है?" तो मैं उस वक़्त छोटे से कुंबे के साथ जन्नत के सदर दरवाज़े से गुज़र रहा था।

मुझे यह कहने की ज़रूरत पेश नहीं आई कि मैं भी सरकार का उम्मती हूँ। सरकार का उम्मती करोड़ों की भीड़ में पहचान लिया गया। वहाँ ज़ुबान की बात नहीं चलती दिल का आईना पढ़ा जाता है मेरे भाई!

हमारे हाल पर सरकार की रहमत व नवाज़िश का इस से भी ज़्यादा हैरत अंगेज़ मंज़र देखना चाहते हैं तो अपनी अहलिया को अन्दर भेज दीजिए। हज़रत सैयदा की कनीज़, शुकराने की नमाज़ अदा कर रही है। ग़ालिबन वह अभी सज्दे में होगी सर उठाने के बाद ज़रा उसकी दमकती हुई पेशानी का नज़्ज़ारा कर लें, आलमे ख़्वाब में जिस हिस्से पर सैयदा ने

अपना दस्ते शफ़्क़त रख दिया था वहाँ अब तक चिराग़ जल रहा है, किरन फूट रही है और दरो दीवार से नूर बरस रहा है।

जिन शहज़ादों के दम क़दम से हमारे नसीब चमके, दिलों की अंजुमन रौशन हुई है, जीते जी सरमदी अमान का परवाना मिला और एक रात में हम कहाँ से कहाँ पहुँच गए। आप उन्हें दस हज़ार अशर्फ़ियों में ख़रीदना चाहते हैं? हालाँकि सुबह से अब तक मैं दस हज़ार की अशर्फ़ियाँ सिर्फ़ उनके ऊपर निसार कर चुका हूँ।

अब वह मेरे मेहमान नहीं हैं घर के मालिक हैं, हम ख़ुद उनके हवाले हैं, उन्हें क्या हवाले कर सकते हैं!

रईस सर झुकाए हुए बातें सुन रहा था और रोते रोते उसकी आँखें सुर्ख़ हो गई थीं, बड़े भाई की नज़र जूंही उसकी तरफ़ उठी, दिल जज़्ब-ए-रहम से भर आया, भर्राई हुई आवाज़ में कहा, बड़े से बड़े ग़म का बार सह लिया है लेकिन भीगी हुई पल्कों का बोझ हम से कभी नहीं उठ सका। तुमने हमारे साथ जो कुछ भी किया वह तुम्हारा शेवा था लेकिन हम तुम्हारे साथ अपने घर की रीत बरतेंगे, जाओ! हम ने तुम्हें मुआफ़ कर दिया। नाना जान भी मुआफ़ कर देंगे। मायूसी का ग़म न खाओ! जन्नत में तुम भी हमारे साथ रहोगे।

घर लौटते वक़्त रईस का दिल ख़ुशी से नाच रहा था।

(अरशदुल-क़ादरी)

ज़मीने करबला का ख़ूनी मंज़र

अह्ले बैत के नौजवानों ने ख़ाके करबला के सफ़्हात पर अपने ख़ून से शुजाअ़त व जवाँ मर्दी के वह बेमिसाल नुकूश सब्त फ़रमाए जिनको इंक़िलाबे ज़माना के हाथ मह्व करने से क़ासिर हैं। अब तक नियाज़मन्दों और अ़क़ीदत केशों की मारका आराइयाँ थीं जिन्होंने अलम बरदारे शुजाअ़त को ख़ाक व ख़ून में लेटा कर अपनी बहादुरी के ग़लग़ले दिखाए थे, अब असदुल्लाह के शेराने हक़ का मौक़ा आया और अली मुर्तज़ा के ख़ानदान के बहादुरों के घोड़ों ने मैदाने करबला को जौलानगार बना दिया।

उन हज़रात का मैदान में आना था कि बहादुरों के दिल सीनों में लरज़ने लगे और उनके हमलों से शेरदिल बहादुर चीख़ उठे। असदुल्लाही तल्वारें थीं या शिहाबे साक़िब की आतिश बाज़ी, बनी हाशिम की नबर्द आज़माई और जाँ शिकार हमलों ने करबला की तिशना लब ज़मीन को दुश्मन के ख़ून से सैराब कर दिया और ख़ुश्क रेगिस्तान सुर्ख़ नज़र आने लगा। नेज़ों की नोकों पर सफ़ शिकन बहादुरों को उठाना पड़ा। ख़ाक में मिलाना हाशमी नौजवानों का मामूली करतब था। हर साअ़त नया मुबारिज़ आता था और हाथ उठाते ही फ़ना हो जाता था। उनकी तबलीग़ बेनियाम अजल का पयाम थी और नोके सिनाँ क़ज़ा का फ़रमान। तल्वारों की चमक ने निगाहें ख़ैरा कर दीं और ज़र्ब व हर्ब के जौहर देख कर कोह पैकर तरसियाँ व हरासियाँ हो गए, कभी मैमना पर हमला किया तो सफ़ें दरहम बरहम कर डालीं, मालूम होता था कि सवार मक़्तूलों के समुन्द्र में तैर रहा है। कभी मैसरा की तरफ़ हमला किया तो मालूम हुआ कि मुर्दों की जमाअ़त खड़ी थी जो इशारा करते ही लौट गई। साइक़ा की तरह चमकने वाली तेग़ ख़ून में डूब गई थी और ख़ून के क़तरात उस से टपकते थे।

इस तरह ख़ानदाने इमाम के नौजवान अपने अपने जौहर दिखा दिखा कर इमाम आ़ली मक़ाम पर जान क़ुरबान करते चले जा रहे थे। ख़ेमा से चलते थे तो **बल अहयाउन इन्दा रब्बेहिम** के चमनिस्तान की दिलकश फ़ज़ा उनकी आंखों के सामने होती थी। मैदाने करबला की राह से उस मंज़िल तक पहुँचना चाहते थे।

फ़रज़न्दाने इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मुहारबा ने

दुश्मन के होश उड़ा दिए इब्ने सअ़द ने ऐतराफ़ किया कि अगर फ़रेबकारियों से काम न लिया जाता, उन हज़रात पर पानी बन्द न किया जाता, तो अह्ले बैत का एक नौजवान तमाम लशकर को बरबाद कर डालता। जब वह मुक़ाबला के लिए उठते थे तो मालूम होता था कि क़ह्रे इलाही आ रहा है, उनका एक एक हुनर वर सफ़ शिकनी व मबाज़र फ़िगनी में फ़र्द था।

अल-हासिल अह्ले बैत के नौ निहाल और नाज़ के पालों ने मैदाने करबला में हज़रत इमाम पर अपनी जानें फ़िदा कीं और तीर व सिनान की बारिश में हिमायते हक़ से मुँह न मोड़ कर गर्दनें कटवाईं, ख़ून बहाए, जानें दीं, मगर कलिमा-ए-नाहक़ ज़ुबान पर न आने दिया, नौबत बा नौबत तमाम शहज़ादे शहीद होते चले गए।

अब हज़रत इमाम के सामने उनके नूरे नज़र हज़रत अ़ली अकबर हाज़िर हैं, मैदान की इजाज़त चाहते हैं, मिन्नत व समाजत हो रही है। अ़जीब वक़्त है चहेता बेटा शफ़ीक़ बाप से गर्दन कटवाने की इजाज़त चाहता है और उस पर इसरार करता है जिसकी कोई हट, कोई ज़िद ऐसी न थी, जो पूरी न की जाती, जिस नाज़नीन को कभी पिदरे मेहरबान ने इंकारी जवाब न दिया था आज उसकी यह तमन्ना, यह इल्तिजा दिल व जिगर पर असर क्या करती होगी। इजाज़त दें किस बात की? गर्दन कटाने और ख़ून बहाने की न दें तो चमनिस्ताने रिसालत का वह गुले शादाब कुमलाया जाता है मगर इस आरज़ू मन्दे शहादत का इसरार इस हद पर था और शौक़े शहादत ने ऐसा वारफ़्ता बना दिया था कि चार नाचार हज़रत इमाम को इजाज़त देनी पड़ी। हज़रत इमाम ने उस नौजवान जमील को ख़ुद घोड़े पर सवार किया, उस पर ज़ीन अपने दस्ते मुबारक से लगाए, फ़ौलादी मिग़फ़र सर पर रखा, कमर पर पटका बांधा, तल्वार हमाइल की नेज़ा उस नाज़ परवरद-ए-सियादत के मुबारक हाथ में दिया।

उस वक़्त अह्ले बैत की बीवियों, बच्चों पर क्या गुज़र रही थी जिनका तमाम कुंबा व क़बीला, बरादर फ़रज़न्द सब शहीद हो चुके थे और एक जगमगाता हुआ चिराग़ भी आख़िरी सलाम कर रहा था। उन तमाम मसाइब को अह्ले बैत ने रज़ाए हक़ के लिए बड़े इस्तिक़्लाल के साथ बर्दाश्त किया और यह उन्हीं का हौसला था। हज़रत अली अकबर ख़ेमा से रुख़्सत हो कर मैदाने कारज़ार की तरफ़ तशरीफ़ लाए। जंग के मतला में एक आफ़ताब चमका, मुश्के काकुल की ख़ुश्बू से मैदान महक गया, चेहरा की तजल्ली ने मारका-ए-कारज़ार को आ़लमे अनवार बना दिया।

नूरे निगाहे फ़ातिमा आसमां जनाब
सब्र दिले ख़दीज-ए-पाके इरम क़बाब

लख़्ते दिल इमाम हुसैन इब्ने बू तुराब
शेरे खुदा का शेर वह शेरों में इंतिख़ाब

सूरत थी इंतिख़ाब तो क़ामत था ला जवाब
गेसू थे मुश्के नाब तो चेहरा था आफ़ताब

चेहरा से शाहज़ादा के उठा जभी नेक़ाब
मह्रे सिपर हो गया ख़जलत से आब आब

काकुल की शाम रुख़ की सहर मौसमे शबाब
संुबुल निसार शाम फ़िदाए सहर गुलाब

शहज़ाद-ए-जलील अ़ली अकबर जलील
बुस्ताने हुस्न में गुले ख़ुश मंज़र शबाब

पाला था अह्ले बैत ने आग़ोशे नाज़ में
शर्मिन्दा उसकी नाजुकी से शीश-ए-हिजाब

सहराए कूफ़ा आ़लमे अनवार बन गया
चमका जो रन में फ़ातिमा ज़हरा का माहताब

ख़ुर्शीद जल्वागर हुआ पुश्ते समन्द पर
या हाशमी जवान के रुख़ से उठा नेक़ाब

सौलत ने मरहबा कहा शौकत थी रज्ज़ ख़्वां
जुरअत ने बाग थामी शुजाअ़त ने ली रकाब

चेहरा को उसके देख के आँखें झपक गईं
दिल काँप उठे हो गया आदा का इज़्तिराब

सीनों में आग लग गई आदाए दीन से
ग़ैज़ व ग़ज़ब के शोअ़लों से दिल हो गए कबाब

नेज़ा जिगर शिगाफ़ था उस गुल के हाथ में
या अज़्दहा था मौत का या उसवा अल-उक़ाब

चमका के तेग़ मर्दों को नामर्द कर दिया
उस से नज़र मिलाता यह थी किस के दिल में ताब

कहते थे आज तक नहीं देखा कोई जवां
ऐसा शुजाअ़ होता जो उस शेर का जवाब

मरदाने कार लरज़ा बर अंदाम हो गए
शेर अफ़्गनों की हालतें होने लगीं ख़राब

कोहे पैकरों को तेग़ से दो पारा कर दिया
की ज़र्ब खुद पर तोड़ डाला ता रिकाब

तल्वार थी कि साइक़ा बर्क़ बार था
या अज़ बराए रज़्म शयातीन था शिहाब

चेहरे में आफ़्ताबे नुबुव्वत का नूर का
आँखों में शान सौलते सरकार बू तुराब

प्यासा रखा जिन्होंने उन्हें सेर कर दिया
उस जूद पर है आज तेरी तेग़े ज़हर आब

मैदाँ में उसके हुस्ने अ़मल देख के नईम
हैरत से बदहवास थे जितने थे शैख़ व शाब

मैदाने करबला में फ़ातिमी नौजवान पुश्ते समन्द पर जल्वा आरा थे, चेहरा की ताबिश माहे ताबां को शरमा रही थी, सरो क़ामत ने अपने जमाल से रेगिस्तान को बुस्ताने हुस्न बना दिया। जवानी की बहारें क़दमों पर निसार हो रही थीं, सुंबुल काकुल से ख़जल बर्ग गुल उसकी नज़ाकत से मुंफ़इल हसन की तस्वीर, मुस्तफ़ा की तनवीर हबीबे किब्रिया **सल्लल्लाहो अलैहिस्सलाम** के जमाले अक़्दस का ख़ुतबा पढ़ रही थी, यह चेहरा ताबाँ उस रूए दरख़्शाँ की याद दिलाता था। उन संग दिलों पर हैरत जो उस गुले शादाब के मुक़ाबला का इरादा रखते थे। इन बेदीनों पर बेशुमार नफ़रत जो हबीबे ख़ुदा के नौनेहाल को गज़न्द (नुक़्सान) पहुँचाना चाहते थे। यह असदुल्लाही शेर मैदान में आया, सफ़े आदा की तरफ़ नज़र की, जुल-फ़िक़ार हैदरी को चमकाया और अपनी ज़ुबाने मुबारक से रज्ज़ शुरू की :

अना अ़ली इब्ने हुसैन बिन अ़ली
नहनु अह्ले बैत औला बिन्नबी

जिस वक़्त शहज़ादा आली क़द्र ने यह रज्ज़ पढ़ी होगी करबला का चप्पा चप्पा और रेगिस्ताने कूफ़ा का ज़र्रा ज़र्रा कांप गया होगा। उन मुदअयाने ईमान के दिल पत्थर से बदरजहा बदतर थे जिन्होंने इस नौ बादा चमनिस्ताने रिसालत की ज़ुबाने शीरीं से यह कलिमे सुने फिर भी उनकी आतिशे इनाद सर्द न हुई और कमीना सीना से कीना दूर न हुआ। लश्करियों ने अ़मर बिन सअ़द से पूछा यह सवार कौन है? जिसकी तजल्ली निगाहों को ख़ैरा कर रही है जिसकी हैबत व सौलत से बहादुरों के दिल हिरासाँ हैं, शाने शुजाअ़त इसकी एक एक अदा से ज़ाहिर है। कहने लगा, यह हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु के फ़रज़न्द हैं सूरत व सीरत में अपने जद्दे करीम अ़लैहिस्सलात वत्तस्लीम से बहुत मुनासिबत रखते थे। यह सुन कर लश्करियों को कुछ परेशानी हुई और उनके दिलों ने उन पर मलामत की कि उस आक़ा ज़ादे के मुक़ाबिल आना और ऐसे जलीलुल-क़द्र मेहमान के साथ यह सुलूके बेमुरव्वती करना निहायत सिफ़्लापन और बदबातिनी है लेकिन इब्ने ज़्याद के वादे और यज़ीद के इंआम व इकराम की तमअ़, दौलत व माल की हिर्स ने इस तरह गिरफ़्तार किया था कि वह अह्ले बैते अतहार की क़द्र व शान और अपने अफ़्आ़ल व किरदार की शामत व नुहूसत जानने के बावजूद अपने ज़मीर की मलामत की परवाह न करके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बाग़ी बने और ऑले रसूल के ख़ून से किनारा करने और अपने दारैन की रू सियाही से बचने की उन्होंने कोई परवाह न की।

शहज़ादा आ़ली वक़ार ने मुबारिज़ तलब फ़रमाया। सफ़े आदा में किसी को जुंबिश न हुई, किसी बहादुर का क़दम न बढ़ा, मालूम होता था कि शेर के मुक़ाबिल बकरियों का एक गल्ला (झुण्ड) है जो दमबखुद और साकित है।

हज़रत अ़ली अकबर ने फिर नारा मारा और फ़रमाया कि ऐ ज़ालिमाने जफ़ाकश! अगर बनी फ़ातिमा के ख़ून की प्यास है तो तुम में से जो बहादुर है उसे मैदान में भेजो, ज़ोरे बाज़ुए अ़ली देखना हो तो मेरे मुक़ाबिल आओ मगर किस की हिम्मत थी जो आगे बढ़ता? किस के दिल में ताब व तवाँ थी कि शेरे ज़याँ के सामने आता? जब आपने मुलाहिज़ा फ़रमाया कि दुश्मनाने ख़ूंख़्वार में से कोई न आया, आगे बढ़ता और उनके बराबर की हिम्मत नहीं है कि एक को एक के मुक़ाबिल करें तो आपने समुन्द्र बादपा की बाग उठाई और सन सबा रफ़्तार के महमीज़ लगाई और साइक़ा वार

दुश्मन पर हमला किया। जिस तरफ़ ज़द की परे के परे हटा दिए। एक-एक वार में कई-कई देव पैकर गिरा दिए, अभी मैमना पर चमके तो उसको मुंतशिर किया, अभी मैसरा की तरफ पलटे तो सफ़ें दरहम बरहम कर डालीं, कभी क़ल्बे लश्कर में ग़ोता लगाया तो गर्दन कशों के सर मौसमे ख़ेज़ाँ के पत्तों की तरह तन के दरख़्तों से जुदा हो कर गिरने लगे, हर तरफ़ शोर बरपा हो गया, दिलावरों के दिल छूट गए, बहादुरों की हिम्मतें टूट गईं, कभी नेज़े की ज़र्ब थी, कभी तल्वारों का वार था, शहज़ाद-ए-अह्ले बैत का हमला न था, अ़ज़ाबे इलाही की बलाए अ़ज़ीम थी।

धूप में जंग करते करते चमनिस्ताने अह्ले बैत के गुले शादाब को तिश्नगी का ग़लबा हुआ, बाग मोड़ कर वालिद माजिद की ख़िदमत में हाज़िर हुए अ़र्ज़ किया **या इब्ताहुल-अतश** ऐ पिदर बुज़ुर्गवार! प्यास का बहुत ग़लबा है, ग़लबा की क्या इंतिहा तीन दिन से पानी बन्द है तेज़ धूप और उस में जाँबाज़ाना दौड़ धूप, गर्म रेगिस्तान लोहे के हथियार जो बदन पर लगे हुए हैं वह तमाज़ते आफ़ताब से आग हो रहे हैं, अगर इस वक़्त हलक़ तर करने के लिए चन्द क़तरे मिल जाएं तो फातमी शेर गरबा ख़स्लतों को पैवन्दे ख़ाक कर डालें।

शफ़ीक़ बाप ने जांबाज़ बेटे की प्यास देखी मगर पानी कहाँ था जो उस तिश्ना शहादत को दिया जाता। दस्ते शफ़्क़त से चेहर-ए-गुलगूं का गर्द व ग़ुबार साफ़ किया और अपनी अंगुश्तरी फ़रज़न्दे अरजुमन्द के दहाने अक़्दस में रख दी, पिदर मेहरबान की शफ़्क़त से फ़िल-जुमला तस्कीन हुई फिर शहज़ादा ने मैदान का रुख़ किया फिर सदा दी **हल मिन मुबारिज़** कोई जान पर खेलने वाला हो तो सामने आए।

उमर बिन आ़स ने तारिक़ से कहा बड़े शर्म की बात है कि अह्ले बैत का अकेला नौजवान मैदान में आए और तुम हज़ारों की तादाद में हो, उसने पहली मरतबा मुबारिज़ तलब किया तो तुम्हारी जमाअ़त में किसी को हिम्मत न हुई फिर वह आगे बढ़ा तो सफ़ों की सफ़ें दरहम बरहम कर डालीं और बहादुरों का खेत कर दिया, भूखा है, प्यासा है, धूप में लड़ते लड़ते थक गया है। ख़स्ता और मांदा हो चुका है फिर मुबारिज़ तलब करता है और तुम्हारी ताज़ा फ़ौज में से किसी को याराए मुक़ाबला नहीं, तुफ़ है तुम्हारे दावा-ए-शुजाअ़त व बसालत पर हो कुछ ग़ैरत तो मैदान में निकल कर मुक़ाबला करके फतह हासिल करो! मैं वादा करता हूँ कि तूने यह काम

अंजाम दिया तो उबैदुल्लाह इब्ने ज़्याद से तुझको मूसल की हुकूमत दिला दूँगा। तारिक़ ने कहा कि मुझे अन्देशा है कि अगर फ़रज़न्दे रसूल और औलादे बतूल से मुक़ाबला करके अपनी आक़िबत भी ख़राब करूं फिर भी तू अपना वादा वफ़ा न करो तो मैं न दुनिया का न दीन का। इब्ने सअ़द ने क़सम खाई और पुख़्ता क़ौल व क़रार किया।

उस पर हरीस तारिक़ मूसल की लालच में गुल बुस्ताने रिसालत के लिए चला, सामने पहुँचते ही शहज़ाद-ए-वाला तबार पर नेज़े का वार किया, शहज़ाद-ए-आ़ली जाह ने उसका नेज़ा रद्द फ़रमा कर सीना पर एक ऐसा नेज़ा मारा कि तारिक़ की पीठ से निकल गया और वह एक दम घोड़े से गिर गया। शहज़ादे ने बकमाले हुनरमन्दी घोड़े को ऐड़ देकर उसको रौंद डाला और हड्डियाँ चकना चूर कर दीं, यह देख कर तारिक़ के बेटे उमर बिन तारिक़ को तैश आया और वह झल्लाता हुआ घोड़ा दौड़ा कर शहज़ादा पर हमला आवर हुआ, शाहज़ादे ने एक ही नेज़े में उसका काम भी तमाम किया।

उसके बाद उसका भाई तलहा बिन तारिक़ अपने बाप और भाई का बदला लेने के लिए आतिशीं शुअ़ला की तरह शहज़ादा पर दौड़ पड़ा, हज़रत अ़ली अकबर ने उसके गरीबान में हाथ डाल कर ज़ीन से उठा लिया और ज़मीन पर इस ज़ोर से पटका कि उसका दम निकल गया, शहज़ादा की हैबत से लश्कर में शोर बरपा हो गया।

इब्ने सअ़द ने एक बहादुर मिसरअ़ इब्ने ग़ालिब को शहज़ादा के मुक़ाबला के लिए भेजा, मिसरअ़ ने शहज़ादा पर हमला किया आपने तल्वार से नेज़ा क़लम करके उसके सर पर ऐसी तल्वार मारी कि उसकी ज़ीन तक कट गई, दो टुकड़े हो कर गिर गया। अब किसी की हिम्मत न रही कि तन्हा उस शेर के मुक़ाबले में आता, नाचार इब्ने सअ़द ने मुहकम बिन तुफ़ैल बिन नौफल को हज़ार सवारों के साथ शहज़ादा पर यकबारगी हमला करने के लिए भेजा, शहज़ादे ने नेज़ा उठा कर उन पर हमला किया और उन्हें धकेल कर क़ल्बे लश्कर तक पहुँचा दिया।

इस हमले से शहज़ादे के हाथ से कितने बदनसीब हलाक हुए, कितने पीछे हटे, आप पर प्यास की बहुत शिद्दत हुई, फिर घोड़ा दौड़ा कर पिदरे आ़ली क़द्र की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया : **अल-अ़तश अल-अ़तश।** बाबा प्यास की बहुत शिद्दत है! इस मरतबा हज़रत इमाम ने

फ़रमाया ऐ नूरे दीदा! हौज़े कौसर से सैराबी का वक़्त क़रीब आ गया है। दस्ते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वह जाम मिलेगा जिसकी लज़्ज़त न तसव्वुर में आ सकती है, न ज़ुबान ब्यान कर सकती है। यह सुन कर हज़रत अ़ली अक्बर को ख़ुशी हुई और वह फिर मैदान की तरफ़ लौट गए और लश्करे दुश्मन के यमीन व यसार (दाएं बाएं) पर हमला करने लगे।

इस मरतबा लश्करे अशरार ने यक्बारगी चारों तरफ़ से घेर कर हमले करना शुरू कर दिए। आप भी हमला फ़रमाते और दुश्मन हलाक हो, हो कर खाक व ख़ून में लोटते रहे लेकिन चारों तरफ़ से नेज़ों के ज़ख़्मों ने तने नाज़नीन को चकना चूर कर दिया था और चमने फ़ातिमा का गुल रंगीन अपने ही ख़ून में नहा गया था, पैहम तेग़ व सिनान की ज़रबें पड़ रही थीं और फ़ातमी शहसवार पर तीर व तल्वार का मेंह बरस रहा था, इस हालत में आप पुश्ते ज़ीन से रूए ज़मीन पर आए और सरो क़ामत ने ख़ाके करबला पर इस्तेराहत की, उस वक़्त आपने आवाज़ दी **या इब्ताहु अदरक्नी** ऐ पिदर बुज़ुर्गवार मुझको लीजिए।

हज़रत इमाम घोड़ा दौड़ा कर मैदान में पहुँचे और जाँबाज़ नौनिहाल को खेमा में लाए, उसका सर गोद में लिया। हज़रत अ़ली अकबर ने आँख खोली और अपना सर वालिद की गोद में देख कर फ़रमाया, ऐ पिदर बुज़ुर्गवार! मैं देख रहा हूँ कि आसमान के दरवाज़े खुले हैं, बहिश्ती हूरें शरबत के जाम लिए इंतिज़ार कर रही हैं। यह कहा और जान, जाने आफ़रीं के सिपुर्द की : **इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन।**

अह्ले बैत का सब्र व तहम्मुल अल्लाहु अक्बर! उम्मीद के गुले नौ शगुफ़्ता को कुम्लाया हुआ देखा और अल्हम्दुलिल्लाह कहा। नाज़ के पालों को कुरबान कर दिया और शुक्रे इलाही बजा लाए। मुसीबत व अन्दोह की कुछ निहायत है! फ़ाक़ा पर फ़ाक़े हैं, पानी का नाम व निशान नहीं। भूखे प्यासे फ़रज़न्द तड़प तड़प कर जानें दे चुके हैं, जलती रेत पर फातमी नौनिहाल ज़ुल्म व जफ़ा से ज़बह किए गए, अ़ज़ीज़ व अक़ारिब, दोस्त, ख़ादिम, मवाली, दिल-बन्द, जिगर पैवन्द, सब आईने वफ़ा अदा करके दोपहर में शरबते शहादत नोश कर चुके हैं। अह्ले बैत के क़ाफ़िले में सन्नाटा हो गया है। जिनका कलिमा कलिम-ए-तसकीन दिल व राहते जान था, वह नूर की तस्वीरें ख़ाक व ख़ून में ख़ामोश पड़ी हुई हैं। आले रसूल ने रज़ा व सब्र का इम्तिहान वह दिया जिसने दुनिया को हैरत में डाल दिया

है। बड़े से लेकर बच्चे तक मुब्तलाए मुसीबत थे।

हज़रत इमाम के छोटे फ़रज़न्द अ़ली असग़र जो अभी कम्सिन हैं, शीर ख़्वार हैं, प्यास से बेताब हैं, शिद्दते तिशनगी से तड़प रहे हैं। माँ का दूध ख़ुश्क हो गया है। पानी का नाम व निशान तक नहीं है। इस से छोटे बच्चे की ज़ुबान बाहर आती है, बेचैनी में हाथ पाँव मारते हैं और पेच खा-खा कर रह जाते हैं, कभी माँ की तरफ़ देखते हैं और उनको सूखी ज़ुबान दिखाते हैं। नादान बच्चा क्या जानता है कि ज़ालिमों ने पानी बन्द कर दिया है। माँ का दिल बेचैनी से पाश पाश हो जाता है। कभी बच्चा बाप की तरफ़ इशारा करता है वह जानता था कि हर चीज़ ला कर दिया करते थे, मेरी इस बेकसी के वक़्त भी पानी बहम पहुँचाएंगे। छोटे बच्चे की बेताबी देखी न गई, वालिदा ने हज़रत इमाम से अ़र्ज़ किया इस नन्हीं जान की बेताबी देखी नहीं जाती इसको गोद में ले जाइए और इसका हाल ज़ालिमाने संग दिल को दिखाइए, इस पर तो रहम आएगा, इसको तो चन्द क़तरे दे ही देंगे! यह न जंग करने के लाइक़ है न मैदान के लाइक़ है इस से क्या अ़दावत है!

हज़रत इमाम इस छोटे नूरे नज़र को सीने से लगा कर सिपाहे दुश्मन के सामने पहुँचे और फ़रमाया, अपना तमाम कुंबा तो तुम्हारी बेरहमी और जौर व जफ़ा की नज़्र कर चुका, अब अगर आतिशे बुग्ज़ व इनाद जोश पर है तो उसके लिए मैं हूँ, यह शीर ख़्वार बच्चा प्यास से दम तोड़ रहा है इसकी बेताबी देखो और कुछ शाइबा भी रहम का हो तो इसका हलक़ तर करने को एक घूँट पानी दो! जफ़ाकाराने संग दिल पर उसका कुछ असर न हुआ और उनको ज़रा रहम न आया। बजाए पानी के एक बदबख़्त ने तीर मारा जो अ़ली असग़र की हलक़ को छेदता हुआ इमाम के बाज़ू में बैठ गया। इमाम ने वह तीर खींचा, बच्चा ने तड़प के जान दी। बाप की गोद से एक नूर का पुतला लिपटा हुआ है ख़ून में नहा रहा है। अह्ले ख़ेमा को गुमान है कि सियाह दिलाने बेरहम इस बच्चा को ज़रूर पानी देंगे और इसकी तिशनगी दिलों पर ज़रूर असर करेगी।

लेकिन जब इमाम उस शगूफ़ा-ए-तमन्ना को ख़ेमा में लाए और उसकी वालिदा ने अव्वल नज़र में देखा कि बच्चा में बेताबाना हरकतें नहीं हैं, सुकून का आ़लम है न वह इज़्तिराब है न बेक़रारी। गुमान हुआ कि पानी दे दिया होगा, हज़रत इमाम से दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया, वह भी साक़ी-ए-कौसर

के जामे रहमत से सैराब होने के लिए अपने भाईयों से जा मिला। अल्लाह तआला ने हमारी यह छोटी कुरबानी भी कुबूल फरमाई : **अल्हम्दुलिल्लाह अला एहसानेही व नवालेही।**

रज़ा व तस्लीम की इम्तिहानगाह में इमाम हुसैन और उनके मुतवस्सेलीन ने वह साबित क़दमी दिखाई कि आलमे मलाइका भी हैरत में आ गया होगा। **इन्नी आलमु माला तालमून।** का राज़ उन पर मुंकशिफ़ हो गया होगा।

अब वह वक़्त आ गया कि जाँनिसार एक एक करके रुख़्सत हो चुके और हज़रत इमाम पर जानें कुरबान कर गए। अब तन्हा हज़रत इमाम हैं और एक फ़रज़न्द हज़रत इमाम ज़ैनुल-आबेदीन वह भी बीमार व ज़ईफ़। बावजूद इस ज़ुअफ़ व ना ताक़ती के ख़ेमा से बाहर आए और हज़रत इमाम को तन्हा देख कर मैदाने कारज़ार में जाने और अपनी जान निसार करने के लिए नेज़ा दस्ते मुबारक में लिया लेकिन बीमारी, सफ़र की कोफ़्त, भूख प्यास, मुतवातिर फ़ाक़ों और पानी की तक्लीफ़ों से ज़ुअफ़ इस दरजा तरक़्क़ी कर गया था कि खड़े होने से बदन मुबारक लरज़ता है, बावजूद इसके हिम्मते मरदाना का यह हाल था कि मैदान का अज़्म कर दिया।

हज़रत इमाम ने फ़रमाया, जाने पिदर, लौट आओ, मैदान का क़सद न करो! कुंबा व क़बीला, अज़ीज़ व अक़ारिब, ख़ुद्दाम, मवाली जो हमराह थे राहे हक़ में निसार कर चुका और अल्हम्दुलिल्लाह कि इन मसाइब को जद्दे करीम के सदक़ा में सब्र व तहम्मुल के साथ बर्दाश्त किया। अब अपना नाचीज़ हदिया राहे ख़ुदा में नज़्र करने के लिए हाज़िर है। तुम्हारी ज़ात के साथ बहुत उम्मीदें वाबस्ता हैं, बे-कसाने अह्ले बैत को वतन तक पहुँचाने की ज़िम्मेदारी कौन लेगा और बीवियों की निगहदाश्त कौन करेगा? जद्द व पिदर की अमानतें जो मेरे पास हैं किसके सिपुर्द की जाएंगी, कुरआने करीम की मुहाफ़िज़त और हक़ाइक़े इरफ़ानिया की तबलीग़ का मरकज़ किस के सर पर रह जाएगा, मेरी नस्ल किस से चलेगी, हुसैनी सैयदों का सिलसिला किस से जारी होगा? यह सब तवक़्क़ुआत तुम्हारी ही ज़ात से वाबस्ता हैं। दू दमाने नुबुव्वत व रिसालत के चिराग़ तुम ही हो, तुम्हारी ही तलअ़त से दुनिया मुस्तफ़ीद होगी, मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दिलदादगाने हुस्न तुम्हारे ही रूए ताबां से हबीबे हक़ के अनवार व तजल्लियात की ज़्यारत करेंगे। ऐ नूरे नज़र लख़्ते जिगर! यह तमाम काम

तुम्हारे ज़िम्मा किए जाते हैं, मेरे बाद तुम ही जानशीन होगे, तुम्हें मैदान जाने की इजाज़त नहीं है।

हज़रत ज़ैनुल-आबेदीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया मेरे भाई तो जाँनिसारी की सआदत पा चुके हैं और हुज़ूर के सामने ही साक़ी-ए-कौसर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आग़ोशे रहमत व करम में पहुँचे, मैं तड़प रहा हूँ मगर हज़रत इमाम ने कुछ पज़ीर न फरमाया, इमाम ज़ैनुल-आबेदीन को इन तमाम ज़िम्मेदारियों का हामिल किया और खुद जंग के लिए तैयार हुए। क़बाए मिस्री पहनी और अमामा रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सर पर बांधा, सैयदुश्शुहदा अमीर हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के सिपर पुश्त पर रखी, हज़रत हैदरे कर्रार की ज़ुल-फ़िक़ारे आबदार हमाइल की, अह्ले ख़ेमा ने उस मंज़र को किन आंखों से देखा। इमाम मैदान जाने के लिए घोड़े पर सवार हुए, उस वक़्त अह्ले बैत की बेकसी इंतिहा को पहुँचती है और उनका सरदार उन से तवील अरसा के लिए जुदा होता है।

नाज़ परवरदों के सरों से शफ़क़ते पिदरी का साया उठने वाला है, नौनिहालाने अह्ले बैत के गिर्द यतीमी मंडला रही है, अज़वाज से सुहाग रुख़्सत हो रहा है, दुखे हुए और मज्रूह दिल इमाम की जुदाई से कट रहा है, बेकस क़ाफ़िला हसरत व यास की निगाहों से इमाम के चेहरा दिल अफ़्रोज़ पर नज़र कर रहा है, सकीना की तर्सी हुई आँखें पिदर बुज़ुर्गवार का आख़िरी दीदार कर रही हैं, आन दो आन में यह जल्वा हमेशा के लिए रुख़्सत होने वाले हैं, अह्ले ख़ेमा के चेहरों से रंग उड़ गए हैं, हसरत व यास की तस्वीरें खड़ी हुई हैं, न किसी के बदन में जुंबिश हैं न किसी की ज़ुबान में ताबे हरकत, नूरानी आँखों से आँसू चमक रहे हैं। ख़ानदाने मुस्तफ़ा बेवतनी और बेकसी में अपने सरों से रहमत व करम के साया गुस्तर को रुख़्सत कर रहा है।

हज़रत इमाम ने अपने अह्ले बैत को तल्क़ीने सब्र फ़रमाई, रज़ाए इलाही पर साबिर व शाकिर रहने की हिदायत की और सब को सिपुर्दे खुदा करके मैदान की तरफ़ रुख़ किया, अब न क़ासिम हैं न अबू बकर व उमर व उसमान व औन न जाफ़र व अब्बास जो हज़रत इमाम को मैदान जाने से रोकें और अपनी जानें इमाम पर फ़िदा करें। अली अकबर भी आराम की नींद सो गए जो हुसूले शहादत की तमन्ना में बेचैन थे, तन्हा इमाम हैं और आप ही को आदा के मुक़ाबिल जाना है।

ख़ेमा से चले और मैदान में पहुँचे, हक़ व सदाक़त का रौशन आफ़ताब सर ज़मीने शाम में ताले हो, उम्मीदे ज़िन्दगानी व तमन्नाए ज़ीस्त का गर्द व गुबार उसके जल्वे को छुपा न सका। हुब्बे दुनिया व आसाइश की रात के सियाह पर्दे आफ़ताबे हक़ की तजल्लियों से चाक चाक हो गए, बातिल की तारीकी उसकी नूरानी शुआओं से काफ़ूर हो गई। मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रज़न्द, राहे हक़ में घर लुटा कर सर बकफ़ मौजूद है, हज़ारहा सिपह गिराँ नबर्द आज़माँ लश्कर गिरां मौजूद है और उसकी पेशानी मुसफ़्फ़ा पर शिकन भी नहीं। दुश्मन की फ़ौज पहाड़ों की तरह घेरे हुए हैं और इमाम की नज़र में परेकाह के बराबर भी उनका वज़न नहीं। आपने एक रज्ज़ पढ़ी जो आपके ज़ाती व नसबी फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल थी और उसमें शामियों को रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नाखुशी व नाराज़गी और ज़ुल्म के अंजाम से डराया गया था। उसके बाद आपने एक खुतबा फरमाया और उसमें हम्द व सलात के बाद फ़रमाया :

ऐ क़ौम! ख़ुदा से डरो जो सब का मालिक है जान देना जान लेना सब उसकी कुदरत व इख़्तियार में है। अगर तुम ख़ुदावन्दे आलम जल्ला जलालुहू पर यक़ीन रखते और मेरे जद्दे करीम हज़रत सैयदुल-अंबिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए हो तो डरो कि क़यामत के दिन मीज़ाने अद्ल क़ायम होगी, आमाल का हिसाब किया जाएगा, मेरे वालिदैन महशर में अपनी आल के बेगुनाह ख़ून का मुतालबा करेंगे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिनकी शफ़ाअत गुनाह गारों की मग़्फ़िरत का ज़रिया है और तमाम मुसलमान जिनकी शफ़ाअत के उम्मीदवार हैं वह तुम से मेरे और मेरे जाँबाज़ों के ख़ून नाहक़ का बदला चाहेंगे, तुम मेरे अह्ल व अयाल, अइज़्ज़ा व अतफ़ाल, असहाब व मवाली में से सत्तर से ज़्यादा शहीद कर चुके हो और अब मेरे क़त्ल का इरादा रखते हो, ख़बरदार हो जाओ कि ऐशे दुनिया में पाएदारी व क़याम नहीं। अगर सलतनत की तमअ़ में मेरे दरपे आज़ार हो तो मुझे मौक़ा दो कि मैं अ़रब छोड़ कर दुनिया के किसी हिस्सा में चला जाऊं। अगर यह कुछ मन्ज़ूर न हो और अपनी हरकात से बाज़ न आओ तो हम अल्लाह तआ़ला के हुक्म और उसकी मर्ज़ी पर साबिर व शाकिर हैं : **अल-हुक्मु लिल्लाहे व रज़ीना बेक़ज़ाइल्लाहे।**

हज़रत इमाम की ज़ुबान गौहर फ़शाँ से यह कलिमात सुन कर कूफ़ियों

में से बहुत से लोग रो पड़े। दिल सब के जानते थे कि वह बर सरे ज़ुल्म व जफ़ा हैं और हिमायते बातिल के लिए उन्होंने दारैन की रू सियाही की है और यह भी सबको यक़ीन था कि इमाम मज़्लूम हक़ पर हैं। इमाम के ख़िलाफ़ एक एक जुंबिश दुश्मनाने हक़ के लिए आख़िरत की रुसवाई व ख़्वारी का मूजिब है इसलिए बहुत से लोगों पर असर हुआ और ज़ालिमाने बदबातिन ने भी एक लम्हा के लिए उस से असर लिया, उनके बदनों पर फुरेरी सी आ गई और उनके दिलों पर एक बिजली सी चमक गई लेकिन शिमर वग़ैरह बदसीरत व पलीद तबीअ़त रज़ील कुछ मुतअस्सिर न हुए बल्कि यह देख कर लशकरियों पर हज़रत इमाम की तक़रीर का कुछ असर मालूम होता है, कहने लगे कि आप क़िस्सा कोताह कीजिए और इब्ने ज़्याद के पास चल कर यज़ीद की बैअ़त कर लीजिए तो आप से तआ़रुज़ न करेगा वरना बजुज़ जंग के कोई चारा नहीं है। हज़रत इमाम को अंजाम मालूम था लेकिन यह तक़रीरे इक़ामत हुज्जत के लिए फ़रमाई थी कि उन्हें कोई उज़्र बाक़ी न रहे।

सैय्युल-अंबिया सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का नूरे नज़र ख़ातूने जन्नत फ़ातिमतुज़्ज़ाहरा का लख़्ते जिगर, बेकसी, भूख प्यास की हालत में आल व असहाब की मुफ़ारिक़त का ज़ख़्म दिल पर लिए हुए गर्म रेगिस्तान में बीस हज़ार लश्कर के सामने सरापा खड़ा है। तमाम हुज्जतें क़तअ़ कर दी गईं, अपने फ़ज़ाइल और अपनी बेगुनाही से आदा को अच्छी तरह आ़गाह कर दिया और बार बार बता दिया कि मैं बक़स्दे जंग नहीं आया और इस वक़्त तक इरादा-ए-जंग नहीं है, अब भी मौक़ा दो तो वापस चला जाऊँ मगर बीस हज़ार की तादाद इमाम को बेकस व तन्हा देख कर जोशे बहादुरी दिखाना चाहती है।

जब हज़रत इमाम ने इत्मीनान फ़रमाया कि बद दिलाने बद बातिन के लिए कोई उज़्र बाक़ी न रहा और वह किसी तरह ख़ूने नाहक़ व ज़ुल्म बेनिहायत से बाज़ आने वाले नहीं तो इमाम ने फ़रमाया कि तुम जो इरादा रखते हो पूरा करो और जिसको मेरे मुक़ाबला के लिए भेजना चाहते हो भेजो! मशहूर बहादुर और यगाना नबर्द आज़मा जिनको सख़्त वक़्त के लिए रखा गया था मैदान में भेजे गए। एक बेहया, इब्ने ज़हरा के मुक़ाबिल तल्वार चमकाता आता है, इमाम तिश्नाकाम को आबे तेग़ दिखाता है, पेशवाए दीन के सामने अपनी बहादुरी की डीगें मारता है, ग़ुरूरे कुव्वत में

सरशार है कसरते लश्कर और तन्हाई–ए–इमाम पर नाज़ां है। आते ही हज़रत इमाम की तरफ तल्वार खींचता है अभी हाथ उठाया ही था कि इमाम ने ज़र्ब फरमाई सर कट कर दूर जा पड़ा और ग़ुरूरे शुजाअते ख़ाक में मिल गया। दूसरा बढ़ा और चाहा कि इमाम के मुक़ाबले में हुनर मन्दी का इज़हार करके सियाह दिलों की जमाअत में सुर्ख़ रूई हासिल करे, एक नारा मारा और पुकार कर कहने लगा, बहादुरान कोह शिकन शाम व इराक़ में मेरी बहादुरी का ग़लग़ला है और मिस्र व रोम में शहरः-ए-आफ़ाक़ हूं, दुनिया भर के बहादुर मेरा लोहा मानते हैं, आज तुम मेरी ज़ोर व कुव्वत को और दाव पेच को देखो।

इब्ने सअद के लश्करी इस मुतकब्बिर सरकश की तअ़लियों से बहुत ख़ुश हुए और सब देखने लगे कि किस तरह इमाम से मुक़ाबला करेगा। लश्करियों को यक़ीन था कि हज़रत इमाम पर भूख प्यास की तक्लीफ़ हद से गुज़र चुकी है, सदमों ने ज़ईफ़ कर दिया है, ऐसे वक़्त में इमाम पर ग़ालिब आना कुछ मुश्किल काम नहीं, जब सिपाहे शाम का गुस्ताख़ जफ़ा जू सरकशाना घोड़ा कुदाता सामने आया, हज़रत इमाम ने फरमाया तू मुझे जानता नहीं! जो मेरे मुक़ाबला इस दिलेरी से आता है होश में हो। इस तरह एक एक मुक़ाबिल आया तो तेग़े ख़ूं आशाम से सब का काम तमाम कर दिया जाएगा। हुसैन को कमज़ोर व बेकस देख कर हौसला मन्दियों का इज़हार कर रहे हो, नामरदो! मेरी नज़र में तुम्हारी कोई हक़ीक़त नहीं। शामी जवान यह सुन कर तैश में आया, बजाए जवाब के इमाम पर तल्वार का वार किया, हज़रत इमाम ने उसका वार बचा कर कमर पर तल्वार मारी। मालूम होता था कि खीरा था काट डाला। अह्ले शाम को अब यह इत्मीनान था कि हज़रत के सिवा अब और तो कोई बाक़ी न रहा कहाँ तक न थकेंगे, प्यास की हालत में धूप की तपिश मुज़्महल कर चुकी थी, बहादुरी के जौहर दिखाने का वक़्त है जहाँ तक हो एक एक मुक़ाबिल किया जाए कोई तो कामयाब होगा। इस तरह नए नए दम बदम शेर सल्तनत, पील पैकर, तेग़ ज़न हज़रत इमाम के मुक़ाबिल आते रहे मगर जो सामने आया एक ही हाथ में उसका क़िस्सा तमाम फ़रमाया। किसी के सर पर तल्वार मारी तो ज़ीन तक काट डाली, किसी के हमाइली हाथ मारा तो क़लमी तराश दिया, ख़ुद व मिग़फ़र काट डाली, किसी के आईने क़ता कर दिए, किसी को नेज़े पर उठा लिया और ज़मीन पर पटक दिया, किसी के सीने

में नेज़ा मारा और पार निकाल दिया।

ज़मीने करबला में बहादुराने कूफ़ा का खेत बो दिया, नामवराने उन सफ़ शिकन के ख़ून से करबला के तिश्ना रेगिस्तान को सैराब फरमा दिया। नअ्शों के अंबार लग गए, बड़े बड़े फ़ख़ रोज़गार बहादुर काम आ गए, लश्करे आदा में शोर बरपा हो गया कि जंग का यह अंदाज़ रहा तो हैदर का शेर कूफ़ा के ज़न व अतफ़ाल को बेवा व यतीम बना कर छोड़ेगा और उसकी तेग़ बेपनाह से कोई बहादुर जान बचा कर न ले जा सकेगा। मौक़ा मत दो और चारों तरफ से घेर कर यक्बारगी हमला करो! फ़रोमाइगान रूबाह सीरत हज़रत इमाम के मुक़ाबला से आजिज़ आए और यही सूरत इख़्तियार की। माह चर्ख़े हक़्क़ानियत पर जोर व जफा की तारीक घटा छा गई और हज़ारों नौजवान दौड़ पड़े, हज़रत इमाम को घेर लिया तल्वार बरसानी शुरू की। हज़रत इमाम की बहादुरी की सताइश हो रही थी और आप ख़ूंख़्वार के अंबोह में अपनी तेग़ आबदार के जौहर दिखाते जा रहे थे। जिस तरफ़ घोड़ा बढ़ा दिया परे के परे काट डाले। दुश्मन हैरतज़दा हो गए और हैरत में आ गए कि इमाम के हमला जानिस्तान से रिहाई की कोई सूरत नहीं। हज़ारों आदमियों में घिरे हुए हैं और दुश्मनों का सर इस तरह उड़ा रहे हैं जिस तरह बादे ख़िज़ां के झोंके दरख़्तों से पत्ते गिराते हैं।

इब्ने सअद और उसके मुशीरों को बहुत तश्वीश हुई कि अकेले इमाम के मुक़ाबले हज़ारों की जमाअतें हैच हैं, कूफ़ियों की इज़्ज़त खाक में मिल गई, तमाम नामवराने कूफ़ा की जमाअतें एक हिजाज़ी जवान के हाथ से जान न बचा सकीं। तारीख़े आलम में हमारी नामर्दी का वाक़या अह्ले कूफ़ा को हमेशा रुसवाए आलम करता रहेगा, कोई तदबीर करना चाहिए। तज्वीज़ यह हुई कि दस्त बदस्त जंग में हमारी सारी फौज भी उस शेरे हक़ से मुक़ाबला नहीं कर सकती बजुज़ इसके कोई सूरत नहीं है कि हर चहार तरफ से हज़रत इमाम पर तीरों का मेंह बरसाया जाए और जब ज़ख़्मी हो चुकें तो नेज़ों के हमला से तने नाज़नीन को मज्रूह किया जाए, तीर अंदाज़ों की जमाअतें हर तरफ से उमड़ आईं और इमाम तिश्ना काम को गर्दाबे बला में घेर कर तीर बरसाने शुरू कर दिए। घोड़ा इस क़दर ज़ख़्मी हो गया कि उसमें काम करने की कुव्वत बाक़ी न रही, नाचार हज़रत इमाम एक जगह ठहरना पड़ा। हर तरफ से तीर आ रहे हैं और इमाम मज़्लूम का

तने नाज़ परवर निशाना बना हुआ है और नूरानी जिस्म ज़ख़्म से चकना चूर और लहू लुहान हो रहा है। बेशर्म कूफ़ियों ने संग दिली से मोहतरम मेहमान के साथ यह सुलूक किया। एक तीर पेशानी अक़्दस पर लगा, यह पेशानी मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बोसा गाह थी। यह सीमाए नूर हबीबे ख़ुदा के आरज़ू मन्दाने जमाल का क़रार दिल है। बेअदबाने कूफ़ा ने उस पेशानी मुसफ़्फ़ा और उस जबीने पुर ज़्या को तीर से घायल कर दिया। हज़रत को चक्कर आया और घोड़े से नीचे आए। अब नामरदाने सियाह बातिन ने नेज़ों पर रख लिया, नूरानी पैकरे ख़ून में नहा गया और आप शहीद हो कर ज़मीन पर गिर पड़े : **इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन।**

ऐ करबला की ख़ाक तू उस एहसान को न भूल
तड़पी है तुझ पे नअ्श जिगर गोश-ए-रसूल

ज़ालिमाने बद केश ने उसी पर इक्तिफ़ा नहीं किया और हज़रत इमाम की मुसीबतों का उसी पहर ख़ातमा नहीं हो गया बल्कि दुश्मनाने ईमान ने सरे मुबारक को तने अक़्दस से जुदा करना चाहा और नुज़्र इब्ने ख़राशा उस नापाक इरादा से आगे बढ़ा मगर इमाम की हैबत से उसके हाथ काँप गए और तल्वार छूट पड़ी। ख़ोली इबने यज़ीद प्लीद ने या शिब्ल इब्ने यज़ीद ने बढ़ कर सरे अक़्दस को तन से जुदा किया।

सादिक़ जांबाज़ ने अह्दे वफ़ा पूरा किया और दीने हक़ पर क़ाइम रह कर अपना कुंबा, अपनी जान राहे ख़ुदा में उस ऊलुल-अज़्मी से नज़्र की। सूखा गला काटा गया और करबला की ज़मीन सैय्यदुश्शुहदा के ख़ून से गुल्ज़ार बनी। सर व तन को खाक में मिला कर अपने जद्दे करीम के दीन की हक़्क़ानियत की अमली शहादत दी और रेगिस्ताने कूफ़ा के वर्क़ पर सिद्क़ व अमानत पर जान कुरबान करने के लिए नुक़ूश सब्त की।

करबला के ब्याबान में ज़ुल्म व जफ़ा की आंधी चली, मुस्तफ़ाई चमन के ग़ुंचा व गुल बादे सुमूम की नज़्र हो गए, ख़ातूने जन्नत का लहलहाता बाग़ दोपहर में काट डाला गया, कौनैन के मताअ बेदीनी व बेहुरमती के सैलाब से ग़ारत हो गए। फ़रज़न्दाने आले रसूल के सर से सरदार का साया उठा, बच्चे इस ग़रीबुल-वतनी में यतीम हुए, बीवियां बेवा हुईं। मज़्लूम बच्चे और बेकस बीवियाँ गिरफ़्तार किए गए।

मुहर्रम 61 हिजरी की दसवीं तारीख़ जुमा के रोज़ छप्पन साल पाँच

माह पांच दिन की उम्र में हज़रत इमाम ने इस दारे नापाएदार से रिहलत फरमाई और दाइ-ए-अजल को लब्बैक कहा। इब्ने ज़्याद बद निहाद ने सरे मुबारक को कूफ़ा के कूचा व बाज़ार में फिर वाया और इस तरह अपनी बेहमीयती व बेहयाई का इज़हार किया। फिर हज़रत सैय्यदुश्शुहदा और उनके तमाम जांबाज़ शुहदा के सरों को असीराने अह्ले बैत के साथ शिम्र नापाक की हम्राही में यज़ीद के पास दमिश्क़ भेजा। यज़ीद ने सरे मुबारक और अह्ले बैत को हज़रत इमाम ज़ैनुल-आबेदीन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के साथ मदीना तय्यबा भेजा। वहाँ हज़रत इमाम का सरे मुबारक आपकी वालिदा माजिदा हज़रत ख़ातूने जन्नत रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा या हज़रत इमाम हसन के पहलू में मदफ़ून हुआ।

इस वाक़िया हाइला से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो रंज पहुँचा और क़ल्बे मुबारक को जो सदमा पहुँचा, अंदाज़ा और क़्यास से बाहर है। इमाम अहमद बैहक़ी ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत की है कि एक रोज़ मैं दोपहर के वक़्त हुज़ूरे अक़्दस अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम की ज़ियारत से ख़्वाब में मुशर्रफ़ हुआ। मैंने देखा कि सुंबुल मुअंबर व गैसूए मुअत्तर बिखरे हुए और ग़ुबार आलूद हैं, दस्ते मुबारक में एक ख़ून भरा शीशा है। यह हाल देख कर दिल बेचैन हो गया, मैंने अर्ज़ किया ऐ आक़ा! कुरबानते शोम! यह क्या हाल है। फरमाया हुसैन और उनके रफ़ीक़ों का ख़ून है, मैं उसे आज सुबह से उठा रहा हूँ। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं, मैंने उस तारीख़ व वक़्त को याद रखा। जब खबर आई तो मालूम हुआ कि हज़रत इमाम उसी वक़्त शहीद किए गए। हाकिम ने बैहक़ी में हज़रत इमाम सल्लमहू रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा से एक हदीस रिवायत की। उन्होंने भी इसी तरह हुज़ूर अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम को ख़्वाब में देखा कि आपके सर मुबारक व रेशे अक़्दस पर गर्द व ग़ुबार है, अर्ज़ किया जान मा कनीज़ इन निसार तू बाद : **या रसूलुल्लाह!** यह क्या हाल है? फरमाया अभी इमाम हुसैन के मक़्तल में गया था।

बैहक़ी अबू नईम ने बसरा अज़्विया से रिवायत की कि जब हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु शहीद हो गए तो आसमान से ख़ून बरसा। सुबह को हमारे मटके, घड़े और तमाम बर्तन ख़ून से भरे हुए थे।

बैहक़ी अबू नईम ने ज़हरी से रिवायत की कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु जिस रोज़ शहीद किए गए उस रोज़ बैतुल-मक़्दिस में जो पत्थर उठाया जाता था उसके नीचे ताज़ा ख़ून पाया जाता था। बैहक़ी ने उम्मे हिब्बान से रिवायत की कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के दिन अंधेरा हो गया और तीन रोज़ कामिल अंधेरा रहा और जिस शख़्स ने ज़ाफ़रान (ग़ाज़ा) मला, उसका मुँह जल गया और बैतुल-मक़्दिस के पत्थरों के नीचे ताज़ा ख़ून पाया गया। बैहक़ी ने जमील बिन मुर्रा से रिवायत की कि यज़ीद के लशकरियों ने लश्कर इमाम में एक ऊंट पाया और इमाम की शहादत के रोज़ उसको ज़बह किया और पकाया तो इन्द्राइन की तरह कड़वा हो गया और उसको कोई न खा सका। अबू नईम ने सुफ़यान से रिवायत की वह कहते हैं कि मुझको मेरी दादी ने ख़बर दी कि हज़रत इमाम की शहादत के दिन मैंने देखा रस (कुसुम) राख हो गया और गोश्त आग हो गया। बैहक़ी ने अली बिन शेर से रिवायत की कि मैंने अपनी दादी से सुना, वह कहती थीं कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में जवान लड़की थी। कई रोज़ आसमान रोया यानी आसमान से ख़ून बरसा। बाज़ मुअर्रेख़ीन ने कहा कि सात रोज़ तक आसमान ख़ून रोया, उसके असर से दीवार और इमारतें रंगीन हो गईं और जो कपड़ा उस से रंगीन हुआ, उसकी सुर्ख़ी पुरज़े पुरज़े होने तक न गई। अबू नईम ने हबीब बिन साबित से रिवायत की कि मैंने जिन्नों को हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु पर इस तरह नौहा ख़्वानी करते सुना :

तरजमा : उस जबीन को नबी ने चूमा था, है वही नूर उसके चेहरे पर, उसके मां बाप बर तरीने कुरैश, उसके नाना जहाँ से बेहतर।

अबू नईम ने हबीब बिन साबित से रिवायत की कि उम्मुल-मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने फरमाया कि मैंने हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही सल्लम की वफ़ात के बाद से सिवाए आज के कभी जिन्नों को नौहा करते और रोते नहीं सुना था मगर आज सुना तो मैंने जाना कि मेरा फ़रज़न्द हुसैन (रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु) शहीद हो गया। मैंने अपनी लौंडी को भेज कर ख़बर मंगाई तो मालूम हुआ कि हज़रत इमाम शहीद हो गए। जिन्न इस नौहा के साथ यूं ज़ारी करते थे।

तरजमा : हो सके जितना रोले ऐ रेशम! कौन रोएगा फिर शहीदों को? पास ज़ालिम के खींच कर लाई, मौत उन बेकसों ग़रीबों की।

इब्ने असाकिर ने मिन्हाल बिन उमर से रिवायत की वह कहते हैं, वल्लाह! मैंने बचश्म ख़ुद देखा कि जब सरे मुबारक इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को लोग नेज़े पर लिए जाते थे उस वक़्त मैं दमिश्क़ में था, सरे मुबारक के सामने एक शख़्स सूरः कहफ़ पढ़ रहा था जब वह इस आयत पर पहुँचा : **इन्ना असहाबल-कहफ़े वर्रक़ीमे कानू मिन आयातिना अजबन।** (असहाबे कहफ़ व रक़ीम हमारी निशानियों में से थे) उस वक़्त अल्लाह तआला ने सरे मुबारक को गोयाई दी, बज़ुबाने फ़सीह फ़रमाया : **आजबु मिन असहाबिल-कहफ़े क़त्ली व हमली।** (असहाबे कहफ़ के क़त्ल के वाक़िया से मेरा क़त्ल और मेरे सर को लिए फिरना अजीब तर है) दरहक़ीक़त बात यही है क्योंकि असहाबे कहफ़ पर काफ़िरों ने ज़ुल्म किया था और हज़रत इमाम को उनके नाना की उम्मत ने मेहमान बना कर बुलाया फिर बेवफ़ाई से पानी तक बन्द कर दिया। आल व असहाब को हज़रत इमाम के सामने शहीद किया फिर ख़ुद हज़रत इमाम को शहीद किया। अह्ले बैत को असीर किया, सरे मुबारक को शहर शहर फिराया। असहाबे कहफ़ सालहा साल की तवील ख़्वाब के बाद बोले, यह ज़रूर अजीब है मगर सर मुबारक का तन से जुदा होने के बाद कलाम फ़रमाना उस से अजीब तर है।

अबू नईम ने बतरीक़ इब्ने इलाहीया अबी हंबल से रिवायत की कि हज़रत इमाम की शहादत के बाद जब बद नसीब कूफ़ी सरे मुबारक को लेकर चले और पहली मंज़िल में एक पड़ाव लेकर शर्बत व खुरमा पीने लगे, उस वक़्त एक लोहे का क़लम नमूदार हुआ, उसने ख़ून से यह शेअर लिखाः

अतरजू उम्मता क़तलता हुसैना
शफ़ाअतु जद्देही यौमल-हिसाब

यह भी मन्कूल है कि एक मंज़िल में उस क़ाफ़िला ने क़्याम किया वहाँ एक दैर (चर्च) था, दैर के राहिब ने उन लोगों को अस्सी हज़ार दिरहम देकर सरे मुबारक को एक शब अपने पास रखा, ग़ुस्ल दिया इत्र लगाया, अदब व ताज़ीम के साथ तमाम शब ज़्यारत करता और रोता रहा। और रहमते इलाही के जो अनवार, सरे मुबारक पर नाज़िल हो रहे थे उनका

मुशाहिदा करता रहा हत्ता कि यही उसके इस्लाम का बाइस हुआ। अश्क़िया ने जब दराहम तक़सीम करने के लिए थैलियों को खोला तो देखा कि सब में ठीकरियां भरी हुई थीं और उनके एक तरफ़ लिखा है।

तरजमा : (ख़ुदा को ज़ालिमों के किरदार से ग़ाफ़िल न जानो) और दूसरी तरफ यह आयत मक्तूब है।

तरजमा : (और ज़ुल्म करने वाले अंक़रीब जान लेंगे कि किस करवट बैठते हैं)

ग़रज़ ज़मीन व आसमान में एक मातम बरपा था। तमाम दुनिया रंज व ग़म में गिरफ़्तार थी, शहादते इमाम के दिन आफ़्ताब को गरहन लगा, ऐसी तारीकी हुई कि दोपहर के तारे नज़र आने लगे आसमान रोया, ज़मीन रोई, हवा में जिन्नात ने नौहा ख़्वानी की, राहिब तक उस हादसा क़्यामत नुमा से काँप उठे और रो पड़े। फ़रज़न्दे रसूल जिगर गोशा–ए– बतूल, सरदारे कुरैश इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का सरे मुबारक इब्ने ज़्याद मुतकब्बिर के सामने तश्त में रखा जाए और वह फिरऔन की तरह मसनदे तख़्त पर बैठे, अह्ले बैत अपनी आंखों से यह मंज़र देखें, उनके दिलों का क्या हाल होगा? फ़िर सरे मुबारक और तमाम शुहदा के सरों को शहर शहर नेज़ों पर फिराया जाए और वह यज़ीद पलीद के सामने ला कर उसी तरह रखे जाएं और वह ख़ुश हो, इसको कौन बर्दाश्त कर सकता है? यज़ीद की रिआया भी बिगड़ गई और उन से यह न देखा गया उस पर उस नाबकार ने इज़हारे निदामत किया मगर यह निदामत अपनी जमाअत को क़ब्ज़ा में रखने के लिए थी। दिल तो उस नापाक का अह्ले बैत किराम के इनाद से भरा हुआ था। हज़रत इमाम पर ज़ुल्म व सितम के पहाड़ टूट पड़े और आपने, आपके अह्ले बैत ने सब्र व रज़ा का वह इम्तिहान दिया जो दुनिया को हैरत में डाल देता है। राहे हक़ में वह मुसीबतें उठाईं जिनके तसव्वुर से दिल कांप जाता है। यह कमाले शहादत व जांबाज़ी है और इसमें उम्मते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए हक़ व सदाक़त पर इस्तिक़ामत व इस्तिक़्लाल की बेहतरीन तालीम है।

(सदरुल-अफ़ाज़िल मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी)

ज़िन्दा जावेद शहज़ादा

हज़रत सैयद इमाम हुसैन, हज़रत सैयदना अली अल-मुर्तज़ा के नूरे नज़र और हज़रत ख़ातूने जन्नत सैय्यदतुन्निसा फातिमतुज़्ज़ाहरा बिन्ते हुज़ूर सरवरे कौनैन सुल्तान दारैन रसूले मक़्बूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही वसल्लम के लख़्ते जिगर थे। आपकी विलादत ३ शाबान ४ हिजरी मदीना मुनव्वरा में हुई, विलादत की नवेद सुन कर हुज़ूर बहुत मसरूर हुए। आपको गोद में उठाया, प्यार किया, दाहिने कान में अज़ान और बाएं कान में इक़ामत कही और अपनी ज़ुबाने मुबारक आपके मुँह में दी। सातवें दिन ख़तना और दो बकरियों की क़ुरबानी के साथ अक़ीक़ा कराया। बालों के वज़न के बराबर चाँदी ख़ैरात की और एक बकरी की रान क़ाबेला (अस्मा बिन्ते अमीश) को मरहमत फ़रमाई। (हाकिम) हुज़ूर ने आपको अबू अब्दुल्लाह की कुन्नियत और सैय्यदा क़ुरतुल-ऐन ने तैयब और शहीद के अल्क़ाब से मुशर्रफ़ फ़रमाया।

तालीम व तर्बियत चूंकि बाबुल-इल्म और ख़ातूने जन्नत के अलावा हुज़ूर मदीनतुल-इल्म रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही वसल्लम के साया आतिफ़त में हुई थी इसलिए आप इल्म व हिल्म, अबूदीयत, सब्र व इस्तिक़्लाल, ऊलुल-अज़्मी, सख़ावत, शुजाअत, तदब्बुर, आजिज़ी और इंकिसारी, हक़ गोई, हक़ पसन्दी और राज़ी बरज़ाए मौला के मुजस्समा थे।

औसाफ़े जलीला के ज़िम्न में हज़रत इब्ने अबी शैबा और हज़रत इब्ने अरबी की यह शहादत इस मुख़्तसर मज़्मून में काफी होगी :

तरजमा : हज़रत इमाम हुसैन क़ुरआन के एक आलिमे बाअमल, ज़ाहिद मुत्तक़ी, मुंनज़्ज़ा अनिल-मआसी, मतवर्रअ़, साहिबे जूद व करम, साहिबे फ़साहत व बलाग़त, आरिफ़े बिल्लाह और ज़ाते बारी की हुज्जत तमामी थे। हज़रत हुसैन नवासा-ए-रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे और अल्लाह की निशानियों में से थे।

यह एक नाक़ाबिले इंकार हक़ीक़त है कि जो सरापा फ़ज़ाइल हो, जिसकी हर अदा, जिसका हर फ़ेअ़ल, जिसका हर अमल, जिसका खुलक़ और जिसका कैरेक्टर सर चशमा फ़ज़ीलत हो। उसके फ़ज़ाइल मुझ जैसा

क्या, मेरे जैसे लाखों करोड़ों अफ़राद भी ज़ब्ते तहरीर में नहीं ला सकते। मगर हुसूले बरकत व सआदते दारैन की ख़ातिर तबर्रुकन और तयम्मुम इस बहरे फ़ज़ाइल के दोचार क़तरात यहाँ इसलिए डाले जा रहे हैं कि बादा ख़ूराने मारिफ़ते इलाही, सरशाराने मुहब्बते हज़रत रिसालते मआब और फ़िदा कारान अहले बैत रसूल हाशमी की कुछ तस्कीने ख़ातिर हो सके।

हज़रत सैयदना इमाम हुसैन बइत्तिफ़ाक़ राय अह्ले बैत में से थे। और अह्ले बैत के तैय्यब व ताहिर होने पर इससे बढ़ कर और कौन सा सुबूत दिया जा सकता है।

कि हुज़ूर ने फ़रमाया, कहो : **अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व अला आले मुहम्मद।** (बुख़ारी शरीफ़ किताबुद्दावात बाबुस्सलात अलन्नबी)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन की दिलजोई व दिलदारी का इतना ख़्याल रखते थे कि अगर हालते नमाज़ में उन जिगर गोशों में से कोई भी दोशे मुबारक पर सवार हो जाते या जिस्मे अतहर से लिपट जाते तो उस वक़्त तक बक़िया अरकान को अदा नहीं फरमाते जब तक यह ख़ुद न हट जाएं। (तबरी, तबक़ात इब्ने सअद, बुख़ारी व मुस्लिम) ताकि उनके ख़मदार और नूरानी आबरूओं पर बल न पड़ सके।

हज़रत हुसैन की शान में हुज़ूर की ज़ुबान शकर फ़शां से यह मोती निछावर हुए हैं "हसन और हुसैन मेरे दो फूल हैं।" "हसन और हुसैन जवानाने बहिश्त के सरदार हैं"। (अहमद, तिर्मिज़ी, तबरानी, हाकिम) "मुहिब्बे हुसैन महबूबे ख़ुदा है"। (इमाम अहमद बिन हंबल अज़ याली बिन मुर्रा) "हुसैन मुझ से हैं और मैं हुसैन से हूँ"। (इमाम बुख़ारी, इब्ने माजा, तिर्मिज़ी, हाकिम और सुनने अबू दाऊद) यानी "हुसैन मेरी औलाद में से हैं और मेरे दीन की बक़ा हुसैन से होगी, हुसैन के ख़ून से इस्लाम का शजर सींचा जाएगा और रहती दुनिया तक रहेगा।"

हज़रत आक़ा-ए-काइनात मौला मुश्किल कुशा हज़रत अली के ज़मान-ए-ख़िलाफ़त ही में हज़रत अमीर मुआविया भी अरब के एक हिस्सा में ममलुकते इस्लामिया के फराइज़ अंजाम दे रहे थे चुनांचे हज़रत अली की शहादत (रमज़ान 40 हिजरी) के बाद मुसलमानों ने बइत्तिफ़ाक़ राय

हज़रत सैयदना इमाम हसन को अपना ख़लीफ़ा और सरदार बनाया मगर आपने हालात का जाइज़ा लेने के बाद यह महसूस किया कि अगर अरब के एक हिस्सा में मुझसे और दूसरे में आमिर मुआविया से बैअत करने वाले रहेंगे, तो ला मुहाला बेगुनाह मुसलमानों के ख़ून से एक न एक दिन यह मुक़द्दस सरज़मीन सुर्ख़ हो जाएगी इसलिए पूरे छः माह मसनदे ख़िलाफ़त को ज़ीनत बख़्शने के बाद आप उस से दस्तबरदार हो गए। दूसरी तरफ हज़रत अमीर मुआविया अपने लड़के यज़ीद के हक़ में बैअते ख़िलाफ़त लेने लगे और अगरचे यज़ीद के हक़ में बैअते ख़िलाफ़त ली जा रही थी और कम्तर लोग बतैयब ख़ातिर और बेशतर बजब्र व इकराह इस बैअते ख़िलाफ़त के हक़ में थे लेकिन उस पर भी यज़ीद की निगाह में हज़रत इमाम हसन का वजूद बहुत ज़्यादा खटक रहा था। चुनांचे आपको मदीना के गवर्नर मरवान की एआनत से पाँच मरतबा ज़हर दिलवाया। आख़िरी बार एक के पीने के साथ जो ज़हरे हिला हिल मिला कर दिया, तो आपके जिस्मे अतहर के साथ अनासिर की क़ैद न रह सकी और 50 हिजरी में आप रहमते ईज़दी से जा मिले : **इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन।**

हालांकि हर शख़्स को यक़ीन हो चुका था कि हज़रत सैयदना इमाम हसन की वसीयत के मुताबिक़ न उनके क़ातिल से बदला लेंगे और न ही उसके मददगारों से, मगर फिर भी यज़ीद की नज़र में उसके इक़्तिदार और इस्तेहकामे सलतनत के लिए आपकी ज़ाते गिरामी एक ज़बरदस्त रुकावट बनी हुई थी, इसलिए उसने हज़रत इमाम हसन की शहादत के तक़रीबन दस साल बाद अपने दोस्तों, इताअत शिआरों, जासूस सिपेहसालारों और हिर्स व आरज़ू के बन्दों को इस बात के लिए आमादा किया कि जिस सूरत से भी हो (इमाम) हुसैन को कूफा बुला लो, चुनांचे लोगों ने बीसियों ख़ुतूत इमाम आली मक़ाम की ख़िदमते आलिया में भेजे जिस में इस बात पर ज़ोर दिया कि चूंकि यज़ीद एक फ़ासिक़ व फाजिर इंसान है और आप इब्ने रसूल हैं आपके होते हुए कोई भी शख़्स बैअत लेने का मजाज़ नहीं है इसलिए आप तशरीफ़ लाइए ताकि हम ग़ुलाम ग़ुलामाने नबी आपके दस्ते हक़ पर बैअत लें।

सैयदना इमाम हमाम यज़ीद जैसे "अमीरुल-मुमिनीन" और उसके

अमवी बहादुरों और सियासत दानों के मक्र व फ़रेब को ख़ूब अच्छी तरह समझ रहे थे मगर सिर्फ़ इस ख़्याल से कि हक़ हमेशा के लिए हक़ बन कर चमके और बातिल सदा के लिए सरनगूं हो जाए और उसका नाम व निशान मिट जाए आपने अपने अह्ल व अयाल, क़राबतमन्दों और जांनिसारों के साथ मदीना मुनव्वरह से कूच फरमाया और मंज़िल बमंज़िल होते हुए मुहर्रमुल-हराम 61 हिजरी में मैदाने करबला में ख़ेमा इक़ामत फरमा कर इस्लाम की तारीख़ के अलावा दुनिया की तारीख़ में हक़ की हिमायत का बाब खोल दिया और इस ऐटमी दौर में भी मुदब्बेरीने आलम का कहना पड़ा "हुसैनी उसूल पर अमल करने ही से ग़ुलामी से नजात मिल सकती है, इमाम हुसैन ने अपनी और अपने कुंबे क़बीले की जानें हक़ के लिए निछावर कर दीं मगर बातिल के सामने नहीं झुके।" (गाँधी जी)

मुहर्रम 61 हिज़री की दसवीं तारीख़ को क्या हुआ? दस तारीख़ को क्या हुआ? और दस तारीख़ के बाद क्या हुआ? उसे किस तरह लिखूं, बस यूं समझ लीजिए कि सैयदना इमाम हुसैन के साहबज़ादे, भतीजे, भांजे, जांनिसार और फिदाकार जिन में अस्सी बरस के बूढ़े (हबीब इब्ने मज़ाहिर) से लेकर छः माह के शीर ख़्वार (हज़रत अली असग़र) तक को ज़ालिमों और सफ़्फ़ाकों ने अपनी अज़ली बदबख़्ती और शक़ावते क़ल्बी की बिना पर तीरों, नेज़ों और तेग़ों का निशाना बना कर जामे शहादत पिलाया और दस तारीख़े अस्र के वक़्ते ऐन हालते नमाज़ में इब्ने रसूल जिगर गोशा बतूल नूरे दीदा शेरे ख़ुदा सरदार जवानाने जन्नत हज़रत सैयदना इमाम हुसैन के सरे मुबारक को शिम्रे लईन ने जिस्मे अतहर से जुदा कर दिया आह! सुम्मा आहः **इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन।**

दस तारीख़ के बाद मुख़द्दराते आलियात को आह! ज़ालिमों ने रसन बस्ता करके शहरों की सड़कों और गलियों का चक्कर लगवाया और हद दरजा तकालीफ़ और मसाइब का निशाना बनाया।

हज़रत इमाम हुसैन की शहादत जिन अग़राज़ और जिन मक़ासिद की ख़ातिर अमल में लाई गई उनमें एक भी पूरे नहीं हुए यानी न ही यज़ीद तख़्ते ख़िलाफ़त पर बैठ सका (क्योंकि उस वाक़िया के कुछ ही दिनों बाद उसने दुनिया से कूच किया) और न ही ज़िन्दा जावेद इमाम के नाम को मिटा सका।

क़त्ले हुसैन अस्ल में मर्गे यज़ीद है
इस्लाम ज़िन्दा होता है हर करबला के बाद

यज़ीद मर गया मगर इमाम हुसैन **वला तकुलू लेमन यक़्तल फ़ी सबीलिल्लाहे अम्वातुन बल अहयाउन वलाकिन ला तशउरून।** के मुताबिक़ ज़िन्दा हैं।

इमाम हुसैन से मुहब्बत करना अल्लाह से मुहब्बत करना है, उनके नाम पर सदक़ा ख़ैरात करना सआदते अबदी का हासिल करना है, उनके अमल को अपनाना अल्लाह तआला और उसके रसूल को अपना मूनिस बनाना है और उन से बुग्ज़ रखना अल्लाह तआला के ग़ैज़ व ग़ज़ब का निशाना बनाना है क्यों? इसलिए कि इमाम हुसैन सिर्फ़ मेरे नहीं बल्कि सभों के इमाम यानी बैनुल-अक़्वामी इमाम और बैनुल-अक़्वामी शहीद हैं। सच है।

शाहस्त हुसैन बादशाहस्त हुसैन
दीं हस्त हुसैन दीन पनाह हस्त हुसैन
सरदाद न दाद दस्त दर दस्ते यज़ीद
हक़्क़ा कि बिनाए ला इलाह अस्त हुसैन

(सैयद अबुल-फरह)

ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद अक़्ल व नक़्ल के पैमाने में

कुछ अरसा से पाकिस्तान में बाज़ रुसवाए आलम किताबें ख़िलाफ़ते मआविया व यज़ीद, तहक़ीक़े सैयद व सादात, तहक़ीक़े यज़ीद, सादात बनू उमैया और किताब रशीद इब्ने रशीद छप कर इल्मी और नज़रियाती दुनिया में वजहें निज़ाअ बनती जा रही हैं। इन किताबों के बदनाम ज़माना मुसन्नेफ़ीन हज़रात इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के मुक़ाबला में यज़ीद के मक़ाम को बुलन्द दिखाने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगाए जा रहे हैं उनकी इस हरकते मज़्बूही के पीछे वह ऐतक़ादी कुव्वतें कारफरमा हैं जो बुर्ज़ुगाने दीन, हज़राते अइम्मा इस्लाम और खुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ाते गिरामी को आमियाना और गुस्ताख़ाना अंदाज़ से पेश करती रहती हैं फिर आज की पढ़ी लिखी दुनिया को मरऊब करने के लिए तारीख़ी हवालों के खुदसाख़्ता इक़्तिबासात लिख कर बावर कराया जाता है कि यह सारा काम तेरह सौ साल गुज़रने के बाद तहक़ीक़ व तफ़्तीश की इमारत उस्तवार करने के लिए किया जा रहा है। महमूद अब्बासी साहब ख़ुसूसियत के साथ इस फनकारी के इमाम माने जा रहे हैं और वह अंधों की दुनिया के "हक़ाइक़ निगार" मशहूर होते जा रहे हैं।

अगर आपको अपने मुल्क की इस कहावत से इत्तिफ़ाक़ है कि "अंदाज़ा के लिए देग का एक चावल काफी है" तो इसी रौशनी में रुसवाए आलम किताब के चन्द मक़ामात की निशानदेही करता हूँ जिस से आप अंदाज़ा कर सकेंगे कि अक़्ली और नक़्ली दोनों हैसियत से किताब "ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" ग़ैर मुस्तनद और नाक़ाबिले तस्लीम है और आप यह फ़ैसला भी कर सकेंगे कि अब्बासी की नज़र में महज़ तस्वीर का एक ही रुख़ है और सहवन नहीं बल्कि अमदन दूसरे रुख़ से न सिर्फ़ बेएतनाई बरती गई है बल्कि उस पर ग़ुबार उड़ाने की सई नाकाम की गई है।

बनू उमैया और बनू हाशिम एक ही रुये की दो तस्वीरें हैं जिसके समझने के लिए हस्बे ज़ैल शजर-ए-नसब काफी होगा।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पर दादा हाशिम के बाप के यहाँ दो जुड़वां बच्चे हाशिम और उमैया पैदा हुए थे और दोनों तल्वार से अलग किए गए, ख़ुदा की शान कि दोनों ज़िन्दा रहे।

अफ़सोस कि जिस तल्वार पर हाशिम के ख़ून की छींटें पड़ चुकी थीं उसने करबला के मैदान में आले पैग़म्बर के ख़ून से अपनी प्यास बुझाई और जो कुछ रही सही कसर बाक़ी रह गई थी, महमूद अब्बासी, आमिर यज़ीदी और उसमान फारक़लीत एडीटर अल-जमीअत दिल्ली का क़लम उसकी तक्मील कर रहा है, हज़ारों रहमतें नाज़िल हों दामादे रसूल अली इब्ने अबी तालिब पर जिन्होंने फ़रमाया और सच फरमाया :

तरजमा : खंजर का ज़ख़्म तो भर जाता है मगर ज़ुबान का ज़ख़्म कभी नहीं भरता।

चुनांचे उसी ज़ख़्मकारी की एक मुहिम जारी है जिस पर पूरी मिल्लते इस्लामिया ख़ून के आंसू रो रही है।

इस किताब के मुतअल्लिक़ चन्द ज़रूरी इशारे मुलाहिज़ा फरमाएं।

जनाब अब्बासी साहब अपनी किताब के स० ३६ पर रक़म तराज़ हैं :

"हज़रत अमीर मुआविया की शान में कोई बदगुमानी नहीं की जा सकती क्योंकि उनकी सहाबियत और सहाबियत का लाज़मा, अदालत, हर क़िस्म की बदगुमानी से माने है।

बहुत ख़ूब! हज़रत सैयदना अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से किसी क़िस्म की कोई बदगुमानी नहीं की जा सकती, चूंकि वह सहाबी हैं और सहाबियत को अदालत से लाज़मा है। लिहाज़ा आप मुझे दरयाफ़्त करने दीजिए कि हज़रत सैयदना मौला-ए-काइनात हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू न सिर्फ़ सहाबी-ए-रसूल बल्कि दामादे रसूल भी हैं, तो क़ानून की यह दफ़ा हज़रत अली के बारे में क्यों न इख़्तियार की गई? और हज़रत अली के बारे में चन्द दर चन्द शुकूक व शुबहात पैदा करके अपने नाम–ए–आमाल को क्यों सियाह किया गया?

डरो ख़ुदा से डरो ख़ौफ़े किब्रिया से डरो
नबी की गुस्सा में डूबी हुई निगाह से डरो

अगर अब्बासी साहब को इस हदीस पर एतमाद व भरोसा होता कि :

तरजमा : मेरे सहाबा सितारों के मिस्ल हैं जिसकी भी पैरवी करोगे

हिदायत पाओगे। मेरे सहाबा सब के सब आदिल हैं। मेरे अह्ले बैत सफीन-ए-नूह के मिस्ल हैं जो उस पर सवार होगा उसने नजात पाई और जिसने ऐराज किया वह डूब गया।

तो उन्हें बनू हाशिम और आले रसूल के सबब व शितम के लिए क़लम उठाने की ज़हमत ही नहीं पड़ती, बिलग़र्ज़ जंगे जमल और जंगे सफ़्फ़ैन वग़ैरा के देखने से अगर परागन्दगी दिमाग़ का आरेज़ा लाहिक़ हो गया था तो उसका इलाज गाली गलौज और तबर्रा बाज़ी से न करते बल्कि यह सोच कर ख़ामोश रहते कि ताबईन और अजल सहाबा की मुक़द्दस जमाअत है, उनके हक़ में कफ़े लिसान और ख़ामोश रहना ही बाइसे सआदत है जैसा कि अह्ले सुन्नत व जमाअत का मज़हब व मसलक है। मगर यहाँ नक़्शा ही अलग थलग है, एक तय शुदा ज़ेहनी प्लान (**PLAN**) है जिस की ताईद व हिमायत में कहीं कुरआन सुन्नत का बेमहल इस्तेमाल है और कहीं दुश्नाम तराज़ी का बेजोड़ पैवन्द, कम अज़ कम मेरी फ़िक्र व फ़हम से यह बात बाहर है कि हज़रत अमीर मुआविया की जिस सहाबियत के सामने जनाब अब्बासी का क़लम लरज़ां व तरसां है वह हज़रत अली मुर्तज़ा के बारे में क्यों बहका बहका फिर रहा है?

अल्लाह रे खुद साख़्ता क़ानून का नैरंग
जो बात कहीं फ़ख़्र वही बात कहीं नंग

अब जनाब अब्बासी की एक नई तहक़ीक़ मुलाहिज़ा कीजिए :

"हादसा करबला बस इतनी देर में ख़त्म हो गया था जितनी देर में क़ैलूला में आंख झपक जाए यानी कम व बेश आध घन्टे में।"

(ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद स० **223**)

अब्बासी की अनोखी तहक़ीक़ से दो बातें समझ में आती हैं :

(1) मुअल्लिफ़ ने क़लम उठाने से पहले यह तहीया कर लिया है कि जो बात कही जाए वह नई हो।

(2) दूसरी बात यह समझ में आती है कि मैदाने करबला में यज़ीदी फौज के ख़ूंख़्वार दरिन्दे आले पैग़म्बर की घात में थे और हुसैनी क़ाफ़िला को देखते ही चील, कौओं, गिद्ध और कुत्तों की तरह टूट पड़े।

न रस्मे मेहर से वाक़िफ़ न आइने वफ़ा जाने

वह तो रस्मे सलाम व कलाम से ना आशना थे और न ही अदाए मेज़बानी की तर्ज़ से, इसके सिवा और क्या कहा जाए कि उज़्र गुनाह

बदतर अज़ गुनाह।

इतना लिख देने से न तो यज़ीद की पेशानी से कलंक का टीका साफ हो गया और न ही उबैदुल्लाह बिन ज़्याद और अ़म्र बिन सअ़द के दामन से ख़ून की छींटें धुल गईं, ज़ालिम, ज़ालिम रहा और मज़्लूम मज़्लूम।

अब एक और नई तहक़ीक़ मुलाहिज़ा कीजिए :

"इमाम आली मक़ाम दस ज़िलहिज्जा को मक्का मुकर्रमा से रवाना हो कर दस मुहर्रमुल-हराम को करबला-ए-मुअल्ला पहुँचे।"

इसके लिए ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद स० **154** व **155** मुलाहिज़ा फरमाइए।

इसके इस्बात में अब्बासी ने फ़नकाराना चाबुक दस्तियों से काम लेते हुए अपने को हिसाब, तारीख़, जुग़राफ़िया और हिन्दसा वग़ैरा में यक्ताए रोज़गार साबित करने क़ी कोशिश की है। बार-बार कुरआन व सुन्नत का नाम लेकर उलमा को मरऊब करता है और दो सफ़ह का एक मनघड़त खाका खींच कर न्यूलाइट तब्क़े को एक क़िस्म की धमकी देनी है हालांकि दोनों इस ढोल का पोल अच्छी तरह जानते हैं, उलमा अच्छी तरह समझते हैं कि अब्बासी की हैसियत कुरआन फ़हमी और हदीस दानी में सिफ़र के बराबर है और अंग्रेज़ी दा तबक़ा यह जानता है कि आंजनाब तारीख़ व जुग़राफ़िया से क़तअन नाबलद हैं वरना अब्बासी साहब भारत में अगर वज़ीरे तालीमात न सही तो कम अज़ कम मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़ के वाइस चांसलर ही होते और अगर अमरोहा छोड़ कर पाकिस्तान गए थे तो वहाँ जूतियाँ चटखारते न फिरते बल्कि चन्द क़दम आगे बढ़ कर जामिया अज़हर मिस्र के शैख़ुल-हदीस होते, यह क्या क़्यामत है कि पूछ कुछ कहीं नहीं और नाम चिड़ी मार खान, सारी दुनिया एक तरफ आं बदौलत एक तरफ।

अब अब्बासी साहब की तहक़ीक़ पर मेरी एक राय मुलाहिज़ा कीजिए। आंजनाब ने यह शगूफ़ा क्यों छोड़ा? मेरी अपनी नज़र में इस रिवायत के तीन गोशे क़ाबिले तवज्जोह हैं :

(1) इस राय के पस परदा नज़रिया कारफ़रमा है कि करबला से मुतअल्लिक़ जितनी भी रिवायतें हैं उन्हें यक्सर दरिया बर्द कर दिया जाए और जिस तरह से और बहुत से वाक़िआत शहादत हैं उन्हीं में उसका भी शुमार कर लिया जाए। इस पर तुरफ़ा तमाशा कि इमाम आली मक़ाम को मआज़ल्लाह बाग़ी क़रार देकर बजाए शहीद के मक़्तूल कहा जाए। यह वह

ज़ाविया फ़िक्र है जिसको अब से कुछ दिनों पेशतर मौलवी अब्दुश्शकूर लखनवी ख़ार्जी ने अपने अख़्बार "अन्नजम" में ज़ाहिर किया था, इसके बावजूद उलमा-ए-देवबन्द उस ख़ार्जी को अपना इमाम व मुक़तदा जानते हैं।

(2) यह राय जिस महवर पर गर्दिश कर रही है वह यह है कि सरकार हुसैन फ़रीज़ा हज से सुबुकदोश हुए बग़ैर क्योंकर आज़िमे सफर हो सकते हैं? इसलिए अब्बासी साहब का यह कहना है कि इमामे आली मक़ाम नवें ज़िलहिज्जा को मनासिके हज से फारिग़ हो कर दस जिलहिज्जा को मक्का मुकर्रमा से रवाना हुए और दस मुहर्रमुल-हराम को करबला पहुँचे। और अगर यह न माना जाए तो इमाम जैसी शख़्सियत को तर्के फर्ज़ का मुर्तकिब होना पड़ेगा।

क्या कहना है ख़ार्जियों के मुहक़्क़िक़ का! इस ग़रीब को यह भी पता नहीं कि इमाम के लिए हज की हैसियत फर्ज़ की है या नफ़्ल की, इसको तो इस्लामी घराने का एक ज़ी शऊर बच्चा भी जानता है कि हज की फर्ज़ियत नमाज़ और रोज़ा जैसी नहीं है। नमाज़ रात और दिन में पाँच वक़्तों में फर्ज़ है और हर मुसलमान आक़िल, बालिग़ और तन्दुरुस्त पर एक महीने का रोज़ा, लेकिन हज अपने जुमला शराइत के साथ उम्र में सिर्फ़ एक बार फर्ज़ है, इसके बाद जितनी दफा हज किया जाए वह फर्ज़ नहीं बल्कि नफ़्ल होता है। गोया छप्पन बरस की उम्र में हादसा करबला पेश आया और अब तक सरकारे हुसैन फरीज़ा–ए–हज से सुबुकदोश भी न हो सके थे? जहाँ इतनी नई बातें लिखी थीं उसमें एक यह भी इज़ाफ़ा कर देते कि बाशिन्दगाने मक्का पर हज हर साल फर्ज़ होता है या आले रसूल पर हज हर साल फ़र्ज़ होता है या इमाम ने अब तक हज किया ही न था और यह मालूम था कि करबला से वापसी न हो सकेगी लिहाज़ा हज जैसे फ़रीज़ा से सबकदोश हो जाएं। आख़िर इस क़द्र लिख देने से कौन आपकी कलाई थाम लेता। यह ऐसा मक़ाम है जहाँ अब्बासी के क़लम ने ठोकर खाई है जिसका उसके पास कोई जवाब नहीं। अब्बासी की मारकतुल-आरा तहक़ीक़ का एवान व महल इसी मीनार पर खड़ा है लिहाज़ा नतीजा ज़ाहिर है कि –

इसलिए यह कहना कि सरकारे हुसैन फ़रीज़ा हज से सुबुकदोश हुए बग़ैर क्योंकर रवाना हुए, यह हमारे हक़ में क़ाबिले तस्लीम नहीं, जब यह बात

ग़लत तो दस जिलहिज्जा को रवानगी ग़लत और जब तारीख़ रवानगी ग़लत तो यह कहना सरासर झूठ है कि इमाम दस मुहर्रम को करबला पहुँचे।

(3) अब इस रिवायत का तीसरा गोशा मुलाहिज़ा फरमाइए। जनाब अब्बासी का यह कहना है कि अगर दस मुहर्रम को पहुँचने की तारीख़ न मानी जाए तो तारीखे रवानगी ग़लत हो जाती है या दोनों में कोई सूरते तत्बीक़ नज़र नहीं आती। इस सिलसिला में इतनी ही गुज़ारिश है कि तारीख़े रवानगी में हज़ारों टकराव हों या सैकड़ों इख़्तिलाफ़ात हों उनका कोई असर करबला की इन मुतादावल रिवायतों पर नहीं पड़ सकता, जिन पर उलमा, सुलहा मुअर्रेख़ीन और मुहद्देसीन के इत्तिफ़ाक़ ने तवातुर की महरे उज़्र सब्त कर दी है, वरना उसकी मिसाल तो ऐसी ही होगी कि अब्बासी के वालिद 1857 ई० के ग़दर में पैदा हुए और अब्बासी के दादा ने अपने बेटे का नाम तारीख़ी रखा। कुछ दिनों बाद से लोगों ने अब्बास से दरयाफ़्त किया कि आंजनाब की उम्र क्या है? तो फरमाया मेरा तारीख़ी नाम है, मैं ग़दर वाले साल में पैदा हों, लोगों ने अब्जद हव्वज के हिसाब से जब सन्ने पैदाइश का इस्तिख़राज किया तो 1856 ई० हुआ मगर मेरा तारीख़ी नाम ग़लत नहीं हो सकता। अगर जनाब अब्बासी साहब अपने वालिद बुज़ुर्गवार के तारीख़ी नाम को साबित करने के लिए हिन्दुस्तान के ग़दर को बजाए 1857 ई० के 1856 ई० में मान लें तो शायद हम भी कुछ सोचने पर आमादा हों।

और अगर वह तारीख़े हिन्द की एक सतर को नहीं मिटा सकते तो हम तारीख़ व हदीस की बेशुमार रिवायतों को क्योंकर झुठला सकते हैं?

अब मैं इख़्तितामे गुफ़्तगू पर जनाब अब्बासी साहब की तहक़ीक़े जदीद का बाज दूसरे मुसन्नेफ़ीन से एक हल्का फुल्का सा मवाज़ना पेश करता हूँ जिस से आप जनाब अब्बासी साहब की मुतलकुल-एनानी का सही अंदाज़ कर सकेंगे।

अब्बासी साहब : ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद स० 223 पर लिखते हैं :

"बरादराने मुस्लिम और साठ पैंसठ कूफ़ियों को नाआक़िबत अन्देश तौर से फौजी दस्ता के सिपाहियों पर अचानक क़ातिलाना हमला कर देने से यह वाक़या महज़ूने यकायक और ग़ैर मतवक़्क़ा पेश आकर घन्टा

आध घन्टा में ख़त्म हो गया।"

जिसका वाज़ेह मतलब यह है कि जंग की पहल हुसैनी क़ाफ़िला की तरफ से हुई। अब सुनिए जनाब अबुल-कलाम आज़ाद साहब अपनी किताब "मारक-ए-करबला" स० 2 पर फरमाते हैं :

"वाक़ेआत के तफ़ह्हुस व तहक़ीक़ में पूरी काविश की गई शायद इस क़द्रे काविश और जुस्तजू के साथ इन हालात का तारीख़ी मज्मूआ दूसरी जगह न मिल सके।"

आज़ाद साहब : मारक-ए-करबला स० 37 पर फरमाते हैं :

"इसके बाद हुर ने निहायत जोश व ख़रोश से तक़रीर की और अह्ले कूफ़ा को उनकी बदअहदी व उज़्र पर शर्म व ग़ैरत दिलाई लेकिन उसके जवाब में उन्होंने (यज़ीदियों) ने तीर बरसाना शुरू कर दिया, नाचार ख़ेमा की तरफ लौट आया। इस वाक़या के बाद उमर बिन सअद ने अपनी तल्वार उठाई और लश्करे हुसैन की तरफ यह कह कर तीर फेंका "गवाह रहो! सबसे पहला तीर मैंने चलाया है" फिर तीर बाज़ी शुरू हो गई।"

अब्बासी साहब : ख़िलाफ़ते मुआविया यज़ीद स० 220 पर लिखते हैं:

"नबर्द आज़माइयों की जो तफ़्सीलात ब्यान की हैं, वाक़ेआत से उनकी हरगिज़ तस्दीक़ नहीं होती, यह रिवायतें महज़ वज़ई व इख़्तेराई हैं वग़ैरह वग़ैरह।"

आज़ाद साहब : मारका करबला स० 52-53 पर लिखते हैं :

"उमर बिन सअद को हुक्म था कि हुसैन की नअश को घोड़ों की टापों से रौंद डाले। उसका वक़्त आया तो उसने पुकार कर कहा, इसके लिए कौन तैयार है? दस आदमी तैयार हो गए, और घोड़े दौड़ा कर जिस्म मुबारक को रौंद डाला। (स० 53) फिर तमाम मक़्तूलीन के सर काटे गए, कुल बहत्तर सर थे, शिम्र ज़िलजौशन, इब्नुल-अशअस, अमर बिन अलहज्जाज, उरवा बिन क़ैस, यह तमाम सर उबैदुल्लाह बिन ज़्याद के पास ले जाए गए, इब्ने ज़्याद के हाथ में एक छड़ी थी, आप के लबों पर मारने लगा। जब उसने बार बार यही हरकत की तो ज़ैद बिन अरक़म चिल्ला उठे।"

अब्बासी साहब : ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद स० 154-155।

"इमाम आली मक़ाम दस मुहर्रम को करबला पहुँचे।"

आज़ाद साहब : मारका करबला स० 18।

"आख़िर आप उजाड़ ज़मीन में जा कर उतर पड़े। पूछा, इस सरज़मीन का क्या नाम है? मालूम हुआ कि करबला, आपने फरमाया, यह कर्ब और बला है, यह मक़ाम पानी से दूर था, दरिया और उसमें एक पहाड़ी हायल थी, यह वाक़या 2 मुहर्रम 61 हिजरी का है।"

अब्बासी साहब : ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद स० 27।

"तबरानी जैसे शीई मुअर्रिख़ का भी ब्यान है।" यानी इमाम तबरी पर शीईयत का इल्ज़ाम।

शिब्ली साहब नौमानी : सीरतुन्नबी स० 19।

"तारीख़ी सिलसिला में सबसे जामे और मुफ़स्सल किताब इमाम तबरी की तारीख़ कबीर है। तबरी उस दरजा के शख़्स हैं कि तमाम मुहद्देसीन उनके फ़ज़्ल व कमाल, सिक़ह और उस्अते इल्म के, मोतरिफ़ हैं। उनकी तफ़्सीर "अहसनुत्तफ़ासीर" ख़्याल की जाती है। मुहद्दिस इब्ने ख़ुज़ैमा का क़ौल है कि दुनिया में किसी को उन से बढ़ कर आलिम नहीं जानता।"

तरजमा : यह झूठी बदगुमानी है बल्कि वाक़या यह है कि इब्ने जरीर (यानी इमाम तबरी) इस्लाम के मोतमद इमामों में से एक बड़े इमाम हैं।

अब्बासी साहब : ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद स० 319।

"अमीर यज़ीद के मुख़्तसर ज़माना ख़िलाफत के ख़िलाफ़ ब्यान करने में मुअर्रेख़ीन ने बुख़्ल से काम लिया ताकि उनकी इंसाफ़ पसन्दी, अदले गुस्तरी और रहमदिली के वाक़ेआत तजस्सुस व तफ़हहुस से मिल ही जाते हैं।"

नोट : अब्बासी साहब को यह भी लिख देना चाहिए था कि मुअर्रेख़ीन की वह काँफ़्रेंस कब मुनाक़िद हुई थी जिसमें तजवीज़ मंज़ूर की गई कि अब्बासी साहब के अमीर यज़ीद के हालात ब्यान करने में बुख़्ल से काम लिया जाए।

अल्लामा तुफ़्ता ज़ानी : यह हवाला इस किताब से है जो दर्से निज़ामिया में दाख़िले निसाब है। शरह अक़ाइद नस्फ़ी स० 117।

पस हम यज़ीद और उसके ईमान के बारे में कोई तवक़्क़ुफ़ नहीं करते, यज़ीद और उसके हवारेईन और मुआवेनीन व मददगार पर अल्लाह की लानत हो।

अब्बासी साहब : ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद स० 132

"आपकी ज़ाते सितोदा सिफ़ात को नसबी पाबन्दियों में नहीं लाया जा सकता और न आपने अपने खानदान को उसकी इजाज़त दी कि आप से तअल्लुक़ रिश्ता की बिना पर वह उम्मत पर मुसल्लत होने की कोशिश करें।"

नोट : यह एक बहुत ही तफ़्सीली उनवान है जिसमें आं बदौलत ने दिखाने की कोशिश की है कि अह्ले बैत को आम मुसलमानों पर कोई फ़ज़ीलत नहीं है। हालांकि कुरआन मजीद फरमाता है :

तरजमा : ऐ पैग़म्बर! आप लोगों से फरमा दें मैं तुम से अह्ले बैत की मुहब्बत के सिवा अपनी पैग़म्बराना ज़िन्दगी को कोई मुआवज़ा नहीं चाहता।

आख़िरश अपने क़राबतदारों की मुहब्बत का मुतालबा किस रिश्ता व नाता से है? ऐसे ही दूसरे मक़ाम पर कुरआन मजीद का इरशाद मुहकम है, जिसके लिए अक्सर मुफ़स्सेरीन की राय है कि यह आयत हज़रत अली, सैयदा फातिमा, इमाम हसन और इमाम हुसैन रिज़वानुल्लाहु तआला अलैहिम के हक़ में नाज़िल हुई :

तरजमा : ऐ अह्ले बैत! अल्लाह तआला यह चाहता है कि तुम से नजिस (नापाकी) दूर करे और तुम्हें ख़ूब ख़ूब पाक करे।

हदीस शरीफ़ में है कि एक बार सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम अपनी काली कमली में हज़रत अली, सैयदा फातिमा, इमाम हसन और इमाम हुसैन को लेकर यह दुआ फरमाई :

तरजमा : ऐ अल्लाह! यह मेरे अह्ले बैत और मेरे मख़्सूसीन हैं उन से नापाकी दूर फरमा उन्हें ख़ूब ख़ूब पाक कर दे।

नोट : अब आले रसूल की मंक़बत में लिसाने नुबुव्वत के चन्द जवाहिर पारे मुलाहिज़ा फरमाएं।

(1) तिर्मिज़ी, निसाई, इब्ने माजा ने हब्शी बिन जिहादा से रिवायत की कि सैयद आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम ने फरमाया :

अली मुझ से हैं और मैं अली से। (हदीस)

(2) तिर्मिज़ी में अबू सईद ख़ुदरी से रिवायत है कि हमारे नज़्दीक अली मुर्तज़ा से बुग्ज़ रखना मुनाफ़िक़ की अलामत है।

(3) इब्ने असाकिर ने इब्ने अब्बास से रिवायत की हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल-करीम के हक़ में तीन सौ आयतें नाज़िल हुईं।

(4) तबरानी व हाकिम ने इब्ने मस्ऊद से रिवायत की कि हुज़ूर सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम ने फरमाया कि अली मुर्तज़ा को देखना इबादत है।

(5) अबू यअला व बज़्ज़ाज़ ने सअ्द बिन अबी वक़्क़ास से रिवायत की कि सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम ने फरमाया जिसने अली को ईज़ा दी उसने मुझे ईज़ा दी।

(6) दैलमी की रिवायत है कि हुज़ूर ने फरमाया, दुआ रुकी रहती है जब तक मुझ पर और मेरे अह्ले बैत पर दरूद न पढ़ा जाए।

(7) सअ्लबी ने रिवायत की कि **वअ्तसेमू बेहब्लिल्लाहे जमीअ़ा वला तफ़र्रुकू।** की तफ़्सीर में इमाम जाफर सादिक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया, हम ही हब्लिल्लाह हैं।

(8) दैलमी से मरफूअन रिवायत है कि सरकारे दो आलम ने फरमाया, मैंने अपनी बेटी का नाम फ़ातिमा इसलिए रखा कि अल्लाह तआला उसको और उसके साथ मुहब्बत रखने वालों को दोज़ख़ से ख़ुलासी अता फरमाई।

(9) इमाम अहमद ने रिवायत की कि सरकारे दो आलम ने हुसैन का हाथ पकड़ कर फरमाया कि जिस शख़्स ने मुझ से और उनके वालिद वालिदा से मुहब्बत रखी वह मेरे साथ जन्नत में होगा।

(10) इमाम अहमद ने रिवायत की कि हुज़ूर ने फरमाया कि अह्ले बैत से बुग्ज़ रखने वाला मुनाफ़िक़ है।

(11) अबू सईद ने शर्फ़ुन्नुबुव्वत में रिवायत किया कि हुज़ूर ने फरमाया ऐ फातिमा! तुम्हारे ग़ज़ब से ग़ज़ब इलाही होता है और तुम्हारी रज़ा से अल्लाह राजी।

(12) तिर्मिज़ी की हदीस है हुज़ूर ने फरमाया : **हुमा रैहानी मिनद्दुनिया।** वह दोनों यानी हसन और हुसैन दुनिया में मेरे फूल हैं। सरकारे दो आलम कभी सीने से लगाते और कभी सूंघते।

ग़रज़ यह कि सहाहे सित्ता व ग़ैर सहाह की किताबें मनाक़िब अह्ले बैत से भरपूर हैं जिसको सिर्फ़ चश्मे मुहब्बत देख सकती है, अब्बासी जैसे को रबातिन को क्या नज़र आए। उसको तो सिर्फ़ बनू उमैया और यज़ीद के हक़ में रिवायतें मिल सकती हैं! तअज्जुब है उन लोगों पर जो अब्बासी के

दोश बदोश चल रहे हैं। आज उन्होंने फज़ाइल अह्ले बैत से चश्मे पोशी की है, अगर कल उन्होंने क़यामत में उन लोगों से मुँह फेर लिया तो उनका क्या हश्र होगा?

दोस्तो! डरो मैदाने क़यामत से! यह दुनिया नापायेदार है और उसकी तमाम लज़्ज़तें फानी हैं। ईमान बड़ी दौलत है और जान ईमान आक़ाए दोजहाँ सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम की बारगाह में नियाज़ न हासिल हो, असलाफ़ और बुज़ुर्गों की बारगाह में बेअदबी और दरेदा ज़ेहनी से परहेज़ करो। हुसैन को गालियाँ देकर जन्नत में न जाओगे, बल्कि उनका शर्फ़ गुलामी तुम्हें जन्नत में ले जाएगा, वह नौजवाने जन्नत के सरदार हैं और उनकी माँ फातिमा जन्नती औरतों की सरदार। मुफ़स्सेरीन, मुहद्देसीन, अइम्मा मुज्तहेदीन, उलमा, औलिया, सुलहा, ग़रज़ यह कि पूरी उम्मते मुस्लेमा अह्ले बैत की अक़ीदत व मुहब्बत को हासिले ज़िन्दगी समझती है और सबके सब आले रसूल की अज़्मत व हुर्मत के क़ाइल हैं, अब्बासी जैसे एक नहीं हज़ार सर फिरे पैदा होंगे मगर मर्दे मुस्लिम के दिल से उनकी अज़्मत छीन नहीं सकते।

रसूलुल्लाह का वह प्यारा नवासा जिसने नामूसे रिसालत की ख़ातिर घर लुटा दिया, वह हुसैन जिन्हे मौत की आंखों में आंखें डाल कर मुस्कुराना सिखाया। उस परवरदिगारे आलम की हज़ार हज़ार रहमतें नाज़िल हों। वह अपने जसदे उन्सुरी में हमारे सामने मगर उनकी रूहानियत हमारी दस्तगीरी व मुश्किल कुशाई के लिए हर जगह हाज़िर हों।

गुश्तगाने खंजर तस्लीम रा
हर ज़मां अज़ ग़ैब जाने दीगर अस्त

ख़ार्जी नज़रियात हक़ाइक़ के उजाले में

अल्लामा इब्ने कसीर "**अल-बिदायह वन्निहायह**" जो अब्बासी साहब की किताब का अव्वलीन माख़ज़ है, मारका करबला की दास्तान का आग़ाज़ करते हुए सरवरक़ पर अल्लामा ने यह सुर्ख़ी क़ायम की है :

वहाज़ा सिफ़तुन मक़्तलुहू रज़ि अल्लाहु अन्हु। यानी यह हज़रत इमाम हुसैन रज़िअल्लाहु तआला अन्हु की शहादत की सरगुज़िश्त है।

तरजमा : जो इस फन के अइम्मा की रिवायत से माख़ूज़ है कि शीओं ने वाक़िआते करबला के ब्यान में जिस तरह इफ़्तरा व ग़लत ब्यानी से काम लिया है इन नक़ाइस से यह किताब पाक है।

इस इबारत से किताब की सक़ाहत और उसके दरजा–ए–ऐतबार की तरफ़ इशारा करना मक़्सूद है क्योंकि अब्बासी साहब ने वर्क़ वर्क़ पर शीई रिवायत और वज़्ई रिवायात जैसे अल्फ़ाज़ का हरबा इस्तेमाल करके हर उस रिवायात और हर उस वाक़िया का इंकार कर दिया है जिससे यज़ीद और उसके साथियों के किरदार पर किसी तरह की चोट पड़ती है।

एक अहम तरीन सवाल जो मारका–ए–करबला की पूरी दास्तान का महवर है और इसी असास पर मौजूदा तारीख़ का एवान खड़ा है वह यह है कि इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु और अह्ले बैत का क़ातिल कौन है?

सैंकड़ों सफ़्हात सियाह करने के बावजूद भी अब्बासी साहब का क़लम इस हक़ीक़त के चेहरे से नक़ाब कुशाई नहीं कर सका है कि इमाम हुसैन व अह्ले बैत के क़त्ल में किसका हाथ है। तारीख़ के तालिबे इल्म का ज़ेहन और उलझ जाता है जब वह अब्बासी की किताब में पढ़ता है कि न यज़ीद ने क़त्ले हुसैन का हुक्म दिया और न उससे राज़ी था। न इब्ने ज़्याद के दामन पर कोई दाग़ है और न इब्ने सअद की तल्वार पर कोई धब्बा! यह पढ़ कर अचानक पर्दा–ए–ज़हन पर सवाल उभर आता है कि शुरू से लेकर अख़ीर तक सबके सब बेगुनाह व बेतअल्लुक़ हैं तो फिर हुसैनी

क़ाफ़िला के बहत्तर मुसाफ़िरों की लाशें करबला की ख़ाक पर तड़प तड़प कर सर्द कैसे हो गईं?

मेरा ख़्याल है कि अब्बासी साहब ने अपनी किताब में जहाँ किज़्ब व इफ़तरा और क़्यास व तख़मीन का एक अंबार जमा कर लिया है वहाँ इतने झूठ का और इज़ाफ़ा कर देते कि मअज़ल्लाह करबला में पहुँच कर हुसैनी क़ाफिला ने खुदकुशी कर ली तो सारी मुश्किल हल हो जाती और यज़ीद के दामन का ग़ुबार जो आज अपने चेहरे पर मल रहे हैं, धोने की ज़हमत उठाने की नौबत ही न आती।

यज़ीद की हिमायत का जज़्बा नार्मल में होता तो यह नुक्ता अब्बासी साहब की समझ में आ जाता कि क़ातिल की तरफ से ख़्वाह कोई कितना ही सफाई पेश करे लेकिन ख़ुद उसका ज़मीर अपनी बेगुनाही पर मुतमईन कभी नहीं होता। सफ़्फ़ाकी और क़हर व जौर का नशा उतर जाने के बाद न सिर्फ़ यह कि जुर्म का एहसास मलामत करता है बल्कि नदामत, पशेमानी और अन्देशा अक़ूबत हमेशा के लिए एक आज़ार बन जाता है। अल्लामा इब्ने कसीर ने अपनी एक किताब में यज़ीद के नफ़्सियाती वारदात की जो हालात ब्यान की है वह बिल्कुल उसकी कापी है। मुलाहिज़ा हो।

जब इब्ने ज़्याद ने इमाम हुसैन और उनके साथियों को शहीद किया तो उसने उनके मक़्तूल सरों को यज़ीद के पास भेजा। इब्तिदा में यज़ीद ने इमाम हुसैन के क़त्ल पर अपनी ख़ुशी का इज़हार किया, और इब्ने ज़्याद की क़द्र व मंज़िलत उसकी निगाह में बढ़ गई फिर कुछ दिनों के बाद अपने करतूत पर शर्मसार हुआ। (अलबिदाया जि० 8 स० 222)

फिर जब अन्देशा अक़ूबत और निदामत व पशीमानी की शिद्दत और बढ़ गई और इब्ने ज़्याद के करतूत और क़त्ले हुसैन के नताइज व अवाक़िब का सहीह अंदाज़ा हुआ तो यज़ीद कफ़े हसरत मलने लगा, तिलमिला उठा और बदहवासी के आलम में इब्ने ज़्याद को कोसने लगा।

तरजमा : उसने हुसैन को क़त्ल करके मुझे मुसलमानों की नज़र में दुश्मन बना दिया और उनके दिलों में मेरी दुश्मनी का बीज बो दिया। अब मुझे हर नेक व बद अपने तईं मब्ग़ूज़ समझेगा क्योंकि आम लोगों की निगाह में मेरा हुसैन को क़त्ल करना बहुत बड़ी शक़ावत है। हाए अफसोस! क्या अंजाम होगा मेरा और इब्ने मर जाना (इब्ने ज़्याद) का।

(अलबिदाया जि० 8 सफ़ा 232)

यह देखिए हक है ज़ुबान का सही तरीन मुक़ाम! कि ख़ून नाहक़ का इल्ज़ाम सर पर चढ़ कर बोल रहा है जिसकी धमक से एवाने दमिश्क़ के मीनार हिल गए।

क्या अब भी यज़ीद की बरीयत व सफ़ाई के लिए किसी तावील की गुंजाइश बाक़ी रह जाती है।

"जो चुप रहेगी ज़ुबाने खंजर, लहू पुकारेगा आस्तीं का" यह मिसरा शायद इसी मौक़ा के लिए शाइर के ज़ेहन में आया था।

अब्बासी साहब की किताब में जो बात सबसे ज़्यादा दिल ख़राश और नाक़ाबिले बर्दाश्त है वह यह है कि उनकी बहस का हलक़ा यज़ीद की बरीयत व सफ़ाई तक ही महदूद नहीं है बल्कि उनका मक़्सद यज़ीद के मुक़ाबला में इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को नीचा दिखाना और ख़ताकार और गुनहगार ठहराना है। चुनांचे उन्होंने इंतिहाई जसारत के साथ शहज़ादा रसूल इमाम आली मक़ाम की मोहतरम ज़ात पर ख़िलाफ़ते इस्लामिया के ख़िलाफ़ बग़ावत व ख़ुरूज का इल्ज़ाम आयद किया है और निहायत ख़ुशी के साथ उसके आगे पीछे बाग़ियों के हक़ में वईद व अज़ाब और अक़ूबत व सज़ा वाली हदीसों का अंबार जमा कर दिया है ताकि अचानक ज़ेहन पर एक चोट पड़े और इमाम हुसैन की अज़्मत अगर लौहे क़ल्ब से महव न हो तो कम अज़ कम मोरिज़े शक में पड़ जाए।

बिला ख़ौफ़ व तरदीद कह रहा हूँ कि अब्बासी साहब ने अपनी पूरी किताब अइम्मए इस्लाम और मुस्लिम मुअर्रेख़ीन के मसलक व नज़र से आज़ाद हो कर लिखी है। उनका क़लम तारीख़ी मुसल्लेमात के ताबेअ नहीं बल्कि पूरी तारीख़ को उन्होंने क़लम के ताबेअ कर लिया है। जिस वाक़िया का चाहा इंकार कर दिया, जिस रिवायत से ज़ेहन मुत्तफ़िक़ न हुआ, उसे वज़ई कह दिया, जो इबारत मद्दुआ के ख़िलाफ़ हुई उसे ग़लत कह डाला। न क़ुबूले विर्द का कोई मेअ़्यार है और न इंकार व इक़रार का कोई ज़ाबता, एक बदमस्त शराबी की तरह क़लम है कि बहकता फिरता है। यह कहना ख़िलाफ़े वाक़िया नहीं है कि अब्बासी साहब ने सानेहा करबला की तारीख़ लिखी नहीं है बनाई है।

इल्म व तहक़ीक़ के नाज़ुक तरीन मरहला में नीयत का इख़्लास एक लम्हा के लिए भी उनका शरीके अमल नहीं हो सका है। उनके क़लम की रोशनाई में जज़्बात का उन्सुर इतना ग़ालिब हो गया कि बेलाग तहक़ीक़

का नाम व निशान भी कहीं नहीं मिलता। यज़ीद के जज़्बए हिमायत में जगह जगह उन्होंने ज़न व तख़्मीन और वहम व क़्यास का झूठा सहारा लेकर जज़्म व यक़ीन और इज़आन व ऐतक़ाद का दामन झटक दिया है।

अल्लामा इब्ने ख़ल्दून जिनके मुताल्लिक़ अब्बासी साहब ने अपने दीबाचा में लिखा है : "एक मुंफ़रिद मिसाल अल्लामा इब्ने ख़ल्दून की है जिन्होंने अपने शहर-ए-आफ़ाक़ मुक़द्दम-ए-तारीख़ में बाज़ मशहूर वज़ई रिवायात को नक़्द व दिरायत से परखने की कोशिश की और नाम निहाद मुअर्रेख़ीन के बारे में साफ कहा कि तारीख़ को ख़ुराफ़ात और वही रिवायात से उन्होंने लथेड़ दिया।" (ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद स० 7)

अब्बासी साहब की नीयत अगर साफ होती तो कम अज़ कम यही देखने की ज़हमत गवारा फरमा लेते कि ख़ुद उनके मोतमद मुअर्रेख़ीन इब्ने ख़ल्दून इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के मोक़िफ़ और यज़ीद की सीरत व किरदार के बारे में क्या लिखते हैं।

पढ़िए और सर पीटिए कि कैसे कैसे मुफ़्तरी आपके माहौल में जन्म ले रहे हैं :

तरजमा : लेकिन इमाम हुसैन का मामला यह है कि यज़ीद का फ़िस्क़ व फ़ुजूर जब तमाम अह्ले ज़माना पर आशकार हो गया तो कूफ़ा के मुहिब्बीने अह्ले बैत ने इमाम हुसैन के पास चिट्ठी भेजी कि वह कूफ़ा तशरीफ़ लाएं और अपना मंसबी फरीज़ा संभाल लें। इमाम हुसैन ने भी देखा कि यज़ीद की नाअहलियत और उसके फ़िस्क़ की वजह से उसके ख़िलाफ़ इक़्दाम अपनी जगह मुक़र्रर और साबित हो गया, ख़ास कर उस शख़्स के लिए जो इस अम्र पर क़ुदरत रखता हो। और अपने मुतअल्लिक़ इमाम हुसैन का गुमान यह था कि वह उस काम के अह्ल हैं और उन्हें उसकी क़ुदरत हासिल है। (मुक़द्दमा इब्ने ख़ल्दून स० 180)

करबला में इमाम हुसैन के साथ जो मारका पेश आया उसकी बाबत अल्लामा लिखते हैं :

वल-हुसैन फ़ीहा शहीदुन मसाबुन व अला हक़्क़ुन व इज्तिहाद।

(मुक़द्दमा इब्ने ख़ल्दून स० 181)

तरजमा : यानी हुसैन अपने वाक़िया क़त्ल में शहीद और मुस्तहिक़ अज्र व सवाब हैं, अपने इक़्दाम में वह हक़ पर थे और यह उनका इज्तिहाद था।

अब्बासी साहब के हक़ में इमाम के इक़्दाम की रास्ती पर इससे ज़्यादा मुस्तनद शहादत और क्या हो सकती है? अब अब्बासी साहब में कुछ भी जुर्रत हो तो अपने मोतमद मुअर्रिख़ का गरीबान पकड़ कर पूछें कि बग़ावत व ख़ुरूज पर सवाब मिलता है? और उस राह में जो क़त्ल हो जाए उसे शहीद कहते हैं? क्या इस सराहत के बाद इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु यज़ीद के ख़िलाफ़ अपने इक़्दाम पर हक़ थे, किसी बहस की गुंजाइश रह जाती है?

आख़िर में अल्लामा ने उन लोगों के ख़्यालात का शिद्दत के साथ रद्द किया है जो कहते हैं कि हज़रत इमाम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के साथ जिदाल व क़िताल, फित्ना, बग़ावत फ़रो करने की ग़रज़ से जायज़ था और यज़ीद ने अपना शरई हक़ इस्तेमाल किया। ज़ैल में ऐसे ख़्यालात की तरदीद मुलाहज़ा फ़रमाइए :

तरजमा : यानी क़ाज़ी अबू बकर बिन अरबी मालेकी ने अपनी किताब "अल-अवासिम वल-क़वासिम" में यह कह कर सख़्त ग़लती की है कि इमाम हुसैन अपने नाना की शरीअत के मुताबिक़ क़त्ल किए गए। ग़लती की वजह यह है कि शरीअत ने इमाम के ख़िलाफ़ खड़ा होने वाले के लिए क़त्ल की जो सज़ा तज्वीज़ की है, वहाँ शर्त यह है कि वह इमाम आदिल हो। क़ाज़ी साहब ने इमामे आदिल की इस शर्त को नज़र अंदाज़ कर दिया है। हुसैन के ज़माने में मिल्लत की इमामत व सरदारी के लिए इमाम हुसैन से ज़्यादा आमिल व कामिल कौन हो सकता है।

(मुक़द्दमा इब्ने खुल्दून स० 81)

यह वह क़ाज़ी अबू बकर बिन अरबी और उनकी किताब अल-अवासिम वल-क़वासिम है अब्बासी साहब ने जिसका हवाला अपनी किताब के स० 52 पर शद्द व मद्द के साथ पेश किया है। ख़ुद उनके मोतमद मुअर्रिख़ अल्लामा इब्ने ख़ल्दून ने क़ाज़ी साहब की इस्तिदलाल की धज्जियाँ उड़ा दीं। तअज्जुब है उसके बावजूद भी अब्बासी साहब ने क़ाज़ी साहब के क़ौल पर ऐतमाद किया है लेकिन अब यह कोई तअज्जुब की बात नहीं है इस तरह की ख़्यानत व तहरीफ़ और नक़ाइस व इंतिक़ाम से पूरी किताब लबरेज़ है।

यहीं से अब्बासी साहब की पेश करदा उन तमाम हदीसों का सहीह गुहमल भी मुतऐयन हो गया जो इमामुल-मुस्लेमीन के ख़िलाफ़ ख़ुरूज

इक़्दाम से मुतअल्लिक़ वईदे अज़ाब पर मुश्तमिल हैं यानी वह तमाम हदीसें उन लोगों के हक़ में हैं जो इमाम आदिल के ख़िलाफ़ ख़ुरूज करें, यज़ीद जैसे सुल्तान जाइर को उन हदीसों के दामन में पनाह लेने का कोई हक़ नहीं है।

अब ज़रा तारीख़ के आईना में यज़ीद की सीरत व किरदार और उसके ज़ोर व ज़ुल्म की दास्तान मुलाहिज़ा फरमाइए और फ़ैसला कीजिए कि क्या मिल्लते इस्लामिया के एक इमाम आदिल की यही ज़िन्दगी हो सकती है? अल्लामा इब्ने कसीर अपनी किताब में लिखते हैं :

नक़्ल व रिवायत से साबित है कि यज़ीद सुरूद व नग़मा, साज़ व राग, शराब नोशी और सैर व शिकार के अन्दर अपने ज़माने में मशहूर था। नौ उम्र लड़कों, गाने वाली दोशीज़ाओं और कुत्तों को अपने गिर्द जमा रखता था। सींग वाले लड़ाका मेंढ़ों, सांढों और बन्दरों के दरम्यान लड़ाई का मुक़ाबला करवाता था, उस वक़्त हर दिन सुबह के वक़्त नशा में मख़्मूर रहता था। ज़ीन कसे हुए घोड़ों पर बन्दरों को रस्सी से बांध देता था और फिराता था। बन्दरों और नौ उम्र लड़कों को सोने की टोपियाँ पहनाता था। घोड़ों के दरम्यान दौड़ का मुक़ाबला कराता था। जब कोई बन्दर मर जाता तो उसका सोग मनाता था। (अलबिदाया वन्निहाया जि० 8 स० 236)

मुलाहज़ा फ़रमाइए इसी क़रतूत पर अब्बासी साहब आज तेरह सौ बरस के बाद वावेला मचा रहे हैं कि इमाम हुसैन ने यज़ीद को मिल्लते इस्लामिया का अमीर व ख़लीफ़ा क्यों नहीं तस्लीम किया।

अब्बासी साहब ने अपनी किताब के स० 49 पर यज़ीद के ख़साइले महमूदा शुमार कराने के लिए अल-बिदाया की जो नातमाम इबारत नक़्ल की है वह इतने ही पर ख़त्म नहीं हो गई, उसके साथ यह भी है :

तरजमा : उसके अन्दर शहवाते नफ़्स की तरफ मैलान, बाज़ नमाज़ों के तर्क और अक्सर औक़ात में उन्हें नज़रे ग़फ़्लत कर देने की आदत थी।

(अलबिदायह जि० 8 स० 230)

इमाम हुसैन का सहीह मौक़िफ़ समझने के लिए ज़रूरी है कि आप इस्तेलाही इमामुल-मुस्लेमीन की अहलियत व इस्तिक़्लाल के सिलसिला में एक उसूली बहस ज़ेहन में महफ़ूज़ कर लीजिए। अल्लामा इब्ने हज़्म अपनी मुस्तनद किताब "अल-मुजल्ला" में इरशाद फ़रमाते हैं :

तरजमा : इमाम की शान यह है कि वह कबाइर से इज्तिनाब करे और सग़ाइर का इज़हार न करे। हुस्ने सियासत, तदबीर ममलुकत की खुसूसियात को जानता हो क्योंकि इसी बात का वह मुकल्लफ़ है।

उसी की चन्द सतरों के बाद लिखते हैं :

तरजमा : पस अगर क़र्शी इमाम के ख़िलाफ़ एक ऐसा शख़्स खड़ा हुआ जो उस से बेहतर हो या उसके मिस्ल हो या उस से कम तर हो तो चाहिए कि सब मुत्तहिद हो कर उसके साथ क़िताल करें बजुज़ उसके कि वह इमाम ग़ैर आदिल हो पस अगर वह इमाम ग़ैर आदिल है और उसके मुक़ाबला में ऐसा शख़्स खड़ा हुआ जो उसके मिस्ल है या उस से कम है तो चाहिए कि सब मुत्तहिद हो कर उसके साथ क़िताल करें और अगर उसके मुक़ाबला में ऐसा शख़्स खड़ा हुआ जो उस से बेहतर है तो चाहिए कि सब उस खड़े होने वाले के साथ मुत्तहिद हो कर उस इमाम जायर के ख़िलाफ़ क़िताल करें क्योंकि यह अम्र मुंकर की तग़य्युर है।

यही तग़य्युरे मुंकर, मिल्लत की सबसे बड़ी तत्हीर है। क़हर व जब्र का सुल्तान तेग़ बेनियाम लिए इस राह में हर वक़्त खड़ा रहता है। यह राह सिर्फ़ मरदाने सरफ़रोश व वफ़ादाराने और जान सिपार की है, यहाँ किसी और का यारा नहीं। इसी हक़ीक़त की जानिब सरकारे रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम ने इस मशहूर हदीस में इरशारा फरमाया है :

सबसे बेहतर जिहाद वह कलिमा हक़ है जो किसी जाइर व ग़ैर आदिल बादशाह के सामने बरमला कहा जाए।

दूसरी हदीस में फ़रमाते हैं :

तुम में से जो शख़्स भी कोई बुराई देखे तो उसे चाहिए कि अपने हाथ से मिटा दे और कुदरत नहीं है तो जुबान से मज़म्मत करे और अगर उसकी भी इस्तिताअत नहीं है तो दिल से बुरा समझे और ईमान का यह ज़ईफ़ दरजा है। (तिर्मिज़ी)

जिसके घर से मिल्लत का चश्मा फूटा, मिल्लत सैराब हुई, तत्हीरे मिल्लत की ज़िम्मेदारी भी उसी पर सबसे ज़्यादा थी। वक़्त ने उन्हें निहायत दर्द व कर्ब के साथ पुकारा और उन्होंने निहायत खन्दा पेशानी के साथ जवाब दिया। और ज़मीन व आसमान की काइनात शाहिद है कि बिला रैब वह उस ऐजाज़ के मुस्तहिक़ थे। अब्बासी के मोतमद मुअर्रिख़

इब्ने ख़ल्दून की सराहत गुज़र चुकी है : **वमन आदला मिनल-हुसैन फ़ी ज़मानेही फ़ी इमामतिन।** मिल्लत की इमामत व क़्यादत के लिए इमाम हुसैन के ज़माने में इमाम हुसैन से ज़्यादा आदिल व कामिल और कौन हो सकता था।

ग़ौर से सुनिए! ऐतराफ़ के इन कलिमात में सदाक़त की रूह बेमुहाबा बोल रही है। यज़ीदी अह्दे हुकूमत के मुंकिरात की तग़य्युर और मिल्लत की तत्हीर ही इमाम आली मक़ाम का बुनियादी नसबुल-ऐन और यज़ीद के ख़िलाफ़ इक़्दाम का असल मुहर्रिक थी। करबला के पूरे सफरनामे में यह हक़ीक़त जगह जगह नुमांया है।

चुनांचे हुर तमीमी की हेरासत में तरीक़े अज़ाब और क़ादसीया से करबला की तरफ पलटते वक़्त इमाम ने जो तारीख़ी ख़ुतबा दिया था, वह आज भी किताबों में महफ़ूज़ है। इक़्दाम व नसबुल-ऐन का पस मंज़र समझने के लिए ख़ुत्बा का लफ़्ज़ लफ़्ज़ ज़मानत है। ज़ैल में उसका एक इक़्तिबास पढ़िए और ज़ेहन को गुज़िश्ता मबाहिस के साथ मुस्तहज़र रखिए:

तरजमा : ऐ लोगो! रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि जो शख़्स किसी सुल्तान जाइर को देखिए कि उसने ख़ुदा की हराम करदा चीज़ों को हलाल ठेहरा लिया है, अहदे इलाही को तोड़ रहा है, सुन्नते रसूलुल्लाह की मुख़ालफ़त कर रहा है, अल्लाह के बन्दों के साथ ज़ुल्म और ज़्यादती का मामला करता है पस यह सब कुछ देखते जानते भी अपने क़ौल व अमल से उस शर को मिटा कर अपना फर्ज़ नहीं अदा करता है तो ख़ुदा का तक़ाज़ाए अद्ल यह है कि उसे उसके ठिकाने तक पहुँचा दे। ग़ौर से सुनो कि उन यज़ीदियों ने शैतान की इताअत को अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है और ख़ुदा की बन्दगी को छोड़ रखा है। उन लोगों ने हर तरफ फसाद बरपा कर रखा है, शरीअत की ताज़ीरात को मुअत्तल कर दिया और सरकारी माल को ज़ाती मफ़ाद पर ख़र्च किया। ख़ुदा के हराम को हलाल किया और हलाल को हराम कर दिया। और उन यज़ीदियों के शर के मिटाने वालों में सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ मैं हूँ।

(कामिल इब्ने कसीर जि० 4 स० 40)

ज़रा **"अना अहक्कुन मिन ग़ैरे"** का ज़ोर ब्यान मुलाहज़ा फ़रमाइए। गुज़श्ता औराक़ में इमामुल-मुस्लेमीन की अहलियत व इस्तिक़्लाल से

मुतअल्लिक़ अल्लामा इब्ने हज़्म की जो इबारत नक़्ल की गई है अब ज़रा उसकी स्प्रिट में ख़ुत्बे के अल्फ़ाज़ पर ग़ौर कीजिए कि क्या अब इमाम के इक़्दाम को ग़लत कहा जा सकता है और क्या अब भी उन्हें इस्तेलाही बाग़ी ठहराने के लिए इल्म व तहक़ीक़ का कोई हल्का सा सहारा भी मिल सकता है? यह और बात है कि कोई शख़्स हुदूदे रिवायत व नक़्ल से आज़ाद हो कर अपने दिल का अक़ीदा ही यह बना ले। नर्म से नर्म लब व लहजा में इस तरह के तख़ैय्युल को शक़ावत व बदबख़्ती की पसन्दीदा जसारत तो कह सकते हैं लेकिन इल्म व तहक़ीक़ का मफ़ाद हरगिज़ नहीं कहा जा सकता।

बहस के इख़्तिताम पर बेसाख़्ता ज़ेहन में एक सवाल पैदा होता है जिस का इज़ाला बहुत ज़रूरी है कि आख़िर हम अपने तईं उन सहाबा किराम के बारे में क्या अक़ीदा रखें जिन्होंने यज़ीद के ख़िलाफ़ तग़य्युरे मुंकर की मुहिम में अमलन इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का साथ नहीं दिया था। तो इस अम्र का फ़ैसला ख़ुद अब्बासी के मोतमद मुअर्रिख़ इब्ने ख़ल्दून ने अपने मुक़द्दमा में निहायत वज़ाहत के साथ कर दिया है। मुलाहज़ा फ़रमाइए :

तरजमा : लेकिन इमाम हुसैन के अलावा कुछ सहाबा व ताबईन जो हिजाज़ व शाम व इराक़ में थे उनकी राय यह थी कि यज़ीद अगरचे फ़ासिक़ व अह्ल है लेकिन क़त्ल व ख़ूंरेज़ी के बाइस उसके ख़िलाफ़ किसी तरह का इक़्दाम सही नहीं है। इसी वजह से अमलन उन्होंने इमाम हुसैन का साथ नहीं दिया। इमाम हुसैन के इक़्दाम के हक़ होने से उन्होंने इंकार नहीं किया और न उन्होंने इमाम हुसैन को ख़ताकार व गुनहगार ठहराया क्योंकि वह मुजतहिद हैं और मुजतहिद की यही शान है। इस ग़लती से हमेशा बचना कि इमाम हुसैन का साथ न देने की वजह से सहाबा को गुनहगार कहो। क्योंकि यह भी उनका एक इज्तिहाद था।

(मुक़द्दमा इब्ने ख़ल्दून स० 181)

इस इबारत में तीन इशारात ख़ास तौर पर क़ाबिले तवज्जोह हैं :

पहला : यह कि तत्हीरे मिल्लत की इस अज़ीमुश्शान मुहिम में बाज़ सहाबा–ए–किराम की अदमे शिर्कत की वजह यह नहीं है कि वह लोग यज़ीद की इमारत से मुत्मइन थे बल्कि उनकी मसलेहत यह थी कि अज़्ल

अमीर के लिए जिन वसाइले ग़लबा व ताक़त की ज़रूरत थी वह उस वक़्त मयस्सर नहीं थे। बेसरोसामानी की हालत में इस तरह के इक़्दाम से सिवाए इसके कि क़िताल व ख़ूंरेज़ी हो, और कोई नतीजा उनकी निगाह में मुतवक़्क़े नहीं था।

दूसरा : यह कि अगरचे बाज़ सहाबा इस राह में अमलन इमाम हुसैन की रिफ़ाक़त से दस्त कश रहे लेकिन कभी भी उन्होंने इमाम हुसैन को ग़लतकार व गुनहगार नहीं समझा और न ही उनके इक़्दाम पर किसी तरह का इंकार किया।

तीसरा : यह कि सहाब–ए–किराम और इमाम हुसैन सबके सब मुज्तहिद थे। सहाबा की निगाह असबाबे ज़ाहिरी के फ़ुक़्दान और मसलेहत के तक़ाज़ों पर थी, वह सही वक़्त का इंतिज़ार कर रहे थे और इमाम हुसैन का यह नज़रिया था कि तग़य्युरे मुंकिर की मुहिम में हमारा फर्ज़ कामयाबी की ज़मानत नहीं है। बातिल व मुंकिर के ख़िलाफ़ क़दम उठा देना ही अदाएगी फर्ज़ के लिए बहुत काफ़ी है, नताइज का कफील ख़ुदाए क़दीर है। हमारा काम सिर्फ़ यह है कि हम सही को सही कह दें और ग़लत को ग़लत ताकि ख़ूब व ना ख़ूब का इम्तियाज़ मिटने न पाए।

ग़रज़ दोनों की निगाह दीन की मस्लेहत और शरीअत के मफ़ाद पर थी, दोनों यज़ीद की ना अहलियत पर मुत्तफ़िक़ थे, इख़्तिलाफ़ सिर्फ़ वक़्त के तऐयुन में था और चूंकि दोनों दरजा इज्तिहाद पर थे इसलिए उन में से हर एक की फ़िक्र अपने फ़ैसला में आज़ाद थी। ज़ाबता के तौर पर कोई किसी को अपनी राय का ताबे नहीं बना सकता था।

वमा अलैना इल्लल-बालाग़।

(अल्लामा अरशदुल-क़ादरी)

ख़िलाफ़ते हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू अक़ाइद की रौशनी में

पिछले दिनों यके बाद दीगरे दो नाबकार किताबें शाया हुईं "ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" और "उमवी दौरे ख़िलाफ़त" इसके जवाब में सिवाए उसके क्या कहा जा सकता है कि उसके लिए ख़ुदा से हिदायत की दुआ की जाए और हुकूमत से पुर ज़ोर मुतालबा किया जाए कि ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद के साथ-साथ यह रू सियाह किताब भी क़ानूनन मम्नूअ़ क़रार दी जाए।

महमूद अहमद अब्बासी की हिम्मते पीराना की (बक़ौल उनके सआदतमन्द भतीजे के) वाक़ई दाद नहीं दी जा सकती कि उन्होंने किस चाबुक दस्ती से इत्तिहाद बैनल-मुस्लेमीन की जद्दो जहद की है और आम मुअर्रेख़ीने इस्लाम के ग़ुलू व तअस्सुब का पर्दा चाक करने की कामयाब कोशिश में ख़ुद तक़्दीसे इस्लाम की पाक चादर को पारा पारा करनी चाही है और हिमायते यज़ीद के जोश में ख़िलाफ़ते अमवीया का वह तारीक पस मंज़र तस्नीफ़ फरमाया है जिसमें हुज़ूर मौलाए काइनात रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफत को बिल्कुल मज्रूह कर डाला।

चुनांचे आपने शाह वलीयुल्लाह साहब और इब्ने तैमिया की इबारतों के साथ कुछ अपनी बातें मिला कर यह कह दिया कि हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त क़ायम ही नहीं हुई। उनकी ख़िलाफ़त तो मआज़ल्लाह सबाइयों की साख़्ता व परदाख़्ता थी, उनकी बैअत पर तो अह्ले हल्लो अक़्द जमा भी न हुए।

ख़िलाफ़त व इमामत बिल-ख़ुसूस मौलाए काइनात रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का मस्अला ख़िलाफ़ते इस्लाम की इब्तिदाई सदियों से अह्ले सुन्नत व जमाअत के नज़्दीक एक तय शुदा अक़ीदा बना हुआ है। इस इजमाल की तफ़्सील यह है कि मौलाए काइनात की ख़िलाफ़त की दो हैसियतें हैं। तारीख़ी और कलामी।

यानी एक तो उसकी तारीख़ी हैसियत कि उसके बारे में तारीख़ी रिवायतें क्या हैं? तबरी में क्या है। इब्ने असीर ने क्या लिखा है। मस्ऊदी की रिवायतों में क्या है वग़ैरह वग़ैरह।

दूसरे अक़ीदा की यानी मौला अली की ख़िलाफ़त के बारे में तमाम अह्ले सुन्नत व जमाअत का एक मुत्तफ़ेक़ा अक़ीदा भी है कि अगर बिल फ़र्ज़ दुनिया से तारीख़ की तमाम किताबें नापेद भी हो जाएं और हमारे पास ख़िलाफ़ते शेरे ख़ुदा के बारे में इल्म का दूसरा कोई ज़रिया न रह जाए तो सिर्फ़ अक़ाइद व कलाम की ही किताबों से हमारा यह यक़ीन व मुस्तहकम अक़ीदा रहेगा कि हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त हक़ है क्योंकि अइम्मा अह्ले सुन्नत में इस बारे में दो राएं हैं ही नहीं और अक़ाइद की सारी किताबें इस बाब में मुत्तफ़िकुल-लिसान हैं।

अपने इस मज़्मून में हम सिर्फ़ इसी हैसियत से नुसूस पेश करेंगे कि ख़िलाफ़ते हज़रत अली के बारे में अह्ले सुन्नत व जमाअत का अक़ीदा क्या है और अब्बासी साहब इस से फिर कर मुसलमानों को कहाँ ले जाना चाहते हैं। आइंदा अगर वक़्त ने साथ दिया तो उसकी तारीख़ी हैसियत से भी बहस की जाएगी फिर एक मुस्तक़िल मज़्मून में यह ज़ाहिर करने की कोशिश होगी कि **इज़ालतुल-ख़िफ़ा व मिन्हाजुस्सुन्नः** की जो इबारतें अब्बासी साहब ने नक़्ल की हैं, उनमें कुछ तब्दीली है। फ़हम मतलब में कोताही होगी और वह इबारतें क़ाबिले इस्तिनाद भी हैं या नहीं।

ख़िलाफ़त किन किन तरीक़ों से साबित होती है

तरजमा : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम या इमाम साबिक़ की नस और ब्यान यह कर देने से कि मेरे बाद फ़लां ख़लीफ़ा होगा, इमामत साबित हो जाती है और अह्ले हल्ल व अक़्द की बैअत से। इमामत मुनअक़िद होने के दो तरीक़े हैं। अह्ले हल्ल व अक़्द का बैअत कर लेना और गुज़श्ता इमाम की वसीयत का मौजूद होना।

तरजमा : ख़िलाफ़त चन्द तरीक़ों से क़ायम होती है। अह्ल हल्लो अक़्द उलेमा, रुउसा, उमरा और सरदाराने फौज में जो लोग साइबे राय और मुसलमानों के ख़ैर ख़्वाह हों उनकी बैअत जैसे कि हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त मुनाक़िद हुई और इस तरह की

ख़लीफ़ा लोगों को किसी के बारे में वसीयत कर जाए जैसे हज़रत उमर की ख़िलाफ़त या किसी क़ौम में मज्लिसे शूरा के ज़रिया तय हो जैसे हज़रत उसमान बल्कि हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हुमा की ख़िलाफ़त या कोई ऐसा आदमी जो ख़िलाफ़त की शराइत पर पूरा उतरता हो, खुद बख़ुद लोगों पर ग़ालिब आ जाए।

(हुज्जतुल्लाहिल बालेग़ा जि० 2 स० 15 शाह वलीयुल्लाह)

मज़्कूरा बाला किताबों में अव्वलुज्ज़िक्र ख़ालिस अक़ाइद की किताब है और बक़िया दोनों किताबें मसाइले शरईया और सियासत दोनों की जामेअ। शाह साहब ने इंक़ाद ख़िलाफ़त की सिर्फ़ एक शक़ इस्तीला का इज़ाफ़ा किया है वरना उन्हीं दो वज्हों को फैला कर ब्यान कर दिया है। मसलन अल्लामा मादरदी और साहिबे शरह मवाक़िफ़ ने जिस चीज़ को **बैअतु अहलुल-हल्लु वल-अक़्द।** से ब्यान किया था, उसी को शाह साहब दो हिस्सों में बांट देते हैं। अह्ले हल्ल व अक़्द और शूरा क़ौम, ख़ुलासा यह कि नसब इमाम के दो बुनियादी तरीक़े हैं।

रसूल या इमाम साबिक़ की किसी शख़्स के बारे में नस या अह्ले हल्ल व अक़्द का इज्मा। अब हमको यह देखना है कि हुज़ूर मौलाए काइनात रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की इमामत व ख़िलाफ़त का सुबूत इन दोनों तरीक़ों में से किसी तरीक़ पर है या नहीं। इसके लिए हम बिला तबसेरा मुख़्तलिफ़ अक़ाइद व कलाम नीज़ अइम्मा आलाम की किताबों से तसरीहात नक़्ल करते हैं।

हज़रत अली की ख़िलाफ़त पर अह्ले हल्ल व का इज्मा

तरजमा : जब हज़रत उसमान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु शहीद हुए तो लोग हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की बैअत पर जमा हो गए। तमाम लोगों में अंबिया के बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु अफ़्ज़ल हैं फिर उमर फारूक़ उसके बाद हज़रत उसमान ग़नी तब हज़रत अली रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन का मरतबा है और ख़िलाफ़त भी इस तरतीब पर है। (अक़ायद नफ़सी)

तरजमा : हज़रत उसमान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु शहीद हो गए और ख़िलाफ़त के बारे में उन्होंने कोई तसरीह न फ़रमाई तो किबारे मुहाजेरीन

व अंसार ने जमा हो कर हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु से गुज़ारिश की और आपके हाथ पर बैअत की क्योंकि अपने ज़माना में वह सब से अफ़्ज़ल और ख़िलाफ़त के अह्ल थे। और उन लोगों में बाहम जो जंगें और हुईं वह ख़िलाफ़त के बारे में न थीं, वह तो इज्तेहादी ग़लती थीं।

(शरह अक़ाइद स० 109)

तरजमा : हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त सहाबा किराम के इज्मा से साबित है। अब्दुल्लाह इब्ने तुबा ने मुहम्मद बिन हनीफ़ा से रिवायत की कि मैं हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु के साथ बैठा था और हज़रत उसमान रज़ि अल्लाहु अन्हु महसूर थे। एक आदमी ने आ कर कहा हुज़ूर! उसमान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु अभी अभी शहीद कर दिए गए। हज़रत अली ने खड़े होने का इरादा किया तो मैंने उनकी कमर थाम ली कि लोग कहीं उनको भी तक्लीफ़ न पहुँचाएं। आपने फरमाया तेरी मां न रहे मुझे छोड़! फिर उठ कर मक़्तल हज़रत उसमान रज़ि अल्लाहु अन्हु पर तशरीफ लाए और फिर अपने घर जा कर दरवाज़ा बन्द कर लिया। लोग आए और कहा हज़रत उसमान शहीद कर दिए गए और ख़लीफ़ा का होना ज़रूरी है और आपसे ज़्यादा उसका कोई अह्ल नहीं इसलिए आप बैअत के लिए हाथ बढ़ाइये। आपने कहा, मैं तुम्हारे बनिस्बत अमीर के वज़ीर अच्छा रहूँगा, इसलिए मुझे माज़ूर रखो। जब लोग किसी तरह राज़ी न हुए तो आपने फरमाया मेरी बैअत अलल-ऐलान होगी पस आप मस्जिद में तशरीफ़ लाए और लोगों ने आपकी बैअत की इसलिए आप बरहक़ हुए और वक़्ते शहादत तक इमाम बरहक़ रहे। ख़्वारिज (उनके लिए बरबादी हो) यह कहते हैं कि आप कभी ख़लीफ़ा थे ही नहीं। (गुनियत्तुालिबीन)

मज़्कूरा बाला इबारत में अगर यह देखा जाए कि इस रिवायत की तारीख़ी हैसियत इतनी मज़्बूत है कि ख़ुद ग़ौस पाक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का इस पर इतना ऐतमाद कि यह रिवायत अपनी किताब में तख़्रीज फरमाई और इसी बुनियाद पर मौला अली की ख़िलाफ़त के बरहक़ होने का फ़ैसला फरमाया। इस से क़तअ़ नज़र हमको सिर्फ़ यह देखना है कि हज़रत ग़ौस पाक रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने **काना इमामन हक़्क़न।** मजीद इरशाद फरमाते हैं :

तरजमा : हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु अपने मुक़ाबिल से क़िताल में हक़ पर थे क्योंकि इमाम अहमद बिन हंबल रज़ि अल्लाहु अन्हु हज़रत अली की ख़िलाफ़त के हक़ होने का ऐतक़ाद रखते थे जैसा कि हमने बताया है कि सहाबा में अह्ल हल्ल व अक़्द आपकी ख़िलाफ़त से मुत्तफ़िक़ हैं।

तरजमा : नुबुव्वत हुज़ूर के वेसाल से ख़त्म हो गई और वह ख़िलाफ़त जिसमें तल्वार न चली, शहादत हज़रत उसमान रज़ि अल्लाहु अन्हु से और ख़िलाफ़त का ख़ातमा हज़रत अली की शहादत और इमाम हसन के ख़िलाफ़त छोड़ देने से हुआ। (हुज्जतुल्लाहिल बालेग़ा स० 212)

क़ाबिले ग़ौर यह अम्र है कि अगर अब्बासी साहब का ब्यान सही है कि इज़ालतुल-ख़ुलफ़ा में शाह साहब ने यह फरमाया कि ख़िलाफ़त हज़रत अली के लिए क़ायम न हुई तो हुज्जतुल्लाहिल-बालेग़ा में जगह जगह उनकी ख़िलाफ़त का इसबात किस तरह फ़रमा रहे हैं?

हज़रत अली और उनके मुख़ालेफ़ीन के ज़माना में तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह फ़रमाकर ख़िलाफ़त की उम्मीद दूसरे लोगों के लिए मुन्क़ता कर दी कि ज़ब दो ख़लाफ़ा के लिए बैअत की जाए तो बाद वाले को क़त्ल कर डालो और यह कितनी अजीब बात है कि एक ही हक़ दो आदमियों में किस तरह तक़्सीम किया जाए? ख़िलाफ़त न तो जिस्म है कि बटे न अर्ज़ कि मुतफ़र्रिक़ हो न कि उसकी हद बन्दी हो तो उसे किस तरह बेचा जाएगा और किस तरह हिबा किया जाएगा और इस बाब में एक हदीस क़ाते निज़ा है, सब से पहला फ़ैसला जो क़्यामत के दिन होगा हज़रत अली व मुआविया रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन में होगा। तो ख़ुदा हज़रत अली के हक़ में फ़ैसला करेगा और बक़िया तहते मशीयते इलाही होंगे। नीज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम का क़ौल है अम्मार! तुझे बाग़ी गरोह क़त्ल करेगा। तो इमाम बाग़ी नहीं हो सकता। पस इमामत दो आदमियों के लिए नहीं हो सकती जिस तरह रबूबियत दो के लिए नहीं।

इस इबारत में किस वज़ाहत से इमाम ग़ज़ाली फरमाते हैं। बैअते औला हज़रत अली की थी और वही हक़ है, इसके बाद दूसरे की बैअत का इम्कान ही ख़त्म है जैसा कि हुक्मे रसूल है। यूंही हदीसे रसूल है कि हज़रत अम्मार को बाग़ी गरोह क़त्ल करेगा (बाग़ी के जो मानी भी हों) पस

जिन लोगों ने हज़रत अम्मार को क़त्ल किया इमामे हक़ होंगे।

तरजमा : हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु की इमामत की हक़्क़ानियत पर अह्ले हल्ल व अक़्द का इत्तिफ़ाक़ दलालत करता है।

तरजमा : दसवां इख़्तिलाफ़ हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त में उन पर इत्तिफ़ाक़ के बाद हुआ तो हज़रत तलहा व ज़ुबैर रज़ि अल्लाहु अन्हुम मक्का गए। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा को साथ लिया बसरा पहुँचे और हज़रत अली के साथ जंग की जिसको जंगे जमल कहते हैं लेकिन सही यह है कि दोनों हज़रात ने रुजूअ किया। उन लोगों को बात याद दिलाई गई तो नसीहत क़ुबूल कर ली और मौला अली की ख़िलाफ़त उनकी वफ़ात के वक़्त तक रही, यह एक अम्र मशहूर है।

पस इन तसरीहात की रौशनी में एक लहज़ा के लिए भी यह सोचा जा सकता है कि अह्ले सुन्नत व जमाअत में अमीरुल-मुमिनीन हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के बारे में कोई अदना शुबह भी किया जा सकता है? उनका तअल्लुक़ मज़हबे हक़ अह्ले सुन्नत व जमाअत से भी हो सकता है? हाँ इस सवादे आज़म का तेरह सद साला अक़ीदा तबाह कर दिया जाए और फिर नए सिरे से कोई शरीअत घड़ी जाए तो और बात है।

खुद बदलते नहीं ईमाँ को बदल देते हैं
होते किस दरजा फ़क़ीहाने हरम बे तौफ़ीक़

(मौलाना अब्दुलमन्नान आज़मी)

एक रुसवाए आलम किताब का एक तहक़ीक़ी जायज़ा

किताब "ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" मुअल्लिफ़ा मौलवी महमूद अहमद अब्बासी नज़र से गुज़री अव्वल से आख़िर तक पढ़ा। इस किताब की बेहद तारीफ़ व ताईद रोज़नामा "अल-जमीअत" "तजल्ली" देवबन्द और "नक़ीब" बिहार में देख चुका था। यही तहरीरें इसकी हक़ीक़त की तरफ़ ग़म्माज़ी कर रही थीं फिर भी इंकिशाफ़ तमाम के लिए इस किताब को पढ़ने की ज़रूरत महसूस की, इसको पढ़ कर जिस नतीजा पर पहुँचा हूँ वह यह है।

अब्बासी सहाबा का मक़्सद यज़ीद को अमीरुल-मुमिनीन ख़लीफ़तुल-मुस्लेमीन मुत्तक़ी ज़ाहिद और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम के बाद तमाम उम्मत से आला व अफ़्ज़ल साबित करना है, इसके साथ हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु और उनके अह्ले बैत को झूठा, वादा ख़िलाफ़, ना अह्ल लुटेरा, उम्मत में तफ़रक़ा डालने वाला साबित करने की सई (कोशिश) की गई है। कोई आयत उनके इस मक़्सद के ख़िलाफ़ आ गई उसे तोड़ मरोड़ कर रख दिया, हदीस आ गई तो उसे दरजा ऐतबार से साक़ित कर दिया। अख़्बार आ गए तो ठुकरा दिया और मुअर्रेख़ीन पर बरस पड़े। नामालूम इब्ने ख़ल्दून पर क्यों रहम आया। हाँ ग़ैर मुस्लिम मुअर्रेख़ीन पर अल्बत्ता ऐतमाद किया है। उनके अकाबिर उलमा में एक इब्ने तैमिया ज़रूर दिखाई पड़े जो सज़ा याफ़्ता थे। यह किताब बड़ी ही दिल आज़ार है। उम्मत पर बुहतान तराशी में ग़ालिबन एक अरसा के बाद ऐसी किताब लिखी गई है। काश! उस मुसन्निफ़ ने अपना इस्लामी लक़ब ज़ाहिर कर दिया होता तो इतना ख़लफ़शार न होता। इस ज़ुल्म व बुहतान व ख़्यानत का नाम तहक़ीक़! अल-अयाज़ बिल्लाह। तेरह सौ बरस के मुत्तफ़क़ अलैह मस्अला तमाम उम्मत के इज्मा को ग़लत क़रार "देना इल्हाद" नहीं तो और क्या है। पाँच सौ बरस के बाद जब तहक़ीक़ नामुम्किन हो गई थी, आज तेरह सौ बरस के बाद कैसे वाक़ेअ हो गई।

आयते तत्हीर में अज़्वाजे मुतह्हरात व औलादे नबी और हज़रत अली सब ही शामिल हैं। सलफ़ से आज तक यही तफ़्सीर ब्यान की गई, अहादीस उसी की शाहिद हैं मगर अब्बासी साहब लिखते हैं :

"यही अज़वाज अह्ले बैत रसूलुल्लाह की अह्ले खाना व अहलीया हैं, उन ही की तत्हीर में आयते तत्हीर नाज़िल हुई।"

(ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद स० 123)

हुसैन दुश्मनी में तमाम तफ़्सीरों को रद्द करके अपना मज़ऊमा साबित करना चाहा है हालांकि मुतदाविल तफासीर, तफ़्सीर मदारिक, तफ़्सीरे ख़ाज़िन, तफ़्सीरे मआलिमुत्तन्ज़ील, तफ़्सीरे अहमदी, तफ़्सीर अबू अस्सऊद, तफ़्सीर इब्ने कसीर, तफ़्सीर बैज़ावी और हाशिया बैज़ावी में अज़वाजे मुतह्हरात व हज़रत अली व फातिमा, हसन व हुसैन रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन को अह्ले बैत फरमाया।

इसी तरह हज़रत अमीरुल-मुमिनीन मौला अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त सारे कलिमा गोयाने इस्लाम (ख़्वारिज को छोड़ कर) के नज़्दीक ख़िलाफ़ते हक्क़हू राशिदा है और वह खुद अशरा मुबश्शरह में हैं जिनके फ़ज़ाइल व मनाक़िब में हदीस व सीर की किताबें शाहिद हैं। आज तक जितने मुअर्रेख़ीन हुए सब ही अमीरुल-मुमिनीन मानते लिखते पढ़ते आए मगर अब्बासी साहब फरमाते हैं :

"हज़रत अली की बैअत मुकम्मल नहीं हुई थी, उम्मत की बहुत बड़ी अक्सरीयत उनकी बैअत में दाख़िल नहीं थी।"

यही वजह है कि यज़ीद के नाम पर सैंकड़ों जगह अमीरुल-मुमिनीन लिखा मगर हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के नाम के साथ एक जगह भी अमीरुल-मुमिनीन नहीं दिखाई दिया बल्कि शेरे ख़ुदा की शख़्सियत को पस्त से पस्त ज़ाहिर करने के लिए अब्बासी साहब ने यहाँ तक लिखा :

"हज़रत अली हज़रत उसमान के मुक़ाबला में इंतिख़ाबे ख़िलाफ़त के लिए कोशा थे, अपने फ़रज़न्द को साथ ले कर गए और हज़रत सअद से फ़रमाया, उसकी जो क़राबत आप से है उसके ऐतबार से मेरे हक़ में राय दीजिए।"

यह कितना रकीक हमला है, क्या रसूले पाक की सोहबत में भी रह कर

बल्कि पूरी तर्बियत नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम से पाकर भी शेरे खुदा का दिल साफ न हो सका। रूहानियत से कुछ हिस्सा इस्लाम की हक़ीक़ी रौशनी न हासिल कर सके कि एक सहाबी रसूल को कलिमा हक़ से रोक कर तरफ़दारी की तल्क़ीन फरमा रहे हैं मआज़ल्लाह! इसी अब्बासी साहब को दूसरे पहलू पर देखिए फरमाते हैं :

"सहाबा रसूलुल्लाह की ख़िदमतें करने, उनके फ़ैज़ाने सोहबत से मुस्तफ़ीज़ होने के बे बहा मवाक़े हासिल होते, जो सहाबा किराम दमिश्क़ व शाम में मसकन गुज़ीं थे उनके फ़ुयूज़े इल्मी व रूहानी से जैसा साबिक़ में ज़िक्र हो चुका, अमीर यज़ीद ने पूरा इस्तेफादा किया था।"

(ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद स० 289)

मलतब यह हुआ कि अज्मियों से यज़ीद ने फ़ज़्ल व कमाल और रूहानियत हासिल कर ली और खलीफ़तुल-मुस्लेमीन अली मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु सोहबत सैयदुल-मुरसलीन में रह कर भी सदाक़त व दयानत न हासिल कर सके, लानत है दुश्मनाने अह्ले बैत और उनके मुवैदीन पर! यह तारीख़ी हक़ीक़त है या बुग्ज़े क़ल्बी का इज़्हार? फिर अब्बासी लिखते हैं :

"यह छोटे नवासे आँ हज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेही व सल्लम की वफ़ात के वक़्त पाँच साढ़े पाँच बरस के इतने कम उम्र थे कि उनको अपने मुक़द्दस व हादी-ए-बरहक़ नाना के न हालात व मामूलात की कोई बात याद थी और न ज़ुबाने मुबारक से सुना हुआ इस्लामी सियासत के बारे में आपका कोई इरशाद।"

(ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद स० 99)

यह है अब्बासी साहब की तहक़ीक़ कि यज़ीद मीरासियों की सोहबत में रह कर अल्लामा मुत्तक़ी परहेज़गार बन गया और इमाम आली मक़ाम को रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम की आग़ोशे रहमत में बैठ कर मुहाजिरीन व अंसार व सहाबा किराम अशरा मुबश्शरह खुलफ़ाए राशिदीन की ज़्याबार महफ़िलों में नीज़ बाबे मदीनतुल-इल्म की तर्बियतगाह से मुसलसल पैंतीस बरस तक फ़ुयूज़ व बरकात हासिल करने के बाद भी कोई हदीस याद थी न कोई मस्अला। हैरत होती है ऐसी बातें किस मुँह से निकल रही हैं? कलिमा की तो लाज रखी होती! चन्द ख़ार्जियों की

ख़ुशनूदी के लिए रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम से लड़ाई मोल ली।

तरजमा : फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली फ़ातिमा व हसन हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम के बारे में जो उन से लड़ेगा, उस से मेरी जंग है और जो उन से मसालेहत करेगा, उसके लिए मेरी तरफ से सलामती है। (तिर्मिज़ी)

कैसा झूठे लुटेरे और बाग़ी भी जन्नत के सरदार होंगे? मन घड़त तारीख़ से हदीस को रद्द करना क्या मोमिन का काम है? उस मुसन्निफ़ को ग़ैरत न आई कि अह्ले बैत में ऐब साबित करने को बेसरोपा तारीख़ों का हवाला ढूंढ लाया और फज़ाइल व मनाक़िब में सेहाह की हदीसों को मज्रूह बता कर पसे पुश्त डाल दिया और जहाँ अपने यज़ीदों का हाल ब्यान करना हुआ, वहाँ हदीसें भी मोतबर हो गईं और वह मुअर्रिख़ भी माकूल हो गए, चन्द सफ़्हे पेश्तर अह्ले बैत की तारीफ़ की वजह से मरदूद थे। यह क़लबी ख़बासत सच कहला सकती है? कोई सहीहुल-अक़्ल इंसान उसको तहक़ीक़ नहीं कह सकता। अब्बासी साहब रक़मतराज़ हैं:

"इल्म व फ़ज़ल, तक़्वा व परहेज़गारी, पाबन्दी सौम व सलात के साथ अमीर यज़ीद हद दरजा करीमुन्नफ़्स, हलीमुत्तबा, संजीदा व मतीन थे।"

(ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद स० 49)

यह शहादत उन्हें एक मोतबर ईसाई से मिली। शायद दिल में ख़ल्जान पैदा हो कर मुसलमानों पर उस से धौंस नहीं जमा सकते तो हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ज़ुबानी कहलवा दिया :

"किताबुल-अवासिम में ब्यान फरमाते हैं कि इमाम अहमद बिन हंबल ने अमीर यज़ीद का ज़िक्र किताबुज़्ज़ुह्द में ज़ुह्हाद सहाबा के बाद और ताबईन से पहले उस ज़ुमरा में क्या है जहाँ ज़ुह्द व वरअ् के बारे में ज़हादे उम्मत के अक़्वाल नक़्ल किए हैं।" (ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद)

हालांकि मीज़ानुल-ऐतदाल जो नक़्दे रिजाल में दुनिया की मानी हुई किताब है, उसमें यज़ीद का हाल इन लफ़्ज़ों में लिखा है :

तरजमा : हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल व दीगर अइम्मा ने इस से रिवायत की इजाज़त नहीं दी। जो सिफ़तें रावी में होनी चाहिएं वह यज़ीद में नहीं थीं।

इस सिलसिला में अब्बासी साहब के माने हुए मुअर्रिख़ इब्ने ख़ल्दून से यज़ीद के औसाफ़ पर शहादत पेश करता हूँ, पढ़िए और फैसला कीजिए :

"यज़ीद की तरफ से उसमान बिन अबी सुफियान अमीर यज़ीद हो कर आया और उसी ज़माना में अह्ले मदीना का एक वफ़्द जिसमें अब्दुल्लाह बिन हंज़ला, अब्दुल्लाह बिन अबी उमर बिन हफ़स बिन मुग़ीरा मख़्ज़ूमी व मुंज़िर इब्ने अज़्ज़ुबैर वग़ैरेहिम शुरफ़ाए मदीना थे शाम को रवाना किया, यज़ीद ने उन लोगों की बहुत बड़ी इज़्ज़त की। अब्दुल्लाह बिन हंज़ला को अलावा ख़िल्अत के एक लाख दिरहम और बाक़ी लोगों को दस दस हज़ार देकर रुख़्सत किया। जब मदीना में अब्दुल्लाह बिन हंज़ला वापस आए तो अह्ले मदीना मिलने को हाज़िर हुए, हाल दरयाफ़्त किया जवाब दिया कि हम ऐसे नाअह्ल के पास से आए हैं जिसका न कोई दीन है और न कोई मज़्हब, शराब पीता है, राग बाजा सुनता है, वल्लाह अगर कोई मेहदी मिनल्लाह होता, उस पर जिहाद करता। हाज़िरीन ने कहा, हमने तो सुना है कि यज़ीद ने तुम्हारी बहुत बड़ी इज़्ज़त की, ख़िल्अत और जाइज़ा दिया। अब्दुल्लाह बोले हाँ, उसने ऐसा ही किया है लेकिन हमने इस वजह से इसको कुबूल कर लिया है कि उसके मुक़ाबला के लिए कुव्वत पैदा करें। अह्ले मदीना यह सुन कर और मुतनफ़्फ़िर हो गए।" (इब्ने ख़ल्दून)

इस से यज़ीद का तक़्वा व परहेज़गारी ज़ाहिर हुई। जब कुछ दिनों के बाद हज़रत मुंज़िर वापस तशरीफ़ लाए तो उन से लोगों ने यज़ीद के मुतअल्लिक़ पूछा तो फरमाया :

तरजमा : यज़ीद ने मुझे एक लाख दिरहम दिया लेकिन यह अतीया मुझे हक़ बात कहने से रोक नहीं सकता। क़सम ख़ुदा की वह शराब पीता है और क़सम ख़ुदा की वह नशा में होता है यहाँ तक कि नमाज़ भी छोड़ देता है। (इब्ने असीर)

इस रिवायत से उसकी पाबन्दी नमाज़ और परहेज़गारी मालूम हुई अब यज़ीद की हलीमुन्नफ़्सी सुनिए :

"अह्ले मदीना को तीन दिन ग़ौर व फ़िक्र करने की मोहलत देना, अगर इस असना में वह इताअत कुबूल कर लें (यज़ीद को ख़लीफ़ा मान लें) तो दरगुज़र करना वरना जंग करने में तअम्मुल न करना और जब उन

पर कामयाबी हासिल हो जाए तो तीन रोज़ तक क़त्ले आम का हुक्म जारी रखना।" (इब्ने ख़ल्दून)

इब्ने असीर ने यज़ीद का हुक्म इस तरह ब्यान किया :

"तीन दिन तक मदीना तैयबा को फौजियों के लिए मुबाह कर देना, क़त्ल, लूट मार और इस्मत दरी के अन गिनत वाक़ेआत हुए।"

यह है यज़ीद मल्ऊन की करीमुन्नफ़्सी और इससे हिल्म, ज़ुह्द, तक़्वा, संजीदगी, मतानत सब ही मालूम हो गई। मदीना तैयबा पर फौजकशी और क़त्ल व ग़ारत करने वाले का हुक्म सुनिए।

हज़रत मुस्लिम ने हज़रत सईद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से और वह नबी करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम से रिवायत फरमाते हैं :

तरजमा : हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने मक्का की अज़्मत में मक्का को हराम किया और मैं मदीना की अज़्मत में मदीना को हराम करता हूँ जो दोनों तरफ़ों के बीच में है, न उसमें ख़ून बहाया जाए और न उसमें जंग के हथियार उठाए जाएं और उसके कांटे भी न काटे जाएं सिवाए चारे के।

जहाँ कांटा काटना मम्नूअ हो वहाँ यज़ीद ने कैसी कैसी हस्तियों को शहीद किया फिर भी उसके तक़द्दुस में फ़र्क़ न आया। रसूले पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की सही हदीस से आंखें बन्द करके इब्ने तैमिया और ईसाई मुअर्रिख़ की मन घड़त पर ईमान लाना बेदीनी नहीं तो और क्या है? इमाम बुख़ारी व मुस्लिम की रिवायत का मिस्दाक़ कौन है?

तरजमा : हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फरमाया जो कोई मदीना वालों से मक्र व फ़रेब करेगा वह नमक की तरह घुल घुल कर हलाक होगा।

क्या यह पेश गोई यज़ीद पर नहीं सादिर आती कि थोड़े ही दिनों बाद दिक़ व सल की बीमारी में घुल घुल कर तबाह व हलाक हुआ।

तरजमा : मदीना तैयबा हराम है बमिक़्दार ग़ारे से सौर तक जिसने उसमें ममनूआत का इर्तिकाब किया या उसके मुर्तकिब को पनाह दी, उस पर अल्लाह तआला की लानत, फरिश्तों की लानत और सारे इंसानों की लानत है।

हदीस पर ईमान रखने वाला क्या अब भी लानती के बजाए मुत्तक़ी और परहेज़गार समझेगा या मुत्तक़ी और परहेज़गार कहने वाले को भी लानती कहेगा।

मतानत व संजीदगी से सुनिए, हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने यज़ीद को सुधारने के लिए कए उस्ताद रखा था। एक दफ़ा वह उन से भड़क गया। इस वाक़िया को अब्बासी साहब उसकी ख़ुशबयानी और हाज़िर जवाबी के तहत लिखते हैं :

तरजमा : यज़ीद के अतालीक़ (उस्ताद) ने कहा ऐ लड़के! तू ने ख़ता किया। यज़ीद ने कहा असल घोड़ा ही ठोकर खाता है। अतालीक़ ने कहा हाँ, वल्लाह कोड़ा खाता है तो सीधा हो जाता है। यज़ीद ने कहा हाँ वल्लाह फिर तो अपने साईस की नाक फोड़ डालता है।

हालांकि इस इबारत का मतलब यह है कि उस्ताद ने यज़ीद की किसी शरारत पर कहा कि तुमने ग़लती की तो यज़ीद जवाब में कहता है कि ग़लती की तो क्या हुआ? हम असील हैं और असील ही घोड़ा ठोकर खाता है उस्ताद ने कहा वह मार कर सीधा किया जाता है, यज़ीद बोला फिर मारने वाले की नाक भी तोड़ डालता है। यह यज़ीद की बोली उस्ताद के मुक़ाबला में "अगर सज़ा दी तो आपकी ख़ैर नहीं" यह है इश्क़ यज़ीद कि तमाम बुराइयाँ ख़ूबी दिखाई देतीं हैं।

यज़ीद की बेहतरीन ख़िताबत के ज़िम्न में एक वाक़िया ज़्याद का जबकि वह इराक़ से ज़र व जवाहिर लेकर आया और अपने इंतिज़ाम की ख़ूबी ब्यान करने लगा तो अपने हक़ीक़ी चचा के मुक़ाबला में यज़ीद ने जो भरी महफ़िल में तक़रीर की, उसे अब्बासी साहब अपनी किताब में लिखते हैं :

"अमीर यज़ीद ने अमीर ज़्याद को मुख़ातिब करके कहा ऐ ज़्याद! तुमने यह सब किया तो तअल्ली क्यों है? क्योंकि हम ही तो हैं जिन्होंने क़बीला सक़ीफ़ की वला (तअल्लुक़, हलीफ़ी व रिश्ता) से हटा कर क़ुरैश में मिला दिया और क़लम घिस घिस व ख़िदमते कातिब से मिंबर पर से हाकिम गवर्नर की हैसियत में पहुँचा दिया और ज़्याद फ़रज़न्दे ग़ुलाम से हर्ब इब्ने उमैया के अख़लाफ़ में शामिल किया तो फिर तुम क्या दून के लेते हो।"

(ख़िलाफ़ते मआविया व यज़ीद)

यह है सआदतमन्द फरज़न्द जो चचा के नसब व अमल पर कलाम करके भरी महफ़िल में ज़लील करे और यह है अब्बासी साहब की अक़ीदत यज़ीद के साथ कि बदतमीज़ी को बेहतरीन वाइज़ कहें। फिर इसी पर ख़त्म नहीं किया हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से भी ज़बरदस्ती इतना कहलवा दिया :

तरजमा : हज़रत मुआविया ने यज़ीद से कहा, अब बैठ जाओ तुम पर हमारे मां–बाप कुरबान।

वाह क्या ख़ूब कहा! एक वाक़िया और नक़्ल कर दूँ। हज़रत अमीर मुआविया के इंतिक़ाल के बाद यज़ीद जब जामेअ़ दमिश्क़ में ख़ुत्बा पढ़ने आया तो हज़रत ज़ह्हाक सहाबी ने इस ख़्याल से कि यज़ीद ग़मज़दा है कहीं रिक़्क़त तारी हो जाए और खुतबा न पढ़ सके तो मैं पूरा कर दूँगा। क़रीब मिंबर पर आकर बैठ गए मगर यज़ीद को किसका ग़म! वह तो बहुत दिनों से इसका आरज़ू मन्द था (जैसा कि इस ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद में दर्ज है) सहाबी को क़रीब मिंबर देख कर बोला :

तरजमा : ऐ ज़ह्हाक! क्या तुम बनी अब्द शम्स को तक़रीर सिखाने बैठे हो? (ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद)

यह तीन मिसालें मैंने इसी किताब ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद की ली हैं जो ख़ास यज़ीद की फ़ज़ीलत में लिखी गई हैं। इस से हर मुसन्निफ़ अंदाज़ा लगा सकता है कि जहाँ उसके वाक़ई हालात हैं वहाँ उसके उयूब का कितना बड़ा अंबार होगा।

अपने यज़ीद की तक़रीर को सराहते हुए लिखते हैं :

"लोग इस तक़रीर को सुन कर उनके पास से जुदा हुए तो इससे इतना मुतअस्सिर थे कि यज़ीद पर किसी एक को भी फ़ज़ीलत नहीं देते थे यानी अमीरुल-मुमिनीन की हैसियत से।"

(ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद स० 295)

"इमाम अहमद बिन हंबल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के नज़्दीक अमीरुल-मुमिनीन की अज़ीम मंज़िलत थी।" (ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद)

हालांकि इमाम मौसूफ़ यज़ीद से दीन की बात तक करने की इजाज़त नहीं देते जैसा कि पहले मालूम हुआ।

अब्बासी साहब मुक़द्दमा में लिखते हैं जो "तजल्ली" देवबन्द में शाए हुआ :

"इस्लामी तारीख़ में अगर कोई शख़्स है जिसका इंतिख़ाब बिल्कुल पहली बार उम्मत के आम इस्तिसवाब से हुआ तो वह अमीरुल-मुमिनीन यज़ीद हैं।" (तजल्ली देवबन्द)

आगे लिखते हैं "फिर यह कैसी अजीब बात है कि हज़रत फ़ारूके आज़म का तक़र्रुर तो जम्हूरी समझा जाए तो अली मिनहाजुन्नुबुव्वह, लेकिन अमीरुल-मुमिनीन यज़ीद का तक़र्रुर सहाबा किराम के इस ज़बरदस्त इज्मा के बावजूद व ग़ैर जम्हूरी और बिदअते सैयआ क़रार दिया जाए।"

(तजल्ली)

अब रगे यज़ीदीयत पूरी भड़क उठी और तअस्सुब व हिमायत यहाँ तक खींच लाया कि यज़ीद की हुकूमत को अगर नारवा कहा जाए तो पहले अमीरुल-मुमिनीन फ़ारूके आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त को डबल नाजाइज़ कहिए क्यों न हो यह भी करामत है फ़ारूके आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की कि वह ग़ैज़ुल-मुनाफ़िक़ीन हैं।

जब सलाहियत ख़लाफ़ते यज़ीद के लिए मनवाना चाहा तो यूं बुनियाद रखी :

"उम्माले नबवी में भारी अक्सरीयते उमवी बुर्ज़ुगों ही की थी और यह अक्सरीयत यक़ीनन उनकी फ़ितरी सलाहियत और हुस्ने कारकर्दगी के ऐतबार से थी।"

और जब इमाम आली की तरफ़ मुतवज्जेह हुए तो जड़ ही खोखली करने चले। लिखते हैं :

"किसी हाशमी बुज़ुर्ग का नाम उम्माले नबवी की फ़ेहरिस्त में शामिल नहीं था हालांकि उनमें से बाज़ हज़रात ने नीज़ हज़रत अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी ने तक़रीर की ख़्वाहिश का इज़्हार किया था मगर इंतिज़ामी उमूर की अदमे सलाहियत की बिना पर मंज़ूर नहीं फरमाया गया।"

(ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद)

और इसके बाद ही एक अरबी इबारत नक़्ल कर दी गोया हाशमियों की अदमे सलाहियत की दलील है। अगर तारीख़ का सही मुताला होता तो

मालूम हो जाता कि कहाँ कहाँ हाशमी हज़रात अमीर बनाए गए। मगर वहाँ तो मक़सद सिर्फ़ यह है कि यज़ीद की मंक़बत गढ़ी जाए और हाशमियों की मंक़बत जहाँ दिखाई पड़े फ़ौरन दफ़न कर दी जाए। इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के क़ुदरती फ़ज़ाइल व कमालात के साथ क़ुदरती नसबी फ़ज़ाइल आएं तो उसके ब्यान का अंदाज़ा देखिए :

"हज़रत हुसैन के ख़िलाफ़ तलवार क्यों नहीं उठाई जा सकती जिसकी दावत महज़ यह थी कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम का नवासा और हज़रत अली के फ़रज़न्द होने की हैसियत से उन्हें ख़लीफ़ा बनाया जाए।" (ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद)

क्या यह भी तारीख़ी तहक़ीक़ है कि हज़रत इमाम हुसैन में सिवाए नवासा और फरज़न्द होने के कोई दूसरी ख़ूबी थी ही नहीं और जब यज़ीद की नाअह्ली सामने आई तो जोशे हिमायत में यह बोली बोले। लिखते हैं :

"अब दरयाफ़्त तलब है कि अल्हम्दुलिल्लाह से लेकर वन्नास तक और मुअत्ता से लेकर इब्ने माजा तक कौन सी आयत और कौन सी हदीस है जिसमें बाप के बाद बेटे की ख़िलाफ़त की हुर्मत या करामत का अदना शाइबा भी साबित किया जा सके।"

(तजल्ली मुक़द्दमा ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद)

यहाँ आपको करामत व हुर्मत का ख़्याल आया और मदीना तैयबा पर हमला करने वाले, इसमतदरी करने वाले, मक्का मुअज़्ज़मा पर धावा बोलने वाले, ग़िलाफ़े कअ़बा को जलाने वाले और हरम में मुसलमानों को शहीद करने वालों के लिए कोई आयत व हदीस हुर्मत व करामत की नहीं मिली, अगर मिली तो यह कि तमाम तारीख़ें ग़लत हैं। तो फिर जनाब ने तेरह सौ बरस के बाद यह तहक़ीक़ कहाँ से की? जवाब सिर्फ़ यह होगा कि अपनी अक़्ल व अक़ीदत से, तो फिर न इसे तारीख़ कहिए और न तहक़ीक़, एक असबीयत है जो काम कर रही है, बुग्ज़ है जिसका इज़हार हो रहा है।

(मौलाना रिफ़ाक़त हुसैन)

ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद तहक़ीक़ी तनाज़ुर में

(1) क्या फरमाते हैं उलमा–ए–दीन इस मस्अला में कि हज़रत अली की ख़िलाफ़त सही है या नहीं? उन्होंने हज़रत उसमान का क़ेसास क्यों नहीं लिया?

(2) यज़ीद फासिक़ व फाजिर था या ज़ाहिद व मुतदैयन? उसकी ख़िलाफ़त दुरुस्त थी या नहीं?

(3) हज़रत इमाम आली मक़ाम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु हक़ पर थे या ख़ता पर?

(4) वह शहीद फ़ी सबीलिल्लाह हैं या नहीं। **बैय्यनू व तुवज्जेरू।**

हज़रत सैयदना उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु हज़रत सैयदना हुज़ैफ़ा अलीमान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से दरयाफ़्त फ़रमाया कि "फ़ित्नों के मुतअल्लिक़ कुछ बताओ" उन्होंने मामूली क़िस्म के चन्द फ़ित्नों का ज़िक्र फ़रमाया।

हज़रत सैयदना फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने दोबारा पूछा "यह नहीं, उन फ़ित्नों के मुतअल्लिक़ बताओ जो समुन्द्र की मौजों की तरह उमंडेंगे।"

हज़रत सैयदना हुज़ैफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने कहा **"दूनका बाबु मुग़लक़"** आप में और उन में दरवाज़ा बन्द है।"

हज़रत सैयदना उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने दरयाफ़्त किया **युफ़्तहु अम युंकसरु** दरवाज़ा खोला जाएगा या तोड़ दिया जाएगा? हज़रत सैयदना हुज़ैफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने जवाब दिया, तोड़ा जाएगा। उस पर सैयदना उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया : **ला युग़लकु इला यौमिल-क़्यामते।** अब क़्यामत तक फ़ित्नों का सद्दे बाब न होगा।

चुनांचे तारीख़े इस्लाम उठा कर देखो। हज़रत सैयदना उमर फारूक़े आज़म की शहादत के बाद इब्ने सबा की साज़िशों से जब फ़ित्ने उठने शुरू

हुए तो तक़रीबन चौदह सदियाँ गुज़रने पर आईं मगर फ़ित्ने बन्द न हो सके। वह इब्ने सबा ही की जुर्रियत थी जिसने हज़रत जुन्नूरैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को शहीद किया। हज़रत अली, हज़रत तलहा व ज़ुबैर और अमीर मुआविया रिज़वानुल्लाहे तआला अलैहिम अज्मईन को आपस में लड़ा दिया। वह इब्ने सबा ही की जुर्रियत थी जो नहरवान में हज़रत अली से ख़ुरूज करके शेरे ख़ुदा की जुलफ़िक़ार का शिकार हुई। वह इब्ने सबा ही की जुर्रियत थी जिन्होंने रिहाएन रसूल ख़ानवादए बतूल को करबला के मैदान में तहे तेग़ किया और यह भी इब्ने सबा ही की करिश्मा साज़ियों का असर है कि आज भी सैयदना अली मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा रज़ि अल्लाहु अन्हु और उनके नूर दीदा लख़्ते जिगर फातिमा रैहाना-ए-रसूल सैयदुश्शुहदा शहीदे करबला के ख़िलाफ़ अपना ज़ोर क़लम दिखाने की जुरअत की जा रही है। "ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" कोई नई बात नहीं, इसी नहरवान ख़ार्जियत के मोहलिक जरासीम से फिर दुनिया-ए-इस्लाम के अमन व अमान को बरबाद करने की एक शर्मनाक जद्दोजहद है। अमरोहवी साहब ने इस किताब में हज़रत सैयदना अली और हज़रत सैयदना हुसैन शहीदे करबला पर नुक्ता चीनी की है। उसके जवाब में राफज़ी को जुरअत होगी, वह दीगर सहाबा किराम ख़ुसूसन हज़रत अमीर मुआविया, अमर बिन आस और हज़रात शैख़ैन पर तबर्रा करेगा।

अमरोहवी साहब ने पहले यह साबित करने की कोशिश की है कि हज़रत सैयदना अली करमुल्लाह तआला वज्हहुल-करीम की ख़िलाफ़त मुकम्मल नहीं उसकी दलील में तीन चीज़ें पेश की हैं :

"एक यह कि यह ख़िलाफ़त इब्ने सबाइयों की ताईद व इसरार और उनके असर से क़ायम कर दी गई थी। इस ख़िलाफ़त ने बावजूद कुदरत के हज़रत उसमान का क़िसास नहीं लिया। अकाबिरे सहाबा ने बैअत से गुरेज़ किया।"

सफ़: नम्बर 2 पर लिखते हैं :

"यह बैअत चूंकि बाग़ियों और क़ातिलों की ताईद बल्कि इसरार से क़ायम हुई थी और यह ख़िलाफ़त ही उसमान ज़ुन्नूरैन जैसे महबूब और ख़लीफ़ा राशिद को ज़ुल्मन और नाहक़ क़त्ल करके सबाई गरोह के असर से क़ायम की गई थी। नीज़ क़ातिलाने उसमान से जो शरअन वाजिब था,

नहीं लिया गया और न क़ेसास लिए जाने का कोई इम्कान बाक़ी था। अकाबिरे सहाबा ने बैअत करने से इंकार किया इसलिए बैअते ख़िलाफ़त मुकम्मल न हो सकी।

पहली बात : आपका यह कहना अगर बजा है कि यह ख़िलाफ़त सबाइयों के असर से क़ायम की गई तो उसका यह मतलब हुआ कि हज़रत सैयदना उसमान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु की शहादत में उन तमाम लोगों का हाथ था जो हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त क़ायम करने वाले हैं और एक पहलू यह भी निकलता है कि अपनी ख़िलाफ़त ख़ुद हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने क़ायम की लिहाज़ा वह भी इस ख़ूने नाहक़ में शरीक हैं। अब आइए मैं आपको बताऊं कि हज़रत अमीरुल-मुमिनीन अली मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त किसने क़ायम की और इसी से यह भी ज़ाहिर हो जाएगा कि अकाबिरे सहाबा ने हज़रत अमीरुल-मुमिनीन अली मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की बैअत की या नहीं। अल्लामा इब्ने हजर मक्की "सवाइक़े मुहरेक़ा" में फ़रमाते हैं :

तरजमा : गुज़िश्ता बातों से मालूम हुआ कि अह्ले हल्ल व अक़्द के इज्मा से ख़ुलफ़ा-ए-सलासा के बाद ख़िलाफ़त के मुस्तहिक़ इमाम मुर्तज़ा वली मुर्तज़ा हज़रत अली इब्ने अबी तालिब थे, यह अह्ले हल्लो अक़्द हज़रत तलहा व ज़ुबैर व अबू मूसा व इब्ने अल-हशीम बिन तेहान व मुहम्मद बिन सलमा व अम्मार बिन यासिर हैं। शरह मक़ासिद में बाज़ मुतकल्लेमीन से है कि ख़िलाफ़ते मुर्तज़ा पर इज्मा है इस तरह कि हज़रत उमर की मुशावरती कमेटी में बाइत्तिफ़ाक़ तय हुआ था कि ख़िलाफ़त हज़रत अली या हज़रत उसमान के लिए है। इस से साबित हुआ कि जब हज़रत उसमान न हों तो ख़िलाफ़त हज़रत अली का हक़ है जब कि उसमान न रहे तो हज़रत अली उसके मुस्तहिक़ इज्माअन रहे।

अल्लामा सुयूती रहमतुल्लाह अलैह तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा में इब्ने सअद से नाक़िल हैं :

तरजमा : हज़रत उसमान की शहादत के दूसरे दिन मदीना तैयबा में हज़रत अली की ख़िलाफ़त पर बैअत हुई, मदीना में जितने भी सहाबा थे सबने बैअत की।

लेकिन अमरोहवी साहब कहेंगे कि तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा का क्या ऐतबार! यह तो तारीख़ की अदना किताब है। शायद उनके नज़्दीक किताब की अज़्मत का दारोमदार किताब के हजम पर है, लेकिन यह मंतिक़ उन्हीं को मुबारक हो। किताब का अदना आला होना हजम पर नहीं बल्कि मुसन्निफ़ की जलालते इल्मी पर है। इमाम अल्लामा सुयूती रहमतुल्लाह अलैह का उलमा में जो मरतबा है वह अह्ले इल्म से पोशीदा नहीं। उनकी किताब तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा अगरचे बहुत मुख़्तसर है मगर निहायत ही मुस्तनद है। अगर किताब की हैसियत का दारोमदार हजम पर हो तो वह दिन दूर नहीं कि आप कहें कि कुरआने करीम का हजम बहुत छोटा है लिहाज़ा यह अदना है और हमारी मब्सूत किताब का हजम बड़ा है लिहाज़ा यह आला है। फिर कोई आरिया आप से सीख कर यह कह दे कि चूंकि वेदों का हजम कुरआन से बढ़ा हुआ है। लिहाज़ा वह कुरआन से आला हैं। **नऊज़ुबिल्लाहि मिन शुरूरे अंफुसिना।** आइए देखिए यह इमाम अबू जाफर तुहरी अपनी किताब "अरियाज़ुन्नफ़ेरा" में फ़रमाते हैं :

तरजमा : हज़रत अली वहाँ से अपने घर आए, सब लोग हज़रत अली के पास आए कि उन से बैअत ले लें। हज़रत अली ने फरमाया, यह तुम्हारा हक़ नहीं अह्ले बद्र जिसे पसन्द करें वह ख़लीफ़ा है फ़िर तमाम अह्ले बद्र ने कहा कि ऐ अली! आपसे ज़्यादा ख़िलाफ़त का हक़ दार कोई नहीं। अब हज़रत अली मस्जिद में आए, मिंबर पर चढ़े। सबसे पहले हज़रत तलहा, ज़ुबैर, सअद और दीगर सहाबा ने बैअत की। (जिल्द 2, स० 126)

इन तमाम जलीलु-क़द्र मुहद्देसीन व उलमा-ए-रासेख़ीन की तसरीहात से वाज़ेह हो गया कि हज़रत अली को मसनदे ख़िलाफ़त पर बिठाने वाले असहाबे बद्र व दीगर सहाबा किराम रिज़वानुल्लाहे तआला अलैहिम अज्मईन हैं जिन में हज़रत तलहा व ज़ुबैर भी शामिल हैं। इसके बरख़िलाफ़ अमरोहवी साहब की तहक़ीक़ यह है कि यह ख़िलाफ़त सबाईयों क़ातिलाने उसमान के असर से क़ायम हुई। यह तो कहना ख़िलाफ़े तहज़ीब होगा कि अमरोहवी साहब ने ग़लत लिखा। लिहाज़ा मुहज़्ज़ब रहने के लिए यह मानना ही पड़ेगा कि अमरोहवी साहब के नज़्दीक अह्ले बद्र और वह असहाबे रसूलुल्लाह जिन्होंने हज़रत अली को ख़लीफ़ा बनाया, सबाई, बाग़ी

और क़ातिले उसमान हैं। अमरोहवी साहब के नज़दीक यह कोई बड़ी बात भी नहीं होगी, बनी उमैया की मुहब्बत में सब कुछ गवारा है।

हर सितम हर जफ़ा गवारा है
सिर्फ़ कह दे कि तू हमारा है

हज़रत उसमान के क़ेसास के मामला में कभी इंकार न किया और न ही पहलू तही की है, क़ानूने इस्लाम के मुताबिक़ क़ेसास उस वक़्त लिया जाता जबकि हज़रत उसमान के वारेसीन बारगाहे ख़िलाफ़त में क़ातिलों को मुतऐयन करके उन पर दावा करते कि फ़लां फ़लां ने हज़रत ख़लीफ़ा मज़्लूम को शहीद किया है और उस पर शरई गवाह लाते। जब ऐनी गवाहों के ब्यान या क़ातेलीन के इसरार से साबित हो जाता कि यह लोग क़ातिल हैं तब कहीं जा कर जुर्म साबित होता और क़ेसास लेना फर्ज़ होता। ऐसा कभी नहीं हुआ। हज़रत उसमान के किसी वली ने कभी भी इस क़िस्म का न तो दावा दायर किया और न कोई सुबूत पेश किया, हज़रत अली क़ेसास लेते तो किस से लेते। हज़रत तलहा व ज़ुबैर हत्ता कि ख़ुद हज़रत अमीर मुआविया ने लश्कर कुशी तो की मगर इस क़िस्म का कोई दावा बारगाहे ख़िलाफ़त में दायर नहीं किया, तो अमरोहवी साहब या उनके हवारेईन सुबूत लाएं। अमरोहवी साहब के सामने अंग्रेज़ी क़ानून है जिसके मातहत किसी के क़त्ल के बाद पुलिस फ़र्ज़ी लोगों को पकड़ती है, शुबहा में गिरफ़्तार करती है, मारती पीटती है फिर किसी पर मुक़द्दमा चलाती है तीर तुक्का पर बैठ गया और फ़र्ज़ी गवाह जज की नज़र में जरह व क़दह में सालिम रह गए तो क़ातिल को फांसी हो गई। वरना बसा औक़ात ऐसा होता है कि क़ातिल गुल छड़े उड़ाता है और बेगुनाह तख़्तादार पर होता है।

अमरोहवी साहब चाहते हैं कि हज़रत अली भी ऐसा ही करते, हज़रत अली ने ऐसा नहीं किया। लिहाज़ा वह अमरोहवी साहब की नज़र में मुज्रिम हुए, वह ख़िलाफ़त के अह्ल नहीं रहे। लेकिन अमरोहवी साहब को मालूम होना चाहिए कि इस्लाम का क़ानून ऐसा ज़ालिमाना नहीं और न हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु, ख़लीफ़ा राशिद से इसकी उम्मीद हो सकती है कि वह इस्लामी क़ानून के बरख़िलाफ़ किसी दूसरे क़ानून पर अमल करते। क़ेसास हद है, सुबूत के बाद हद जारी न करना अशद ज़ुल्म, अफजर फ़ुजूर और अफ़्सक़ फ़ुसूक़ है। हुदूदे इलाही के तर्क की निस्बत

मौलाए मुमिनीन सहर सैयदुल-मुरसलीन की तरफ करना इब्ने तैमिया जैसे मक्हूर और उसके अन्धे मुक़ल्लेदीन का काम हो सकता है, किसी सुन्नी सहीहुल-अक़ीदा का हरगिज़ नहीं हो सकता। हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त हक़ थी। आप हज़रत तलहा, ज़ुबैर और अमीर मुआविया के मुक़ाबला में मुसैयब थे। इसकी तसरीहात अहांदीसे करीमा में बकसरत मौजूद हैं।

हदीस अव्वल : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम ने एक बार हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से इरशाद फरमाया था :

तरजमा : तुझे ख़लीफ़ा बरहक़ पर ख़ुरूज करने वाली जमाअत क़त्ल करेगी।

हज़रत अम्मार जंगे सफ़्फ़ैन में शहीद हुए। यह हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु के साथ थे। मालूम हुआ कि हज़रत अली की ख़िलाफ़त हक़ थी। हज़रत इमाम नौवी फरमाते हैं :

तरजमा : उलमा ने फरमाया, यह हदीस खुली हुई इस बात की दलील है कि अली हक़ व सवाब पर थे और दूसरे गरोह से ख़ता इज्तिहादी हुई।

हदीस दोम : इमाम बुख़ारी ने हज़रत अबू दरदा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की है वह फ़रमाते हैं :

तरजमा : और तुम में वह हैं जिन्हें अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ने शैतान से महफ़ूज़ रखा अपने नबी के फरमान से यानी अम्मार।

इसी को थोड़ी तफ़्सीर के साथ इमाम तिर्मिज़ी ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत फ़रमाया। जब हस्बे फ़रमान हदीस हज़रत अम्मार शैतान से महफ़ूज़ हैं तो उन से ख़ता सरज़द नहीं हो सकती। यह तमाम जंगों में हज़रत अली के साथ रहे लिहाज़ा साबित हुआ कि हज़रत अली हक़ पर थे। हज़रत अम्मार रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ज़ाते गिरामी हक़ व बातिल का वह मेअ्यार थी जिसकी वजह से बहुत से वह सहाबा किराम जो उस निज़ा में मुतरद्दिद थे, हज़रत अली की हक़्क़ानियत के क़ाइल हो गए चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं।

तरजमा : इस से ज़्यादा मुझे कोई बात बुरी मालूम नहीं हुई कि मैंने हज़रत अली के साथ उनके मुख़ालिफ़ से जंग नहीं की।

(अर्रियाज़ुन्नज़्र जिल्द 2, स० 132)

हज़रत ख़ुज़ैमा बिन साबित रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत अम्मार की शहादत से पहले पहले मारका कारज़ार में थे, तल्वार बेनियाम नहीं की थी मगर हज़रत अम्मार की शहादत के बाद हज़रत अली की हिमायत में इंतिहाई जोश के साथ लड़ते लड़ते शहीद हो गए। हज़रत अम्मार की शहादत के बाद ख़ुद हज़रत अमर बिन आस हज़रत मुआविया का साथ छोड़ रहे थे। अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाह अलैह अपनी किताब "तत्हीरुल-जनान वल्लिसान" में फरमाते हैं :

तरजमा : हज़रत अली से अलग रहने वाले सहाबा किराम में से बाज़ों पर हदीसें ज़ाहिर हुईं तो वह अलाहदगी पर नादिम रहे जैसा कि गुज़र गया, उन्हीं में हज़रत सअद बिन वक़्क़ास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु भी हैं।

हदीस सोम : जंगे जमल में जब दोनों फरीक़ सफ़ आरा हो गए तो हज़रत अली ने हज़रत ज़ुबैर को बुलाया। उन्हें याद दिलाया, एक दफ़ा अह्दे रिसालत में हम दोनों फ़लां जगह साथ साथ थे। आंहुज़ूर ने हमें देख कर फ़रमाया, ऐ ज़ुबैर! अली से मुहब्बत करते हो? अर्ज़ किया, क्यों नहीं! यह मेरे मामूंज़ाद भाई व इस्लामी बरादर हैं, फिर मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाया ऐ अली! बोलो क्या तुम भी उन्हें महबूब रखते हो? मैंने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! अपने फूफी ज़ाद और दीनी भाई को क्यों न महबूब रखूंगा। हुज़ूरे अक़्दस ने इरशाद फरमाया, ऐ ज़ुबैर! एक दिन तुम इनके मद्दे मुक़ाबिल होंगे। हज़रत ज़ुबैर ने उसकी तस्दीक़ की, फरमाया मैं भूल गया था और सफ़ें फाड़ कर मैदाने कारज़ार से निकल गए।

(अर्रियाज़ुन्नज़्र स० 273 व सवाइके मुहरेक़ह अज़ हाकिम व बैहक़ी स० 71)

हदीस चहारुम : हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम ने अज़्वाजे मुतह्हरात से फरमाया :

तरजमा : तुम में कौन सुर्ख़ ऊंट वाली है जिस पर हवाब के कुत्ते भूकेंगे, उसके बाद उसके गिर्दा गिर्द लाशों के ढेर होंगे।

चुनांचे हज़रत उम्मुल-मुमिनीन मक्का से चलीं जब हवाब आप पहुँचीं तो कुत्तों ने भूंकना शुरू किया हदीस याद आई, दरयाफ़्त किया कौन सी जगह

है? लोगों ने बताया यह सुन कर अपना इरादा फस्ख़ फरमाया लेकिन फित्ना परदाज़ों ने जब देखा कि सारा मुआमला बिगड़ रहा है तो फ़ौरन बोले कि यह हवाब नहीं, किसी ने आपको ग़लत बता दिया है।

हदीस पंजुम : हुज़ूर ने इरशाद फरमाया :

तरजमा : ऐ अल्लाह! हक़ अली के साथ रख जहाँ भी जाएं।

हुज़ूर की यह दुआ यक़ीनन मुस्तजाब हुई और हर मैदान में हक़ हज़रत अली के साथ रहा। इन अहादीस से ख़ूब वाज़ेह हो गया कि हज़रत मौलाए मुमिनीन सहर ख़ातमुन्नबीयीन हज़रत अली मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़ते हक़ थी और उन पर क़स्दन क़ेसास न लेने का या क़त्ले उसमान में किसी तरह शरीक होने का इल्ज़ाम ग़लत है। इस मुआमला में भी वह हक़ पर थे। उनके मुहारेबीन से ख़ताए इज्तिहादी वाक़ेअ हुई।

इमाम अहमद बिन हंबल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से दरयाफ़्त किया गया, ख़ुलफ़ा कौन हैं? इरशाद फ़रमाया :

तरजमा : ख़ुलफ़ा अबू बकर व उमर व उसमान अली हैं। साइल ने अमीर मुआविया के बारे में दरयाफ़्त किया तो फरमाया, हज़रत अली के ज़माने में हज़रत अली से बढ़ कर कोई दूसरा ख़िलाफ़त का हक़्दार नहीं था।

अब आइए इस बहस को हज़रत इमाम नौवी मुहर्रिर मज़्हबे शाफ़ई शारेह मुस्लिम रहमतुल्लाह अलैह वासेअतन के ब्यान पर ख़त्म कर दूँ। सहीह मुस्लिम शरीफ़ जिल्द दोम स० 272 पर फरमाते हैं :

तरजमा : हज़रत उसमान की ख़िलाफ़त इज्माअन सही है। वह ज़ुल्मन शहीद किए गए, उनके क़ातिल फ़ासिक़ हैं। उनके क़त्ल में कोई सहाबी शरीक नहीं हुआ, उन्हें कमीने चरवाहों, इधर उधर के रज़ील और नीचे दरजे के लोगों ने शहीद किया। हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त भी बिल-इज्मा सही है। अपने अहद में वही ख़लीफ़ा थे, किसी दूसरे की ख़िलाफ़त नहीं थी।

अमरोहवी साहब ने अपनी किताब में इस पर बहुत ज़ोर बांधा है कि यज़ीद पलीद मुत्तब-ए-सुन्नत, मुतदैयन, आबिद व किबार ताबेईन में था, बड़ा मुदब्बिर, बेदार मग़ज़ और मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह था, उसकी तरफ़

फ़िस्क़ व फुजूर, कुफ़्र व इल्हाद के बारे में जितनी रिवायतें हैं सब वज़ई हैं। अमरोहवी साहब यज़ीद की मुहब्बत में इस दरजा खुद रफ़्ता हैं कि उन्हें अहादीसे सहीहा और किबारे सहाबा और ताबईन के इरशादात तक नज़र नहीं आते। आपने तहरीर किया है कि "यज़ीद के मुआसेरीन में सिर्फ़ अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर उसे बुरा भला कहते थे मगर वह खुद आंख से देखते नहीं थे, लिहाज़ा उनकी बात क़ाबिले ऐतबार नहीं।" लेकिन उसके बरख़िलाफ़ तेरह सौ बरस के बाद यज़ीद के फ़ज़्ल व कमाल को इस तरह ब्यान करते हैं गोया आप यज़ीद के हम नवाला व हम प्याला थे। आपने अपनी सारी तहक़ीक़ात की बुनियाद इस पर क़ायम की है कि सिवाए इब्ने तैमिया और इब्ने ख़ल्दून के सारे मुअर्रेख़ीन रिवायत परस्त थे। तहक़ीक़ व जुस्तजू से उन्हें कोई ग़रज़ नहीं थी, अन्धाधुन्ध जो कुछ सुना नक़्ल कर दिया। सबसे पहला मुहक़्क़िक़ इब्ने ख़ल्दून है और दूसरे आप जैसे फनकार, इसी बिना पर आपने जगह जगह इब्ने ख़ल्दून को सराहा है और इमाम इब्ने जरीर तबरी जैसे जलीलुल-क़द्र मुसल्लेमुस्सुबूत इमाम को शीआ कह कर नाक़ाबिले ऐतबार कर दिया। तबरी इतने पाया के इमाम हैं कि इब्ने खुज़ैमा मुहद्दिस कहते हैं कि दुनिया में किसी को उन से बढ़ कर आलिम नहीं जानता। उन पर बाज़ों ने यह इल्ज़ाम रखा है कि यह शीओं के लिए हदीसें वज़ा करते थे। उसका जवाब अल्लामा ज़हबी जैसे माहिरे फ़न्ने रिजाल ने इन ज़ोरदार अल्फाज़ में दिया है :

तरजमा : यह झूठी बदगुमानी है इब्ने जरीर इस्लाम के मोअतमद इमामों से एक इमामे कबीर हैं।

इंतिहा यह कि मौजूदा सदी के मशहूर मुअर्रिख़ जनाब शिबली आज़मगढ़ी को सीरतुन्नबी के मुक़द्दमा में तबरी के बारे में लिखना पड़ा। "तारीख़ी सिलसिला में सबसे जामे और मुफ़स्सल किताब इमाम तबरी की तारीख़े क़बीर है। तबरी इस दरजा के शख़्स हैं कि तमाम मुहद्देसीन उनके फ़ज़्ल व कमाल, वसूक़ और उस्अते इल्म के मोतरिफ़ हैं।" बुरा हो जोशे तअस्सुब का कि जुमला अइम्मा मुहद्देसीन की मोतमद अलैहि ज़ात के बारे में अमरोहवी साहब की राय यह है कि वह बिल्कुल ही ग़ैर मोतबर और नाक़ाबिले क़ुबूल हैं। यक़ीनन इमाम तबरी का यह कारनामा कि उन्होंने अमरोहवी साहब के लाइक़े अमीर के करतूतों को बेनक़ाब कर दिया है,

यज़ीदियों के नज़्दीक जुर्म नाबख़शीदा है। रह गया इब्ने ख़ल्दून तो चूंकि उनके यहाँ नेचरयाना असबाब परस्ती पर बहुत ज़ोर है, लिहाज़ा इस ज़माने के रूहानियत से महरूम तारीख़ दां उसे बहुत उछालते हैं मगर हक़ीक़त क्या है, वह इससे ज़ाहिर है कि वह ख़ुद ख़ार्जियों का भाई मोतज़ली था, चुनांचे मौलवी अब्दुलहयी लखनवी अपने फतावा जिल्द अव्वल सफ़: 72 में लिखते हैं :

"अल्लामा अब्दुर्रहमान हज़रमी मोतज़ली मारूफ़ बेही इब्ने ख़ल्दून।"

सुब्हानल्लाह! क्या ख़ूब तहक़ीक़ है कि इब्ने जरीर तबरी जैसे इमाम की बातें महज़ इस बिना पर मरदूद कि वह यज़ीद के हम अस्र नहीं थे शीआ थे मगर उनके सदियों के बाद के एक मोतज़ली की बात शीरे मादर।

यह इस बात की रौशन दलील है कि अमरोहवी साहब ने जिसके ब्यान को अपनी इफ़्तादे तबअ़ के मुताबिक़ पाया, उसे मुहक़्क़िक़, मुदक़्क़िक़ और सहीहुल-अक़ीदा माना और जिसकी बात अपने रुज़्हान तबअ़ के ख़िलाफ़ पाई उसे बद मज़हब और सतही नज़र वाला कह दिया। यही वह तहक़ीक़ है, यही वह रिसर्च है जिसका ढिंढोरा पीटा जा रहा है। यज़ीद पलीद के बारे में जो अहादीस वारिद हैं पहले उन्हें सुनें फिर उसके करतूत देखें फिर उम्मत का फ़ैसला।

हदीसे अव्वल : इमाम बुख़ारी ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की :

तरजमा : मेरी उम्मत की हलाकत कुरैश के लौंडों के हाथों होगी। अमर बिन यह्या ने फरमाया कि उन पर ख़ुदा की लानत हो। मरवान लौंडा है। अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया, अगर तुम चाहो कि मैं बता दूँ कि वह फ़ुलां बनी फ़ुलां हैं तो मैं बता सकता हूँ। अमर बिन यह्या फरमाते हैं कि मैं शाम अपने दादा के साथ जाता था। मैंने उन्हें नौख़ेज़ छोकरे देखे, यह उन्हीं में होंगे। शार्गिदों ने कहा आप ख़ूब जानते हैं।

अमरोहवी साहब कान खोल कर सुनें। यह अबू मुहन्निफ़ की रिवायत नहीं, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम का फ़रमान है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि सबका नाम लेकर बता सकता हूँ और उन्होंने इशारा से बता भी दिया कि वह कौन हैं।

हदीस दोम देखें : आपके हज़रत मरवान बिन हकम को अमर बिन यह्या जैसे जलीलुल-क़द्र मुहद्दिस ताबई फरमाते हैं कि मरवान उन्हीं मल्ऊनीन में से है और आपके मम्दूहीन बनी उमैया को इस हदीस का मिस्दाक़ ठहराते हैं। बनी मरवान ने उम्मत में जितनी तबाही मचाई है वह सब तक़्लीद है आपके लाइक़ अमीर यज़ीद की, इसलिए यह कभी मुम्किन नहीं कि इस हदीस के मिस्दाक़ यह ज़ालेमीन तो हों और उनका पेश रौ न हो। अगर मेरा यह क़्यास आपको न भाता हो तो आइए शारेहीन के इरशादाते जलीला सुनिए। अल्लामा किरमानी फरमाते हैं :

अहादीस यानी जवान होंगे, उनका पहला यज़ीद अलैह मुस्तहिक़ है और यह उमूमन बूढ़ों को शहरों की इमारत से उतारता था, अपने कम उम्र रिशतेदारों को वाली बनाता था।

मुल्ला अली क़ारी मिर्क़ात में फरमाते हैं :

तरजमा : ग़िल्मा से मुराद वह नौजवान जो क़माले अक़्ल के मरतबा तक नहीं पहुँचे हैं और वह नौ उम्र जो वक़ार वालों की परवाह नहीं करते, ज़ाहिर है कि वह लोग मुराद हैं जिन्होंने हज़रत उसमान रज़ि अल्लाहु अन्हु को क़त्ल किया और हज़रत अली व हज़रत इमाम हुसैन से लड़े। मज़हर ने फरमाया कि उन से मुराद वह लोग हैं जो खुलफ़ाए राशिदीन के बाद थे जैसे यज़ीद और अब्दुल-मलिक बिन मरवान वग़ैरह।

देखिए सारे शारेहीन इसी पर मुत्तफ़िक़ हैं कि ग़िल्मा कुरैश में यज़ीद ज़रूर दाख़िल है।

हदीस सोम : हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर रहमतुल्लाह लिल-आलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेही व सल्लम ने फरमाया :

लोगो! सत्तर साल की इब्तिदा और छोकरों के अमीर होने से खुदा की पनाह मांगो। (मिशकात, जिल्द 2 सफ़ा 323)

इमारतुस्सिबयान की शरह में है, मुल्ला अली क़ारी फरमाते हैं :

तरजमा : इमारतुस्सिब्यान से जाहिल छोकरों की हुकूमत मुराद है जैसे यज़ीद बिन मुआविया और हकम बिन मरवान की औलाद और उनके मिस्ल। एक रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़्वाब में उन्हें अपने मिंबर पर खेल कूद करते मुलाहिज़ा फरमाया है।

मिंबर पर खेलने वाली हदीस को ख़ातमुल-हुफ़्फ़ाज़ अल्लामा सुयूती रहमतुल्लाह अलैह ने तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा में भी रिवायत फरमाई है।

हदीस चहारुम : सवाइक़े मुहरिक़ा में अल्लामा इब्ने हजर मक्की नाक़िल हैं :

तरजमा : यज़ीद के बारे में मज़्कूरा बाला बातें जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताई हैं इसका इल्म हुज़ूर के बताने से हज़रत अबू हुरैरह को था। वह दुआ फरमाया करते थे ऐ अल्लाह! 60 की इब्तिदा और छोकरों की बादशाहत से तेरी पनाह चाहता हूँ। अल्लाह ने उनकी दुआ कुबूल फरमा ली। वह 59 हिजरी में फौत हो गए। अमीर मुआविया का इंतिक़ाल और यज़ीद की हुकूमत 60 हिजरी में हुई।

हलकतु उम्मती अला यदैया ग़िल्मुहू कुरैश। के ज़ेल में गुज़रा कि हज़रत अबू हुरैरह ने फरमाया था कि अगर कहो तो मैं फुलां बिन फुलां का नाम बता सकता हूँ। हज़रत अबू हुरैरह ने खुले बन्दों का तो नाम नहीं लिया मगर 60 हिजरी की इब्तिदा और छोकरों की इमारत से पनाह माँग कर निहायत जली ग़ैर मुब्हम इशारा फरमा दिया कि 60 हिजरी में जो इमारत क़ाइम होगी उस से पनाह माँगता हूँ और वह यज़ीद की हुकूमत थी। लिहाज़ा साबित हो गया कि उम्मत को बरबाद करने वाले छोकरों का सरकरदा यज़ीद है।

हदीस पंजुम : अल्लामा सुयूती तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा में और इमाम इब्ने हजर मक्की सवाइक़े मुहरिक़ा में शैख़ मुहम्मद सिबग़ान असआतुर्राग़ेबीन में मुसनद अबुल-याअ़ला से रावी :

तरजमा : मेरी उम्मत का मुआमला बराबर दुरुस्त रहेगा यहाँ तक कि पहला ही शख़्स उसमें रख़ना अन्दाज़ी करेगा, वह बनी उमैया का एक फर्द यज़ीद होगा।

अल्लामा इब्ने हजर तत्हीरुल-जनान में इस हदीस के बारे में फरमाते हैं :

तरजमा : इसके रावी सही रावी हैं, सिर्फ़ उसमें इंक़िता है।

हदीस शशुम : यही हज़रात अपनी अपनी किताबों में बहवाला मुसनद दोबाई हज़रत अबू दरदा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रावी, वह फरमाते हैं:

तरजमा : मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते सुना है कि पहला शख़्स जो मेरी सुन्नत बदलेगा बनी उमैया का एक शख़्स होगा जिसका नाम यज़ीद है।

इन अहादीस में अगरचे बाज़ ज़ईफ़ हैं मगर इनको दूसरी रिवायात और तल्क़ी उलमा से तक़्वियत है लिहाज़ा क़ाबिले हुज्जत हैं।

अमरोहवी साहब के लाइक़ ज़ाइद अमीर के बारे में ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की राय सुन चुके। आइए ख़ुद बनी उमैया के एक फर्द की राय सुनिए।

सवाइक़ मुहरिक़ा और तारीख़े ख़ुलफ़ा में नौफल बिन फुरात से मरवी है वह कहते हैं :

तरजमा : मैं उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ की बारगाह में था, एक शख़्स ने यज़ीद का ज़िक्र किया, उसे अमीरुल-मुमिनीन कह दिया। हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ ने उसे डाटा और कहा कि अमीरुल-मुमिनीन कहता है! हुक्म दिया, इसे बीस कोड़े मारे गए।

यज़ीद के मुआसेरीन में अब्दुल्लाह बिन हंज़ला गुसैले मलाइका रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा हैं वह फरमाते हैं :

हमने यज़ीद की बैअत उस वक़्त तक नहीं तोड़ी जब तक हमें यह ख़ौफ़ न हुआ कि संगसार न कर दिए जाएं। वह शराब पीता था और नमाज़े तर्क करता था।

शैख़ अब्दुल-हक़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह इब्ने जौज़ी से नाक़िल हैं :

62 हिजरी में यज़ीद पलीद ने उसमान बिन मुहम्मद बिन अबू सुफ़ियान को मदीना मुनव्वरह भेजा कि वहाँ के लोगों से बैअत ले। उसमान ने अह्ले मदीना की एक जमाअत यज़ीद पलीद के पास भेजी। यज़ीद के पास से जब यह जमाअत पलटी तो यज़ीद की बुराइयाँ खुले बन्दों करने लगी, उसकी बेदीनी, शराब ख़ोरी, मनाही व मलाही का इर्तिकाब, कुत्ते बाज़ी और दीगर बुराइयों को वाशिग़ाफ़ करने लगी। उन से यह हालात सुन कर बाक़ी अह्ले मदीना भी यज़ीद की बैअत व इताअत से बेज़ार हो गए। उस जमाअत में इब्ने मुंज़िर भी थे वह कहते थे, बख़ुदा यज़ीद मुझे एक लाख दिरहम देता था लेकिन मैं सच्चाई छोड़ कर उसके सामने सर न झुकाया,

वह शराब ख़ोर तारिकुस्सलात है। नीज़ यही शैख़ इब्ने जौज़ी से वह और अबुल-हसन मजाहेबी से नक़्ल फ़रमाते हैं :

यज़ीद पलीद के फ़िस्क़ व फ़साद के दलाइल ज़ाहिर होने के बाद अह्ले मदीना मिंबर पर आए और उसकी बैअत तोड़ दी। अब्दुल्लाह बिन उमर बिन हफ़स मख़्ज़ूमी ने अपना अमामा सर से उतार कर कहा, अगरचे यज़ीद मुझे इंआम व इकराम देता है मगर वह दुश्मन खुदा दामुस्सकर है, मैंने उसकी बैअत तोड़ दी। इतने ज़ोर व शोर के साथ बैअत तोड़ने का मुज़ाहरा हुआ कि मज्लिस दस्तारों और जूतों से भर गई।

अमरोहवी साहब इब्ने मुंज़िर और उनके हमराही अबू मुख़न्निफ़ से सुन के तो नहीं फ़रमा रहे हैं। यह तो यज़ीद के हम अस्र और उसके हालात के चश्मे दीद गवाह हैं। देखिए यह आप के लाइक़ ज़ाहिद अमीर के बारे में क्या बता रहे हैं। यज़ीद पलीद के ज़ुहद व वरअ़, इल्म व फ़ज़्ल का ख़ुत्बा पढ़ने वाले अमरोहवी साहब यज़ीद के कारनामे सुनें।

मुहक़्क़िक़ अलल-इतलाक़ शैख़ अब्दुल-हक़ मुहद्दिस देहलवी जज़्बुल-क़ुलूब में फ़रमाते हैं : "हज़रत इमाम आली मक़ाम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के बाद सब से शनीअ़ और क़बीह जो वाक़िया यज़ीद पलीद बिन मुआविया के ज़माने में रूनमा हुआ, वाक़िया हर्रा है। उसको हर्रा वाक़िया और हर्रा ज़हर भी कहते हैं। जिस ज़माने में मदीना तैयबा आबादी और रौनक़ में मरतबा कमाल तक पहुँचा हुआ था, बक़िया सहाबा और अंसार व मुहाजेरीन व उलमा-ए-किबार ताबईन से माला माल था। यज़ीद ने मुस्लिम बिन उक़्बा को शामियों के लश्करे अज़ीम के साथ अह्ले मदीना से लड़ने के लिए भेजा। यज़ीद ने हुक्म दिया कि अगर वह लोग मेरी इताअत कर लें तो फ़बेहा वरना जंग करो। फ़तह के बाद तीन दिन तक मदीना तुम्हारे लिए मबाह है।

मुस्लिम बिन उक़्बा आया। मक़ामे हर्रा पर पड़ाव डाला। अह्ले मदीना ताबेअ मुक़ाबला न देख कर ख़न्दक़ खोद कर महसूर हो गए। (अमरोहवी साहब के सहाबी मरवान की दसीसा कार्रवाईयों की बदौलत) यज़ीदी मदीना में घुस आए। पहले पहल हरमे नबवी की पनाह गुज़ीनों ने बड़ी शद्द व मद के साथ मुदाफ़िअत की मगर ताबा के अब्दुल्लाह बिन मुतीअ़ रईसे क़ुरैश मअ़ अपने साथ फ़रज़न्दों के शहीद हो गए। आख़िर में शामी दरिन्दे

उस हरम पाक में घुस पड़े। निहायत बेदर्दी के साथ क़त्ले आम किया। एक हज़ार सात सौ मुहाजेरीन व अंसार सहाबा किराम और किबार उलमा-ए-ताबईन को, सात सौ हुफ़्फ़ाज़ को और दो हज़ार उनके अलावा अवामुन्नास को ज़बह किया। न बच्चे बूढ़े, न मर्द औरतें, माले मतअ़ जो कुछ मिला सब लूटा। हज़ारों दोशीज़गाने हरमे मुस्तफ़ा की इसमत दरी की। मस्जिदे नब्वी में घोड़े दौड़ाए। रौज़-ए-जन्नत में घोड़े बांधे। घोड़े की लीद व पेशाब से उसे नापाक किया। तीन दिन अह्ले मदीना को यह जुरअत न हो सकी कि मस्जिदे नब्वी में जा कर नमाज़ व अज़ान अदा करे और न उन यज़ीदी दरिन्दों को उसकी तौफ़ीक़ हो सकी। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की रेशे मुबारक नोच ली गई। क़रीब है कि आसमान टूट पड़े, ज़मीन फट पड़े, पहाड़ टुक्ड़े टुक्ड़े हो जाएं। जान उसकी बची जिसने इन अल्फाज़ में यज़ीद की बैअत की :

तरजमा : मदीना तीन दिन लौटने के बाद यज़ीद की इस बैअत की दावत दी कि यह लोग यज़ीद के ग़ुलाम हैं, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला की इताअत व मअ़सियत में हैं, उनके दरिन्दों के ज़ुल्म व सितम से मरऊब हो कर सबने यह बैअ़त कर ली। एक कुरैशी ने नहीं की तो उसे क़त्ल कर दिया गया। (तत्हीरुल जिनान सफ़ा 134)

सईद बिन मुसैय्यिब को जो किबारे ताबईन और कुर्राए सबआ में हैं पकड़ा, उन से यज़ीद की बैअत लेनी चाही। उन्होंने फरमाया हज़रत अबू बकर व उमर की सीरत पर बैअत करता हूँ।

इब्ने उक़्बा ने हुक्म दिया कि उनको क़त्ल कर दिया जाए एक शख़्स खड़ा हुआ, उसने उनके जुनून की गवाही दी जब कहीं जा कर उनकी जान बची फिर यज़ीद के हुक्म के बमूजिब यज़ीदी लश्कर मक्का मुअज़्ज़मा पर हमला आवर हुआ। इस अरज़े पाक का जिसके जंगली जानवर को उठा कर उसकी जगह साया में नहीं बैठ सकते मुहासरा कर लिया, आतिश बाज़ी करके कअ़बतुल्लाह के पर्दा और छत को जला दिया। फिदयाए इस्माईल के सींग जल गए। उसी असना में इन सारे मज़ालिम के बानी मबानी यज़ीद को अपने कैफ़रे किरदार तक पहुँचने का वक़्त आ गया और वह अपने ठिकाने गया।

अब आइए उलमा-ए-माबाद के फ़ैसले यज़ीद के बारे में सुनिए। बाप

के अहवाल को बेटे से ज़्यादा तेरा सदी के बाद वाला नहीं जान सकता। मुआविया बिन यज़ीद को जब उस पलीद के तख़्त पर बिठाया गया तो उन्होंने जो ख़ुतबा दिया वह बेग़ैर अबू मुख़न्निफ़ की वसातत के तारीख़ की किताबों में यूं दर्ज है :

तरजमा : फिर मेरे बाप को हुकूमत दी गई वह नालाइक़ था। नवास-ए-रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेही व सल्लम से लड़ा। उसकी उम्र कम कर दी गई, वह अपनी क़ब्र में गुनाहों के वबाल में गिरफ़्तार हो गया। फिर रोया और कहा, हम पर सबसे ज़्यादा गिरां उसकी बुरी मौत और बुरा ठिकाना है। उसने इतरत रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेही व सल्लम को क़त्ल किया। शराब हलाल की और काबा को बरबाद किया। (सवाइक़ मुहरेक़ा सफ़ा 134)

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं :

तरजमा : तुम्हें पता है वाक़िया हराम क्या है। वल्लाह! बहुत कम अह्ले मदीना उससे बचे। सहाबा किराम और उनके अलावा एक ख़ल्क़े कसीर मक़्तूल हुई। (सवाइक़ सफ़ा 132, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा सफ़ा 146)

इमाम ज़हबी फरमाते हैं :

यज़ीद ने अह्ले मदीना के साथ किया जो कुछ किया। बावजूद शराब पीने, मुंकिरात का इर्तिकाब करने से लोग उसके ख़िलाफ़ हो गए और उसकी बैअत बहुतों ने तोड़ दी।

यही वजह है कि इमाम अहमद बिन हंबल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु और इब्ने जौज़ी वग़ैरह उस पर लानत को जाइज़ क़रार देते हैं।

तरजमा : इमाम अहमद बिन हंबल ने यज़ीद को काफिर कहा, अपने इल्म व वरअ़ के ऐतबार से वह काफी हैं। उनके इल्म व वरअ़ इस बात के मुक़्तज़ी हैं कि यज़ीद को काफिर उस वक़्त कहा होगा जब कि सरीह मूजिबे कुफ़्र बातें उस से वाक़ेअ़ हुई होंगी। एक जमाअत का जिनमें इब्ने जौज़ी वग़ैरह हैं यही फत्वा है, यज़ीद के फ़िस्क़ पर इज्मा है। बहुत से उलमा-ए-किराम ने यज़ीद का नाम लेकर उसे लानत करने को जाइज़ रखा है। इमाम अहमद से भी यही मरवी है। इब्ने जौज़ी ने बताया कि क़ाज़ी अबुल-यअ़ला ने मुस्तहक़ीने लानत के बारे में एक किताब लिखी है, उसमें यज़ीद का भी नाम ज़िक्र किया है।

जब हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने यज़ीद को काफिर कहा, उस पर लानत करने को जाइज़ फरमाया तो उस से अमरोहवी साहब की इस तहक़ीक़ की क़लई खुल गई जो उन्होंने इमाम मौसूफ़ के हवाले से उसके साहिबे वरअ़ के बारे में की है।

अल्लामा सअ़दुद्दीन तफ़्ताज़ानी शाफई रहमतुल्लाह तआला अलैह शरह अक़ाइद में जो दर्से निज़ामी की मशहूर व मारूफ़ किताब है फरमाते हैं :

तरजमा : हक़ तो यह है कि यज़ीद की रज़ा क़त्ल हुसैन पर और उसका उस पर खुश होना अह्ले बैते नुबुव्वत की तौहीन करना मुतावातिरु-मानी अगरचे उसकी तफ़्सीले आहाद है बस हम उसके मुआमला में तवक़्क़ुफ़ नहीं करते बल्कि उसके ईमान में (वह यक़ीनन काफिर है) उस पर उसके आवान व अंसार पर अल्लाह की लानत है।

अगरचे उलमा-ए-मुहतातीन ने यज़ीद के मुआमला में सुकूत फरमाया है कि कुफ़्र के लिए जिस दरजा का सुबूत दरकार है वह नहीं है, यही हमारे इमामे आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु का क़ौल है और हम भी उसे काफिर कहने से सुकूत करते हैं लेकिन अर्ज़ यह है कि जिस बदनसीब के बारे में इतने जलीलुल-क़द्र अइम्मा और उलमा कुफ़्र का फ़त्वा दें, उसे लाइक़ फाइक़, ज़ाहिद वही कहेगा जो दीनी उमूर से ग़ाफ़िल व नाअह्ल होगा। अमरोहवी साहब ने उम्मे हराम बिन्ते सलमान की हदीस से यज़ीद के फ़ज़्ल व कमाल को साबित करना चाहा है "कि कुस्तुनतुनिया पर पहले हमला आवरों के लिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेही व सल्लम ने मग़्फ़िरत की बशारत दी है, यह हमला यज़ीद की सरकरदगी में हुआ, लिहाज़ा यज़ीद भी इसका मुस्तहिक़ है।" चूंकि हदीस में कोई ऐसा लफ़्ज़ नहीं जो इस बात पर दलालत करे कि यह बशारत लशकर के हर फर्द के लिए है। लिहाज़ा उन्होंने तरह तरह की हिकायतें कही हैं। अल्लामा इब्ने हजर के बारे में यह लिखा है :

अल्लामा इब्ने हजर ने फ़त्हुल-बारी शरह बुख़ारी में यह ब्यान करते हुए यह हदीस हज़रत मुआविया और उनके फ़रज़न्द अमीर यज़ीद की मंक़बत में है, मुहद्दिस अल-मुहलिब का यह क़ौल नक़्ल किया है :

तरजमा : इस हदीस के बारे में (मुहद्दिस) अल-मुहलिब ने फरमाया कि यह हदीस मंक़बत में है हज़रत अमीर मुआविया के कि उन्होंने ही सब से

पहले बहरी जिहाद किया और मंक़बत में है उनके फ़रज़न्द (अमीर यज़ीद के) कि उन्होंने ही सबसे पहले मदीना क़ैसर कुस्तुनतुनिया पर जिहाद किया। (स० 23)

पहली ख़्यानत इस इबारत में यह है कि इस हदीस से हज़रत मुआविया और उनके ना ख़लफ़ बेटे यज़ीद दोनों की मंक़बत साबित करने की निस्बत सैयदुल-हुफ़्फ़ाज़ अल्लामा इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैह की तरफ से हालांकि यह ग़लत है। अल्लामा इब्ने हजर ने मुहलिब का यह क़्यास नक़्ल करके उसे रद्द फरमाया है जिसका मतलब यह है कि अल्लामा मौसूफ़ यज़ीद को लाइक़े मग़्फ़िरत नहीं मानते। बुख़ारी के हाशिया पर वहीं मुत्तसिलन है :

तरजमा : मुलहिब के क़्यास को इब्ने तिब्न और इब्ने मुनीर ने यूं रद्द किया कि उमूम का मतलब यह हरगिज़ नहीं होता कि दलीले ख़ास से निकल न सके इसलिए कि हुज़ूर का इरशाद **"मग़्फूरुन लहुम"** उस चीज़ के साथ मशरूत है कि अह्ले लश्कर मग़्फ़िरत के अहल होंगे। तो अगर कोई ग़ाज़ियों में से उसके बाद मुरतद हो जाए तो वह इस बशारत के उमूम में हरगिज़ दाख़िल नहीं है इसलिए मालूम हुआ कि **"मग़्फूरुन लहुम"** की बशारत उन्हीं को शामिल है जिनमें मग़्फ़िरत की अहलियत है।

इस जवाब का हासिल यह है कि **मग़्फूरुन लहुम** की बशारत उन्हीं लोगों को शामिल है जो लश्कर कशी के वक़्त मुसलमान रहे हों और आख़िर दम तक ईमान पर साबित रहे हों। अगर कोई इस जंग के वक़्त मुसलमान था, बाद में काफिर हो गया तो बइत्तिफ़ाक़ उलमा इस बशारत का मुस्तहिक़ नहीं। अगर ग़ज़वा के बाद कोई ऐसा अम्र पाया गया जो मनाफ़ी मग़्फ़िरत हो तो वह महरूम रह जाएगा। और हम ऊपर साबित कर आए कि यज़ीद से इस ग़ज़वा के बाद बहुत से ऐसे उमूर सरज़द हुए जिन पर उलमा ने कुफ़्र का फ़त्वा तक दे दिया है लिहाज़ा वह इस बशारत का मुस्तहिक़ नहीं। उसकी मिसाल यह है कि नमाज़ व रोज़ा और दीगर आमाले सालेहा के लिए आला आला जज़ाओं का ब्यान है। क्या जो भी ख़्वाह बद मज़हब, बेदीन ही क्यों न हो, नमाज़ पढ़ ले तो वह इस अज्र का मुस्तहिक़ हो जाएगा? नहीं हरगिज़ नहीं। आमाल पर अज्र का दारोमदार, ईमान, हुस्ने नीयत और मक़्बूलियत पर है, ईमान नहीं, ख़ालिसतन लेवज्हिल्लाह

नहीं तो वह फाइल कमी अज्र का मुस्तहिक़ न होगा। इसी तरह इस हदीस का मतलब यह हुआ कि कुस्तुनतुनिया के जिहाद का अज्र मग़्फ़िरते जुनूब है लेकिन यह अज्र ईमान के ख़ुलूस के बाद मिलेगा, जिसमें दोनों बातें न हों वह यक़ीनन महरूम रहेगा।

अमरोहवी साहब अल्लामा इब्ने हजर की तरफ मुहलिब का क़ौल मन्सूब करना और उनके रद्द को नज़र अंदाज़ कर देना भी आपके नज़्दीक तहक़ीक़ का आला मेअ्यार है। रद्द करने वालों को क़ाइल बनाना वह तहक़ीक़ है जिसकी दाद आपके अकाबिर मौलवी रशीद अहमद गंगोही और ख़लील अहमद अंबेठवी ही दे सकते हैं। ऐ ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद को तहक़ीक़ बताने वालो! देखो यह है तुम्हारे मुहक़्क़िक़ की कमाले तहक़ीक़।

दूसरी ख़्यानत अल्लामा **इब्ने हजर ने ऊजेबू** की शरह में फरमाया था **ऐ फ़अ्लू फ़ेअ्लन वजबा लहुम बेहिल-जन्नते।** उन्होंने ऐसा काम किया जिसकी वजह से जन्नत वाजिब हो गई उस में से **फ़अ्लू फ़ेअ्लन** हज़म करके सिर्फ़ **वजबत लहुम बेहिल-जन्नते** को नक़्ल किया। कतर बेयूंनत से भी जब काम चलता नज़र नहीं आया तो तरजमा में यह अज़ीम तहरीफ़ की यानी उन सब ग़ाज़ियों के लिए जन्नत वाज़िब हो गई **वजबत लहुम बेहिल-जन्नते।** में ऐसा कोई लफ़्ज़ कोई नहीं था जो कुल्लियत पर दलालत करता हो, लिहाज़ा आपने तरजमा में सब ग़ाज़ियों को पच्चर लगा दी ताकि **मग़्फ़ूरुन लहुम** के तरजमा में भी पच्चर फिट हो जाए।

ऐ दीन के दुश्मनो! तुम यज़ीद की यज़ीदियत पर अपना दीन ईमान मुंडा बैठे हो तो मुंडाए रहो, अहादीस व कुरआन को खेल न बनाओ मगर क्या करोगे तुम पैरू उनके हो जिन्हें अल्लाह जल्ल व अला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेही व सल्लम ने अपने मिंबर पर उछलते कूदते देखा है।

ख़ुलासा कलाम यह है कि यज़ीद के बारे में उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है कि वह फासिक़ व फाजिर था। इमाम अहमद बिन हंबल और इब्ने जौज़ी वग़ैरह उसे काफिर भी कहते हैं। उस पर लानत को भी जाइज़ फरमाते हैं। यह बिल्कुल ग़लत है कि वह ज़ाहिद व आबिद था। तमाम तारीख़ छान डालिए उसके ज़ुह्द व क़नाअत का एक पहलू नहीं मिलेगा। अगर था तो

अमरोहवी साहब ने उसे नक़्ल क्यों नहीं किया बल्कि खुद अमरोहवी साहब के क़ौल से साबित होता है कि यज़ीद हरगिज़ ज़ाहिद नहीं था। स० 50 पर लिखते हैं :

"हज़रत अबू दरदा जैसे ज़ाहिद सहाबी से बहुत मानूस थे। उनकी साहबज़ादी को निकाह का पैग़ाम भी दिया था, वह यज़ीद को पसन्द करते थे मगर अपनी बेटी ऐसे घराना में ब्याहने को तैयार न थे जहाँ काम के लिए ख़ादिमा मौजूद हो फिर उन्होंने अपनी बेटी यज़ीद ही के एक हम जलीस के अक़्द में दे दी।"

अमरोहवी साहब हमें सरे दस्त इस से बहस नहीं करना है कि अबू दरदा यज़ीद को पसन्द करते थे या नहीं, यज़ीद उन से मानूस था कि मरऊब, इतना तो साबित हो गया कि उस ज़ाहिद खुदा परस्त ने अपनी नूरे नज़र को यज़ीद के घर जाने देना इसलिए नहीं गवारा किया कि वहाँ काम काज के लिए ख़ादिमा थी। काम काज के लिए ख़ादिमा का होना ज़ुह्द के किस दरजा में दाख़िल है? बोलिए हज़रत अबू दरदा ने घर में ख़ादिमा के होने का ज़ुह्द के मनाफ़ी जाना या नहीं? घर में ख़ादिमा रख के आपके लाइक़ फाइक़ अमीर ज़ाहेदीन के ज़ुमरे में रहे या नहीं? ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद का असल मौज़ूअ यह है कि रैहाना रसूल जिगर गोश-ए-बतूल इमाम आली मक़ाम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ख़ाती व बाग़ी थे और यज़ीद पलीद और उसके लश्कर वाले हक़ पर थे। लेकिन उसे साबित करना आसान काम नहीं था जैसे एक क़ातिल क़त्ल छुपाने के लिए दसियों क़त्ल कर डालता है इसी तरह अमरोहवी साहब को ख़ानवाद-ए-नुबुव्वत का ख़ून नाहक़ छुपाने के लिए सैंकड़ों उम्मते मुस्लिमा के मुसल्लेमात को ज़बह करना पड़ा है। आपने बुग़्ज़ ऑले रसूल व हुब्बे यज़ीद में वह जोश व ख़रोश दिखाया है जिसकी दाद इब्ने मल्जम या इब्ने ज़्याद ही दे सकता है।

आपने पहले यज़ीद को ज़ाहिद व फाज़िल, मुदब्बिर सिपाही और ग़ाज़ी साबित किया फिर उसकी ख़िलाफ़त को हक़ बताया फिर इमाम आली मक़ाम की ख़ता साबित की फिर वाक़या शहादत की सैंकड़ों जुज़्इयात को ग़लत बताया। हद यह कि वाक़िया शहादत को इस तरह ब्यान किया जैसे यह कोई इत्तिफ़ाक़ी मामूली सा वाक़िया हो जैसे चलते चलते पाँव तले चूंटी

मसली जाए। मगर यह सब उस वक़्त साबित नहीं हो सकता था जब तक कि अइम्मा सैर व तारीख़ पर कीचड़ न उछाली जाए। उसके लिए आपने इमाम इब्ने जरीर तबरी को शीआ़ बताया, अबू मुहनिफ़ को वज़ाअ़ व कज़्ज़ाब कहा। इब्ने ख़ल्दून तक के तमाम अइम्मा सैर को अंधा मुक़ल्लिद बताया। जगह जगह रिवायत को दिरायत पर तरजीह दी, क़्यास से तारीख़ी वाक़ेआत साबित किए वग़ैरह वग़ैरह। जब कहीं जा कर उनके लाइक़ ज़ाहिद का दामन उनके ख़्याल में ख़ानवाद-ए-रसूल के ख़ून नाहक़ से साफ़ हुआ।

अगर हम इन तमाम बातों पर अलग अलग सैर हासिल बहस करें तो उसके लिए दफ़्तर चाहिए इसलिए हम इन तमाम जुज़्इयात से क़तअ़ नज़र करते हुए सिर्फ़ उसूली बातों पर गुफ़्तगू करके इस बहस को ख़त्म कर देना चाहते हैं।

"यज़ीद ख़िलाफ़त का अह्ल नहीं था" हमारे मज़्कूरा बाला ब्यान से वाज़ेह हो गया कि यज़ीद फासिक़ व फाजिर था जिसमें किसी शक की गुंजाइश नहीं, इस पर तमाम उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है। ख़िलाफ़त नियाबते रसूल है। ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के हाथ में मुसलमानों का दीन भी होता है दुनिया भी होता है, फासिक़ का फ़िस्क़ व फ़ुजूर इस बात की दलील है कि उसके दिल में ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं, वह अपनी हविस परस्ती में हदूदे शरीअत का लिहाज़ नहीं करता इसलिए फासिक़ को यह मंसब सौंपने में दीन व मिल्लत के बरबाद होने का ख़तरा है इसलिए किसी फासिक़ व फाजिर को यह मंसब सौंपना इमामे आली मक़ाम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के नज़्दीक दुरुस्त नहीं था। दूसरे यह कि फासिक़ को ख़लीफ़ा बनाने में फासिक़ की ताज़ीम है और फासिक़ की ताज़ीम व तक्रीम नाजाइज़ और गुनाह है इसलिए हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के नज़्दीक यज़ीद की ख़िलाफ़त दुरुस्त नहीं थी। अल्लामा अब्दुल-ग़नी नाबुलसी कुद्दसा सिर्रहू हदीक़हू नदिया शरह मुहम्मदीया में फरमाते हैं :

तरजमा : अफानी ने शरह जौहरह में फरमाया इमामत (कुबरा) की शर्तें पाँच हैं : मुसलमान, बालिग़, आक़िल, आज़ाद, ऐतक़ादन अमलन फासिक़ न होना। इसलिए कि फासिक़ अम्रे दीन की सलाहियत नहीं रखता और न उसके अवामिर व नवाही पुर व वसूक़ किया जा सकता है। ज़ालिम

से दीन व दुनिया का अम्र बरबाद हो जाएगा तो किस तरह वाली बनाने के लाइक़ है। इस शर को दूर करने के लिए कौन वाली होगा। क्या भेड़िए से भेड़ की चरवाही तअज्जुब अंगेज़ नहीं है?

हज़रत इमाम आली मक़ाम ने मक़ामे बैज़ा में जो मारकतुल-आरा ख़ुत्बा दिया था, उसे नाज़ेरीन सुनें और ख़ुदा तौफ़ीक़ दे तो हक़ क़ुबूल करें :

तरजमा : इमाम आली मक़ाम ने मक़ामे बैज़ा में अपने और हुर्र के साथियों को ख़ुतबा दिया। अल्लाह की हम्द व सना की फिर फरमाया ऐ लोगो! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेही व सल्लम ने फरमाया जिसने ऐसे बादशाह को देखा जो ज़ालिम हो, अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों को हलाल करता हो, अह्दे इलाही तोड़ता हुआ। सुन्नते रसूल की मुख़ालिफ़त करता हो, अल्लाह के बन्दों में ज़ुल्म व तअद्दी के साथ हुकूमत करता हो और देखने वालों को उस पर क़ौलन या अमलन ग़ैरत नहीं आई तो ख़ुदा को यह हक़ है कि बादशाह की जगह दोज़ख़ में उस (मदाहिन) को डाल दे। मैं तुम्हें आगाह करता हूँ उन लोगों (यज़ीद और यज़ीदियों) ने शैतान की इताअत की, रहमान की इताअत छोड़ दी, फसाद मचा दिया, हुदूदे इलाही को बेकार कर दिया, माले ग़नीमत में अपना हिस्सा ज़्यादा लिया, हराम को हलाल और हलाल को हराम किया। मैं ग़ैरत करने का सबसे ज़्यादा हक़्दार हूँ।

यह ख़ुत्बा अगरचे अबू मुहनिफ़ से मरवी है लेकिन अबू मुहनिफ़ वज़ाअ़ कज़्ज़ाब ग़ैर मुस्तनद नहीं हैं। अगर अमरोही साहब या उनके हवारीन मुहनिफ़ पर कभी जरह की ज़ेहमत गवारा न करेंगे तो इंशाअल्लाह तआला हम भी आगे न बढ़ेंगे।

दूसरी बात यह है कि इमाम ने इस ख़ुत्बा में जो हदीस पढ़ी है उसकी ताईद दूसरी मुत्तफ़क़ सही हदीसों से होती है इसलिए इसको मौज़ूअ़ जानने की कोई वजह नहीं। इमाम ने इस ख़ुतबा में यज़ीदियों के एक एक करतूत को मज्मा आम में ब्यान फ़रमाया मगर किसी को इन बातों की तरदीद की जुरअत नहीं हुई जिस से साबित हो गया। हराम को हलाल करना, हलाल को हराम करना, हुदूदे इलाही को मुअत्तल करना, माले ग़नीमत में अपना हिस्सा ज़्यादा लेना। मुख़्तसर यह कि शैतान की इताअत करना यज़ीद और यज़ीदियों का शिआर हो चुका था। ऐसी सूरत में हदीस को सामने

रखिए किया इस हदीस के सामने होते हुए इब्ने शेरे ख़ुदा चुपके से यज़ीद के हाथों में हाथ देते? यही वह रम्ज़ है जिसे ख़्वाजा ख़्वाजगान सुल्तानुल-हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अपनी मशहूर रुबाई में ज़ाहिर फरमाया है। रुबाई–

शाह अस्त हुसैन बादशाह अस्त हुसैन
दीं अस्त हुसैन दीन पनाह अस्त हुसैन
सर दाद न दाद दस्त दर दस्त यज़ीद
हक़्क़न कि बिना ला इलाह अस्त हुसैन

ऐसे जाबिर और फासिक़ बादशाह की आदते बद की तग़य्युर के दो तरीक़े एक क़ौल से एक फ़ेअल से। दीगर सहाबा किराम ने क़ौल से किया। इमाम आली मक़ाम ने फ़ेअ़ल से किया, फ़ेअल से करना अफ़्ज़ल था। नवास-ए-रसूल के शायाने शान अफ़्ज़ल पर अमल करना था वही उन्होंने किया। जब यह साबित हो गया कि यज़ीद के जो हालात इमाम आली मक़ाम के इल्म में थे उसके पेशे नज़र न उसकी ख़िलाफ़त दुरुस्त थी और न फरमाने रसूल के पेशे नज़र इमाम को ख़ामोश रहना मुम्किन था तो इमाम ने जो कुछ किया हक़ किया, यज़ीदियों ने इमाम के ख़िलाफ़ जो कुछ किया वह सब ज़ुल्म व अदवान था। आइए अब अहादीसे करीमा से इमाम आली मक़ाम का हक़ पर होना साबित करें।

हदीसे रसूल : मिश्कात शरीफ़ में, स० 570, पर सलमा से मरवी हैं वह कहती हैं कि मैं हज़रत उम्मे सलमा के पास हाज़िर हुई उन्हें रोते हुए देख कर पूछा आप क्यों रोती हैं? उन्होंने इरशाद फरमाया :

तरजमा : मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा कि सरे अक़्दस और रेशे मुबारक गर्द आलूद हैं। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! क्या बात है? इरशाद फरमाया अभी हुसैन के मक़्तल में तशरीफ़ फ़रमा था।

हदीस दोम : हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है वह फ़रमाते हैं :

तरजमा : मैने एक दिन ख़्वाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा, दोपहर के वक़्त ज़ुल्फ़ मुबारक मुंतशिर, चेहर-ए-अनवर पर गर्द है, दस्ते मुबारक में एक शीशी है जिसमें ख़ून है। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मेरे मां बाप फिदा हों। यह क्या है? इरशाद

फरमाया, यह हुसैन और उनके साथियों का ख़ून है जिसे आज जमा कर रहा हूँ। इब्ने अब्बास कहते हैं मैंने वह वक़्त ख़्याल में रखा। हज़रत हुसैन उसी वक़्त शहीद हुए।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेही व सल्लम का मक़्तल में तशरीफ़ लाना, ख़ून के क़तरों का जमा फरमाना इस बात की दलील है कि इमाम और असहाबे इमाम का हर हर क़तरा ख़ून हिमायते हक़ व बातिल में बहा था, और अगर यज़ीदी हक़ पर होते तो इस नवाज़िश के मुस्तहिक़ वह थे न कि इमाम। अगर आप कहें कि नवासे थे इसी रिश्ता से तशरीफ़ लाए थे तो अर्ज़ है कि अल्लाह के नबी की यह शान नहीं हो सकती कि वह हक़ के मुक़ाबला में बातिल परस्त नवासा को नवाज़े, इसकी हौसला अफ़्ज़ाई करे। अगर हक़ यज़ीद के साथ होता तो यक़ीनन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेही व सल्लम इमामे आली मक़ाम के मक़्तल में न होते और उनका ख़ून जमा न फरमाते। रह गए उलमा के नुसूस तो आपने ऊपर पढ़ लिया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेही व सल्लम से लेकर आज तक तमाम अइम्म-ए-दीन और उलमा-ए-मतीन ने यज़ीद के ज़ुल्म व सितम, फ़िस्क़ व फुजूर हत्ता कि बाज़ों ने कुफ़्र की तसरीह की है जिस से साफ़ ज़ाहिर है कि वह बातिल पर था और इमाम आली मक़ाम हक़ पर थे। इत्मीनान मज़ीद के लिए तम्हीद इमाम अबू शकूर सालमी की सनद पेश करूं। यह किताब अक़ाइद की इतनी मुस्तनद है कि हज़रत निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही रहमतुल्लाह तआला अलैह ने इसे दर्स में पढ़ा है :

तरजमा : अह्ले सुन्नत व जमाअत ने फ़रमाया कि हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु हक़ पर थे और वह ज़ुल्मन शहीद हुए।

फिर हज़रत मुआविया और यज़ीद में फ़र्क़ बताते हुए फरमाते हैं :

तरजमा : हज़रत अमीर मुआविया आलिम थे फ़ासिक़ नहीं थे, उनमें दीनदारी थी। अगर वह दीनदार न होते तो उनके साथ सुलह जाइज़ न होती। आदिल थे, हज़रत अली के बाद इमाम हक़ थे, दीन और मामलाते नास में आदिल थे। बरख़िलाफ़ यज़ीद के कि उसके बारे में मरवी है, उसने शराब पी, बाजा गाजा बजवाया, अह्ले हक़ को हक़ से महरूम रखा, दीन में फ़िस्क़ हो गया।

इस इबारत से ज़ाहिर हो गया कि यज़ीद फ़िस्क़ व फ़ुजूर व अदवान की वजह से ख़िलाफ़त का अह्ल नहीं था, और इमामे आली मक़ाम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का, उसकी बैअत न करना हक़ था।

इमाम की ख़ता के इस्तिदलात और उनके जवाबात

अमरोहवी साहब ने इमाम की ख़ता पर होने के सुबूत में वह हदीसें पेश की हैं जिनमें अमीर की इताअत व फरमांबरदारी का हुक्म वारिद है, इरशाद है :

"सुनो और मानो! अगरचे वह हब्शी ग़ुलाम क्यों न हो वग़ैरह।" सफ़: 41 पर लिखते हैं :

"अव्वलुल-अम्र (अमीर के लिए रंग व नस्ल। इस इबारत में आपने अह्ले सुन्नत के इस इज्माई मस्अला का ख़िलाफ़ किया है कि ख़लीफ़ा के लिए क़ुरैशी का होना शर्त है) हदीस में है :

अल-अइम्मतु मिन क़ुरैशिन यानी ख़ुलफ़ा-ए-इस्लाम क़ुरैश से हैं, ख़िलाफ़त के लिए क़ुरैशी होना शर्त है। इस पर तमाम अह्ले सुन्नत का इज्मा है। इसके ख़िलाफ़ मोतज़ेला ने कहा है मगर इब्ने ख़ल्दून मोतज़ली की अंधी तक़्लीद ने अमरोहवी साहब से अह्ले सुन्नत व जमाअत के इस इज्माई मस्अला का भी ख़ून करा दिया है। मालूम नहीं हुब्बे यज़ीद किस किस खाड़ी में गिरायेगी।

पहला जवाब : इन अहादीस में अमीर से मुराद ख़लीफ़ा नहीं बल्कि वाली-ए-मुल्क या वाली-ए-फौज है। अल्लामा ऐनी उम्दतुल-क़ारी और हाफ़िज़ अस्क़लानी फ़त्हुल-बारी में फरमाते हैं :

तरजमा : यह उमरा और उम्माल के बारे में है, अइम्मा और ख़ुलफ़ा के बारे में नहीं। इसलिए कि ख़िलाफ़ते क़ुरैश के लिए है दूसरे को उसमें दख़ल नहीं।

यही वजह है कि यज़ीद जब अमीरे हज और अमीरे फौज हुआ तो इमाम आली मक़ाम ने उसकी मातहती क़ुबूल करने पर कोई ऐतराज़ न किया कि अमीर फौज व हज के लिए फ़िस्क़ व फ़ुजूर से महफ़ूज़ रहना, इमाम के नज़्दीक शर्त नहीं और ख़िलाफ़त के लिए शर्त है। लिहाज़ा उसे अमीरे फौज तो तस्लीम किया, ख़लीफ़ा तस्लीम नहीं फरमाया।

दूसरा जवाब : यह कि ख़लीफ़ा की इताअत उस वक़्त लाज़िम है जब

उसकी ख़िलाफ़त शरअन सही हो। उसकी ख़िलाफ़त शरअन दुरुस्त न हो तो उसका हुक्म वह नहीं जो उन अहादीस में वारिद है चुनांचे उबादा बिन सामित रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की हदीस में वारिद है :

व इन ला इंज़ाअल-अमरू अहलुहू। कि हम ख़िलाफ़त के अह्ल से मुनाज़ेअत न करें।

इस से मालूम हुआ कि यह सारी ताकीदें उसके लिए हैं जो ख़िलाफ़त का शरअन अह्ल हो और उसकी ख़िलाफ़त शरई हैसियत से साबित हो। पहले के ब्यानात से साबित है कि इमाम के नज़्दीक यज़ीद की ख़िलाफ़त सही नहीं थी लिहाज़ा उसकी इताअत लाज़िम नहीं थी। अमरोहवी साहब ने यज़ीद के बरहक़ होने की दलील यह पेश की है।

"यज़ीद को अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने वली अहद कर दिया था जैसा कि हज़रत सिद्दीके अक्बर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को ख़लीफ़ा बना दिया था। जैसे सिद्दीके अक्बर के इस्तिख़्लाफ से हज़रत उमर की ख़िलाफ़त दुरुस्त थी उसी तरह हज़रत अमीर मुआविया के वली अहद करने से यज़ीद की इमारत दुरुस्त हो गई।"

जवाब : हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के बारे में जब सहाबा किराम से मशवरा किया तो सबने बइत्तिफ़ाक़ कुबूल किया और उसे सराहा। सिर्फ़ एक साहब ने उज़्र किया कि "वह बहुत दुरुश्त मिज़ाज हैं।" हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने उसका जवाब दिया कि "उनकी दुरुश्ती मेरी नर्मी की वजह से थी, जब सारी ज़िम्मेदारी उनके सर आन पड़ेगी तो वह नर्म हो जाएंगे।"

इब्ने असाकिर ने यसार बिन हम्ज़ा से रिवायत किया है कि सिद्दीके अक्बर ने अपनी अदालत के झरोके से सर निकाल कर लोगों से पूछा कि मेरे इस्तिख़लाफ़ पर तुम लोग राज़ी हो? तो लोगों ने जवाब में कहा "ऐ ख़लीफ़ा रसूलुल्लाह! हम सब राज़ी हैं।"

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू खड़े हुए और कहा "उमर के अलावा कोई दूसरा होगा तो हम राज़ी न होंगे।"

सिद्दीके अक्बर ने जवाब दिया "वह उमर ही हैं।" हज़रत सिद्दीके अक्बर के वेसाल के बाद फिर सारे सहाबा और ताबईन ने बिला नकीरे मुंकिर

हज़रत उमर के हाथ पर बैअत की।

दूसरे यह कि हज़रत अबू बकर ने अपने बेटे को वली अहद नहीं किया था। बरख़िलाफ़ यज़ीद की वली अहदी के कि हज़रत अमीर मुआविया ने जब दमिश्क़ में लोगों को उसके लिए जमा किया तो लोगों ने वहाँ भी बड़े शद्द व मद से मुख़ालिफ़त की, उसका ऐतराफ़ अमरोहवी साहब को भी है। सफ़ः 33 पर लिखते हैं "यह इज्तिमा हुआ जिसमें हर ख़्याल की नुमाइन्दगी थी बाज़ ने मुख़ालिफ़ाना तक़रीरें भी कीं।"

"मदीना आए तो आयाने सहाबा मसलन हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बकर, इब्ने उमर, इब्ने अब्बास, इब्ने ज़ुबैर और हज़रत हुसैन ने ऐतराज़ात किए। हज़रत अब्दुर्रहमान ने साफ़-साफ़ कहा (अपने बेटे को वली अहद करना) क़ैसर व किसरा की सुन्नत है (तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा) हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने यहाँ तक कि कह दिया, नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेही व सल्लम से लेकर हज़रत उमर तक जो तरीक़ा ख़लीफ़ा के तक़र्रुर का था उसमें कोई एक तरीक़ा इख़्तियार करो तो हमें मंज़ूर है, उनके अलावा हमें कोई जदीद तरीक़ा मंज़ूर नहीं।" (इब्ने असीर)

हज़रत अमीर मुआविया के बाद जब यज़ीद ने अपनी बैअत लेनी चाही तो भी हज़रत हुसैन और ज़ुबैर ने साफ इंकार कर दिया।

यही आयान अह्ले हल्लो अक़्द थे जो यज़ीद की इमारत पर न अमीर मुआविया के ज़माना में राज़ी हुए न उनकी वफ़ात के बाद राज़ी हुए, इसलिए यज़ीद की इमारत शरअन दुरुस्त न हुई। उस मौक़ा पर अमरोहवी साहब ने यह झक मारा है कि "यज़ीद की वली अहदी का क़िस्सा 56 हिजरी का है और हज़रत अब्दुर्रहमान 53 हिजरी में वफ़ात पा गए। फिर उन्होंने उस पर ऐतराज़ कब किया?" स० 35 पर लिखते हैं :

"इब्ने जरीर तबरी ने ब्यान किया है कि यह वाक़या 56 हिजरी का है हालांकि इन पाँच क़ुरैशी हज़रात में से हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बकर तो उस वक़्त भी ज़िन्दा न थे, उस से तीन साल क़ब्ल **53** हिजरी में वफात पा चुके थे।"

यह ऐतराज़ अमरोहवी साहब के फ़ने तारीख़ से नावाक़फ़ीयत का नतीजा है, आपने ख़ुद लिखा है :

"हज़रत मुग़ीरा बिन शोअ्बा जैसे मुदब्बिर सहाबी ने यह तहरीक पेश

की।" (स० 22)

हज़रत मुग़ीरा बिन शोअ्बा का वेसाल 50 हिजरी में हो गया था लिहाज़ा यह ज़रूरी है कि 50 हिजरी से क़ब्ल यह मस्अला पेश हो चुका हो। 53 हिजरी में हज़रत अब्दुर्रहमान का वेसाल हुआ। वली अहदी का मस्अला पेश होने के बाद तीन साल तक वह ज़िन्दा रहे और उस दरम्यान में वली अहद का मस्अला बराबर चलता रहा। हो सकता है इस तवील मुद्दत में उन्होंने कभी ऐतराज़ किया हो। यह क्या ज़रूरी है कि 56 हिजरी ही में उन्होंने ऐतराज़ किया हो।

तीसरा फर्क़ यह है कि हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु हर तरह ख़िलाफ़त के अह्ल थे और यज़ीद हर तरह ना अह्ल। इस से हज़रत उमर का इंतिख़ाब दुरुस्त और यज़ीद की वली अहदी दुरुस्त न थी। उलमा ने जहाँ यह मस्अला लिखा है कि खलीफ़ा साबिक़ के इस्तिख़लाफ़ से इमारत साबित होती है वहाँ अह्ल की भी क़ैद लगाई है। सवाइक़े मुहरिक़ा स० 5 पर है :

तरजमा : इमामत दो तरह साबित होती है, एक तो यह कि ख़ुद इमाम किसी अह्ल के खलीफ़ा बनाने की तसरीह कर दे। दूसरे अह्ल हल्ल व अक़्द किसी अह्ह को मुक़र्रर कर दें।

यज़ीद में अहलियत नहीं थी जिसका ब्यान गुज़र चुका। लिहाज़ा उसको वली अहद करना दुरुस्त नहीं था।

तीसरी दलील यह कि उम्मत की अक्सरीयत ने यज़ीद की बैअत कर ली थी और फ़ैसला कसरते राय पर होता है लिहाज़ा यज़ीद की ख़िलाफ़त हक़ और इमाम का बैअत करना ख़ता।

जवाब अव्वल : यह क़ानून इस्लामी नहीं अंग्रेज़ों का है। अगर आप किसी अंग्रेज़ की हिस्टरी लिखते और इस क़ानून से मदद लेते तो उसे अंग्रेज़ मान लेते मगर आप बानी इस्लाम की जानशीनी के मस्अला को इस अंग्रेज़ी क़ानून से नहीं तय कर सकते, उसे ख़ालिस इस्लामी उसूल से तय करना होगा। उलमा-ए-मिल्लत तो यह फरमाते हैं :

तरजमा : एक हक़ परस्त ही सवादे आज़म है।

आपके इस क़ानून को अगर हक़ मान लें और ईसाई यह कह बैठे कि आइए आपके इस क़ानून से इस्लाम व कुफ़्र का फैसला कर दिया जाए

और वोट लिया जाए, जिसकी तरफ़ ज़्यादा वोट हो, वह मज़्हबे हक़ पर होगा तो बोलिए आप इस सूरत में अक्सरीयत के फ़ैसले को मानने के लिए तैयार हैं। सच है **हुब्बुश्शैयु व यअ्मेयु व यसुम्मु....**हुब्बे यज़ीद में आपको कुछ सुझाई नहीं देता। आपको यज़ीद की हक़्क़ानियत का राग अलापने से काम है अगरचे उसकी ज़द में दीन व दुनिया सब बह जाएं।

सानियन : हालते जब्र व इकराह के अहकाम और हैं और इख़्तियार के और। इसी तरह यज़ीद की बैअत न करने में जान व माल, इज़्ज़त व नामूस की बरबादी का अन्देशा तो यह था, यज़ीद पलीद उस पर क़ादिर भी था। वाक़िया करबला, वाक़या हर्रा, अहसारे मक्का मुअज़्ज़मा और एहराक़ काबा मुक़द्दसा इस पर शाहिदे अद्ल हैं, ऐसी सूरत में रुख़्सत यह थी कि यज़ीद की बैअत कर ली जाती, अज़ीमत यह थी कि बैअत न की जाए इस रुख़्सत पर अमल करने में सवाब था न अज़ाब, अज़ीमत पर अमल करने में सवाब था। नवास-ए-रसूल के लिए शायाने शान अज़ीमत पर अमल करके जन्नत का दूल्हा बनना था, उन्होंने अज़ीमत पर अमल किया। दीगर सहाबा किराम और ताबईने इज़ाम ने रुख़्सत पर अमल किया, इस पर उनसे कोई मुआख़ज़ा नहीं। जिस तरह हालत इकराह में कलिमा कुफ़्र ज़ुबान पर जारी करने की रुख़्सत है। और अज़ीमत यह है कि जान दे दे मगर कलिमा कुफ़्र ज़ुबान पर न लाए। अज़ीमत पर अमल करना बेहतर है और रुख़्सत पर अमल करने वाला गुनहगार नहीं। आला हज़रत अज़ीमुल-बरकत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत फाज़िल बरैलवी क़ुद्दसा सिर्रहू **अल-हुज्जतु मुतमिनतुन** में फरमाते हैं :

"अब दो सूरतें थीं या बख़ौफ़ जान उस पलीद की वह मल्ऊन बैअत कर ली जाती कि यज़ीद का हुक्म मानना होगा, अगरचे ख़िलाफ़ क़ुरआन व सुन्नत हो। यह रुख़्सत थी सवाब कुछ न था। या जान दे दी जाती और वह नापाक न की जाती। यह अज़ीमत थी और उस पर सवाब और यही उनकी शाने रफ़ीअ के शायान थी, इसी को इख़्तियार फरमाया।" (स० 96)

चौथी दलील हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु वग़ैरह ने हज़रत इमाम को ख़ुरूज से मना फरमाया। उन हज़रात का ख़ुरूज से मना फ़रमाना इस बात की दलील है कि यह ख़ुरूज नाजाइज़ था।

जवाब : वाक़या सिर्फ़ इतना है कि जब हज़रत इमाम ने मक्का से

कूफ़ा जाने का अज़्मे मुहकम फरमा लिया तो उन हज़रात ने हज़रत इमाम को कूफ़ा जाने से इस बिना पर रोका कि कूफ़ा दग़ा बाज़ व बेवफ़ा हैं उन पर ऐतमाद न कीजिए, वह ऐन मौक़ा पर दग़ा देंगे और आपको अकेले छोड़ देंगे।

अमरोहवी साहब ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के रोकने का बड़े शद्द व मद्द से तज़्किरा किया है, इसलिए इस वाक़या के इंकिशाफ़ के लिए उनके अल्फ़ाज़े करीमा नक़्ल करता हूँ :

तरजमा : बिल्लाह मेरा गुमान है कि तुम अपनी औरतों और बच्चों के सामने शहीद किए जाओगे जैसा कि उसमान शहीद हुए। हज़रत इमाम ने न माना तो हज़रत अब्बास रोए। (तारीख़ुल ख़ुलाफ़ा सफ़० 144)

जब इमाम न माने और कूफ़ा के लिए रवाना हो गए तो इब्ने उमर फरमाया करते थे :

तरजमा : हुसैन न माने चले गए हालांकि मेरी जान की क़सम! अपने वालिद भाई के मुआमला में अपनी आंखों से देख चुके हैं।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का मशहूर वाक़िया है कि एक दफ़ा हज के मौक़ा पर किसी इराक़ी ने आप से यह मसला पूछा कि हालते एहराम में मक्खी मारना कैसा है तो फ़रमाया :

तरजमा : अह्ले इराक़ मक्खी के मार डालने के बारे में पूछते हैं जब कि उन्होंने नवास-ए-रसूल को शहीद किया हालांकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके बारे में फ़रमाया वह मेरे फूल हैं।

अगर अमरोहवी साहब की तहक़ीक़ के बमूजिब हज़रत इमाम को कूफ़ा जाना ख़ता होता और इमामे बरहक़ पर ख़ुरूज होता तो उनका क़त्ल किया जाना हक़ था, उस पर इब्ने उमर इराक़ियों पर तअ़रुज़ न करते बल्कि उन्हें दाद देते कि तुमने अच्छा किया, तुमको मौला अज़्ज़ व जल्ल जज़ा दे कि एक ज़बरदस्त बाग़ी को क़त्ल करके उम्मत में इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ क़ायम कर दिया जैसा कि अमरोहवी साहब तेरह सौ साल के बाद दाद दे रहे हैं। इसी से मालूम हुआ कि यज़ीद पलीद बातिल पर था, इमाम आली मक़ाम का उसकी बैअत से इंकार करना हक़ था और इमाम की शहादत ख़ून नाहक़ थी।

अब वाज़ेह हो गया कि उन हज़रात का कूफ़ा जाने से रोकना इस बिना

पर नहीं था कि यह लोग इमाम के इस इक़्दाम को बातिल जानते थे और यज़ीद पलीद की बैअत को हक़ बल्कि इस बिना पर था कि कोई लाइक़े ऐतबार नहीं। इस शक़ को मज़ीद तक़्वियत इब्ने अब्बास के इस जुमला से होती है :

"आप बजाए कूफा के यमन चले जाएं। वहाँ क लोग आपके वालिद के मुहिब्बे ख़ास हैं, एक वसीअ़ मुल्क है वहाँ किले और खाइयाँ हैं और वह बिल्कुल अलग थलग है। वहाँ बैठ कर लोगों को दावती ख़ुतूत लिखो, हर तरफ दाई भेजो, इस तरह अमन व आफ़ियत के साथ तुम्हारा मक़्सद पूरा हो जाएगा।" (तबरी)

अगर इब्ने अब्बास के नज़्दीक यज़ीद के ख़िलाफ़ कोई तहरीके बग़ावत थी तो फिर यमन जा कर इस बग़ावत को फैलाने का क्यों मशवरा दे रहे थे, यह कौन सी मंतिक़ है कि कूफ़ा जाना बग़ावत व ख़ुरूज हो और यमन जाना अमन व इत्तिहाद। यह ऐसी मंतिक़ है जो उसी दिमाग़ में आ सकती है जो हुब्बे यज़ीद और बुग्ज़ अह्ले बैते नुबुव्वत से माऊफ़ हो चुका हो। फिर यही इब्ने अब्बास इमाम से यह भी फरमाते हैं :

"हाँ अगर इराक़ियों ने शामी हाकिम को क़त्ल करके शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया हो और अपने दुश्मन को वहाँ से निकाल दिया हो तो बख़ुशी जाओ लेकिन अगर इराक़ियों ने तुमको ऐसी हालत में बुलाया है कि उनका हाकिम मौजूद है, उसकी हुकूमत क़ाइम है और उसके उम्माल ख़राज वसूल करते हैं तो यक़ीन मानो कि उन्होंने महज़ जंग के लिए बुलाया है। मुझको यक़ीन है कि यह सब तुमको धोखा दे जाएंगे, तुमको झुठलाएंगे, तुम्हारी मुख़ालिफ़त करेंगे और तुम्हें बे यार व मददगार छोड़ देंगे और जब तुम्हारे मुक़ाबले के लिए बुलाए जाएंगे तो तुम्हारे सबसे बड़े दुश्मन साबित होंगे।" (तबरी जिल्द हफ़्तुम)

क्या कूफ़ा में हाकिम होते हुए जाना ख़ुरूज व बग़ावत है और हाकिम को क़त्ल करने के बाद वहाँ जाना बग़ावत नहीं? क्या अमीरे बरहक़ के मुक़र्रर करदा हाकिम को क़त्ल करना और शहर से निकालना बग़ावत व ख़ुरूज नहीं? अल-ग़रज़ जिन हज़रात ने मना किया, कूफ़ा जाने से मना किया और इस बिना पर मना किया कि आपके पास सरोसामान नहीं, फौज

नहीं, आप रुख़्सत पर अमल करें, कूफ़ियों पर मत ऐतमाद करें, वह लाइके ऐतमाद नहीं, बेवफ़ा ग़द्दार हैं।

यह दोनों रिवायतें तबरी की हैं जिन्हें आपने शीआ कह कर नाक़ाबिले क़ुबूल क़रार दिया है लेकिन यह हुब्बे यज़ीद के ख़ुमार की तरंग है जैसा कि हम पहले इमाम ज़हबी के क़ौल से साबित कर आए कि उन पर शीआ होने का इल्ज़ाम झूठा है और उन्हें नाक़ाबिले ऐतमाद कहना ग़लत। वह किबारे अइम्मा मोतमदीन में से हैं लिहाज़ा उनकी रिवायात इस बिना पर नहीं रद्द की जा सकती हैं कि यह तबरी ने ब्यान किया है लिहाज़ा क़ाबिले क़ुबूल नहीं। अब जब कि दलाइले क़ाहिरा से साबित हो चुका है कि यज़ीद की हुकूमत शरअन दुरुस्त न थी, ज़ालिमाना तसल्लुत था, उसके बिल्मुक़ाबिल हज़रत सय्यदुश्शोहदा हक़ पर थे तो यह साबित हो गया कि हज़रत इमाम और रुफ़क़ाए इमाम के साथ यज़ीदियों ने जो कुछ किया, ज़ुल्म व अदवान था और यह लोग शहीद फ़ी सबीलिल्लाह थे।

अमरोहवी साहब ने शहादत के सिलसिले में बहुत सी मुसिल्लमुस्सुबूत जुज़्इयात से महज़ क़्यासाते फ़ासिदा से इंकार कर दिया है, इस पर तफ़्सीली गुफ़्तगू किसी आइंदा मुलाक़ात में होगी। उसूली तौर पर इतना अर्ज़ है कि तारीख़ी वाक़ेआत को क़्यासात से नहीं साबित किया जाता बल्कि रिवायात से। बसा औक़ात ऐसा होता है कि वाक़ेआत ऐसे रूनुमा हो जाते हैं कि अक़्ल दंग रह जाती है कि कैसे क्या हो गया। तक़्दीर का हमेशा तदबीर के मुवाफ़िक़ होना ज़रूरी नहीं फिर हर शख़्स के क़्यास का साइब होना लाज़िम नहीं। अगर तारीख़ी वाक़ेआत को अपने क़्यासात से साबित करने की बिदअत पर अमल करेंगे तो बहुत से मुसिल्लमुस्सुबूत वाक़ेआत के सुबूत ही में दुशवारी हो जाएगी।

क्या यह हर अक़्ल में आने की बात है कि मरकज़ तौहीदे काबा में तीन सौ साठ बुत रखे जाएं? क्या यह हर अक़्ल में आने की बात है कि छोटी छोटी चिड़यों की फेंकी हुई नन्हीं नन्हीं कंकड़ियों से अबरहतुल-अशरम का लशकर पामाल हो जाए? क्या हर शख़्स की अक़्ल में आने की बात है ख़ातिमुन्नबीयीन का चचा अबू लहब काफ़िर मरे? मगर उनके सुबूत में ठोस रिवायात मौजूद हैं लिहाज़ा किसी चचा की अक़्ल में आए न आए मानना

पड़ेगा। मिसाल के तौर पर आपने यह साबित करने के लिए "कि इमाम आली मक़ाम पर तीन दिन तक पानी बन्द नहीं किया गया।" अपना यह क़्यास पेश किया है :

"इमाम आली मक़ाम मक्का मुअज़्ज़मा से आठ ज़िल-हिज्जा को नहीं बल्कि दस ज़िल-हिज्जा को चले हैं और रास्ते में तीस मंज़िलें हैं लिहाज़ा इमाम दस मुहर्रम को करबला में जलवा फरमा हुए, उसी दिन शहीद हो गए, न तीन दिन करबला में क़्याम रहा न तीन दिन पानी बन्द रहा।"

अमरोहवी साहब ने बजाए आठ के दस ज़िल-हिज्जा की रवानगी पर क़्यास पेश किया है "क्या यह मुम्किन था कि इमाम हज छोड़ कर कूफ़ा चल देते ऐसी क्या जल्दी थी।"

अमरोहवी साहब ने ऐसी जज़्बाती दलील पेश की है कि अवाम उसे फौरन कुबूल करेगी। अह्ले इल्म खूब जानते हैं कि आपने यहाँ कितनी होशियारी से काम लिया है। हज़रत इमाम हज बारहा फ़रमा चुके थे। हज्जे फर्ज़ ज़िम्मा में नहीं था। यह हज अगर अदा भी फ़रमाते तो नफ़्ल होता। दूसरी तरफ कूफ़ियों ने यज़ीदी इस्तिब्दाद के इज़ाला के लिए हर मुमकिन मदद का यकीन दिलाया था, ऐसी सूरत में इज़ाला मुंकिर फर्ज़ था। मैनतुल-मुसल्ला पढ़ने वाला भी जानता है कि नफ़्ल पर फर्ज़ की अदाएगी को मुक़द्दम रखेंगे। अगर हज़रत इमाम ने उस फर्ज़ की अहम अदाएगी के लिए एक नफ़्ल तर्क कर दिया तो उसमें क्या गुनाह लाज़िम आया। फिर यह कि अमरोहवी साहब यह भी कहते हैं :

"बिन सअ़द लड़ना नहीं चाहता था लेकिन यज़ीद की बैअत लेना उसका मतमहे नज़र था।"

ऐसी सूरत में क़्यास यह चाहता था कि पानी बन्द कर दिया जाए ताकि इमाम तिशनगी से जां बलब हो कर छोटे छोटे बच्चों को तड़पते बिलकते देख कर अज़ीमत छोड़ कर रुख़्सत पर अमल फरमा लें।

इसी तरह आपने बड़ी तूलानी बहस के बाद यह साबित किया है कि "मक्का से करबला की तीस मंज़िलें हैं और दो मंज़िला और सह मंज़िला किसी तरह मुम्किन नहीं, लिहाज़ा एक एक दिन में एक एक मंज़िल तय करते हुए तीस दिन में तीस मंज़िलें तय करके दसवें मुहर्रम को करबला पहुँचे।"

वाक़्या यह है कि अक़्ल पर मुहब्बत या बुग्ज़ का पर्दा पड़ जाने का कोई इलाज नहीं। पहली मंज़िल बुस्तान इब्ने आमिर चौबीस मील है। दसवीं ज़िल-हिज्जा को हज के मरासिम अदा करके कोई शख़्स किसी तरह चौबीस मील तय नहीं कर सकता। अमरोहवी साहब को क्या ख़बर कि दसवीं ज़िल-हिज्जा को क्या क्या मरासिम हैं।

दसवीं ज़िल-हिज्जा को आफताब निकलने से कुछ पहले मुज़्दलफ़ा से चल कर मनी आना है, जुमरतुल-उक़्बह पर कंकरी मारना है, कंकरी मार कर हजामत बनवाना है, कुरबानी करना है फिर मक्का मुअज़्ज़मा तवाफ़ ज़्यारत करना है। फिर सफ़ा व मरवा की सई करना है। क्या किसी भी अक़्लमन्द आदमी की समझ में यह बात आ सकती है कि एक दिन मैं मुज़्दलफ़ा से चल कर मिना आए, वहाँ के मरासिम अदा करके फिर मक्का मुअज़्ज़मा जाए। वहाँ के मरासिम अदा करके इतना वक़्त बचेगा कि हुसैनी क़ाफ़िला चौबीस मील की मसाफ़त तय करके बुस्तान इब्ने आमिर पहुँच सके? यक़ीनन ऐसा मुमकिन नहीं लिहाज़ा अमरोहवी साहब की तहक़ीक़ की बिना पर यह लाज़िम आएगा कि इमाम ग्यारह ज़िल-हिज्जा को मक्का से चले और ग्यारह को करबला जलवा फ़रमा हुए फिर दस को शहादत किस तरह हुई?

दूसरे यह कि ग्यारह ज़िल-हिज्जा को कंकरियां मारना हज के वाजिबात में से है। हज में अगर नफ़्ल हो, ग्यारह बारह की रमी वाजिब है। इमाम आली मक़ाम अगर हज न करते तो सिर्फ़ तर्के नफ़्ल लाज़िम आता और हज शुरू करके ग्यारह बारा की रमी छोड़ने में तर्क वाजिब लाज़िम आएगा। यह कहाँ की अक़्लमन्दी होगी कि तर्के नफ़्ल से तर्के वाजिब के वबाल में मुब्तला हों। लिहाज़ा आपकी जुग़राफ़ियाई रिसर्च की बिना पर लाज़िम आएगा कि इमाम तेरहवीं ज़िल-हिज्जा को मक्का से रवाना हुए और तेरा मुहर्रम को करबला में पहुँचे।

अमरोहवी साहब आपने देखा! आब बन्दी की रिवायत को ग़लत साबित करने के लिए आपने जो क़वाइद मुस्तख़रज फरमाए, वह ख़ुद आपके मुसल्लेमात को ढा रहे हैं। रिवायत पज़ीरी छोड़ कर रिवायत परस्ती इख़्तियार करने से आदमी यूंही दलदलों में फंसता है।

नाज़ेरीन के इत्मीनान के लिए, अमरोहवी साहब की एक रिवायत की क़लई खोल दी गई। इस तरह दीगर रिवायतों पर कभी मुफ़स्सल गुफ़्तगू होगी। इस तफ़्सीली गुफ़्तगू के बाद मुन्दरजा बाला सवालात के जवाबात यह हैं :

(1) यक़ीनन बिला शुबह यही अह्ले सुन्नत व जमाअत का मज़्हब है कि हज़रत अली मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा रज़ि अल्लाहु आला अन्हु की ख़िलाफ़ते हक़ है। फिर उसमान ज़ुन्नूरैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के बाद यही ख़लीफ़ा बरहक़ थे। हज़रत उसमान के क़ेसास न लेने और उसमें किसी क़िस्म की पहलू तही करने का इल्ज़ाम हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु पर लगाना क़तअन दुरुस्त नहीं।

(2) यज़ीद पलीद अपने फ़िस्क़ व फ़ुजूर और दीगर वजूहे शरईया की बिना पर इमामे आली मक़ाम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु और दीगर अइम्मा के नज़दीक यक़ीनन ख़िलाफ़त का अह्ल नहीं था, उसकी ख़िलाफ़त शरअन दुरुस्त नहीं थी।

(3) उसके बिल-मुक़ाबिल रैहाना–ए–रसूल हज़रत इमाम आली मक़ाम और उनके रुफ़क़ा का क़त्ल करना, ज़ुल्मे अज़ीम था। यह हज़रात मरतबा शहादत पर फाइज़ हुए।

(मौलाना मुहम्मद शरीफ़ुल-हक़ आज़मी)

फ़ित्न-ए-ख़वारिज

फ़ित्नों की अंधयारियों में सय्यदना अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हहुल-करीम वह रौशन चिराग़ थे जो आख़िरी वक़्त तक यक्सां नूर अफ़्शां रहे। तारीकियाँ सिमट सिमट कर उन पर हमला करतीं मगर नाकाम रहतीं। ज़ुल्मत पसन्द बढ़ कर उन पर फूंकें मारते लेकिन चिराग़े मुरतज़वी क़ी लौ में थर थराहट भी पैदा नहीं होती। वह ज़िन्दगी की आख़िरी मंज़िल तक अल्लाह के दीन और उसके रसूले ख़ातिम की सुन्नत पर मुस्तक़ीम रहे और उनके पाए इस्तिक़ामत में कभी लग़्ज़िश न आई, उनकी ज़ात को अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ने सैयदना ईसा अलैहिस्सलाम की तरह आज़माइश गाह बनाया। एक गरोह ने उनसे इतनी नफ़रत की कि उन्हीं को काफ़िर ठहरा दिया और दूसरे गरोह ने इतनी मुहब्बत की कि ख़ुदा ठहरा दिया। यह दोनों ही गरोह हक़ से दूर और दोनों ही के दिल हुब्बे दुनिया से मामूर थे।

"अली मुर्तज़ा को हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम की यह पेशगोई याद थी : **फ़ीका मिस्ला मिन ईसा** तुम में ईसा अलैहिस्सलाम की एक मुशाबेहत है। यहूद ने उन से नफ़रत की हत्ता कि उनकी मां पर बुहतान बांधा, नसारा ने मुहब्बत में उनको वह मर्तबा दिया जो उनका न था।"

"सैयदना अली मुर्तज़ा ने फ़रमाया, मेरी ज़ात में दो तरह के लोग तबाह होंगे। एक वह जो मेरी मुहब्बत से इफ़रात से काम लेकर मुझे वह मरतबा अता करेगा जो मुझे हासिल नहीं और दूसरा वह जिसे मेरी अदावत मुझ पर बुहतान बांधने पर आमदा करेगी।" (अहमद बिन हंबल)

इस हदीस के मिस्दाक़ बिला शुबह रवाफ़िज़ व ख़वारिज हैं। अव्वलुज़्ज़िक्र ने मुहब्बते अह्ले बैत को और सानियुज़्ज़िक्र ने **इन्नल-हुक्मा अल-आयह** को आड़ बनाया। फिर दोनों ने इस आड़ में वह कारनामे अंजाम दिए कि दीन व तक़्वा, ईमान व इख़्लास दर्द व कर्ब से चीख़ उठे।

रवाफ़िज़ ने अली मुर्तज़ा को मासूम क़रार देकर मंसबे नुबुव्वत पर बैठाया और अपनी खाना साज़ मुहब्बत के नशा से मख़्मूर हो कर उन के मम्दूहों को ख़ारिज अज़ इस्लाम कर दिया। हत्ता कि अबुल-बशर सैय्यदना

आदम अलैहिस्सलाम तक में उसूले कुफ़्र पाए जाने का दावा कर दिया। और ख़वारिज ने दीगर सहाबा के साथ बुग्ज़ अली को अपना शेआर बनाया और उसे इस दरजा बढ़ा दिया कि उनके नज़्दीक "तक्फीर अली" अलामते ईमान और "तहसीन अली" अलामते कुफ़्र करार पाई। हज़रत शेरे खुदा कर्रमल्लाहु वज्हहुल-करीम को हुज़ूरे कौनैन अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम की यह बात भी याद थी :

"मुझे उस ज़ात की क़सम जिसने दाने उगाए और जानदार मख़्लूक़ पैदा की और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेही व सल्लम ने मुझ से फरमाया :

तरजमा : मोमिन मुझ से मुहब्बत करेगा और मुनाफ़िक़ मुझ से बुग्ज़ रखेगा।"

बुग्ज़ की इंतिहा यह है कि सैय्यदना अली मुर्तज़ा के नूरुल-ऐन हुसैन अलैहिस्सलाम को जामे शहादत नोश फ़रमाए सदियाँ गुज़र गईं मगर खुरूज के नाहंजार फ़रज़न्द आज भी इमाम आली मक़ाम को दुनिया परस्त और जाह परस्त क़रार देकर अपने दिल की भड़ास निकाले जा रहे हैं।

ख़वारिज की इब्तिदा : ख़वारिज का ज़ुहूर अगरचे जंगे सफ़्फ़ैन में हुआ, इसलिए मुअर्रेख़ीन उनकी इब्तिदा वहीं से करते हैं मगर हक़ीक़त में उनकी बुनियाद अह्दे नुबुव्वत में पड़ गई थी जबकि उनके ज़ईमे अव्वल ने हुब्बे दुनिया से मख़्मूर हो कर आदिलों के आदिल पर बेइंसाफ़ी का इल्ज़ाम लगाया था।

हज़रत अबू सईद खुदरी फ़रमाते हैं हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम माले ग़नीमत तक़्सीम फरमा रहे थे कि अब्दुल्लाह ज़विल-ख़वाहिरा तमीमी आया कहने लगा, या रसूलुल्लाह! अद्ल फरमाइए! हुज़ूर ने फरमाया तेरी ख़राबी हो! मैं अद्ल नहीं करूँगा तो फिर कौन करेगा? हज़रत फ़ारूके आज़म ने अर्ज़ की हुज़ूर! इजाज़त दें तो उसकी गर्दन उड़ा दूँ। फरमाया रहने दो। उसके कुछ साथी ऐसे होंगे कि तुम अपनी नमाज़ों और रोज़ों को उनकी नमाज़ों और रोज़ों के मुक़ाबिल हक़ीर समझोगे। यह दीन से ऐसे निकल जाएंगे जैसे शिकार से तीर नजासत और ख़ून से आलूद हुए बग़ैर निकल जाता है। इस जमाअत की अलामत एक ऐसा शख़्स होगा जिसका एक हाथ या एक पिस्तान औरत

के पिस्तान की तरह होगा। यह जमाअत उस वक़्त निकलेगी जब लोग दो जमाअतों में बटे होंगे। अबू सईद ख़ुदरी ने फ़रमाया, मैं गवाही देता हूँ मैंने यह बात हुज़ूर से सुनी और मैं उसकी भी गवाही देता हूँ कि हज़रत अली ने जब उन लोगों को क़त्ल किया तो मक़्तूलीन में से वह शख़्स ठीक उसी सिफ़त का निकाल कर लाया गया जिसकी निशानदेही सरकार ने फ़रमाई थी और उसी शख़्स के मुतअल्लिक़ यह आयत नाज़िल हुई थी : **व मिन्हुम मन यल्मेज़ुका फ़िस्सदक़ाते अल-आयह।** (बुख़ारी)

(2) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद फरमाते हैं ग़ज़व-ए-हुनैन के बाद हुज़ूर ने अशराफ़े अरब को अतीयात दिए तो एक शख़्स ने कहा, यह ऐसी तक़्सीम है जिसमें अद्ल नहीं किया गया। हुज़ूर को जब उसकी इत्तिला हुई तो चेहर-ए-अक़्दस तिमतिमा उठा यहाँ तक कि सुर्ख़ हो गया। फरमाया, जब अल्लाह व रसूल ही अद्ल न करे तो कौन करे? अल्लाह मूसा पर रहम फरमाए, उनको इससे ज़्यादा अज़ीयत दी गई और उन्होंने सब्र किया। (मुस्लिम)

(3) जाबिर बिन अब्दुल्लाह फरमाते हैं हुनैन से वापसी में बमक़ाम जाराना एक शख़्स बहुज़ूरे नबवी आया। बई हाल बिलाल की चादर में चाँदी थी और हुज़ूरे अक़्दस उस से लेकर लोगों को दे रहे थे। उस शख़्स ने कहा ऐ मुहम्मद! अद्ल करो। हुज़ूर ने फ़रमाया तेरी ख़राबी हो! अगर मैं अद्ल न करूंगा तो कौन करेगा? हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ की हुज़ूर! इजाज़त दें इस मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़ा दूँ। फ़रमाया मआज़ल्लाह! तब लोग यह कहेंगे मैं अपने साथियों को क़त्ल करूँगा। बिला शुबह यह और इसके साथी क़ुरआन पढ़ते हैं जो इनके जबड़े से आगे नहीं बढ़ता। यह दीन से इस तरह निकल जाएंगे जिस तरह तीर शिकार से। (मुस्लिम)

इन अहादीस से वाज़ेह हुआ कि ख़वारिज का ज़ईमे अव्वल जिसकी नस्ल से यह गिरोह ज़ुहूर करने वाला था, अह्दे रिसालत में मौजूद था। अब उनके ज़ुहूर के मुतअल्लिक़ दो एक हदीस मुलाहिज़ा कीजिए।

(4) हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहुल-करीम फरमाते हैं कि मैंने हुज़ूर को यह फरमाते सुना कि अंक़रीब एक जमाअत निकलेगी लेकिन ईमान उनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा। पस ऐसे लोगों से तुम जहाँ मिलो। उन्हें

क़त्ल करो। उनके क़ातिलों के लिए क़्यामत में बड़ा अज्र है। (बुख़ारी) (ख़ुलासा)

(5) सहल बिन हनीफ़ से पूछा गया आपने ख़वारिज के मुतअल्लिक़ हुज़ूर से कुछ सुना है? उन्होंने कहा, हुज़ूर को मैंने इराक़ की तरफ इशारा करते हुए सुना। यहाँ से एक क़ौम ख़ुरूज करेगी, वह इस्लाम से इस तरह ख़ारिज हो जाएंगे जैसे तीर शिकार से। (बुख़ारी) (ख़ुलासा)

जंगे सफ़्फ़ैन : में हज़रत मुआविया व हज़रत अली के दरम्यान जो मुआहदा हुआ, उसमें यह था कि "हम अल्लाह के हुक्म और उसकी किताब की तरफ रुजूअ़ करते हैं, उसके सिवा कोई हमें जमा करने वाला नहीं, अल्लाह की किताब हमारे दरम्यान फातिहा से ख़ातिमा तक फ़ैसला कुन है। जिसको अल्लाह की किताब ने जारी व नाफ़िज़ किया, उसे हम जारी व नाफ़िज़ करेंगे और जिस चीज़ को उसने मिटाया हम उसे मिटा देंगे। पस हक्मैन (अबू मूसा अशअरी व उमर बिनुल-आस) जो बात किताबुल्लाह में पा लें उस पर अमल करेंगे, अगर वहाँ न मिले तो फिर रसूलुल्लाह की सुन्नते आदेला उनके फ़ैसला व हुक्म का मरजा होगी।

(कामिल इबने असीर)

लेकिन अभी इस वसीक़ा की सियाही भी ख़ुश्क न हुई थी कि ख़वारिज ने उसका इंकार कर दिया और **ला हकमा इल्लल्लाहु** का नारा लगाया।

लुत्फ़ की बात यह है कि फ़रीक़ैन के झगड़े को तय करने के लिए उन्हीं ख़वारिज ने तहकीम को मानने और इराक़ियों की तरफ से हज़रत अबू मूसा अशअरी को हकम मुक़र्रर किए जाने पर मजबूर किया था और जब मुआमला तय हो गया जो किताब व सुन्नत की रू से बिल्कुल जाइज़ था, तो उन्हीं ख़वारिज ने अपनी हिमाक़त और शरारत से **ला हकमा इल्लल्लाहु** का नारा लगा कर तहकीम को कुफ़्र क़रार दिया कि :

"जब हुक्म और फ़ैसला सिर्फ़ अल्लाह का हक़ है तो फिर उमर बिन आस और हज़रत अबू मूसा का हकम बनना या बनाया जाना नाजायज़ है।"

यह इस्तिदलाल इतना ना माकूल और अहमक़ाना है कि दीन की पूरी इमारत ज़मीन से आ लगती है इसलिए कि अल्लाह तआला बराहे रास्त इंसानों से मुख़ातिब हो कर न हुक्म देता है और न उसकी उतारी हुई

किताब वजूदे नातिक़ है कि ख़ुद तकल्लुम करे और अपना कोई हुक्म या फ़ैसला सुनाए। जब हाल यह है तो अम्र व नह्य व क़ानून व आईन का यह दफ़्तर सिर्फ़ ज़ीनत ताक़ ही बन सकता है।

सैय्यदना अली मुर्तज़ा ने उनके इस्तिदलाल के लग़्व और बातिल होने के मुतअल्लिक़ उन्हें बहुत समझाया। आपने फरमाया :

"हमने इंसानों को हकम नहीं बनाया बल्कि कुरआन को बनाया है और यह कुरआन लिखी हुई किताब है जो ख़ुद नहीं बोलती बल्कि उसका तकल्लुम इंसान ही करते हैं।"

फिर आपने एक बड़े साइज़ का कुरआन मजीद मंगाया :

(फ़त्हुल-बारी बहवाला अहमद व तबरी)

तरजमा : और उस पर हाथ रख कर फरमाया ऐ मुसहिफ़! लोगों से बातें कर ले।

सैय्यदना अली मुर्तज़ा के उन जुमलों और अमली तशरीह ने ख़वारिज के बातिल इस्तिदलाल की हक़ीक़त उन पर खोल दी मगर इसके बावजूद सफ़्फ़ैन से वापसी पर बारह हज़ार ख़ार्जी हरवरा में ख़ेमा ज़न हो गए और उन्होंने शीस बिन रजई को अपना अमीरुल-क़ेताल और अब्दुल्लाह बिन अलकवा यशकरी को अमीरुस्सलात मुक़र्रर कर लिया। जनाब अमीर ने उस मौक़ा पर भी उन्हें शरारत से बाज़ रहने की तल्क़ीन की और उन से पूछा, तुम्हारा लीडर कौन है?

"इब्ने अलकवा।"

"किस चीज़ ने तुम्हें हमारे ख़िलाफ़ ख़ुरूज पर मज्बूर किया?"

"सफ़्फ़ैन में तहकीम ने।"

"तहकीम का मतलब तो यह है कि वह किताब व सुन्नत के मुताबिक़ फ़ैसला करेंगे। उसके ख़िलाफ़ जाएंगे तो हम उनके हुक्म और फ़ैसला से बरी हैं।"

"अच्छा यह बताइए कि आपने तहकीम के लिए मुद्दत क्यों मुक़र्रर की, फौरन फ़ैसला क्यों न कराया?"

"इसलिए कि नावाक़िफ़ इल्म हासिल कर ले और आलिमे सबात व इस्तिक़्लाल हासिल कर ले और शायद इस मुद्दत में अल्लाह इस उम्मत की इसलाह फरमा दे।"

यहाँ बातें ख़त्म हो गईं और ख़वारिज आपके हुक्म के मुताबिक़ कूफ़ा

में आ गए लेकिन उनका मक़्सद किसी बात को समझना और उस पर अमल करना तो था नहीं। कुरआन उनके हल्कूम से उतरता नहीं था कि उसकी हक़ीक़त को पा सकें, कूफ़ा में आ कर फिर उन्होंने वही बातें दोहरानी शुरू कर दीं जिनके तशफ़्फ़ी बख़्श जवाब दिए जा चुके हैं। जब सैयदना अली मुर्तज़ा ने हज़रत मूसा अशअरी को मक़ामे तहकीम पर भेजना चाहा तो ख़ार्जी फिर वही नारा बोल उठे। **ला हकमा इल्लल्लाहु।** उनके एक लीडर ने कहा, हकम का हक़ सिर्फ़ अल्लाह को है, आप अपनी ख़ता से तौबा कीजिए। वसीक़ा चाक कीजिए और जंग शुरू कर दीजिए। हज़रत अली ने जवाब दिया, जब हम मुआहदा कर चुके हैं तो फिर उसे कैसे तोड़ दें, उस पर एक ख़ार्जी ने कहा, वह गुनाह था उससे तौबा लाज़मी है। और अगर आप तहकीम से बाज़ न आए तो हम आपसे बवज्हल्लाह जंग करेंगे। उस मौक़ा पर आपने फरमाया :

"तेरी ख़राबी हो! तू किस क़दर बदबख़्त है, मैं देख रहा हूँ कि हवाएं तुझ पर ख़ाक डाल रही हैं।" और फरमाया "शैतान ने तुम्हें हैरान और ख़्वाहिश का बन्दा कर दिया है, अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर से डरो। तुम जिस दुनिया के लिए जंग कर रहे हो वह तुम्हारे लिए बेहतर नहीं।" (तबरी)

अल-ग़रज़ ख़वारिज फ़ित्ना अंगेज़ी में आगे बढ़ते गए यहाँ तक कि मस्जिद में ऐन खुत्बा की हालत में शर अंगेज़ी करने लगे। आख़िर कार यह एक जगह जमा हुए और उन्होंने खुरूज का फ़ैसला किया और नहरवान के पुल को अपना मुस्तक़िर तज्वीज़ किया और लड़ते भिड़ते नहरवान पहुँच गए।

ख़वारिज की जहालत व बरबरीयत : यहाँ उनकी शक़ावते क़ल्बी का एक वाक़या लिखा जाता है।

बसरा के ख़ार्जी नहरवान के क़रीब पहुँच चुके थे कि उनकी जमाअत का एक शख़्स नज़र आया जो गधे को हाँकता हुआ ला रहा था और उस गधे पर एक ख़ातून सवार थीं, ख़ार्जियों ने उन्हें पुकारा, वह घबरा गए क़रीब आए तो पूछा तुम कौन हो?

उन्होंने जवाब दिया, मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम के सहाबी खुबाब का बेटा अब्दुल्लाह हूँ।

हमने तुम्हें डरा दिया, डरो नहीं तुम्हें अमन है। अच्छा हमें अपने वालिद की ऐसी बात सुनाओ जो उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम से सुनी हो और हमें उससे फाइदा पहुँचे।

मुझ से मेरे वालिद ने यह हदीस ब्यान की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया। एक वक़्त ऐसा आएगा कि इंसान का क़ल्ब मर जाएगा, वह शाम को मोमिन होगा और सुबह को काफ़िर, सुबह को मोमिन होगा और शाम को काफ़िर।

क्या हमने तुम से ऐसी हदीस पूछी थी? अच्छा बताओ अबू बकर व उमर के मुतअल्लिक़ तुम्हारी क्या राय है और उसमान के बारे में क्या कहते हो?

"वह अव्वल व आख़िर हक़ पर थे।"

अच्छा अली के बारे में क्या कहते हो, तहकीम से पहले और तहकीम के बाद?

"वह तुम से ज़्यादा अल्लाह का इल्म रखते हैं। तुम से ज़्यादा दीन के मुहाफ़िज़ और बसीरत वाले हैं।"

यह सुन कर ख़वारिज ने कहा, हम तुमको इस तरह क़त्ल करेंगे कि अब तक किसी को न किया होगा। उसके बाद हज़रत अब्दुल्लाह को घेर कर गिरफ़्तार किया और उनकी बीवी को जो हामिला थीं और वज़अ़े हमल का ज़माना क़रीब था, लिए हुए एक दरख़्त के नीचे आए और हज़रत अब्दुल्लाह को पछाड़ कर ज़िब्ह कर डाला फिर उनकी बीवी की तरफ़ मुतवज्जेह हुए ख़ातून ने कहा, मैं औरत हूँ, क्या तुम ख़ुदा से नहीं डरते? लेकिन बेरहमों ने उनका पेट चाक कर डाला, उनकी जान ली और बच्चा को भी जो उनके पेट में था मार डाला।" (इब्ने असीर)

इस एक वाक़िया से ही ख़वारिज की शक़ावत व क़सावत की पूरी तस्वीर सामने आ जाती है और तफ़्सील के लिए दफ़्तर दरकार है। ग़रज़ यह कि ख़वारिज बदस्तूर फसाद अंगेज़ी में मशग़ूल रहे। उन्होंने क़त्ल व ग़ारत का सिलसिला शुरू कर दिया और हक़ परस्त मुसलमानों की जान, माल, आबरू उनकी दस्त दराज़ियों से ख़तरे में पड़ गई। इन हालात का तक़ाज़ा यह था कि ख़वारिज के फ़ित्ना को दबा दिया जाए, सैयदना अली मुर्तज़ा की निगाहे हक़ से यह तक़ाज़ा मख़्फ़ी नहीं रह सकता था। इस सिलसिला में सही मुस्लिम की रिवायत इतनी वाज़ेह है कि उस पर किसी तारीख़ी रिवायत को तरजीह नहीं दी जा सकती। यहाँ सिर्फ़ इसी रिवायत के ख़ुलासा पर इक्तिफ़ा करता हूँ।

ज़ैद बिन वहब कहते हैं, मैं हज़रत अली की फौज में था जो ख़ुद उनके साथ ख़वारिज की तरफ रवाना हुई थी। हज़रत अली ने फौज को मुख़ातिब हो कर फ़रमाया, ऐ लोगो! हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि मेरी उम्मत से एक क़ौम निकलेगी जो कुरआन पढ़ती होगी, उसकी क़िराअत, नमाज़ और रोज़ों के मुक़ाबिल तुम अपनी नमांज़ों, रोज़ों को हक़ीर समझोगे। वह कुरआन पढ़ेंगे और समझेंगे कि उनके लिए नफ़अ़ बख़्श है हालांकि वह उन पर वबाल होगा। वह इस्लाम से इस तरह ख़ारिज हो जांएगे जिस तरह शिकार को छेद कर तीर निकल जाता है। रसूलुल्लाह ने फ़रमाया है, फौज उन से मुक़ाबला करेगी वह सिर्फ़ उसी अमल पर भरोसा करके दूसरे अमल से बेपरवाह हो जाएंगे। मुझे उम्मीद है कि यह वही जमाअत है जिसकी निशानदेही हुज़ूर ने फ़रमाई थी क्योंकि उन्होंने नाहक़ ख़ून बहाया और लोगों के अमवाल में ग़ारतगरी की है पस अल्लाह का नाम ले कर चलो। (मुस्लिम शरीफ़)

अल-ग़रज़ सय्यदना अली मुर्तज़ा ने शरारत और जंग से बाज़ आने की दावत दी मगर उन्होंने एक न मानी और आपके लश्कर पर हमला कर दिया और नतीजे पर चन्द के सिवा तमाम ख़ार्जी ढेर थे। मुस्लिम शरीफ़ में है कि :

"हज़रत अली की फौज ने उन्हें नेज़ों पर रख लिया। ख़वारिज यके बाद दीगरे क़त्ल हुए और हज़रत अली की फौज के सिर्फ़ दो आदमी शहीद हुए।"

जंग ख़त्म होने के बाद ज़िस्सदिया की तलाश हुई। आख़िर लाशों के ढेर में वह पड़ा हुआ मिला। हज़रत अली ने अल्लाहु अक्बर कहा और फ़रमाया, अल्लाह ने सच कहा और उसके रसूल ने हम तक हक़ पहुँचाया।

यह थे ख़ार्जी और यह है ख़ार्जीयत, जिसका निहायत ही मुख़्तसर सा नक़्शा आपके सामने पेश किया गया। अगरचे नहरवान के मैदान में ख़वारिज के असल और उनके लीडर मारे गए लेकिन जो फित्ना एक बार सर उठा लेता है वह ख़त्म नहीं होता। जो नहरूवान से बच गए मुख़्तलिफ़ शहरों में जा बसे और वहाँ उन्होंने अपने बातिल इस्तिदलाल की तबलीग़ व इशाअत शुरू कर दी और इस तरह ख़ार्जीयत एक मुस्तक़िल मज़्हब बन गई।

(अल्लामा महमूद अहमद रज़वी)

यज़ीद और उसका किरदार

मिश्कात शरीफ़ हदीस पाक की मशहूर किताब है, उसी किताब का फार्सी तरजमा मुख्तसर शरह के साथ "अश्अतुल्लमआत" के नाम से मशहूर है। उसके मुतर्जिम और शारेह हज़रत शैख़ मुहद्दिस देहलवी की शख़्सियत भी मुहताजे तआरुफ़ नहीं। आपने अश्अतुल्लमआत की चौथी जिल्द के "बाब मनाक़िबुल-कुरैश व ज़िक्रुल-क़बाइल" की एक हदीस की शरह करते हुए यज़ीद पर रौशनी डाली है। पहले इस हदीस को पढ़िए फिर उनकी राय का मुताला कीजिए।

तरजमा : उमर बिन हसीन से मरवी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस हाल में वेसाल फरमाया कि आप तीन क़बीलों को नापसन्द फरमाते थे, एक क़बीला सकीफ़ है जिस क़बीला में मशहूर ज़ालिम हज्जाज बिन यूसुफ़ गुज़रा है, दूसरा क़बीला बनी हनीफ़ा जिसका मुसैलमा कज़्ज़ाब एक फ़र्द था और तीसरा बनी उमैया का क़बीला है जिस क़बीला से उस इब्ने ज़्याद का तअल्लुक़ है जो इमाम शहीद हुसैन बिन अली इब्ने हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा की शहादत का बानी व फाइल था।

लोगों ने हुज़ूर को तीनों क़बीलों के नापसंद फरमाने की वजह यह क़रार दी है कि मज़्कूरा बाला तीनों अफ़राद ऐसे गुज़रे हैं जिनके सियाह कारनामों की वजह से हुज़ूर उन क़बाइल से नाख़ुश थे। यह हज़रात हुज़ूर के वक़्त न थे मगर हुज़ूर को उनके किरदार का इल्म अल्लाह की तरफ से क़ब्ल ही हो चुका था। इसलिए आपके क़ल्बे मुबारक पर यह क़बाइल गिरां थे। इस से हुज़ूर की ग़ैब दानी का सुबूत बहम होता है। हज़रत शैख़ अब्दुल-हक़ मुहद्दिस देहलवी को बनी उमैया की न पसन्दीदगी की इल्लत महज़ इब्ने ज़्याद को क़रार देनी पसन्द नहीं है चुनांचे इस तौजीह पर इस तरह तंक़ीद फरमाते हैं।

शैख़ अब्दुलहक़ मुहद्दिस देहलवी की तंक़ीद

तरजमा : इस क़ाइल के हाल पर तअज्जुब है कि यज़ीद का नाम न लिया हालांकि इब्ने ज़्याद का अमीर भी यज़ीद ही था। इब्ने ज़्याद ने जो

कुछ भी किया, यज़ीद के हुक्म और उसकी रज़ा से किया। एक इब्ने ज़्याद और यज़ीद ही क्या, बाक़ी बनी उमैया ने भी अपने-अपने स्याह कारनामों में कोई कमी नहीं की है। सिर्फ़ यज़ीद व इब्ने ज़्याद को क्या कहा जाए! दूसरी हदीस में है कि सरकारे दो आलम ने ख़्वाब देखा कि आपके मिंबर शरीफ़ पर बन्दर खेल रहे हैं, आपने ख़्वाब की ताबीर बनी उमैया ही को क़रार दिया। इसके अलावा और भी बहुत सी बातें बनी उमैया के मुतअल्लिक़ हदीसों में हैं उसके मुतअल्लिक़ क्या कहा जाए।

आपने देखा कि हज़रत शैख़ ने यज़ीद और दूसरे अमवी हज़रात के हालात किस तअस्सुफ़ व इन्दोह के साथ ब्यान फरमाए हैं और बनी उमैया के किरदार के मुतअल्लिक़ दूसरी हदीसों की जानिब "दीगर चीज़हा बिस्यार अस्त।" फरमा कर इशारा फरमाया है कि क्या किसी मुत्तक़ी और आदिल ख़लीफ़ा बरहक़ के ख़िलाफ़ ऐसी शहादतें मौजूद हैं? वह भी सिर्फ़ मुअर्रिख़ महज़ की गवाही नहीं है। यह तक़ीद महज़ तारीख़ी ज़ेब दास्तान की बुनियाद पर भी नहीं है बल्कि हदीस की जुमला एहतियातों की बुनियाद पर मब्नी है। उसका क़लम चल रहा है जो मुहक़्क़िक़ अलल-इतलाक़ है, जो फन्ने हदीस में बुलन्द पाया है, जिसकी इल्मी निगाह से इल्मे कलाम, फ़िक़्ह, अक़ाइद, हदीस और कोई भी फ़न ओझल नहीं, फिर मज़्कूरा बाला हदीस के मख़रज भी इमाम तिर्मिज़ी हैं जिन्होंने अपनी जामे में उसको नक़्ल किया।

यज़ीद अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती की निगाह में

शैख़ देहलवी के बाद मुहद्दिसे आज़म मुफ़स्सिरे अक्बर अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती की किताब "तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा" पढ़िए, देखिए कि यज़ीद की क्या भयानक शक्ल नज़र आ रही है। क्या ऐसे जलालुल-मिल्लते वद्दीन की जलीलुल-क़द्र शहादत के होते हुए किसी के ज़ोरे क़लम से यज़ीद का तक़्वा और उसकी अदालत साबित हो सकती है? ख़ुद फ़ैसला कीजिए।

तरजमा : रूयानी ने हज़रत अबू दरदा से अपनी मसनद में तख़रीज की है कि मैंने हुज़ूर को यह फरमाते सुना कि मेरी सुन्नत का बदलने वाला पहला शख़्स बनी उमैया से होगा जिसको लोग यज़ीद कहा करेंगे।

क्या मुत्तक़ी और आदिल उसी को कहते हैं जो सुन्नते रसूल को बदल डाले? और क्या तक़्वा व अदालत तग़य्युर व तब्दील सुन्नत का नाम है?

तरजमा : नौफ़ल बिन अबुल–फ़ुरात ने फरमाया कि मैं उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ के पास हाज़िर था पस एक शख़्स ने यज़ीद का तज़्किरा करते हुए उसको अमीरुल-मुमिनीन यज़ीद इब्ने मुआविया कहा। यह सुनना था कि उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ का पारा गरम हुआ। आपने फ़रमाया कि तू यज़ीद को अमीरुल-मुमिनीन कहता है? फिर आपके हुक्म से उस क़ाइल को बीस कोड़े मारे गए।

हज़रात! हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ बनी उमैया ही के चश्म व चिराग़ हैं मगर "तीन" पर दीन ग़ालिब है तो यज़ीद को अमीरुल-मुमिनीन कहना भी बर्दाश्त न कर सके और ताज़ीरन बीस कोड़ों की सज़ा दी। इस दौरे बेदीनी में यज़ीद को अमीरुल-मुमिनीन, ख़लीफ़ा बरहक़, मुत्तक़ी और आदिल कहने वाले को कौन सज़ा दे। काश आज भी वह दौर होता तो न मालूम इन अल्फ़ाज़ की तौहीन के सिलसिला में कितने कोड़े लगवाए जाते। इस्लाम के इस मुजिद्दिद अव्वल ने अब्बासी साहब के मम्दूह की क़द्र न की, न मालूम उनको क्या कहेंगे। जिस तरह यज़ीद के मुबद्दल सुन्नत होने के पेशीनगोई लिसाने नुबुव्वत से साबित है उसी तरह उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ के मुजद्दिद मुहीये सुन्नत होने की पेशीनगोई भी मौजूद है, यह सब ग़ैबदानी रसूले पाक की वाज़ेह अलामतें हैं।

हर्रा के दिल्दोज़ वाक़ेआत का ब्यान करते हुए अल्लामा सुयूती लिखते हैं :

तरजमा : अह्ले मदीना के ख़ुरूज व ख़लअ़ हुकूमत का सबब यह था कि यज़ीद बेशक व शुबह गुनाहों में हद से ज़्यादा बढ़ जाने वाला बन गया था। चुनांचे वाक़ेदी ने चन्द तरीक़ों से यह रिवायत की है कि हज़रत हंज़ला के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह ने बक़सम फ़रमाया कि यज़ीद पर हम लोगों ने उस वक़्त ख़ुरूज किया जब हमें ख़ौफ़ हो गया कि उसकी मासियत कोशियों की वजह से हम लोगों पर आसमान से पथराव किया जाएगा। वह ऐसा गुनाह का मुजस्समा बन गया कि माओं, बेटियों, बहनों से निकाह

करता, शराब पीता और नमाज़ नहीं पढ़ता। अल्लामा ज़हबी ने फ़रमाया कि जब यज़ीद ने अह्ले मदीना के साथ शराब नोशी और इर्तिकाब मुंकिरात के अलावा बुरा सुलूक किया, उस पर हम लोगों में जोश पैदा हो गया फिर उसके ख़िलाफ़ बहुतों ने ख़ुरूज किया और क़ुदरत ने उसकी ज़िन्दगी व हयात से बरकत उठा ली। अलख़

अल-ग़रज इस इबारत को बग़ौर पढ़िए और फ़ैसला कीजिए कि ऐसे किरदार का इंसान मुत्तक़ी होगा। आदिल होगा, ख़लीफ़ा बरहक़ होगा? कौन से मुंकिरात हैं जो उसमें न थे और कौन सी नेकियाँ और ख़ूबियाँ हैं जो उसमें थीं! ऐसों का मद्दाह कैसा और क्या होगा?

क्या उसकी अदालत व इत्क़ा के लिए कोई दूसरी मख़्सूस शरीअत थी? जवारे रसूल व मदीनतुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ऐसी ऐसी बेहुर्मती की गई है जिसका अह्ले ईमान किस तरह तज़्किरा करे, वह मदीना तैबा और अह्ले मदीना जिनके मुतअल्लिक़ सरकार ने फरमाया :

तरजमा : जिसने अह्ले मदीना को डराया, उसको अल्लाह तआला डराएगा और उस बदनसीब पर अल्लाह तआला, उसके जुमला फ़रिश्तों और कुल इंसानों की लानत होगी।

उसने सिर्फ़ डराया ही नहीं बल्कि बहुत से सहाबा किराम को सर ज़मीने तैबा में हुज़ूर के रू-ब-रू क़त्ल किया और मदीना पाक को लूटा और हज़ारों इस्मत मआब इस्लाम की बेटियों की आबरू रेज़ी की। उन करतूतों पर लानतों की कोई हद होगी!

हरम मक्का शरीफ़ जिसकी इज़्ज़त व शर्फ़ यह है कि सिर्फ़ सरकार के लिए फ़तहे मक्का के दिन चन्द साअतों के लिए क़िताल हलाल किया गया वरना वहाँ क़त्ल व ख़ून को सोचना कैसा बल्कि जूं चीलर तक को मारने की इजाज़त नहीं, वहशी पनाह गीर जानवर के आराम व सुकून में ख़लल डालने की एबाहत नहीं।

मगर इस तंग इस्लाम बद नसीब शक़ी अज़ली यज़ीद ही का यह कारनामा है जिसने मदीना मुनव्वरा की बेहुरमती और लूट खसूट के बाद मक्का मुअज़्ज़मा की हतक हुर्मत की ख़ातिर लश्कर कुशी कराई।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर से लड़ने के जोश में उसने ख़ाना काबा का भी कुछ पासे अदब मलहूज़ न रखा। अल्लामा सुयूती लिखते हैं :

यज़ीदी लश्कर मदीना तैयबा की ताराजी के बाद मक्का मुअज़्ज़मा आया, हज़रत इब्ने ज़ुबैर का मुहासरा कर लिया, उन से क़िताल किया और उन पर मिंजिनीक़ के ज़रिया आतिश बाज़ी की। यह वाक़िया माह सफ़र 64 हिजरी में रूनुमा हुआ। जिस आग के शोअलों से काबा के पर्दे और उसकी छत जल गई और उस मेढे की दो सींगें भी जल गई जो हज़रत इस्माईल के फ़िदया में अल्लाह तआला ने जन्नत से भेजा था और वह दोनों सींगें काबा की छत में थीं, अल्लाह तआला ने यज़ीद को इसी साल रबीउल-अव्वल के निस्फ़ महीना गुज़रते ही हलाक फ़रमा दिया।

देखना यह है कि यज़ीद का तक़्वा और अदालत और उसकी ख़िलाफ़ते हुकूक़ उन हक़ाइक़ से आंख मींच कर झूठ का तूमार बांधना किस इंसान की सीरत होगी, इसका फ़ैसला क़ारईन ही फरमाएंगे।

औलादे रसूल से यज़ीदी ज़ुल्म का आग़ाज़ हुआ, ख़्वाबगाह महबूबे किब्रिया तक पहुँचा, आख़िर हरमे ख़ुदा तक आकर मुंतहा हुआ। और इस इंतिहा-ए-ज़ुल्म के साथ ज़ुल्म व अदवान के इफ़रीत अक्बर का भी चिराग़ ज़िन्दगी बुझ कर ख़ाक में मिल गया। ज़रा इस इबारत को भी पढ़ लीजिए अल्लामा सुयूती लिखते हैं :

"हज़रत इमाम आली मक़ाम हुसैन अलैहिस्सलाम जब कूफ़ियों के मुसलसल बुलावे के ख़ुतूत से मज्बूर हो कर कूफ़ा की तरफ़ रवाना हुए, अभी रास्ता ही में थे कि कूफ़ियों ने बे वफ़ाई शुरू कर दी।"

तरजमा : यानी कूफ़ियों ने हज़रत का साथ छोड़ दिया, जिस तरह कूफ़ा वालों का बर्ताव इसके पहले हज़रत अली के साथ हो चुका था। इसके बाद लिखते हैं, जब असलहा जंगी की यह सैलाब सामने आ गया तो हज़रत इमाम ने उन लोगों के सामने सुलह व सलामती का पैग़ाम पेश किया और इंक़ियाद की दावत दी (जिसके लिए उन्हीं लोगों ने मक्का के गोशा आफ़ियत से आपको ज़हमत तकलीफ़ दी थी और यह मंज़ूर न हो तो जहाँ से तशरीफ़ लाए थे वहीं लौटने दें या यज़ीद तक आज़ादाना जाने

दें ताकि उसी के हाथ में हाथ रख देंगे, बीच में दलाली की ज़रूरत किया) मगर शरारत के पुतलों ने आपको शहीद करने के सिवा किसी तजवीज़ को तस्लीम नहीं किया। बिल-आख़िर आप शहीद किए गए और आपका सर पाक एक तश्त में लाया गया इब्ने ज़्याद के सामने रखा गया। अल्लाह की लानत हो आपके क़ातिल पर, उनके साथ इब्ने ज़्याद पर और यज़ीद पलीद पर भी।

हज़रत इमाम की शहादत के दर्द अंगेज़ वाक़िआत पर अल्लामा सुयूती ने जिस कुर्ब व इज़्तिराब का इज़हार किया है वह इस इबारत से रौशन है:

तरजमा : यानी आपकी शहादत के क़िस्से दराज़ हैं जिसके ज़िक्र को क़ल्ब बर्दाश्त नहीं कर सकता।

क़ारेईन हज़रात के सामने इन इबारतों के सिर्फ़ इसी पहलू को रखता हूँ कि आदिल, मुत्तक़ी ख़लीफ़ा बरहक़ पर लानत की बौछार हो सकती है। अल्लामा सुयूती की निग्रह में यज़ीद किया है, उसके किरदार कैसे हैं? ख़ुद ग़ौर फरमाएं।

किसी को धोखा न खाना चाहिए कि हज़रत इमाम अलैहिस्सलाम ने आख़िर यज़ीद के हाथ में हाथ देने की शर्त क्यों रखी तो उसका जवाब यह है कि अगर इमाम उसकी बैअत को सही समझते तो अव्वल ही दिन मदीना में बैअत कर लेते मदीना छोड़ कर मक्का क्यों आते। फिर यज़ीद के नाइबों ही के हाथ पर बैअत कर लेते। बैअत के लिए यज़ीद के मख़्सूस हाथ ही की क्या ज़रूरत थी। इस से इमाम का मक़सद साफ़ ज़ाहिर हो रहा है कि इन ग़द्दारों के सामने आप यह हक़ीक़त रखना चाहते हैं कि मैं ख़ुद नहीं आया, तुमने अपनी बैअत लेने के लिए बुलवाया? यह कैसा उल्टा मुआमला है? बुलाया किस काम के लिए, अब बुला कर मुझ से बैअत ले रहा है! तुम अगर अपनी साबिक़ बातों पर क़ाइम नहीं हो तो मेरी राह से अलग हो जाओ, मैं वापस हो जाता हूँ या मैं यज़ीद से बराहे रास्त बात कर लेता हूँ, इसमें दख़ल देना तुम्हारे मंसब से बाहर है। अल्लामा सुयूती की जितनी इबारतें नक़्ल की गई हैं, यह सब तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा में "यज़ीद बिन मुआविया अबू ख़ालिद अल-उमवी" के उनवान के तहत मौजूद हैं जो देखना चाहें वहाँ देख लें।

तारीख़ अबुल-फ़िदा जुज़्वे अव्वल : दो अज़ीम मुहद्देसीन की गवाही के बाद कुछ तारीख़ी शवाहिद भी ज़ेरे नज़र आ जाएं तो अच्छा है।

तरजमा : हज़रत हसन बसरी से हज़रत मुआविया के ख़िलाफ़ जो उनकी तंक़ीद मन्कूल है वह यह है कि हज़रत हसन बसरी ने फरमाया कि अमीर मुआविया में चार बातें ऐसी थीं कि अगर उनमें की एक ही होती तो भी उनकी उख़रवी हिलाकत के लिए काफी थी चे जाए कि चार चार हलाकत आफ़रीं बातें। इन चार में की पहली बात यह थी कि अमीर मुआविया ने शूरा के बग़ैर बज़ोरे तल्वार ख़िलाफ़त पर क़ब्ज़ा किया हालांकि उस वक़्त साहिबे फ़ज़ीलत काफी सहाबा मौजूद थे। दूसरी बात यह है कि उन्होंने अपने बेटे यज़ीद को वली अहद बना दिया हालांकि वह बड़ा निशाना बाज़ शराबी था, रेशमी लिबास पहनता और तंबूर बजाया करता था।

हमें इस वक़्त सिर्फ़ यज़ीद की पारसाई तक़्वा और तहारत के ख़िलाफ़ तारीख़ी सुबूत मुहैया करना है, वह इस इबारत से वाज़ेह है कि वह बड़ा ही नशा बाज़ शराबी था। उसे शरई मुहर्रमात की कुछ परवाह न थी। हुदूदे इलाही से बेबाकाना टकराता था। उसकी अदालत व इत्क़ा की सना ख़्वानी करने वाले इस इबारत को भी मुलाहज़ा फरमाएं। हज़रत हसन बसरी ने जो अमीर मुआविया के मुतअल्लिक़ अपनी राय ज़ाहिर फ़रमाई है उस पर तंक़ीद का यह मौक़ा नहीं है इसलिए इस बात को मैं नज़र अंदाज़ करता हूँ।

अल्लामा तबरी ने हज़रत इब्ने ज़ुबैर की इस तक़रीर को नक़्ल किया है जो आपने मक्का शरीफ़ के अन्दर इमाम हुसैन की शहादत के बाद की थी। इस तक़रीर का वह हिस्सा जिसमें यज़ीद के मुक़ाबला में इमाम हुसैन की शख़्सियत दिखाई गई है यह है :

तरजमा : अल्लाह की क़सम! अल्लाह की क़सम! यज़ीदियों ने उस ज़ाते गिरामी को शहीद किया जिसका हुज़ूरे इलाही में रात को क़्याम दराज़ होता था और जो दिन को कसरत से रोज़ादार रहते थे। वह उन शख़्सियतों से ज़्यादा अहक़्क़े ख़िलाफ़त थे, दीन व फ़ज़्ल में उससे ऊला थे। अल्लाह की क़सम! हज़रत हुसैन कुरआन के बदले गाने में मशग़ूल न

थे, वह अल्लाह के ख़ौफ़ से रोने की बजाए लह्व में मशगूल न थे और न रोज़ा के बदले शराब नोशी में मह्व थे और न ज़िक्रे ख़ुदा की मज्लिसों को छोड़ कर शिकार के दिल दादा थे। इन बातों का तज़्किरा करके हज़रत इब्ने ज़ुबैर ने यज़ीद की तरफ तारीज़ की फिर आख़िर में फ़रमाया कि अंक़रीब यह बदबख़्त जमाअत जहन्नम की वादी ग़य में डाली जाएगी।

इस इबारत के मुताला से यज़ीद की ख़ौफ़नाक ज़िन्दगी, उसकी भयानक और क़बीह सीरत आंखों के सामने आ जाती है। हज़रत इमाम क़ाइमुल्लैल और साइमुन्नहार थे। यज़ीद की रात शराब नोशी और दिन शिकार बाज़ी में गुज़रते थे। इमाम हुसैन का नसबुल-ऐन क़ुरआन था और यज़ीद का मतमहे नज़र ग़िना व नग़मा था। इस हक़ीक़त के होते हुए कौन साहिबे दीन व दयानत ऐसा होगा जो यज़ीद की तक़्वा शिआरी का ख़ुत्बा देगा।

वक़्त की क़िल्लत, कामों की कसरत और मज़्मून के इरसाल की उज्लत ने मज्बूर किया कि इतने ही पर इक्तिफ़ा करूं वरना यज़ीद के फ़िस्क़ व फ़ुजूर और ज़ुल्म व अदवान की इतनी दराज़ कहानी है जो चन्द सफ़हों में सिमाई नहीं जा सकती : वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

(मौलाना सैयदुज़्ज़मां)

ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद तारीख़ की रौशनी में

बर्रे सग़ीर में अंग्रेज़ों ने अपनी अैयारियों और दसीसा कारियों से जब पूरे तौर पर अपने क़दम जमा लिए तो उन्हें महसूस हुआ कि हिन्दुस्तानी क़ौमें और बिल-ख़ुसूस मुसलमान सख़्त क़िस्म का मज़्हबी तशद्दुद रखने वाले लोग हैं। अपनी क़ौमी रिवायात और असलाफ़ की हुर्मत व इज़्ज़त की बक़ा के लिए जान देने से भी दरेग़ नहीं करते। चुनांचे 1857 ई० की जो नाकाम जंगे आज़ादी लड़ी गई उसी मज़्हबी तशद्दुद का नतीजा थी जिस में मुसलमान बहुत ज़्यादा पेश पेश थे।

इस जंग पर क़ाबू पा लेने के बाद अंग्रेज़ों का वह एहसास और ज़्यादा क़वी हो गया और उन्हें फ़िक्र हुई कि मुसलमानों को इस्लाम के नक़्शे क़दम से हटा कर इक नई डगर पर लगा देना चाहिए ताकि उनकी मज़हबी रूह मुर्दा हो जाए क्योंकि जब तक अस्लाफ़ से वाबस्तगी रहेगी, दीन की ख़ालिस रूह उनके दिल और दिमाग़ में रची बसी रहेगी और उनका मिली जोश हमेशा उस्तुवार रहेगा जिसका लाज़मी नतीजा होगा कि जब भी उनके मज़्हबी उमूर में किसी क़िस्म की मुदाख़लत होगी सर से कफ़न बाँध कर फिर मैदान में बराहे रास्त उस से किसी तरह नहीं कट सकते। इसलिए उनका मज़हबी जोश ख़त्म करने का वाहिद इलाज यही है कि असलाफ़ से उनका रिश्ता काट दिया जाए। इस काम के लिए बाज़ लोग अंग्रेज़ों को आसानी से मिल गए। उन्होंने अइम्म-ए-दीन व सलफ़े सालेहीन की तसरीहात के ख़िलाफ़, सवादे आज़म से अलग हो कर दीन को मसख़ करना शुरू किया। क़ुरआने करीम की तफ़्सीर बिर्राए में न सिर्फ़ अक़्वाले अइम्मा व आसार सहाबा बल्कि अहादीसे नब्वीया के अलर्रग़्म एक नई राह पैदा कर ली और अंग्रेज़ों की मक़्सदे बरादरी का कमा हक़्क़हू हक़ अदा किया।

अगरचे वह लोग अपने मक़्सद में पूरे तौर पर कामयाब नहीं हुए ताहम

एक तबक़ा की फ़िक्री रौ को दूसरी तरफ़ मोड़ दिया। यह तबक़ा रिसर्च और तहक़ीक़ का नाम लेकर मज़हबी और ग़ैर मज़हबी हर क़िस्म के मज़ामीन में हिस्सा लेने लगा यहाँ तक कि अपनी दिमाग़ी उपज से क़ुरआने करीम के जो मआनी व मतालिब समझ लिए उसी को बुनियाद बना कर इमारत तामीर करना शुरू कर दी। वह अइम्म-ए-दीन और असातीने मिल्लत जिन्होंने तहसीले इल्म में उमरें सर्फ़ करके इस्लाम की रूह को समझा और दीन के चश्मा साफी को हर कदूरत से महफ़ूज़ रखा। **मा अना अलैहे व असहाबी** और **सिराते मुस्तक़ीम** पर हमेशा गामज़न रहे, उनके अक़्वाल की इस तबक़ा के नज़्दीक क्या हैसियत हो सकती है। इसका तो ख़्याल है कि अहादीसे नब्वीया का पूरा ज़ख़ीरा दरिया में बहा देना चाहिए। **(मआज़ल्लाह)** डॉक्टर गुलाम जीलानी बर्क़ वग़ैरह के लिट्रेचर देख कर इसका बख़ूबी अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

इस वक़्त एक नई रिसर्च और तहक़ीक़ सामने आई है अगरचे इसमें बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरहुम कुतुब अहादीस व तारीख़ और अक़्वाले अइम्मा व उलमा-ए-इस्लाम को तहक़ीक़ी मवाद के सिलसिला में पेश किया गया है। लेकिन मज़कूरा बाला ज़ेहनियत पूरी तहक़ीक़ में झलक रही है क्योंकि सवादे आज़म से अलग चन्द मफ़रूज़े पर रेत की दीवार खड़ी करने की कोशिश की गई है। यह नई तहक़ीक़ महमूद अहमद अब्बासी की किताब "ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" है। इस किताब का मर्कज़ी नुक़्ता जिस पर पूरी किताब गर्दिश कर रही है, यह है :

(1) हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त सबाई गरोह कातेलीन उसमान ग़नी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की कोशिश व ताईद बल्कि इसरार से क़ाइम हुई थी और अकाबिरे सहाबा ने बैअत से गुरेज़ किया। इसलिए ख़िलाफ़त मुकम्मल नहीं हुई और कुदरत के बावजूद केसास नहीं लिया गया। गोया उम्मत में जो इंतिशार पैदा हुआ, उसकी सारी ज़िम्मेदारी आपके सर है।

(2) हज़रत हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु की हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु अन्हु से सुलह महज़ इस वजह से थी कि ख़िलाफ़त की डगमगाती कश्ती साहिल तक सलामती के साथ पहुँचाने की बदरजा अतम्म अह्ले बैत

बमुक़ाबला हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु अन्हु, उनमें नहीं थी और यह सुलह अपनी पार्टी की कमज़ोरी और पिदर बुर्ज़ुगवार की वसीयत के पेशे नज़र थी।

(3) यज़ीद की वली अहदी जाइज़ और हक़ है क्योंकि उस पर सहाबा का इज्मा हो चुका था हत्ता कि हज़रत इमाम हुसैन ने भी वली अहदी की बैअत कर ली थी जैसा कि आपके तर्ज़े अमल से साबित होता है।

(4) यज़ीद की बैअते ख़िलाफ़त पर जब तमाम लोग मुत्तफ़िक़ हो गए तो चन्द नुफ़ूस का बैअत से इंकार कोई मानी नहीं रखता। लिहाज़ा हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु का यज़ीद की बैअत न करना और कूफ़ा की तरफ रुख़ करना ख़लीफ़ा बरहक़ के ख़िलाफ़ बग़ावत थी जिसकी पादाश में उनका ज़ुल्मन नहीं बल्कि हक़ के साथ क़त्ल किया गया। बिना बरीं इस सिलसिला में यज़ीद, उमर बिन सअ्द वग़ैरह बेकुसूर हैं और इमाम पर करबला में पानी बन्द करना वग़ैरह मज़ालिम महज़ अफ़साना हैं।

(5) यज़ीद के किरदार के बारे में ग़लत प्रोपेगंडे से अब तक लोग ग़लत फ़हमी में मुब्तला थे। यह निहायत पाक तीनत, पार्सा, अद्ल गुस्तर, मुसलमानों का ख़ैर ख़्वाह, बहमा सिफ़ात हसना मुत्तसिफ़ था, फ़ित्ना हर्रा के मज़ालिम का यज़ीद के दामने तक़द्दुस पर कोई धब्बा नहीं।

इन्हीं मफ़रूज़ात पर अब्बासी साहब ने बज़अ्म ख़ुवेश एक तारीख़ी कारनामा अंजाम दिया है और किताब मुअक्क़र करने के लिए कसरत से तारीख़ी शवाहिद और इस्तिदलाल में ज़ोर पैदा करने के लिए उलमा-ए-इस्लाम के अक़्वाल पेश किए हैं लेकिन उनकी हक़ीक़त क्या है? कहीं तरजमा में ख़्यानत, कहीं इबारत का मफ़्हूम समझने से क़ासिर, कहीं इबारत में तहरीफ़, कहीं मुफ़ीद मतलब की थोड़ी सी इबारत ले ली गई है हालांकि सियाक़ व सबाक़ कुछ और बता रहा है, कभी किसी मुअर्रिख़ को नाक़ाबिले ऐतमाद ठहराते हैं फिर इसी को इश्तिहाद में पेश करते हैं। सबसे अजीब चीज़ यह है कि तरीक़े इस्तिदलाल इंतिहाई लचर है, ऐसी सूरत में जो नतीजा निकलेगा उसकी हैसियत ज़ाहिर है।

अल-ग़रज़ तारीख़ी हैसियत से यह किताब बिल्कुल साक़ितुल-ऐतबार

है, इसको तारीख़ी कारनामा क़तअ़न नहीं कहा जा सकता है। इन उमूर के बारे में मुनासिब मौक़ा पर कलाम किया जाएगा। फिल-हाल अमीरुल-मुमिनीन हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहुल-करीम की ख़िलाफ़त के बारे में अब्बासी साहब की जो तहक़ीक़ है उसके मुतअ़ल्लिक़ इज्माई और सही मौक़िफ़ पेश करना है।

सबसे पहले हमें यह देखना है कि इस मस्अला पर जिस अंदाज़ से आपने ख़ामा फरसाई की है उसकी इजाज़त किताब व सुन्नत देती है या नहीं? फिर उसकी तारीख़ी हैसियत क्या है?

किताब की इब्तिदा जहाँ से होती है उसका उनवान "हज़रत की बैअ़त और सबाई पार्टी" है उसके तहत चन्द सतरों के बाद आप लिखते हैं :

"यह बैअ़त चूंकि बाग़ियों और क़ातिलों की ताईद से बल्कि इसरार से हुई थी और यह ख़िलाफ़त ही हज़रत उसमान ज़ुन्नूरैन जैसे महबूब ख़लीफ़ा राशिद को ज़ुल्मन और नाहक़ क़त्ल करके सबाई गिरोह के असर से क़ाइम की गई थी नीज़ क़ातेलीन से क़ेसास जो शरअ़न वाजिब था, नहीं लिया गया था, और न क़ेसास लिए जाने का कोई इम्कान बाक़ी रहा था क्योंकि यही बाग़ी और क़ातिल और इस गिरोह का बानी मबानी अब्दुल्लाह बिन सबा, सबाईन के गिरोह में न सिर्फ़ शामिल बल्कि सियासत वक़्त पर असर अंदाज़ रहे, अकाबिरे सहाबा ने बैअ़त करने से गुरेज़ किया, इसलिए बैअ़ते ख़िलाफ़त मुकम्मल न हो सकी।" (इंतिहा)

इसमें तीन बातें क़ाबिले लिहाज़ हैं, **अव्वलन :** आपने मौलाए काइनात का दामन हज़रत उसमान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के ख़ून नाहक़ से दाग़दार किया। **सानियन :** मौसूफ़ को हद्दे शरई क़ाइम न करने का मुज्रिम ठहराया। **सालिसन :** आपकी ख़िलाफ़त क़ाइम न हो सकी।

अल्लाह अल्लाह! जिनकी तहारत व पाकीज़गी, अदालत व नज़ाहत और जन्नती होने की ख़ुदावन्दा क़ुद्दूस शहादत दे उनकी शान में ला यानी मफ़रूज़े पर यह जसारत!

तरजमा : बेशक अल्लाह राज़ी हुआ ईमान वालों से जब वह उस दरख़्त के नीचे तुम्हारी बैअ़त करते थे। तो अल्लाह ने जाना जो उनके

दिलों में है। और सबसे अगले, पहले मुहाजिर और अंसार और वह लोग जो भलाई के साथ उनके पैरू हुए, अल्लाह उन से राज़ी हो और वह लोग अल्लाह से राज़ी हुए। तुम में बराबर नहीं वह लोग जिन्होंने फ़त्हे मक्का से क़ब्ल ख़र्च और जिहाद किया, वह लोग मरतबा में उन से बड़े हैं जिन्होंने फ़त्हे मक्का के बाद ख़र्च और जिहाद किया और उन सब के लिए अल्लाह जन्नत का वादा फरमा चुका। बेशक वह लोग जिनके लिए हमारा वादा भलाई का हो चुका वह जहन्नम से दूर रखे गए है।

मुतअद्दिद हदीसों में सरवरे काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेही व सल्लम ने सहाबा किराम की शान में तअ़न व तशनीअ़ से सख़्त मना फरमाया है, उनके जन्नती होने की ख़बर दी है।

इमाम तिर्मिज़ी ने अपनी सही में अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल से हदीस नक़्ल की है : (तिर्मिज़ी जिल्द 2, स० 226)

तरजमा : तुम मेरे असहाब के बारे में कुछ कहते हुए अल्लाह से डरो! उनको मेरे बाद अपने तअ़न व तशनीअ़ का निशाना न बनाओ, जो शख़्स उन से मुहब्बत रखता है वह मुझ से मुहब्बत करता है और जो उन से बुग्ज़ रखता है वह मुझ से बुग्ज़ रखने की वजह से उन से बुग्ज़ रखता है, जिसने उनको तक्लीफ़ पहुँचाई उसने मुझ को तक्लीफ़ पहुँचाई और जिसने मुझको तक्लीफ़ पहुँचाई उसने अल्लाह को तक्लीफ़ पहुँचाई और क़रीब है कि अल्लाह उनको अपनी गिरफ़्त में ले ले।

हज़रत जाबिर ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत की कि सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बैअ़ते रिज़्वान करने वालों में से कोई भी जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा।

(अबू दाऊद जिल्द 2, स० 265, तिर्मिज़ी जिल्द 2, स० 226)

ख़ुसूसन हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू से अगर कोई शख़्स अपने दिल में तंगी महसूस करता हो या किसी क़िस्म की कदूरत रखता हो, उसे सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस इरशादे गिरामी पर ग़ौर करना चाहिए।

तरजमा : सावर या हुमैरी ने अपनी वालिदा से रिवायत की, उन्होंने

फ़रमाया कि मैं उम्मुल-मुमिनीन उम्मे सलमा की ख़िदमत में गई तो उनको फ़रमाते हुए सुना कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे हज़रत अली से न मुनाफ़िक़ मुहब्बत करेगा और न मोमिन बुग्ज़ रखेगा।

किताब व सुन्नत की रौशनी में सवादे आज़म मज़हबे अह्ले सुन्नत वल-जमाअत का अब तक इज्माई मसलक रहा है कि असहाबे किराम की शान में किसी क़िस्म की तख़्फ़ीफ़ व तंक़ीस और उनके आपस के मुशाजिरात पर किसी पर फ़ज़ीलत का धब्बा लगाना अपनी आक़िबत ख़राब करनी है।

सहाबी-ए-रसूल की पैरवी हमारे लिए ज़रीआ हिदायत है।

तरजमा : मेरे असहाब सितारे की तरह हैं उन में जिनकी भी तुम इक़्तिदा करोगे हिदायतयाब होगे।

इसी वजह से इमाम अहमद बिन हंबल अलैहिर्रहमा (मुतवफ़्फ़ी 241 हिजरी) ने मुशाजिराते सहाबा के सिलसिला में ख़ामोश रहने की तसरीह फ़रमा दी है। क़ुतुबुल-अक़्ताब हज़रत ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल-क़ादिर जीलानी रज़ि अल्लाहु अन्हु "ग़नीयतुत्तालिबीन" में तहरीर फरमाते हैं :

तरजमा : लेकिन हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का जंग करना हज़रत तलहा व ज़ुबैर व आइशा व मुआविया रज़ि अल्लाहु अन्हुम से तो इमाम अहमद अलैहिर्रहमा ने उस से इसके बारे में नुक्ता चीनी करने से और इन तमाम लड़ाई झगड़ों से जो उनके दरम्यान थे बाज़ रहने की तसरीह फरमा दी है क्योंकि अल्लाह तबारक व तआला क़्यामत के दिन उन झगड़ों को उनके दरम्यान से दूर कर देगा जैसा कि इरशादे बारी तआला है और हमने उनके सीनों में जो कुछ कीने थे सब खींच लिए, आपस में भाई की तरह तख़्तों पर रू-ब-रू बैठे होंगे।

(ग़नीयतुत्तालिबीन जिल्द अव्वल स० 187) (अल–बवाक़ीत वल–जवाहिर जिल्द 2, स० 77)

फिर उसके बाद स० 87 पर फरमाते हैं :

तरजमा : अह्ले सुन्नत ने उनके दरम्यान जो मुख़ासिमत थी उससे बाज़ रहने और उनकी बुराई ब्यान करने से बचने और उनके मुहासिन व

फ़ज़ाइल को ज़ाहिर करने और जो इख़्तिलाफ़ हज़रत अली व तलहा व जुबैर व आइशा व मुआविया रज़ि अल्लाहु अन्हुम का पैदा हुआ, उनका मुआमला अल्लाह तआला की तरफ़ करने के वाजिब होने पर इत्तेफ़ाक़ किया है जैसा कि हम पहले ब्यान कर चुके हैं।

अब्बासी साहब ने गिरी पड़ी रिवायतों का जो अंबार लगाया है किताब व सुन्नत के सामने उनकी क्या हैसियत है। आपने एक ख़्याल क़ाइम कर लिया उसकी ताईद में सब कुछ कर गुज़रे हैं। न उनके बारे में ग़ौर किया और न सेहत व सुकुम परखने की कोशिश की। इमाम अब्दुल-वह्हाब शोअ़रानी फरमाते हैं : (अल-यवाक़ीत वल-जवाहिर जिल्द 2, स० 77)

तरजमा : बाज़ अह्ले सियर जिन बातों को ज़िक्र करते हैं यह नाक़ाबिले तवज्जोह हैं क्योंकि सही नहीं है और अगर सेहत साबित भी हो जाएगी तो सही तावील हो जाएगी। कितनी अच्छी बात हज़रत उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाई कि जब अल्लाह तबारक व तआला ने उस ख़ून (जंगे ज़मल व सफ़्फ़ेन) से हमारी तल्वारों को पाक रखा तो हम अपनी ज़ुबानों को उस से आलूदा नहीं करेंगे।

ख़िलाफ़ते अली की शरई हैसियत

अब्बासी साहब ने जो मुक़द्दमात क़ाइम किए और उन से जो नतीजा निकाला कि "हज़रत अली की बैअ़त मुकम्मल न हो सकी" उसका मतलब यह है कि शरअ़न यह ख़िलाफ़त क़ाइम नहीं हुई क्योंकि अगर यह मतलब लिया जाए कि तमाम अम्सार व अतराफ के मुसलमान इस बैअत पर जमा नहीं हो सके तो ज़ाहिर है कि इसका कौन मुंकिर हो सकता है (ख़्वाह मुवाफ़िक़ हो या मुख़ालिफ़) कि अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के ज़ेरे असर लोगों ने बैअ़त नहीं की थी। लिहाज़ा पहली सूरत को मुतऐयन करने के लिए आपने "इज़ालतुल-ख़ुलफ़ा" के हवाला से शाह वलीयुल्लाह साहब का क़ौल बतौर इस्तिश्हाद नक़्ल किया है :

ख़िलाफ़त हज़रत मुर्तज़ा के लिए क़ाइम न हुई क्योंकि अह्ले हल्ल व अक़्द ने अपने इज्तिहाद से और मुसलमानों को नसीहत की ग़रज़ से उन से बैअ़त नहीं की।

नाज़ेरीन पहले इस ख़िलाफ़त की शरई हैसियत समझ लें। उसके बाद अब्बासी साहब के हवाला की हक़ीक़त मुलाहिज़ा करें।

इस ख़िलाफ़त के शरअ़न हक़ होने की ख़बर सरवरे काइनात ने इशारतन दे दी है :

तरजमा : अबू हुरैरह ने कहा कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर फरमाते, ऐ अम्मार! तुझे बाग़ी जमाअत क़त्ल करेगी।

शैख़ुल-इस्लाम इब्ने हजर अस्क़लानी इस हदीस की कसरत रिवायत बताते हुए लिखते हैं :

तरजमा : नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुतावातिर रिवायतों से मरवी है कि हुज़ूर ने अम्मार से फरमाया तुझे बाग़ी जमाअत क़त्ल करेगी। दूसरे लोगों में उसकी रिवायत हज़रत अम्मार व उसमान व इब्ने मसऊद व हुज़ैफ़ा व इब्ने अब्बास से की गई (रज़ि अल्लाहु अन्हुम) और वाक़ेदी ने कहा कि हज़रत अम्मार के क़त्ल के बारे में वह चीज़ जिस पर इज्माअ़ किया गया, यह है कि 93 साल की उम्र में 37 हिजरी में हज़रत अली की हिमायत में सफ़्फ़ैन में क़त्ल हुए और वहीं सफ़्फ़ैन में दफन हुए।

इस हदीस के पेशे नज़र उम्मते मुस्लेमा का इज्माअ़ है कि हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़ते हक़ है। दूसरी वजह यह भी है कि इंतिख़ाबे ख़लीफ़ा का जो तरीक़ा इस बैअ़ते ख़िलाफ़त से पहले राइज था वही तरीक़ा शूरा इसमें भी इख़्तियार किया गया था। चुनांचे इमाम अब्दुलवहाब शोअ़रानी फरमाते हैं :

तरजमा : बिल-इज्माअ़ इमाम हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ थे फिर हज़रत उमर अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु के मुक़र्रर करने से फिर हज़रत उसमान रज़ि अल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु के मुक़र्रर करने से फिर हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु उस जमाअत के मुक़र्रर करने से जिसके दरम्यान अम्रे ख़िलाफ़त शूरा किया गया था क्योंकि हज़रत उसमान ने किसी को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब नहीं किया था।

शाह वलीयुल्लाह साहब हुज्जतुल्लाहिल-बालिग़ा में तहरीर फरमाते हैं:
(जिल्द 2, स० 212)

तरजमा : पस नुबुव्वत ख़त्म हो गई नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वफ़ात पा जाने से और वह ख़िलाफ़त जिसमें तलवार नहीं चली हज़रत उसमान की शहादत से ख़िलाफ़त ख़त्म हो गई हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हुल-करीम की शहादत और हज़रत हसन रज़िअल्लाहु अन्हु की दस्त बरदारी से यहाँ तक कि हज़रत मुआविया का अम्र साबित हो गया।

इन तसरीहात के बाद अब्बासी साहब के दावे की हक़ीक़त सराब की सी रह जाती है। अपने दावा को साबित करने के लिए इज़ाला अल-ख़िफ़्फ़ा से शाह साहब का जो क़ौल नक़्ल किया है उसमें आपने वह ख़्यानत की है कि दयानते तक़्वा के गले पर कुन्द छुरी फेर दी है, इसी को आपने रिसर्च का नाम दिया है।

शाह साहब हुज्जतुल्लाहिल-बालिग़ा में जब मौलाए कायनात की ख़िलाफ़त का सही और हक़ होना तहरीर फ़रमाते हैं तो ला इज़ालतुल-ख़िफ़्फ़ा में कैसे लिख सकते हैं "ख़िलाफ़त बराय हज़रत मुर्तज़ा क़ाइम न शुद।" क्योंकि दोनों में तज़ाद है लिहाज़ा यह आपकी करामत का नतीजा है।

जो चाहे आपका हुस्ने करिश्मा साज़ करे

ख़ुद हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु अन्हु को इस ख़िलाफ़त से इख़्तिलाफ़ नहीं था। मौला-ए-कायनात के मुकाबला में अपने आपको किसी तरह मुस्तहिक़े ख़िलाफ़त नहीं समझते थे। उनके इख़्तिलाफ़ और बैअ़त न करने की बुनियाद दूसरी वजह थी (अब्बासी साहब! आप अब तक इसी ग़लतफ़हमी में मुब्तला हैं) चुनांचे इमाम अब्दुलवहाब शोअ़रानी फरमाते हैं :

(अल-यवाक़ीत व अल-जवाहिर जिल्द **2**, स० **77**)

कमाल बिन शरीफ़ ने कहा कि हज़रत अली और मुआविया के दरम्यान जो निज़ाअ़ थी उसका मतलब यह नहीं है कि इमारत में निज़ाअ़ थी जैसा कि बाज़ लोगों को उसका वहम हो गया। निज़ाअ़ सिर्फ़ इस वजह से थी कि क़ातेलीन उसमान रज़ि अल्लाहु अन्हु को उनके ख़ानदान वालों को सुपुर्द कर दें ताकि यह लोग क़ातेलीन से क़ेसास लें।

(मौलाना मुहम्मद शफ़ीअ़ आज़मी)

★★★

दीन का सच्चा दर्द रखने वालों से एक अहम अपील

यह मुख़्तसर किताब **"तबलीग़ी जमाअत का फ़रेब"** जो अपने अन्दाज़े ब्यान और जामेईयत के एतबार से बिल्कुल मुन्फ़रिद किताब है। जिसने मनज़रे आम पर आते ही ज़हेन व फ़िक्र की दुनिया में एक इनक़िलाब बरपा कर दिया। कितने भोले-भाले सुन्नी मुसलमान जो अपनी सादा लौही की वजह से तबलीग़ी जमाअत के दामे फ़रेब में आ चुके थें इस किताब के पढ़ने और सुनने के बाद इस जमाअत से अलाहिदा हो गए और अच्छी तरह समझ लिया कि यह कलिमा व नमाज़ के आड़ में वहाबियत की तबलीग़ है। और यह शैली कट्टर वहाबी जमाअत से तअल्लुक़ रखती है जो बिला शुबा एक बद-अक़ीदा और गुमराहकुन जमाअत है।

लिहाज़ा : मुसलमानों को इस फ़ितने से आगाह करने और उन्हें इससे निजात दिलाने के लिए इस बात की सख़्त ज़रूरत है कि इस किताब को घर-घर पहुँचाया जाए और ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में तक़्सीम किया जाए। अह्ले सुन्नत व जमाअत के जो अह्ले ख़ैर हज़रात इस मक़्सदे ख़ैर के लिए किताब मंगाना चाहेंगे उन्हें एक हज़ार किताब या कम पर ख़ुसूसी रिआयत दी जाएगी। कोई हक़ साहब यह काम न कर सकें तो चन्द हज़रात शरीक हो जाएँ। उूर्द और हिन्दी दोनों में मौजूद है। इस पते पर राबता क़ायम करें।

Scanned by CamScanner

مَکِّیٌّ	مکے والا	عَالِمٌ	علم والا	مُبِیْنٌ	ظاہر
مَدَنِیٌّ	مدینے والا	طَیِّبٌ	پاک	اَوَّلٌ	سب سے اول
عَرَبِیٌّ	عرب والا	طَاہِرٌ	طہارت والا	اٰخِرٌ	سب کا آخر
ہَاشِمِیٌّ	ہاشمی	مُطَہَّرٌ	پاکیزہ	ظَاہِرٌ	ظاہر
تِہَامِیٌّ	تہامی	خَطِیْبٌ	خطاب والا	بَاطِنٌ	پوشیدہ
حِجَازِیٌّ	حجاز والا	فَصِیْحٌ	فصیح	رَحْمَۃٌ	رحمت
تَرَازِیٌّ	ترازیٌّ	سَیِّدٌ	سردار	مُحَلِّلٌ	حلال فرمانے والا
قُرَیْشِیٌّ	قریشی	مُنَقِّیٌّ	واضح راستہ دکھانے والا	مُحَرِّمٌ	حرام بتانے والا
مُضَرِیٌّ	مضر والا	یا رسول اللہ ﷺ		اٰمِرٌ	حکم دینے والا
اُمِّیٌّ	کسی سے نہ پڑھا ہوا			نَاہٍ	منع کرنے والا
عَزِیْزٌ	غالب	اِمَامٌ	امام	شَکُوْرٌ	شکر گزار
حَرِیْصٌ	ایمان لانے پر حرص کرنے والا	بَارٌّ	نیک خو	قَرِیْبٌ	قریب
رَءُوْفٌ	نرم دل	شَافٍ	شفا دینے والا	مُنِیْبٌ	نیابت کرنے والا
رَحِیْمٌ	رحم والا	مُتَوَسِّطٌ	معتدل پیغام دینے والا	مُبَلِّغٌ	پیغام پہنچانے والا
یَتِیْمٌ	یتیم	سَابِقٌ	پہلے آنے والا	طٰسٓ	طٰسٓ
غَنِیٌّ	بے نیاز	مُقْتَصِدٌ	میانہ رو	حٰمٓ	حٰمٓ
جَوَّادٌ	سخی	مَہْدِیٌّ	ہدایت کرنے والا	حَسِیْبٌ	کافی
فَتَّاحٌ	حاکم	حَقٌّ	حقٌّ	اَوْلٰی	سب سے بہتر

مُحَمَّدٌ	تعریف کیا ہوا	رَسُوْلٌ	پیغمبر	قَائِمٌ	نماز قائم کرنے والا
اَحْمَدُ	سب سے زیادہ تعریف والا	نَبِیٌّ	غیب بتانے والا	حَافِظٌ	یاد رکھنے والا
حَامِدٌ	سراہنے والا	طٰهٰ	طٰهٰ	شَهِیْدٌ	گواہ
مَحْمُوْدٌ	سراہا گیا	یٰسٓ	یٰسٓ	عَادِلٌ	عدل کرنے والا
قَاسِمٌ	بانٹنے والا	مُزَّمِّلٌ	کملی والا	حَکِیْمٌ	حکمت والا
عَاقِبٌ	پیچھے آنے والا	مُدَّثِّرٌ	چادر اوڑھنے والا	نُوْرٌ	نُوْرٌ
فَاتِحٌ	کھولنے والا	شَفِیْعٌ	شفاعت کرنے والا	حُجَّةٌ	دلیل
خَاتَمٌ	ختم کرنے والا	خَلِیْلٌ	مخلص دوست	بُرْهَانٌ	دلیل
حَاشِرٌ	اکٹھا کرنے والا	یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ		اَبْطَحِیٌّ	ابطح والا
مَاحٍ	مٹانے والا			مُؤْمِنٌ	مُؤْمِنٌ
دَاعٍ	بلانے والا	کَلِیْمٌ	اللہ سے کلام کرنے والا	مُطِیْعٌ	تابعدار
سِرَاجٌ	چمکتا چراغ	حَبِیْبٌ	اللہ کا دوست	مُذَکِّرٌ	نصیحت کرنے والا
رَشِیْدٌ	نیک	مُصْطَفٰی	چنا ہوا	وَاعِظٌ	اصلاح کرنے والا
مُنِیْرٌ	روشن	مُرْتَضٰی	رضامند	اَمِیْنٌ	امانت دار
بَشِیْرٌ	خوشخبری سنانے والا	مُجْتَبٰی	برگزیدہ	صَادِقٌ	سچا
نَذِیْرٌ	ڈرانے والا	مُخْتَارٌ	اختیار دیا گیا	مُصَدِّقٌ	تصدیق کرنے والا
هَادٍ	ہادی	نَاصِرٌ	مدد کرنے والا	نَاطِقٌ	واضح بیان والا
مَهْدِیٌّ	ہدایت والا	مَنْصُوْرٌ	مدد کیا گیا	صَاحِبٌ	ساتھی



RAZVI KITAB GHAR

425, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6

Ph:.011-23264524 Mobile. 9350505879

Rs.100/-